माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

क्र0/ 1921 /विद्योचित/2019 भोपाल, दिनांक 11/01/2019

- विज्ञप्ति -

एन.सी.टी.ई. 2014 के दिशा-निर्देश के अनुरूप राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल द्वारा डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजूकेशन (डी.एल.एड. द्विवर्षीय) नियमित का पाठ्यक्रम निर्मित किया गया है, म0प्र0 शासन स्कूल शिक्षा विभाग से प्रशासकीय अनुमोदन दिनांक 23.08.2018 के अनुक्रम में डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजूकेशन (डी.एल.एड. द्विवर्षीय) पाठ्यक्रम सत्र 2019-20 से प्रथम वर्ष एवं सत्र 2020-21 से द्वितीय वर्ष में लागू होगा।

सचिव,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र
भोपाल

पृ0क्र0/ 1922 /विद्योचित/2019 भोपाल, दिनांक 11/01/2019

प्रतिलिपि :-

1. प्रमुख सचिव, म.प्र. शासन, स्कूल शिक्षा विभाग मंत्रालय वल्लभ भवन, भोपाल
2. आयुक्त, लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल
3. आयुक्त, राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
4. संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् म.प्र. भोपाल
5. समस्त जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट्स)
6. संचालक, आदिम जाति कल्यण विभाग, म.प्र. भोपाल
7. समस्त कलेक्टर, म.प्र.
8. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, म.प्र.
9. आंचलिक अधिकारी, म.प्र., माध्यमिक शिक्षा मण्डल, इंदौर
10. समस्त संभागीय अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश
11. समस्त प्रथम श्रेणी अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल
12. जनसम्पर्क अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल की ओर प्रमुख समाचार पत्रों में विज्ञप्ति प्रकाशन हेतु।
13. सी.एस.ओ. माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल की ओर वेबसाइट पर अपलोड करने हेतु प्रेषित।
14. समस्त सहायक सचिव, परीक्षाएं, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल
15. सहायक सचिव/समन्वय/गोपनीय/डी.एड. पत्राचार/ डाटा प्रभारी।

की ओर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

सचिव
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र
भोपाल

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम मार्गदर्शिका

(कार्यक्रम–क्रियान्वयन एवं निर्देश)

एन.सी.टी.ई. मार्गदर्शिका, 2014 पर आधारित

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (D.El.Ed.) पाठ्यक्रम हेतु

—: अनुक्रमणिका:—

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	भूमिका	
2.	शाला इंटर्नशिप–बदलता स्वरूप	
3.	इंटर्नशिप कार्यक्रम की रूपरेखा	
4.	शाला इंटर्नशिप का संगठन एवं सिद्धांत	
5.	संगठनात्मक जिम्मेदारियाँ a. शिक्षक शिक्षा राष्ट्रीय परिषद (NCTE) b. स्कूल शिक्षा विभाग c. संबद्ध निकाय d. शिक्षक शिक्षा संस्थान e. इंटर्नशिप शाला/लैब शाला	
6.	इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक की जिम्मेदारियाँ	
7.	छात्राध्यापक की प्रगति का आकलन एवं प्रमाणीकरण	
8.	शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम (दो वर्षीय) **I.** इंटर्नशिप प्रथम वर्ष–स्कूल एक्पोजर प्रोग्राम (SEP) **i.** उद्‌देश्य **ii.** शाला अनुभव हेतु प्रस्तावित गतिविधियाँ **a.** शाला अनुभव कार्यक्रम की पूर्व गतिविधियाँ • पाठ्‌यपुस्तक एवं अन्य स्रोत सामग्री का विश्लेषण • नवाचारी अधिगम केन्द्रो का भ्रमण **b.** शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान की गतिविधियाँ • शाला प्रोफाइल • शाला अवलोकन रिपोर्ट • रिफ्लेक्टिव जर्नल **c.** शाला अनुभव कार्यक्रम के पश्चात् की गतिविधियाँ (आंतरिक मूल्यांकन) **iii.** छात्राध्यापको का आकलन (बाह्य मूल्यांकन) • सेमीनार का आयोजन • शाला इंटर्नशिप प्रथम वर्ष मूल्यांकन योजना **II.** इंटर्नशिप द्वितीय वर्ष–शिक्षण अभ्यास और समुदाय के साथ कार्य **i.** उदद्‌श्य **ii.** शाला इंटर्नशिप की गतिविधियाँ **a.** शाला इंटर्नशिप के दौरान पूर्व गतिविधियाँ • मेंटर शिक्षक की पहचान एवं नियुक्ति • सुपरवाईजर के रूप में विभिन्न शालाओं में कार्य करने हेतु संस्थान के अकादमिक सदस्यों की पहचान एवं नियुक्ति • छात्राध्यापकों की भूमिका और जिम्मेदारियाँ • संस्थान स्तर पर पूर्व इंटर्नशिप की तैयारी • रिफ्लेक्टिव जर्नल **b.** शाला इंटर्नशिप के दौरान गतिविधियाँ • प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण और अवलोकन का विवरण • माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षण और अवलोकन का विवरण • क्रियात्मक अनुसंधान • समुदाय सर्वे	

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
	c. शाला इंटर्नशिप के पश्चात् की गतिविधियाँ (आंतरिक मूल्यांकन) **III.** छात्राध्यापकों का आकलन (बाह्य मूल्यांकन) • शाला इंटर्नशिप द्वितीय वर्ष मूल्यांकन योजना	
9.	शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम क्रियान्वयन एवं निर्देश **1.** शाला के चयन हेतु जिला स्तरीय समिति का गठन **2.** समिति के उत्तरदायित्व **3.** शालाओं के चयन का आधार **4.** शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयक एवं चयनित शाला के प्रधानाध्यापकों का उन्मुखिकरण **5.** लैब शालाओं को तैयार करना **6.** शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा मेंटर शिक्षक का उन्मुखिकरण **7.** शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा अकादमिक सदस्यों का उन्मुखिकरण **8.** शाला इंटर्नशिप हेतु छात्राध्यापकों को तैयार करना	
10.	शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम का वार्षिक केलेण्डर **i.** प्रथम वर्ष शाला इंटर्नशिप की प्रस्तावित समय–सारणी **ii.** द्वितीय वर्ष शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की प्रस्तावित समय–सारणी	
11.	उपसंहार	
12.	संदर्भ ग्रंथ सूची	
13.	परिशिष्ठ–1: पाठ्यपुस्तक / स्रोत सामग्री विश्लेषण प्रारूप परिशिष्ठ–2: रिफ्लेक्टिव जर्नल का प्रारूप परिशिष्ठ–3: कक्षा अवलोकन का प्रारूप परिशिष्ठ–4: इकाई योजना का प्रारूप परिशिष्ठ–5: पाठयोजना का प्रारूप परिशिष्ठ–6: केस स्टडी का प्रारूप परिशिष्ठ–7: नवाचारी केन्द्र के भ्रमण का प्रारूप परिशिष्ठ–8: क्रियात्मक अनुसंधान का प्रारूप परिशिष्ठ–9: पर्यवेक्षण / आकलन का प्रारूप	

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम क्रियान्वयन एवं निर्देश

1. भूमिका

प्रांरभिक शिक्षा का डिप्लोमा (डी.एल.एड.) शिक्षक शिक्षा का दो वर्ष का व्यावसायिक कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य शिक्षा की प्रांरभिक अवस्था अर्थात कक्षा I से VIII तक के लिये शिक्षकों को तैयार करना है। प्रांरभिक शिक्षा का उद्देश्य समाज की सक्रिय–सहभागिता और लिंग अन्तरों को दूर करते हुए समावेशी स्कूल पर्यावरण में सभी बच्चों की शिक्षा प्राप्त करने की बुनियादी–अवश्यकताओं को पूरा करना है **(भारत का राजपत्र–असाधारण, भाग III खण्ड 4 परिशिष्ट 2)**

शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE Act 2009) के अनुसार योग्य एवं व्यावसायिक प्रशिक्षित शिक्षक प्रांरभिक शिक्षा की पहली आवश्यकता है, इस लक्ष्य को लेकर डी.एल.एड. कार्यक्रम का प्रांरभिक स्तर पर निर्माण किया गया है।

शाला इंटर्नशिप विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक कार्यक्रमों की तरह शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह कार्यक्रम प्रशिक्षु (इंटर्न) को डी.एल.एड. कक्षाओं में पढ़ाये गये सैंद्धांतिक विषयों को वास्तविक कक्षाओं में परखने एवं समझने का अवसर देता है। यह एक पूर्णकालिक कार्यक्रम है जिसमें इंटर्न पाठ एवं ईकाई योजना का निर्माण, कक्षा शिक्षण का कार्य और शाला की गतिविधियों में सहभागिता करता है जिससे उसे एक नियमित शिक्षक की तरह वास्तविक कक्षाओं में कार्य करने का अवसर मिलता है। शाला के विभिन्न कार्यक्रम के दौरान इंटर्न के दृष्टिकोण रूचि एवं दक्षताओं को प्रोत्साहन मिलता है। दो वर्षीय शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम के अंतर्गत लैब एरिया की शाला में इंटर्न को विभिन्न प्रकार के बच्चों, पालकों एवं समुदाय से जुड़ने का अवसर मिलता है। शिक्षण अभ्यास एवं इंटर्नशिप एक इंटर्न को सामान्य रूप से एक संपूर्ण स्कूली जीवन से परिचित करवाता है।

प्रशिक्षु (इंटर्न) से आशा की जाती है कि वह इंटर्नशिप अवधि के दौरान समालोचनात्मक चिंतन करें, चर्चा करें और समस्त गतिविधियों के दौरान प्राप्त अनुभवों, अवलोकनो, निष्कर्षों को अपने पोर्टफोलियो और रिफ्लेक्टिव जर्नल में रिकार्ड करें।

यह क्षेत्र अनुभव इंटर्न को अपनी दक्षताओं और कौशल को विकसित करने में मदद करेगा। इंटर्न को बच्चों, पालकों, प्रशासको एवं समुदाय के संपर्क में रह कर सामाजिक मुद्दो और समस्याओं को समझने में सहायता करेगा, जिससे इंटर्न को सुविधादाता शिक्षक के रूप में विकसित होने में मदद मिलेगी।

2. शाला इंटर्नशिप–बदलता स्वरूप

विगत वर्षो में भारत वर्ष में शाला इंटर्नशिप के प्रतिमाान में बदलाव देखा गया। पूर्व समय में अध्यापन अभ्यास के दौरान छात्राध्यापकों के द्वारा विभिन्न विषयों की पाठ योजना को पढ़ाने को ही इंटर्नशिप में शामिल किया जाता था। NCFTE -2009 के अनुसार इंटर्नशिप की अवधारणा को विस्तृत रूप प्रदान किया गया और शाला की समस्त गतिविधियों को इसमें समावेशित किया गया। NCTE Regulation-2014 द्वारा इंटर्नशिप को अधिक अवधि का करते हुए लगभग 20 सप्ताह का किया गया। 20 सप्ताह की अवधि को पुनः दो भागों में विभाजित किया गया जिसमें 4 सप्ताह प्रथम वर्ष के लिए एवं 16 सप्ताह द्वितीय वर्ष के लिए प्रस्तावित किये गये (School intership: Framework and Guidlines 2016 by NCERT)। 4 सप्ताह का विभाजन इस प्रकार से किया गया है कि 2 सप्ताह शासकीय शाला में शाला अनुभव हेतु तथा 2 सप्ताह अशासकीय शाला में शाला अनुभव हेतु निर्धारित किये गये हैं। शासकीय और अशासकीय शालाओं के अन्तर्गत प्राथमिक और माध्यमिक दोनों शालाओं को शामिल किया गया है। 16 सप्ताह को दोबारा विभाजित करते हुए 14 सप्ताह शाला के साथ एवं 02 सप्ताह क्षेत्र में (शाला के अलावा) समाज के साथ कार्य हेतु निर्धारित किये गये। कुल शाला समय को दो भागों में विभाजित करते हुए 80 प्रतिशत समय शासकीय शाला हेतु एवं 20 प्रतिशत समय अशासकीय शाला हेतु निर्धारित किया गया। अर्थात 12 सप्ताह शासकीय शाला के साथ और 1 सप्ताह शासकीय शाला के समुदाय के साथ इसी प्रकार 2 सप्ताह अशासकीय शाला के साथ और 1 सप्ताह अशासकीय शाला के समुदाय के साथ कार्य करना होगा। प्रत्येक छात्राध्यापक को इंटर्नशिप के दौरान एक शासकीय और एक अशासकीय शाला में अपने इंटर्नशिप कार्य का संपादन करना होगा जो उसे एक सम्पूर्ण स्कूली जीवन का अनुभव प्रदान करेगा।

शाला इंटर्नशिप का फ्लो चार्ट निम्नानुसार हैः–

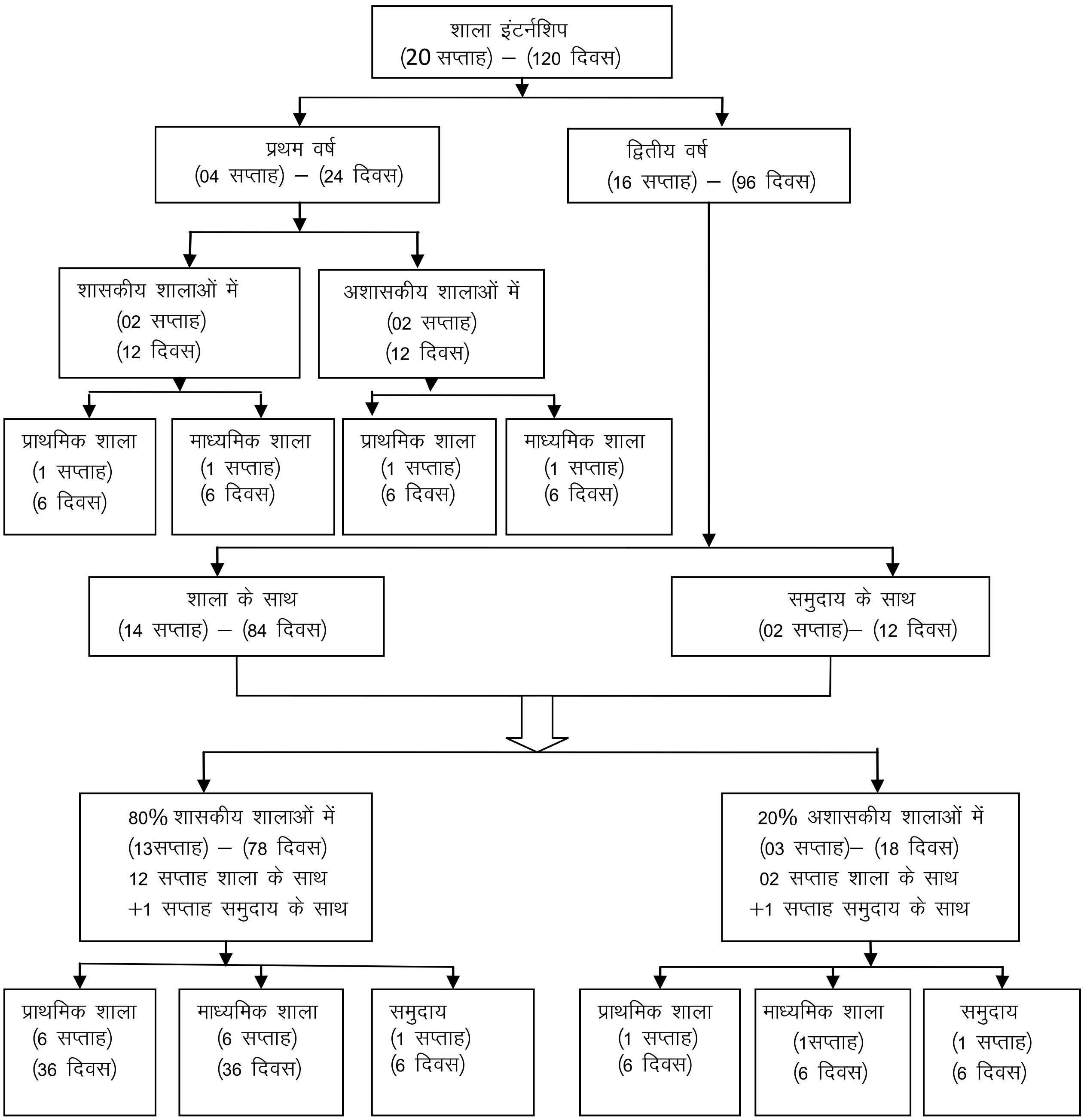

टीपः -

- शासकीय एवं अशासकीय शालाओं का क्षेत्र उपलब्धता अनुसार– शहरी, ग्रामीण एवं आदिवासी हो सकता है।
- प्रत्येक छात्राध्यापक को एक शासकीय और एक अशासकीय शालाओं में इंटर्नशिप कार्य अवश्य करना है। इनका चयन क्रमानुसार शासकीय/अशासकीय या अशासकीय/शासकीय हो सकता है।
- प्राथमिकता के आधार पर कक्षा 1 से 8 तक प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करने वाली शालाओं का चयन करना चाहिये।

3. शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की रूपरेखा

NCTE regulation 2014 के अनुसार डी.एल.एड. इंटर्नशिप कार्यक्रम की रूपरेखा निम्नानुसार है:–

स.क्र.	विवरण	डी.एल.एड. प्रर्थम वर्ष	डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष	योग
1.	इंटर्नशिप अवधि	4 सप्ताह	16 सप्ताह	20 सप्ताह
2.	इंटर्नशिप के दिवस	24 दिवस	96 दिवस	120 दिवस
3.	न्यूनतम उपस्थिति का प्रतिशत	90%	90%	90%
4.	न्यूनतम उपस्थिति के दिवस	22 दिवस	86 दिवस	108 दिवस
5.	इंटर्नशिप के कुल अंक	100	400	500
6.	इंटर्नशिप के न्यूनतम उत्तीर्ण अंक	50	200	250

टीप:–

- इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक (इंटर्न) मंगलवार से लेकर शुक्रवार तक शिक्षण कार्य करेगा और सोमवार को अपने सुपरवाईज़र के साथ, सप्ताहांत में बनाई गयी, पाठ योजनाओं पर फीड बैक और मार्गदर्शन लेगा।
- इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक (इंटर्न) की 90 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है।
- इंटर्नशिप के दौरान प्रति सोमवार शिक्षक शिक्षा संस्थान में छात्राध्यापक की उपस्थिति प्रथम वर्ष – 24 दिवस एवं द्वितीय वर्ष – 96 दिवस भी इंटर्नशिप अवधि में शामिल मानी जाएगी।

4. शाला इंटर्नशिप का संगठन:सिद्धांत

"शाला इंटर्नशिपः फ्रेमवर्क एवं गाईडलाईन्स" एन.सी.टी.ई. जनवरी 2016 के अनुसार शाला इंटर्नशिप का संगठन निम्नानुसार बताया गया है।

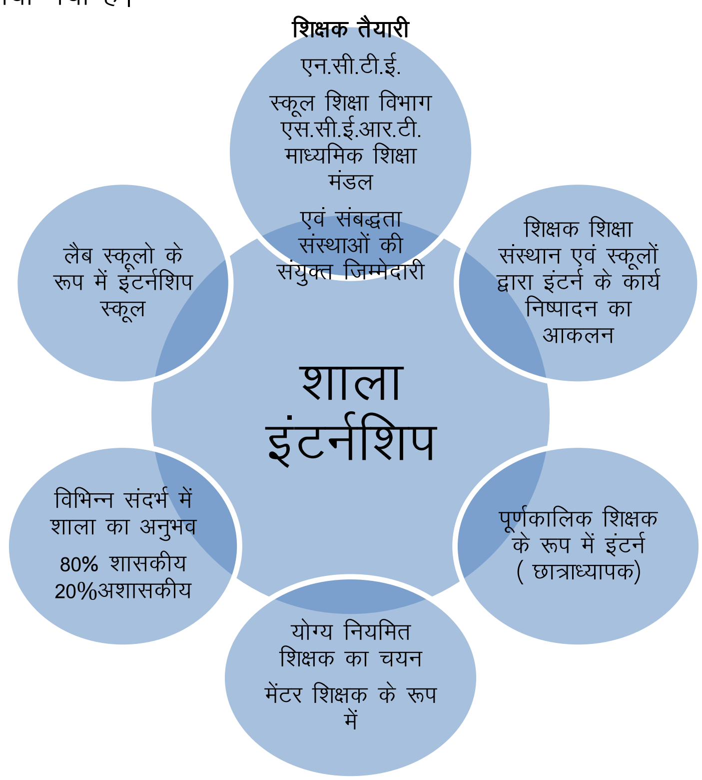

डी.एल.एड. पत्रोपाधि में शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम को बहुत महत्व देते हुए लगभग 25 प्रतिशत अधिभार दिया गया है। यह आशा कि गई है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् छात्राध्यापक (इंटर्न) स्वतंत्र रूप से एक नियमित शिक्षक की जिम्मेदारियों का अच्छे से निर्वहन कर सकता है। इंटर्नशिप की लम्बी अवधि के दौरान भारी मात्रा में संसाधन, समय और प्रयासों की आवश्यकता होगी।

अतः इंटर्नशिप कार्यक्रम की पूर्व योजना बनाकर क्रमबद्ध तरीके से क्रियान्वित करना चाहिये। यह NCTE, स्कूल शिक्षा विभाग, SCERT, माध्यमिक शिक्षा मण्डल और शिक्षक शिक्षा संस्थानों की संयुक्त जिम्मेदारी हैं। जिला शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा शासकीय व अशासकीय शालाओं का चयन इंटर्नशिप शाला के रूप में किया जायेगा। संस्थानों को आंवटित छात्राध्यापकों की सीटों के आधार पर इंटर्नशिप शालाओं का चयन किया जाना चाहिए। यह शालाएँ शिक्षक शिक्षा संस्थान की प्रायोगिक (लैब) शालाएँ कहलाएंगी। लैब शालाओं में मेंटर शिक्षक की अवधारणा दी गई है जो 4–5 छात्राध्यापकों को मार्गदर्शन देगा। मेंटर शिक्षक शाला का उच्च योग्यता धारी शिक्षक होना चाहिए जिसका उन्मुखिकरण शिक्षक शिक्षा संस्थान द्वारा किया जायेगा। शाला का मेंटर शिक्षक, शिक्षक शिक्षा संस्थान का विषय विशेषज्ञ मिलकर छात्राध्यापकों को समुदाय के साथ जोड़ते हुए शाला की विभिन्न गतिविधियों में मार्गदर्शन देंगे और उनका सुपरविज़न करेंगे। प्रायोगिक (लैब) शाला का प्रधानाध्यापक/प्राचार्य, मेंटर शिक्षक, संस्थान के विषय विशेषज्ञ मिलकर दिशा निर्देशों के आधार पर छात्राध्यापकों का आकलन करेंगे।

5. संगठनात्मक जिम्मेदारियाँ

भावी शिक्षक के निर्माण में विभिन्न स्तरों की भूमिका एवं जिम्मेदारियाँ निम्नानुसार रहेंगीः–

a) शिक्षक शिक्षा राष्ट्रीय परिषद (NCTE):- देश में NCTE शिक्षक शिक्षा के लिए एक नियंत्रक एजेंसी है जो एस.सी.ई.आर.टी. और मान्यता प्रदान करने वाली संस्थाओं की मदद से शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को संचालित करवाती है। यह संस्था शिक्षक शिक्षा की नीतियों का निर्माण करती हैं एवं विभिन्न कार्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क का निर्माण करती है।

भूमिका और जिम्मेदारियाँ– NCTE

- 2014 के अनुसार इंटर्नशिप नीति को जारी करना।
- शिक्षक शिक्षा के अकादमिक सदस्य, छात्राध्यापक, लैब एरिया स्कूल के प्रिंसिपल एवं मेंटर्स के लिए इंटर्नशिप हेण्डबुक का निर्माण करना।
- इंटर्नशिप के अंतर्गत गतिविधियों एवं आकलन की रूपरेखा को विस्तृत रूप से हेण्डबुक में देना।

b) स्कूल शिक्षा विभाग:- राज्य की समस्त शालायें स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत आती है। विभिन्न शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम और शिक्षक शिक्षा संस्थानों को आंवटित सीटो के रिकार्ड का संधारण स्कूल शिक्षा विभाग के पास होना चाहिये, इसी के आधार पर प्रत्येक शिक्षक शिक्षा संस्थानों को कितनी इंटर्नशिप शालाओं की आवश्यकता होगी निकाला जाये।

NCTE Regulation-2014 के अनुसार जिन TEI के पास 50 छात्राध्यापकों का इंटेक है उन्हें कम से कम 5–5 (शासकीय/अशासकीय) शालाओं का चयन एवं जिन TEI के पास 100 छात्राध्यापकों का इंटेक हैं उन्हें 10–10 (शासकीय/अशासकीय)शालाओं का और जिन TEI के पास 150 छात्राध्यापकों का इंटेक हैं उन्हें 15–15 (शासकीय/अशासकीय) शालाओं का आवंटन करना चाहिए।

शालाओं का चयन TEI से दूरी एवं छात्राध्यापकों के घर से दूरी के आधार पर डी.ई.ओ. द्वारा किया जाना चाहिए, और इन्हें कम से कम 2 बार द्वितीय वर्ष में इंटर्नशिप के दौरान एवं एक बार प्रथम वर्ष में इंटर्नशिप शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान लैब शाला का भ्रमण करना चाहिए।

भूमिका और जिम्मेदारियाँः स्कूल शिक्षा विभाग

राज्य स्तर पर–

- राज्य की शिक्षक शिक्षा संस्थानो का डाटा संधारित करना।
- प्रायोगिक (लैब) शालाओं की आवश्यकता का निर्धारण निम्न प्रकार होगा– उदाहरणार्थ 50–50 छात्राध्यापकों पर लगभग 5–5 लैब शाला (शासकीय / अशासकीय) एवं 100–100 छात्राध्यापकों पर लगभग 10–10 लैब शालाओं (शासकीय / अशासकीय) का और 150–150 छात्राध्यापकों पर लगभग 15–15 लैब शालाओं (शासकीय / अशासकीय) का आवंटन करना चाहिए।
- राज्य में इंटर्नशिप निति का निर्माण करना और संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को शाला इंटर्नशिप संबंधित गाईडलाइन जारी करना।
- जिले से प्राप्त मॉनिटरिंग रिपोर्ट को संकलित करना और NCTE को भेजना।

जिला स्तर पर–

- संबद्धता संस्थान से सलाह कर इंटर्नशिप केलेण्डर का निर्माण करना।
- जिले में स्थित शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिये इंटर्नशिप शालाओं (शासकीय / अशासकीय) को चिन्हित करना।
- इंटर्नशिप को नियत अंतराल से मॉनिटर करना और राज्य मुख्यालय को रिपोर्ट भेजना।
- शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान प्रथम वर्ष में शासकीय एवं अशासकीय दोनों प्रकार की शालाओं का आवंटन करना चाहिए। शालाओं की संख्या का निर्धारण छात्राध्यापकों की संख्या के आधार पर किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक छात्राध्यापक को एक शासकीय और एक अशासकीय शाला का आवंटन करना है। इनकी प्राथमिकता का क्रम शासकीय / अशासकीय या अशासकीय / शासकीय हो सकता है। छात्राध्यापक प्रथम वर्ष में 2 सप्ताह (12 दिवस) शासकीय व 2 सप्ताह (12 दिवस) अशासकीय शालाओं में इंटर्नशिप की गतिविधियों को पूर्ण करेगा।
- इंटर्नशिप के द्वितीय वर्ष के दौरान प्रत्येक छात्राध्यापक को एक शासकीय शाला में लगभग 80 प्रतिशत (14 सप्ताह या 84 दिवस) समय तथा अशासकीय शालाओं में 20 प्रतिशत (2 सप्ताह या 12 दिवस) समय देकर इंटर्नशिप की गतिविधियों को पूर्ण करना है।

c) संबद्ध निकाय :- भारत में डिग्री स्तर के शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की संबद्धता विश्वविद्यालय के अंतर्गत एव डिप्लोमा स्तर के कार्यक्रम की संबद्धता एस.सी.ई.आर.टी. / माध्यमिक शिक्षा मंडल के अंतर्गत दी जाती है। शिक्षक शिक्षा की परीक्षा योजना और इंटर्नशिप की परीक्षा योजना को माध्यमिक शिक्षा मण्डल प्रस्तावित करता है। परीक्षा योजना में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार की मूल्यांकन योजना का निर्माण करना है। परीक्षा योजना के साथ–साथ माध्यमिक शिक्षा मण्डल को विभिन्न शिक्षक शिक्षा संस्थानों की इंटर्नशिप के दौरान मॉनिटरिंग और पर्यवेक्षण (सुपरविज़न) योजना का भी निर्माण करना चाहिये और इसके लिए मॉनिटरिंग कम सुपरविज़न प्रारूप बनाना चाहिए। संस्थानों की संकलित एवं व्यक्तिगत रिपोर्ट बना कर NCTE को भेजना चाहिए।

भूमिका और जिम्मेदारियाँः संबद्ध संस्थाएं

- शाला इंटर्नशिप के वार्षिक केलेण्डर निर्माण में स्कूल शिक्षा विभाग को परीक्षा कार्यक्रम की अवधि को लेकर सलाह देना।
- इंटर्नशिप घटकों की मूल्यांकन योजना बनाना और वितरित करना।
- इंटर्न के कार्य निष्पादन का आकलन करने के लिए शिक्षक शिक्षा संस्थानों को आकलन की प्रक्रिया समझाना और क्रियान्वित करना।
- शिक्षक शिक्षा संस्थानों की समय–समय पर जिला शिक्षा अधिकारी के सहयोग से मॉनिटरिंग करवाना और संकलित रिपोर्ट NCTE भेजना।

d) शिक्षक शिक्षा संस्थान :- शिक्षक शिक्षा संस्थान इंटर्नशिप कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- संस्थान प्रमुख द्वारा इंटर्नशिप समन्वयक की नियुक्ति।

- इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा छात्राध्यापकों को शासकीय/अशासकीय शालाओं का आवंटन करना।
- इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा संस्थान के सुपरवाईज़र/विषय विशेषज्ञों को लैब शालाओं में सप्ताहिक समय सारणी के आधार पर भेजना।
- NCTE द्वारा बनाई गयी पॉलिसी का अनुसरण करना।
- संबद्धता निकाय (एस.सी.ई.आर.टी.)/(मा.शि.म.) द्वारा बनाई गयी परीक्षा योजना को लागू करना।
- लैब शालाओं एवं उनके मेंटर शिक्षको के साथ निरन्तर संपर्क रखना।
- लैब शालाओं के प्रधान अध्यापकों का इंटर्नशिप कार्यक्रम के तहत उन्मुखीकरण करना।
- लैब शालाओं में इंटर्नशिप मार्गदर्शिका के बारे में चर्चा करना।
- इंटर्नशिप मार्गदर्शिका में प्रस्तावित गतिविधियों को शिक्षक शिक्षा संस्थान के अकादमिक सदस्यों और लैब शाला के मेंटर शिक्षक के साथ मिलकर कुछ आवश्यकता आधारित और स्थानीय गतिविधियों को डिजाइन करना। जैसे– पड़ोसी शाला के आसपास की ऐतिहासिक धरोहरों का सर्वे, स्थानीय कलाकारों के साथ साक्षात्कार, रिटायर्ड पुरस्कार प्राप्त सैनिक और शिक्षकों के साथ बैठक, सांस्कृतिक महत्व के स्थानों का भ्रमण, आस पास की स्वच्छता संबंधी कार्यप्रणाली का आकलन इत्यादि।

भूमिका और जिम्मेदारियाँ: शिक्षक शिक्षा संस्थान

- संस्थान प्रमुख द्वारा इंटर्नशिप समन्वयक की नियुक्ति करना।
- लैब शालाओं को इंटर्नशिप मार्गदर्शिका प्रदाय करना।
- लैब शाला के प्रधानाध्यापक/प्राचार्य और मेंटर शिक्षकों का उन्मुखीकरण और सह–बैठक का आयोजन करना।
- मेंटर शिक्षक के साथ अतिरिक्त गतिविधियाँ करवाने के लिए पूरक सामग्री तैयार करना।
- मेंटर शिक्षक के साथ पाक्षिक समीक्षा बैठक आयोजित करना।
- शिक्षक शिक्षा संस्थानों में नियमित अन्तराल से इंटर्न के साथ फालोअप बैठको का आयोजन करना।
- इंटर्नशिप कार्यक्रम के क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग भी शिक्षण अभ्यास के अवलोकन के साथ करना।
- मेंटर शिक्षक के साथ भागीदारी करते हुए इंटर्न के इंटर्नशिप कार्यक्रम के निष्पादन का आकलन करना।

e) इंटर्नशिप शाला/लैब शाला :-

इंटर्नशिप लैब शाला शिक्षक शिक्षा संस्थानों का विस्तार केन्द्र होता है। संस्थान द्वारा लैब शाला के उच्च योग्यता वाले अनुभवी शिक्षक का चयन कर उनका उन्मुखीकरण किया जाता है जो संपूर्ण इंटर्नशिप कार्यक्रम का क्रियान्वयन शाला स्तर पर करवाते हैं। मेंटर शिक्षक छात्राध्यापकों का निरन्तर सुपरविज़न करते हैं और उन्हें शाला की विभिन्न संचालित गतिविधियों एवं समुदाय के साथ की गतिविधियों में आवश्यक मार्गदर्शन देते हैं।

मेंटर शिक्षक विभिन्न आकलन प्रपत्रों जैसे रेटिंग स्केल, प्रश्नावली और अवलोकन प्रपत्रों के माध्यम से इंटर्न के कार्य निष्पादन का आकलन करता है।

भूमिका और जिम्मेदारियाँ– इंटर्नशिप शाला/लैब शाला

- उच्च योग्यताधारी एवं प्रेरित शिक्षक का मेंटर के रूप में चयन कर शिक्षक शिक्षा संस्थानों के साथ जोड़ना।
- चयनित मेंटर शिक्षक और छात्राध्यापकों का शिक्षक शिक्षा संस्थानों में उन्मुखीकरण करना।
- शाला की सभी सुविधायें जैसे–पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल का मैदान इत्यादि इंटर्न को उपलब्ध

करवाना।

- छात्राध्यापकों को शाला की समस्त गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति देना जैसे– प्रार्थना, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिक्षक पालक संघ बैठक, खेल, विभिन्न सदनों की आंतरिक प्रतियोगितायें और विषय शिक्षण में छात्राध्यापकों को मार्गदर्शन करना।
- छात्राध्यापकों के कार्य निष्पादन के आकलन में सहयोग करना।
- समय–समय पर इंटर्न की समस्याओं और कठिनाईयों का समाधान करना।

6. इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक की जिम्मेदारियाँ

इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक को कक्षा शिक्षण, कक्षा प्रबंधन, शाला व समुदाय आधारित विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता करनी होती है, इसके लिए इंटर्न में समझ, दक्षता और कौशल का विकास करना चाहिए। इनमें से कुछ गतिविधियाँ प्रथम वर्ष व कुछ द्वितीय वर्ष में करना होती है। कुछ सुझावात्मक गतिविधियाँ निम्नानुसार है।

- इंटर्नशिप शाला और उसके आसपास के समुदाय की समझ।
- शाला की पाठ्यपुस्तको और पाठ्यक्रम का विश्लेषण।
- नियमित शिक्षकों की कक्षाओं का अवलोकन।
- प्रथम वर्ष में 20 पाठों का अवलोकन जिसमें 10 प्राथमिक स्तर के और 10 माध्यमिक स्तर के होगें।
- नवाचारी केन्द्र (ऐसी शालाएँ/केन्द्र जहाँ नवाचारी गतिविधियों करवाई जा रही हों) का भ्रमण करना।
- सहपाठी इंटर्न की कक्षाओं का अवलोकन।
- इंटर्नशिप शाला की केस–स्टडी (शाला प्रोफाईल) का निर्माण करना।
- पाठ योजना और इकाई योजना को तैयार करना।
- इकाईयों का चयन करते समय इंटर्न लैब शाला के वार्षिक केलेण्डर का अनुसरण अवश्य करें।
- प्राथमिक शालाओं में 4 विषयों की वर्तमान में पढ़ाई जाने वाली इकाई का शिक्षण करना।
- माध्यमिक शालाओं में प्रस्तावित पाठ्यक्रम के चयनित 2 विषयों की वर्तमान में पढ़ाई जाने वाली इकाई का शिक्षण करना।
- व्यवस्थापक शिक्षक के रूप में शिक्षण करना।
- छात्राध्यापक विषय की पूर्व तैयारी करके जाये। अपने साथ पाठ योजना के साथ–साथ उस दिन अध्यापन की आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्री को साथ लेकर जाये।
- शाला में रखी उपस्थिति पंजी में नियमित हस्ताक्षर करना। उपस्थिति पंजी शाला अनुभव कार्यक्रम के पश्चात् प्रधानाध्यापक द्वारा प्रमाणित कर शिक्षक शिक्षा संस्थान में जमा की जाएगी, जिसके आधार पर इंटर्नशिप अवधि के दौरान की छात्राध्यापक की उपस्थिति का प्रतिशत निकाला जायेगा।
- शिक्षण अधिगम स्रोतो का विकास कर कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
- निदानात्मक परीक्षण का निर्माण एवं उपचारात्मक शिक्षण की योजना का आयोजन करना।
- किसी एक छात्र की केस स्टडी करना।
- शाला से संबंधित कम से कम एक समस्या का चयन कर क्रियात्मक अनुसंधान करना।
- प्रश्न पत्र एवं अन्य मूल्यांकन प्रपत्रों का निर्माण करना।
- सामुदायिक कार्य एवं सामुदायिक सर्वे करना।
- रिफ्लेक्टिव डायरी या जर्नल में दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों और प्रतिक्रियाओं का संधारण करना।
- किसी एक चयनित थीम पर टर्म पेपर लिखना।
- शिक्षक शिक्षा संस्थान और इंटर्नशिप शाला अपनी विशेष स्थानीय आवश्यकता के आधार पर अतिरिक्त गतिविधियों का भी चयन कर सकते हैं।

7. छात्राध्यापक की प्रगति (कार्य निष्पादन) का आकलन एवं प्रमाणीकरण

NCTE रेग्युलेशन–2014 के अनुसार इंटर्न की प्रगति का आकलन संस्थान के अकादमिक सदस्यों, लैब शालाओं के प्रार्चायों और मेंटर शिक्षको की संयुक्त जिम्मेदारी है। आकलन में वास्तुनिष्ठता एवं पारदर्शिता लाने के लिए संबद्धता निकाय को विस्तृत मूल्यांकन योजना प्रस्तावित करनी चाहिये और आकलन के लिए एक व्यवस्थित प्रणाली का सुझाव देना चाहिये। सभी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में एकरूपता लाने के लिए शाला अवलोकन प्रपत्र, शिक्षण गुणवत्ता आकलन प्रपत्र, टर्म पेपर, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, मूल्यांकन प्रपत्र इत्यादि के प्रारूपों का विकास NCTE द्वारा किया जाना चाहिये।

8. शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम (दो वर्षीय)

I. इंटर्नशिप प्रथम वर्ष– शाला अनुभव कार्यक्रम /स्कूल एक्सपोजर प्रोग्राम (SEP)

शाला अनुभव कार्यक्रम के अन्तर्गत शाला से संबंधित समस्त गतिविधियों से छात्रों का परिचय करवाया जाता है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापकों में पेशेवर दक्षता और शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करना है। इसमें छात्राध्यापक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और शाला के वातावरण से परिचित होते हैं साथ ही शाला के क्षेत्र और समुदाय से परिचित होते हैं, जहाँ शाला में आने वाली समस्याओं के साथ–साथ शाला और समुदाय के बीच के संबंध को समझने का प्रयास करते हैं, इस प्रकार शाला के संपूर्ण परिदृश्य से छात्र का परिचय होता है।

i. उद्देश्य–

- शाला के वातावरण से परिचित होना तथा छात्रों के सर्वांगिण विकास हेतु निर्धारित विभिन्न आयामों को समझना।
- शाला की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना एवं उपलब्ध संदर्भ सामग्री का बच्चों के विकास एवं शिक्षण शास्त्र पद्धति के आधार पर आलोचनात्मक अध्ययन करना।
- नियमित शिक्षक की कक्षाओं का अवलोकन करना एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समझ कर अपनी प्रतिक्रिया देना।
- शाला और समुदाय के बीच के संबधों को समझ कर अधिगम वातावरण का निर्माण करना।

ii. शाला अनुभव कार्यक्रम हेतु प्रस्तावित गतिविधियाँः–

शाला अनुभव कार्यक्रम प्रथम वर्ष में 04 सप्ताह का होगा जिसमें निम्न 03 गतिविधियाँ प्रस्तावित हैः–

- शाला अवलोकन
- पाठ्य पुस्तको का विश्लेषण
- नवाचारी शिक्षण शास्त्र एवं अधिगम के नवाचारी केन्द्रों का भ्रमण।

स्कूल एक्पोजर कार्यक्रम (SEP) तीन चरणों में होगा

- **a. शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान पूर्व गतिविधियाँ**
- **b. शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान की गतिविधियाँ**
- **c. शाला अनुभव कार्यक्रम के पश्चात की गतिविधियाँ**

a. शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान पूर्व गतिविधियाँः–

समस्त शिक्षण संस्थानों को लैब एरिया की अच्छी शालाओं का आवंटन करना चाहिए। उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा आवंटित शालाओं में संसाधन और अधिगम सामग्री उपलब्ध करवाना चाहिये। इस प्रकार बहुत सारी गतिविधियाँ पूर्व में ही शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान द्वारा

पूर्ण कर ली जानी चाहिए। इंटर्नशिप शाला के प्रधानाध्यपक एवं चयनित मेंटर का उन्मुखिकरण कार्यक्रम किया जाना चाहिये।

- छात्र अध्यापको को SEP के प्रमुख उद्देश्यों से परिचित करवाया जाये।
- संस्थान के अकादमिक सदस्यों द्वारा पूर्व इंटर्नशिप गतिविधि के समय में SEP के उद्देश्यों की विस्तृत चर्चा करनी चाहिये। SEP की आवश्यकता पर चर्चा करना चाहिये तथा SEP कार्य के दौरान होने वाली गतिविधियाँ, कार्य करने वाले प्रपत्रों और रिपोर्ट पर चर्चा कर समझाया जाना चाहिए। शाला अनुभव कार्यक्रम प्रारम्भ होने की और पूर्ण होने की अवधि को बताया जाना चाहिये।
- छात्राध्यापकों को सूचित किया जाये की उन्हें 04 सप्ताह के दौरान, 02 सप्ताह शासकीय एवं 02 सप्ताह अशासकीय शालाओं में जाना है।
- प्रत्येक छात्राध्यापक को पास–पास वाली शासकीय और अशासकीय शालाओं का आवंटन किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक छात्राध्यापक को इन चयनित शालाओं के अलावा एक नवाचारी केन्द्र का भी भ्रमण करना है जहाँ नवाचारी पद्धति से शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया की जा रही है।
- स्कूल एक्पोजर कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्राध्यापकों से आशा की जाती है की वे शाला का अवलोकन कर, शाला में होने वाली विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता कर अनुभव प्राप्त करें जिसमें शाला एवं छात्रों का विकास होता है।
- छात्राध्यापकों की समझ का अवलोकन करने के लिये 02 पैरामीटर तय किये गये हैं।
  - शाला प्रोफाइल
  - शाला के कार्य एवं गतिविधियाँ

  - **शाला प्रोफाइल–** शाला प्रोफाइल के अन्तर्गत शाला का स्थापना वर्ष, प्रबंधन का प्रकार, प्रबंधन की टीम, शाला के छात्रों का डाटा रिकार्ड, शाला के शिक्षकों को प्रोफाइल, शाला में संधारित विभिन्न रिकार्ड, आधारभूत संरचना की उपलब्धता, शाला की उपलब्धि और शाला की स्थानीय विशेषताएँ एवं समुदाय तथा पर्यावरण को शामिल करना चाहिए।

  - **शाला के कार्य एवं गतिविधियाँ–** शाला के अंतर्गत अपनाई जाने वाली शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ, प्रार्थना सभा का स्वरूप शिक्षण अधिगम में ICT का उपयोग, समुदाय के साथ संलग्न गतिविधियाँ एवं सेवाएँ, मध्यान भोजन का क्रियान्वयन, स्टाफ एवं समुदाय के साथ आयोजित होने वाली बैठकें इत्यादि।

- प्रत्येक छात्राध्यापक को शाला पूर्व गतिविधियों के दौरान प्रशिक्षित किया जाए कि शाला में अवलोकन के दौरान छात्राध्यापक/प्रधानाध्यापक एवं मेंटर शिक्षक निम्नानुसार अपने कार्यों का सम्पादन करेंगे :–
  - छात्राध्यापक सर्व प्रथम संस्थान के प्राचार्य/प्रधानाध्यापक को अपना परिचय आदेश और शपथ पत्र देगें।
  - छात्राध्यापक शिक्षण संस्थान द्वारा दी गयी छात्रों की सूची और संस्थान द्वारा दिया गया उपस्थिति रजिस्टर प्राचार्य को सौंपेगें।
  - छात्राध्यापक पूर्ण समय शाला में उपस्थित रहकर दोनों समय उपस्थित रजिस्टर में हस्ताक्षर करेगें।
  - प्रधानाध्यापक प्रथम दिवस, स्टाफ और बच्चों से छात्राध्यापक का परिचय करवायेंगें।
  - छात्राध्यापक को निर्धारित गणेश में अवलोकन की अनुमति देगें।
  - छात्राध्यापकों के अवलोकन हेतु समय सारणी का निर्धारण नोट करवायेंगे और हस्ताक्षर लेगें।
  - शाला की विभिन्न गतिविधियों में कार्यविभाजन कर ड्यूटी लगायेगें।
  - छात्राध्यापकों की शाला में बैठक व्यवस्था सुनिश्चित करेगें।

- शाला अनुभव कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रतिवेदन के रिकार्ड को प्रमाणित कर मूल्यांकन हेतु सहयोग करेगें।
- छात्राध्यापकों को बच्चों के पालको से परिचय कराने का अवसर यथा संभव उपलब्ध करायेंगे जिससे बच्चों के सामाजिक, परिवारिक एवं आर्थिक परिवेश पर छात्राध्यापक की समझ विकसित हो सके।
- विशेष परिस्थितियों में आवश्यकतानुसार अवकाश लेने पर रजिस्टर में दर्ज करेगें।
- अनियमित छात्राध्यापक की सूचना संस्थान प्रमुख को देंगे।

❖ **पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य स्रोत सामग्री का विश्लेषणः—**

- छात्राध्यापको से आशा की जाती है कि वे 2 विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करेंगे। जिसमें से **01 पुस्तक प्राथमिक स्तर एवं दूसरी पुस्तक माध्यमिक स्तर की होगी**। इस गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य है की पाठ्यपुस्तक एवं स्रोत सामग्री का छात्रों के विकास में एवं शिक्षण शास्त्र के आधार पर आलोचनात्मक अध्ययन करना। यह संस्थान में करवायी जाने वाली प्रमुख गतिविधि है जो की छात्राध्यापकों को 02 या 03 के समूह में करवायी जाना चाहिये।
- प्रत्येक समूह से आशा की जाती है की वह 02 पाठ्यपुस्तक या स्रोत सामग्री का विश्लेषण करेगा जिसमें **01 प्राथमिक एवं 01 माध्यमिक स्तर** की होगी।
- समूह को कार्य देते वक्त यह सावधानी देनी चाहिये की प्रत्येक समूह को विभिन्न प्रकार की पाठ्यपुस्तके एवं स्रोत सामग्री दी जाये, हमेशा ध्यान रखा जाये की किन्ही भी 02 समूह को एक समान सामग्री का विश्लेषण ना दिया जाये।
- छात्राध्यापकों से आशा की जाती है की वे निम्न बिन्दुओं पर पाठ्यपुस्तकों का अवलोकन करें।
- पाठ्यपुस्तको में पाठो का चयन बच्चों के मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास के अनुसार किया गया है या नहीं।
- सभी विषयों के ज्ञान के संगठन में भारतीय संविधान के मूल्यों की गूँज व्यापक रूप से सुनाई दे रही है या नहीं इसका वश्लेषण करें।
- पाठ्यपुस्तक के पाठों और पाठ प्रस्तुतीकरण के बीच अंतःविषय संबंध एवं विषयगत संबंध है या नहीं विश्लेषण करना।
- पाठ्य पुस्तकों में दिया गया ज्ञान छात्र को दैनिक जीवन के अनुभवों से जोड़ता है या नहीं यह विश्लेषण करना।
- पाठ्यपुस्तक या स्रोत सामग्री लिंग, शान्ति, स्वास्थ एवं दिव्यांग बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील है या नहीं।
- मूल्यों एवं दृष्टिकोणों के मध्य सामंजस्य करना।
- शैक्षिक तकनीक के उपयोग की क्षमता विकसित करना।
- ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में लचीलापन, सृजनात्मकता एवं बच्चों में ज्ञान के निर्माण के लिए प्रोत्साहित करना।
- पाठ्यक्रम में सूचनाओं के बोझ को कम करते हुए पाठो में अन्तःगतिविधियों की अधिकता एवं बच्चों की समझ आने वाली आम बोल—चाल की भाषा में प्रस्तुतीकरण दिया गया है या नहीं।
- पाठ्यसामग्री में आकलन की संलग्नता है या नहीं।
- पाठ्यसामग्री में लिंग के प्रति अनुकूलन एवं लिंग समावेशिता दिव्यांग बच्चों ओंर उपेक्षित समूह के मध्य सकारात्मक प्रतिक्रिया दी गयी है या नहीं।

पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य संसाधन सामग्री जैसे–

- RTE Act- 2009
- NCF -2005
- NCFTE- 2009
- Learning Without Burden (Yashpal Commission Report)
- Justice Verma Commission Report
- Delor's Commission Report

जैसी अन्य प्रमुख रिपोर्ट एवं स्रोत सामग्री को विश्लेषण/रिव्यू हेतु शामिल किया जा सकता है।

❖ **नवाचारी अधिगम केन्द्रों का भ्रमणः–**

शाला एक्पोजर कार्यक्रम (SEP) के अन्तर्गत छात्राध्यापकों द्वारा नवाचारी केन्द्रों का भ्रमण किया जाना आवश्यक है, इसके अन्तर्गत ऐसी शाला जो नये प्रयोग एवं अभ्यास के दौरान नवाचारी गतिविधियों को शामिल कर बच्चों और संगठन दोनो की शक्ति और उपलब्धि को बढ़ा रहे है, उनका चयन करना चाहिए।

छात्रों को ऐसे केन्द्रों के भ्रमण के समय यह ध्यान रखना चाहिये की इन केन्द्रों का कार्यशैली किस प्रकार की है, उनका स्टाफ एवं प्रबंधन किस तरह कार्य कर रहा है, ताकि नियमित शिक्षक बनते समय इन नवाचारी गतिविधियों की आत्मसात कर अच्छे शिक्षक बन सकें।

टीप– शाला अनुभव कार्यक्रम (SEP)संस्थान प्रमुख द्वारा अपनी संस्थाओं में इंटर्नशिप वार्षिक केलेण्डर जारी होने के अनुसार आवश्यक रूप से संपन्न करवा लेना होगा ताकि छात्राध्यापक इंटर्नशिप शालाओं में प्रशिक्षित होकर पहुंचे और इंटनशिप के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करें। संपूर्ण इंटर्नशिप कार्यक्रम की जिम्मेदारी संस्था प्रमुख की है।

b. शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान की गतिविधियाँः–

इसके अन्तर्गत शाला के अवलोकन के दौरान की जाने वाली गतिविधियाँ शामिल हैं। छात्राध्यापकों को पूर्व तैयारी के दौरान संस्थानों में जो प्रशिक्षण दिया गया है, उसके आधार पर उन्हें आंवटित शाला में दो–दो के समूह में पाठ्यपुस्तकों एवं स्रोत समाग्री का विश्लेषण, एक प्राथमिक स्तर पर तथा एक माध्यमिक स्तर पर करना है।

दोनो गतिविधियों हेतु छात्राध्यापकों को अतिरिक्त समय नहीं दिया जायेगा। यह कार्य उन्हें शाला अवलोकन के दौरान ही करना है। शाला अवलोकन के दौरान छात्राध्यापकों को शाला प्रारंभ होने से शाला समाप्त होने के मध्य की समस्त गतिविधियाँ का अवलोकन करना है। इन गतिविधियों के दौरान उन्हें संस्था में पढ़ाये गये सैद्धांतिक तथ्यों को व्यावहारिक रूप में परखते हुए अपनी रिपोर्ट में अंकित करना है।

शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापकों से आशा की जाती है की वे निम्नलिखित दस्तावेज संस्थान में जमा करेगें।

- ❖ शाला प्रोफाइल
- ❖ शाला अवलोकन रिपोर्ट
- ❖ स्कूल विजिट डायरी/रिफ्लेक्टिव जर्नल(Reflective Journal)

❖ **शाला प्रोफाईलः–** इसका उद्देश्य छात्राध्यापकों को शाला के समय और भौतिक मानकों से परिचित कराना है। इसके अन्तर्गत–शाला का इतिहास, स्थापना का वर्ष, छात्रों का नामांकन, अधोसंरचना, शाला अभिलेख, स्थानीय विशेषताएँ इत्यादि शामिल करना चाहिए।

छात्राध्यापक को निम्न पैरामीटर पर कार्य करना है–

- **शाला का इतिहास और विकास–**
  - स्थापना का वर्ष
  - स्थापना का कारण
  - शाला का प्रकार
  - शाला प्रबंधन
  - शाला की स्थापना में आने वाली बाधाएँ (समुदाय से चर्चा पर आधारित)

- **छात्रों का नामांकन**
  - वर्ष में नामांकित छात्रों की संख्या
  - नामांकन का रूझान
  - वर्ग अनुसार नामांकन
  - शाला प्रबंधन (SC, ST, OBC, etc)
  - ड्राप आउट रेट/पास रेट
  - पालकों का विवरण इत्यादि

- **शिक्षकों की प्रोफाईल–**
  - शिक्षकों की योग्यता
  - नियुक्त शिक्षकों की संख्या
  - उपस्थित शिक्षकों की संख्या (अनुपस्थिति का कारण)
  - प्रधानाध्यापक से संबंधित विवरण
  - शिक्षकों के मध्य कार्य विभाजन

- **अशैक्षणिक स्टाफ–**
  - अशैक्षणिक स्टाफ की योग्यता
  - नियुक्त अशैक्षणिक स्टाफ
  - अनुपस्थित अशैक्षणिक स्टाफ (अनुपस्थिति का कारण)
  - अशैक्षणिक स्टाफ का कार्य विभाजन

- **अधोसंरचनात्मक सुविधाएँ–**
  - प्राचार्य कक्ष
  - स्टाफ कक्ष
  - खेल का मैदान
  - कक्षाएँ
  - प्राथमिक सुविधाएँ
  - सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए हॉल इत्यादि

- **शाला अभिलेख रिकार्ड–**
  - शाला में संधारित अभिलेख रजिस्टर के प्रकार
  - विभिन्न प्रकार के रजिस्टरों की उपयोगिता
  - रजिस्टर के संधारणकर्त्ता संबंधित जानकारी

- **शाला परिसर–**
  - ➢ संस्थान परिसर की विशेषताएँ
  - ➢ शाला के आस–पास की अन्य शालाएँ
  - ➢ शाला का इतिहास एवं महत्व
  - ➢ शाला की भौगोलिक एवं जलवायु की स्थिति इत्यादि।

❖ शाला अवलोकन रिपोर्ट–

शाला अवलोकन रिपोर्ट का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापकों की शाला में होने वाली विभिन्न गतिविधियों से अवगत करना है। जिसमें मुख्यतः शिक्षण अधिगम से संबंधित गतिविधियाँ है। शाला अवलोकन रिपोर्ट को तैयार करते समय छात्राध्यापक को बहुत बारीकी से चार सप्ताह में होने वाली गतिविधियों का अवलोकन करना है। अवलोकन के साथ–साथ उन्हें हर गतिविधि को नोट करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जो उसे शाला अवलोकन रिपोर्ट तैयार करने में सहायक होगी। छात्राध्यापकों की डायरी में नोट किये गये अवलोकन भी उसे शाला अवलोकन रिपोर्ट तैयार करने में मदद करेगें।

इस प्रकार शाला अवलोकन रिपोर्ट तैयार करते समय छात्राध्यापक शाला की कार्य शैली की समालोचनात्मक समीक्षा कर अपने मत को शाला अवलोकन प्रपत्र में दर्ज करेगा।

निम्नलिखित पैरामीटर के आधार पर शाला अवलोकन रिपोर्ट तैयार की जा सकती है–

- **प्रार्थना सभाः–**
  - ➢ शाला में प्रारंभ और समाप्ति की प्रार्थना
  - ➢ प्रार्थना सभाओं के दिवस
  - ➢ प्रार्थना सभा की बारम्बारता
  - ➢ विशेष अवसर पर होने वाली प्रार्थना सभा
  - ➢ प्रार्थना सभा की प्रक्रिया
  - ➢ प्रार्थना सभा का स्थान इत्यादि

- **शिक्षण अधिगम गतिविधियाँः–**
  - ➢ छात्र अध्यापकों द्वारा अधिकतम 20 पाठो का अवलोकन किया जाना चाहिए, जिसमें से 10 प्राथमिक शाला के पाठ एवं 10 माध्यमिक शाला के पाठ होना चाहिए।
  - ➢ एक दिवस में 2 से अधिक पाठ नहीं देखना है।
  - ➢ कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षको द्वारा पाठ योजनाओं का निर्माण, शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण, कक्षा का अनुशासन, कक्षा में नवाचारी पद्धति का उपयोग, धीमी गति से पढ़ने वाले बच्चों का ध्यान रखना इत्यादि सिखाया जाना चाहिए, इस हेतु संस्थान के अकादमिक सदस्यों को चयनित शाला के शिक्षको का पर्याप्त उन्मुखिकरण कर उनकी शंकाओं का समाधान पूर्व में ही कर देना चाहिए।

- **नवाचारी पद्धति और ICT की उपयोगिताः–**
  - ➢ शिक्षण में ICT और नवाचारी पद्धति का उपयोग
  - ➢ शिक्षण शास्त्र में ICT को जोड़ना
  - ➢ ICT के उपयोग की चुनौतियाँ
  - ➢ ICT की प्रभावशीलता

- **समुदाय की सहभागिता और अतिरिक्त गतिविधियाँ:–**
  - समुदाय के लिए आयोजित की जाने वाली गतिविधियाँ
  - समुदाय के लिए आयोजित कार्यक्रम की बारम्बारता
  - समुदाय के साथ किए जाने वाले कार्यक्रम की उपयोगिता इत्यादि

- **सदन (HOUSE) गतिविधियों का निर्माण:–**
  - सदन में होने वाली गतिविधियाँ
  - सदन के लिए शिक्षक की जिम्मेदारियाँ
  - सदन में होने वाली गतिविधियों के प्रकार
  - सदन की बैठके
  - सदन के पुरस्कार इत्यादि

- **मध्यान्ह भोजन:–**
  - प्रभारी शिक्षक का नाम
  - मध्यान्ह भोजन का विवरण
  - प्रदाय किये जाने वाले भोजन का प्रकार एवं भंडारण
  - दिये गये भोज्य पदार्थ का गुणवत्ता सहित विवरण

- **बैठकें:–**
  - शाला में आयोजित होने वाली बैठको की संख्या
  - शाला में छात्रपरिषद् (Cabinet) के साथ होने वाली बैठकों की संख्या
  - शाला में शिक्षक पालक संघ के साथ होने वाली बैठको की संख्या
  - बैठको की बारम्बारता
  - बैठक में उपस्थिति
  - बैठक का समय
  - बैठक का कारण
  - बैठक में अनुपस्थिति का कारण इत्यादि।

❖ **स्कूल विजिट डायरी/रिफ्लेक्टिव जर्नल:–** एन.सी.टी.ई. के अनुसार डी.एल.एड. कार्यक्रम का एक मुख्य उद्देश्य एक चिंतनशील अध्यापक को तैयार करना है जो शैक्षिक सिद्धांतों और व्यवहार में विरोधाभास ना रखकर सिद्धांतों को अपने व्यवहार में ढालने का प्रयास करे। छात्राध्यापकों से आशा की जाती है की दैनिक दिनचर्या में प्राप्त शाला के अनुभव, बच्चों के व्यवहार, व्यावसायिक चुनौतियाँ इत्यादि पर चिंतन कर अपने अनुभवों का समीक्षात्मक लेखन कार्य स्कूल विजिट डायरी/रिफ्लेक्टिव जर्नल में करें। यह विश्लेषण उसे सीखने में और सुविधादाता शिक्षक बनने में मील का पत्थर साबित होगा। इसमें छात्राध्यापक स्वयं के विश्लेषण, चिंतन और साझा अनुभवों से भावी शिक्षक बनने की प्रक्रिया में कदम बढ़ायेगा।

c. शाला अनुभव कार्यक्रम के पश्चात की गतिविधियाँ (आंतरिक मूल्यांकन)

छात्राध्यापक द्वारा चार सप्ताह के स्कूल एक्सपोजर कार्यक्रम (SEP) के पश्चात यह आशा की जाती है की वह निम्नलिखित प्रपत्र और रिकार्ड जमा करे। प्रत्येक रिपोर्ट के साथ तथ्यात्मक जानकारी एवं फोटोग्राफ अवश्य संलग्न करें,

1) शाला प्रोफाईल

2) शाला अवलोकन प्रपत्र
3) पाठ्यपुस्तक विश्लेषण रिपोर्ट
4) नवाचारी केन्द्र के भ्रमण की रिपोर्ट
5) रिफ्लेक्टिव जर्नल

एक या दो दिवसीय सेमीनार का आयोजन संस्थान में लैब एरिया की शालाओं के मेंटर शिक्षकों की उपस्थिति में करवाया जाये। इसमें छात्राध्यापक अपने समस्त दस्तावेजों को संस्थान के विषय विशेषज्ञ, सुपरवाईजर, शिक्षक और मेंटर शिक्षक की उपस्थिति में प्रस्तुत करेंगे। प्रत्येक छात्राध्यापक का आंतरिक मूल्यांकन लैब एरिया के मेंटर शिक्षक/प्रधानाचार्य, संस्थान सुपरवाईजर एवं विषय विशेषज्ञ शिक्षकों का सामूहिक उत्तरदायित्व है।

iii. छात्राध्यापकों का आकलन (बाह्य मूल्यांकन) – आकलन शैक्षिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। इसी लिए एन.सी.टी.ई. द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की बात कही गई है। भविष्य के शिक्षकों के लिए एक सुविधाजनक आकलन प्रक्रिया का निर्माण होना चाहिए जिससे इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों की उपलब्धि का आकलन किया जा सके। यह एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें छात्राध्यापकों के सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक रूप से जोड़ा जाता है, इसमें छात्राध्यापक का आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन किया जाता है। आंतरिक मूल्यांकन संस्थान सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ और लैब एरिया के मेंटर शिक्षक/प्राधानाध्यापक की सामूहिक जिम्मेदारी है। बाह्य मूल्यांकन माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा नियुक्त बाह्य मूल्यांकन कर्ता द्वारा सेमीनार के दौरान किया जाएगा।

- **सेमीनार का आयोजनः–** शिक्षक शिक्षा संस्थान एक से दो दिवसीय (छात्रों की संख्या के अनुसार) सेमीनार का आयोजन माध्यमिक शिक्षा मण्डल के निर्देशो पर नियुक्त बाह्य मूल्यांकन कर्ता की उपस्थिति में करायेंगे जिसमें छात्राध्यापक अपने अनुभवों को साझा करेगें। छात्राध्यापक SEP के दौरान तैयार रिपोर्ट एवं दस्तावेजो को जमा करेंगे एवं पी.पी.टी. द्वारा अपने कार्यों पर पांच मिनिट का प्रस्तुतीकरण देगें। सेमीनार प्रस्तुतीकरण और जमा दस्तावेजों (रिपोर्ट एवं प्रपत्र) पर अधिभार के आधार पर बाह्य मूल्यांकन कर्ताओं द्वारा मौखिक एवं लिखित मूल्यांकन किया जायेगा और अंक माध्यमिक शिक्षा मण्डल को नोडल संस्था के माध्यम से प्रेषित किये जायेंगे।

सेमीनार में चर्चा के बिन्दु

1) शाला प्रोफाईल पर चर्चा
2) शाला अवलोकन रिपोर्ट
3) नवाचारी केन्द्र का भ्रमण
4) पाठ्यपुस्तक और अन्य सामग्री का समालोचनात्मक विश्लेषण
5) सेमीनार प्रस्तुतीकरण
   - स्रोत सामग्री का विकास और शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) पर चर्चा
     - एक शिक्षण अधिगम सामग्री– हिन्दी विषय पर चर्चा
     - एक शिक्षण अधिगम सामग्री– गणित विषय पर चर्चा
   - रिफ्लेक्टिव जर्नल पर चर्चा
     - प्राथमिक शाला की रिफ्लेक्टिव जर्नल रिपोर्ट
     - माध्यमिक शाला की रिफ्लेक्टिव जर्नल रिपोर्ट
   - कक्षा अवलोकन रिपोर्ट पर चर्चा
     - प्राथमिक शाला के 10 कक्षा अवलोकन
     - माध्यमिक शाला के 10 कक्षा अवलोकन
   - शाला की शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता (छात्राध्यापक का पोर्टफोलियो)
     - विभिन्न बैठकों में सहभागिता की रिपोर्ट
     - समुदाय के साथ कार्य पर रिपोर्ट

- **शाला इंटर्नशिप प्रथम वर्ष मूल्यांकन योजनाः–** शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रथम वर्ष में आंतरिक मूल्यांकन के 50 अंक तथा बाह्य मूल्यांकन के 50 अंक निर्धारित हैं। इस प्रकार कुल 100 अंक शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान दिये जायेंगे। आंतरिक मूल्यांकन संस्थान स्तर पर तथा बाह्य मूल्यांकन माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा नियुक्त बाह्य मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा उपलब्ध रिकार्ड और मौखिक एवं लिखित आकलन के आधार पर किया जाएगा। इसके लिए संस्थान स्तर पर सेमीनार का प्रस्तुतीकरण करना आवश्यक है। सेमीनार में प्रत्येक छात्राध्यापक अपने शाला के अनुभव को पी.पी.टी. के माध्यम से साझा करेगा। प्रत्येक छात्राध्यापक निर्धारित समय पांच मिनिट में अपनी प्रस्तुति देगा। जिसके आधार पर बाह्य मूल्यांकनकर्त्ता मौखिक और लिखित रिकार्ड पर छात्राध्यापक का मूल्यांकन करेंगे।

शाला इंटर्नशिप प्रथम वर्ष मूल्यांकन योजना

पूर्णाक – 100 | **आंतरिक मूल्यांकन अंक – 50**
अवधि– 24 | **बाह्य मूल्यांकन अंक – 50**

क्र.	गतिविधि का नाम	अधिभार	रिपोर्ट / दस्तावेजों / गतिविधि का प्रकार	आंतरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन		योग
				शाला प्रमुख मेंटर द्वारा	संस्थान सुपरवाइजर / विषय विशेषज्ञ द्वारा	मौखिक	लिखित	
1	शाला प्रोफाईल का निर्माण	10%	शाला प्रोफाईल रिपोर्ट (शासकीय और अशासकीय)	5	–	5	–	10
2	शाला अवलोकन	10%	शाला अवलोकन रिपार्ट (शासकीय और अशासकीय)	5	–	5	–	10
3	नवाचारी केन्द्र का भ्रमण	10%	नवाचारी केन्द्र की भ्रमण रिपोर्ट	–	10	–	–	10
4	पाठ्यपुस्तक और अन्य स्त्रोत सामग्री का समालोचनात्मक विश्लेषण	20%	पाठ्यपुस्तक / अन्य स्त्रोत सामग्री की विश्लेषण रिपोर्ट (1 प्राथमिक एवं 1 माध्यमिक)	–	10	10	–	20
5	सेमीनार प्रस्तुतीकरण	10%	स्रोत सामग्री और शिक्षण अधिगम सामग्री (हिन्दी एवं गणित) विषय का रिकार्ड	–	5	5	–	10
		10%	रिफ्लेक्टिव जर्नल पर रिपोर्ट– 2 (प्राथमिक एवं माध्यमिक शाला)	–	5	5	–	10
		10%	कक्षा अवलोकन रिपोर्ट 5–5 प्राथमिक शाला (शा.–अशा.) और 5–5 माध्यमिक शाला (शा.–अशा.)	–	–	–	10	10
		10%	शाला की शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता का रिकार्ड (छात्राध्यापक का पोर्टफोलियो)	10	–	–	–	10
		10%	ICT की उपयोगिता– सेमीनार में पी.पी.टी. द्वारा प्रस्तुतीकरण।	–	–	–	10	10
	योग	100%		20	30	30	20	100

II. इंटर्नशिप द्वितीय वर्ष –शिक्षण अभ्यास, समुदाय के साथ कार्य

i. उद्देश्यः–

- प्रभावशाली अधिगम के लिए अपनाई जाने वाली विभिन्न शिक्षण पद्धतियों की समझ का विकास करना।
- सांस्कृतिक, शैक्षिक भ्रमण एवं खेल के द्वारा शिक्षा के प्रसार के लिए विभिन्न गतिविधियों द्वारा कौशलो का विकास करना।
- समुदाय के सदस्यों, प्रधानाध्यापक, साथी विद्यार्थियों, एवं विद्यार्थियों के साथ बातचीत की योग्यता का विकास करना।
- विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को पहचानना और उसे बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियें को आयोजित करना।
- विद्यार्थियों को स्वयं के ज्ञान का निर्माण करने के लिए गतिविधियों का आयोजन करना।
- समावेशी शिक्षण अभ्यास को विभिन्न प्रकार से आयोजित करना।
- CCE के लिए समझ, कौशल का विकास करना और उसका उचित क्रियान्वयन करना।
- पाठ्य योजनाओं का विकास करना एवं कक्षा आधारित क्रियात्मक अनुसंधान करना।
- शाला अनुभव कार्यक्रम का समालोचनात्मक चिंतन के आधार पर नियमित रिकार्ड संधारित करना।

ii. शाला इंटर्नशिप की गतिविधियाँः–

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष में 16 सप्ताह की इंटर्नशिप का आयोजन किया जायेगा, इसके लिए छात्राध्यापकों को लैब एरिया की शालाओं (शासकीय/अशासकीय) में नियुक्त किया जायेगा। शाला चयन के लिए छात्रों को एक विकल्प भी दिया जायेगा। आवंटित शाला में 5–6 से अधिक छात्राध्यापकों को नहीं भेजा जाना चाहिए। लैब शाला का आवंटन जिला स्तरीय समिति द्वारा किया जाएगा जिसमें छात्राध्यापकों को भेजने हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थान में एक इंटर्नशिप समन्वयक नियुक्त किया जाना आवश्यक है। शाला में छात्राध्यापकों को भेजने का अंतिम निर्णय इंटर्नशिप समन्वयक और संस्थान प्रमुख का होगा।

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम के तीन चरण होगें–

a) शाला इंटर्नशिप के दौरान पूर्व गतिविधियाँ
b) शाला इंटर्नशिप के दौरान गतिविधियाँ
c) शाला इंटर्नशिप के पश्चात् की गतिविधियाँ (आंतरिक मूल्यांकन)

a) शाला इंटर्नशिप के दौरान पूर्व गतिविधियाँः–पूर्व इंटर्नशिप के लिए जिला स्तर पर निर्धारित समिति द्वारा अच्छी शालाओं की पहचान कर शिक्षक शिक्षा संस्थानों को आवंटन किया जाएगा। पूर्व इंटर्नशिप लगभग 02 सप्ताह (12 दिवस) की होगी जिसके अन्तर्गत आवंटित शाला के प्रधानाध्यापकों एवं इंटर्नशिप समन्वयक का जिले की नोडल संस्था (डाइट) में उन्मुखीकरण किया जायेगा। इंटर्नशिप समन्वयक चयनित शालाओं के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त मेंटर शिक्षक का चयन कर उन्मुखिकरण कार्यक्रम का आयोजन संस्थान में करेंगे और छात्राध्यापक और मेंटर शिक्षक का परिचय करवाकर प्रत्येक की जिम्मेदारियों से अवगत करायेंगे। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य लैब शालाओं और शिक्षण संस्थानों के बीच संबंधो को उपयोगी और सुदृढ़ बनाना है।

- **मेंटर शिक्षक की पहचान एवं नियुक्तिः**–इंटर्नशिप समन्वयक आवंटित शाला का भ्रमण करेगा और शाला में बनाये जाने वाले मेंटर शिक्षको के लिए जानकारी एकत्र करेगा। उन्मुखिकण के दौरान की गई मेंटर शिक्षक की भूमिका को साझा करेगा जैसे, आदर्श पाठ योजना निर्माण को बताना, उसकी व्यावसायिक

विकास के लिए मार्गदर्शन देना जिससे वह छात्राध्यापकों को उचित मार्गदर्शन दे सके। यहाँ मेंटर शिक्षक, छात्राध्यापकों और शाला के विद्यार्थियों के मध्य होने वाली विभिन्न उपयोगी गतिविधियों में मध्यस्थ की भूमिका निभाएगा।

मेंटर शिक्षक छात्राध्यापकों को निम्नानुसार सहयोग करेगा–

- छात्राध्यापकों के उन्मुखिकरण में।
- छात्राध्यापको को शाला में समायोजन हेतु मदद करना एवं कक्षा के वातावरण निर्माण में लगातार सहयोग करना।
- कक्षा शिक्षण की योजना निर्माण में सहयोग करना।
- छात्राध्यापकों को विभिन्न अवसर प्रदान करना जैसे– विभिन्न प्रकार की कक्षाओं को देखना, योजना निर्माण के लिए निर्देश देना, पाठ योजना के लिए फीडबैक देना, कक्षा शिक्षण के दौरान सहयोग करना एवं कक्षा में निर्माणवादी पाठ्य योजना के दौरान फीडबैक देना जिसके आधार पर छात्रो की सुधारात्मक प्रक्रिया को निरन्तर जाँचना।
- आकलन करना।
- छात्राध्यापकों की उपलब्धि का नियमित आकलन करना और फीडबैक देना। छात्राध्यापकों का आकलन वस्तुनिष्ठता के आधार पर करना और रिकार्ड संधारित करना।

- **सुपरवाईजर/विषय विशेषज्ञ के रूप में संस्थान के अकादमिक सदस्यों की पहचान और विभिन्न शालाओं में नियुक्ति करना।**

इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा संस्थान के विभिन्न अकादमिक सदस्यों का उपलब्धता के आधार पर चयन किया जाना चाहिये। सुपरवाईजर/विषय विशेषज्ञ की नियुक्ति के समय उनको आवंटित की जाने वाली इंटर्नशिप शाला का नाम, छात्राध्यापकों का नाम और कक्षाओं का स्पष्ट आदेश लिखित रूप में दिया जाना चाहिये। इसकी विधिवत सूचना शाला के प्रमुख को भी दी जाना चाहिये। साप्ताहिक रूप से संस्थान में एक चार्ट का निर्माण करना चाहिये, जिसमें इंटर्नशिप शालाओं के नाम और भ्रमणकर्ता अकादमिक सदस्यों का नाम प्रदर्शित हो। प्रति सप्ताह यह चार्ट इस प्रकार बनाया जाये की प्रत्येक चयनित लैब शाला में कम से कम एक अकादमिक सदस्य सुपरवाईजर/विषय विशेषज्ञ के रूप में अवश्य भेजा जा सके। सुपरवाईजर को भेजे गयी शाला के मेंटर, छात्राध्यापकों की गतिविधियों के बीच समन्वयन करना चाहिए।

- **छात्राध्यापकों की भूमिका और जिम्मेदारियाँ:–**

इंटर्नशिप अवधि के दौरान छात्राध्यापकों से आशा की जाती है की–

a. सुविधादाता की भूमिका में–
   - इकाई/पाठ योजना का निर्माण
   - कक्षा शिक्षण
   - पाठ अवलोकन
   - TLM का निर्माण और उपयोग करना
   - ICT का समावेशण करना

b. आकलन और उपचार
   - CCE की गतिविधियों का निर्माण (यूनिट टेस्ट के साथ–साथ)
   - निदानात्मक परीक्षण का निर्माण और कठिन बिंदुओं की पहचान
   - उपचार की योजना बनाना और लागू करना।

c. शाला संदर्भ को समझना

- शाला की प्रोफाइल का निर्माण (शाला का प्रकार, अधोसंरचना, सुविधाएँ, शिक्षक, विद्यार्थी, समुदाय से संबंधित सूचनाएँ इत्यादि)
- छात्रों की उपलब्धि

d. अधिगम कार्य को समझना (केस स्टडी)

➢ 2–3 छात्रों की प्रोफाइल का निर्माण करना जिसमें चित्रण हो भाषा, सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, शौक, रूचि, अधिगम की आवश्यकता, स्वास्थ का स्तर, उपलब्धि, पालक का व्यवसाय, उनकी शैक्षिक योग्यताएँ एवं भाई बहन इत्यादि।

e. शाला की गतिविधियों में सहभागिता जैसे प्रार्थना सभा, मध्यान भोजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, बालसभा शिक्षक पालक संघ बैठके एवं समुदाय के साथ कार्यक्रम इत्यादि।

f. समुदाय और शाला–

➢ कक्षा के विद्यार्थियों के घरों का सर्वे।

➢ समुदाय के सदस्य–चयनित प्रतिनिधि और SMC सदस्यों पर चर्चा।

➢ पालकों से चर्चा।

- **संस्थान स्तर पर पूर्व इंटर्नशिप की तैयारी**

➢ पूर्व इंटर्नशिप कांफ्रेंस–चयनित शालाओं के प्रधानाध्यापक/मेंटर का 01 दिवसीय उन्मुखिकरण कार्यक्रम संस्थान में रखा जाये– जिसमें इंटर्नशिप कार्यक्रम उद्देश्य को समझाना, उन्हें छात्राध्यापकों को भावी शिक्षकों के रूप में तैयार करने में उनकी भूमिका से अवगत कराया जाये और संस्थान की लैब एरिया शाला से की जाने वाली अपेक्षाओं और अधिगम उद्देश्यो से परिचित कराया जाये।

➢ ईकाइ योजना, पाठ योजना, ब्लू प्रिंट, यूनिट टेस्ट, निदानात्मक परीक्षण, CCE पर चर्चा की जाये।

➢ छात्राध्यापकों के मध्य शाला के विभिन्न कार्यों का साप्ताहिक कार्यविभाजन किया जाये और छात्राध्यापकों द्वारा संधारित किये जाने वाले सभी रिकार्ड पर चर्चा की जाये।

➢ विभिन्न विषयों के पाठों पर आदर्श पाठ योजना का प्रस्तुतीकरण विषय विशेषज्ञ द्वारा किया जाये। प्रत्येक विषय की कम से कम एक आदर्श पाठयोजना का प्रस्तुतीकरण विशेषज्ञ द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए।इसमें छात्राध्यापकों के साथ विस्तृत चर्चा शामिल हो। आदर्श पाठ योजना संभवतः पास की लैब शाला में ले जाकर की जाए, जिससे छात्राध्यापकों को व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होगा और संस्थान की पोषित शालाओं को लाभ मिलेगा।

➢ छात्राध्यापक द्वारा प्रत्येक विषय में एक पाठ योजना का निष्पादन, आलोचनात्मक पाठ योजना के रूप में संभवतः लैब शाला में जाकर किया जाये।

➢ दो पाठ योजनाओं का अवलोकन और बाद में उस पर विस्तृत चर्चा संभवतः लैब एरिया शाला में ले जाकर की जाये।

➢ रिफलेक्टिव जर्नल लिखने का उन्मुखिकरण किया जाए।

- **रिफ्लेक्टिव जर्नलः**– इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक को अपनी प्रत्येक गतिविधि पर प्रतिक्रिया करने की आवश्यकता है। अपनी प्रतिक्रिया वे अपने विचारों, मतो, भावनाओं और अधिगम तरीकों के आधार पर करते हैं जिसे छात्रों पर अपनाते हैं, स्वमूल्यांकन करते है की कौन सा छात्र जानता है और कौन नहीं जानता है। छात्राध्यापकों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रत्येक गतिविधि पर ध्यान देने की आवश्यकता है जो शाला में छात्रों के विकास में सहयोग करती है जैसे– प्रार्थना सभा पर प्रतिक्रिया करना की यह किस प्रकार हो रही है, कितने दिनों बाद हो रही है, छात्रों की इसमें कितनी भागीदारी है, क्या यह छात्रों में मित्रतावत व्यवहार

के आधार पर हो रही है, इन सभी मुद्दे पर आलोचनात्मक परीक्षण छात्राध्यापकों द्वारा किया जाना चाहिये। यह अभ्यास छात्राध्यापक में एक अन्तःदृष्टि का विकास करता है। सभी प्रकार के अवलोकन और समालोचनाएँ छात्राध्यापक द्वारा नियमित रिकार्ड की जानी चाहिये, जो अन्त में रिफ्लेक्टिव जर्नल के रूप में संधारित होती है। छात्राध्यापकों में रिफ्लेक्टिव जर्नल पर अपने समालोचनात्मक विचारों को भी जोड़ने की स्वतंत्रता होनी चाहिये और यही आलोचनाएँ बाद में उसके नियमित शिक्षण अभ्यास के दौरान सुधारात्मक रूप में दिखाई देना चाहिये। यह कक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण उपयोगी दस्तावेज होता है जिसमें छात्राध्यापक द्वारा कक्षा में पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को पूर्ण करने के दौरान बच्चों की प्रतिक्रियाओं का लचीले रूप में आदान–प्रदान होना चाहिये। इससे यह भी पता चलता है की छात्राध्यापक अपनी कक्षा शिक्षण के दौरान लर्निंग आउटकम प्राप्त करने में कितना सफल रहा या कितना दूर है। अगर लर्निंग आउटकम नहीं प्राप्त कर पाया है तो क्या कारण है? अन्त में यह सब प्रतिक्रियाएँ सुझाव होती है जो शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करती हैं। इस प्रकार रिफ्लेक्टिव जर्नल छात्राध्यापक के लिए एक अति महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं।

संलग्नः–

रिफ्लेक्टिव जर्नल प्रारूप :– परिशिष्ठ क्र –2

b) शाला इंटर्नशिप के दौरान गतिविधियाँ

प्रत्येक छात्राध्यापक इंटर्नशिप की 16 सप्ताह की गतिविधि के दौरान 1 और 2 चरण में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की शालाओं में जायेंगे। इस दौरान छात्राध्यापक शाला के प्रधानाध्यापक द्वारा सौंपी गयी शाला से संबंधित समस्त गतिविधियों में अपनी संलग्नता बनाये रखेगें। वह शाला में पढ़ायेंगे भी और अपने सुपरवाईजर/विषय विशेषज्ञ और मेंटर टीचर **के** मार्गदर्शन में पाठयोजना का निर्माण कर कक्षा शिक्षण करेंगे। इस चरण में छात्राध्यापकों को एक नियमित शिक्षक का पूर्णकालिक अनुभव प्राप्त होता है।

- प्रथम 3 दिवस वह शाला से सम्बन्धित शिक्षक, प्रधानाध्यापक, अन्य स्टाफ एवं बच्चों के साथ चर्चा कर रिपोर्ट बनाने में व्यतित करता है।
- चयनित विषय के कक्षा शिक्षक की प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की कक्षाओं का अवलोकन कर चर्चा करता है। कक्षा अवलोकन के दौरान वह अधिगम परिस्थितियों को बारीकी से समझता है और बच्चों में व्याप्त व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने का प्रयास करता है। यह सब प्रक्रिया उसे शाला का वातावरण समझने में मदद करती है जहाँ उसे आगामी सप्ताहों में कार्य करना है।

  संलग्नः–

  कक्षा अवलोकन प्रारूप :– परिशिष्ठ क्र –3

  - **प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण और अवलोकन का विवरण**– प्राथमिक स्तर पर छात्राध्यापकों से आशा की जाती है कि वे 4 विषय की पाठयोजना का निर्माण कर पढ़ायेगें अर्थात प्राथमिक स्तर पर प्रत्येक विषय की 10 पाठयोजनाएं इस प्रकार 40 पाठयोजना का निर्माण करेंगें और पढ़ाएंगे।

  - **माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षण और अवलोकन का विवरण**– माध्यमिक स्तर पर छात्राध्यापकों से आशा की जाती है कि वे 2 चयनित विषय की पाठयोजना का निर्माण कर पढ़ायेगें अर्थात माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक विषय की 20 पाठयोजनाएं इस प्रकार 40 पाठयोजना का निर्माण करेंगें और पढ़ाएंगे।
- शाला में अधिगम संसाधनों का विकास करना।
- शाला के विषय शिक्षक की प्रत्येक विषय कि कम से कम 4 पाठ योजनाओं का अवलोकन करें।
- अपने साथियों कि प्रत्येक विषय कि कम से कम 4 पाठ योजनाओं का अवलोकन करें।
- 2 यूनिट टेस्ट अवश्य करवाएं जो निदानात्मक परीक्षण और उपचारात्मक शिक्षण पर आधारित हो।
- कियात्मक अनुसंधान एवं केस स्टडी करें।
- शाला संबंधित रिकार्ड को संधारित करें।
- शाला की प्रयोगशाला और पुस्तकालय का संधारण करें।

- रिफ्लेक्टिव जर्नल का संधारण करें।
- छात्राध्यापक स्वयं के पोर्टफोलियों का निर्माण करें।

टीपः– पोर्टफोलियो– यह छात्राध्यापक/छात्र के समग्र व्यक्तित्व का आकलन है। यहाँ पोर्टफोलियों में छात्राध्यापक की प्रगति एवं सीखने की प्रक्रिया का रिकार्ड रहता है। पोर्टफोलियों(फोल्डर) छात्राध्यापक की जाँच करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है जिसमें उसकी शैक्षिक और सहशैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान प्राप्त प्रशस्ति पत्र, प्रमाण पत्र, विशेष प्रोत्साहन पुरूस्कार का लेखा–जोखा संधारित रहता है।

छात्राध्यापक निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन करें और उसमें सहभागिता करें–

- प्रार्थना सभा
- साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियां
- क्लब (सदन गतिविधियां)
- प्रदर्शनी
- क्षेत्र भ्रमण और शैक्षिक भ्रमण या पर्यटन
- मूक संसद का प्रदर्शन
- क्विज (प्रश्नमंच)
- खेलकूद
- PTA और SMC बैठकें– विभिन्न बैठकों का रिकार्ड निम्नानुसार संधारित करेंः–

  –समिति का नाम
  –बैठक का दिनांक
  –समिति के अध्यक्ष का नाम
  –समिति के सदस्यों की संख्या पद सहित
  –निर्धारित दिनांक पर बैठक का ऐजंडा
  –समिति द्वारा लिये गये निर्णय
  –बैठक के अवलोकन के पश्चात् आपकी क्या समझ विकसित हुई।

- **क्रियात्मक अनुसंधान (इंटर्नशिप के दौरान)**

  छात्राध्यापकों को एक क्रियात्मक अनुसंधान करना आवश्यक है जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, शाला और समुदाय पर आधारित समस्या पर होना चाहिए।
  संलग्नः–
  क्रियात्मक अनुसंधान का प्रारूप :– परिशिष्ठ क्र. – 8

क्रियात्मक अनुसंधान के निम्नलिखित चरण हैं–

- समस्या की पहचान करना
- प्रस्ताव तैयार करना
- उपकरणों का निर्माण करना
- कार्ययोजना का क्रियान्वयन
- डाटा संकलन और विश्लेषणों हेतु एनकोडिंग करना
- डाटा का विश्लेषण और व्याख्या करना और रिपोर्ट राइटिंग

- **समुदाय सर्वे**

समुदाय से सम्बन्धित गतिविधियां–

- कुछ बच्चों के घरों का भ्रमण करना
- समुदाय के सदस्यों से चर्चा कर उनकी आवश्यकताओं को समझना

- समुदाय के सदस्यों से शाला से सम्बन्धित गतिविधियों पर चर्चा करना, समुदाय की गतिविधि में छात्राध्यापक द्वारा सहभागिता पर चर्चा करना।
- समुदाय के संसाधनों के उपयोग पर योजना बनाना। (समूह कार्य)

c) शाला इंटर्नशिप के पश्चात् की गतिविधियाँ (आंतरिक मूल्यांकन)

शाला इंटर्नशिप के पश्चात् की गतिविधियों में शाला इंटर्नशिप अवधि के दौरान की गयी समस्त गतिविधियों के अनुभव पर चर्चा की जाती है जिससे आगामी वर्ष में इस कार्यक्रम को और बेहतर बनाने की प्रेरणा मिलती है। इसके लिए संस्थान द्वारा **पश्च इंटर्नशिप कांफ्रेंस** का आयोजन किया जाये। पश्च इंटर्नशिप कांफ्रेंस के द्वारा लैब शाला और अकादमिक संस्थानों के संबंधों को सुदृढ़ करने और लंबे समय तक बनाये रखने में मदद मिलती है।

सेमीनार/पश्च इंटर्नशिप कांफ्रेंस का आयोजन– शिक्षक शिक्षा संस्थान एक से दो दिवसीय (छात्रों की संख्या के अनुसार) सेमीनार/पश्च इंटर्नशिप कांफ्रेंस का आयोजन करायेंगे जिसमें छात्राध्यापक अपने अनुभवों को साझा करेगें। छात्राध्यापक इंटर्नशिप के दौरान तैयार रिपोर्ट एवं दस्तावेजो को जमा करेंगे इनका आंतरिक मूल्यांकन करना, शिक्षक शिक्षा संस्थान के इंटर्नशिप समन्वयक, सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ और लैब शालाओं के मेंटर शिक्षक/प्राधानाचार्यों की संयुक्त जिम्मेदारी हैं।

- प्रत्येक छात्राध्यापक द्वारा अपने इंटर्नशिप अनुभव पर एक विस्तृत रिपोर्ट/प्रतिवेदन दिया जाना चाहिए।
- इंटर्नशिप के दौरान प्राप्त अनुभवों पर छात्राध्यापकों से चर्चा की जानी चाहिए।
- छात्राध्यापक को इंटर्नशिप के दौरान प्राप्त प्रतिक्रियाओं का प्रदर्शन करना चाहिए, जो छोटे समूह या विषय विशेषज्ञ (सुपरवाईजर) के सानिध्य में किया जाना चाहिए।
- इंटर्नशिप के दौरान बनाई गई TLM की प्रदर्शनी लगायी जानी चाहिए।
- **पश्च इंटर्नशिप कानफ्रेंस** में लैब शाला के मेटर शिक्षक/प्राधानाचार्य को बुला कर छात्राध्यापकों के साथ अनुभवों साझा करना चाहिए और फीडबैक एवं सुझाव देना चाहिए।
- छात्राध्यापकों से आशा की जाती है की वे अपनी पाठ योजनाओं का रिकार्ड, इकाई योजना का रिकार्ड, अवलोकन का रिकार्ड शाला प्रमुख/मेंटर शिक्षक द्वारा प्रमाणित करवाकर जमा करे। आंतरिक मूल्यांकन के दौरान मूल्यांकन की योजना के अनुसार अंक प्रदान किये जायेगें।

- **प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण और अवलोकन का विवरण–**

क्र.	विषय	इकाई	कालखण्ड/पाठ योजना	साथी की कक्षा का अवलोकन	नियमित शिक्षक की कक्षा का अवलोकन
1	भाषा–1	2	10	4	4
2	द्वितीय भाषा	2	10	4	4
3	पर्यावरण (EVS)	2	10	4	4
4	गणित	2	10	4	4

- **माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षण और अवलोकन का विवरण–**

क्र.	विषय	इकाई	कालखण्ड/पाठ योजना	साथी कक्षा का अवलोकन	नियमित शिक्षक की कक्षा का अवलोकन
1	चयनित विषय–1	2	20	4	4
2	चयनित विषय–2	2	20	4	4

III. **छात्राध्यापकों का आकलन (बाह्य मूल्यांकन)–** बाह्य मूल्यांकन, माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा नियुक्त बाह्य मूल्यांकनकर्ता द्वारा किया जाएगा। अधिभार के आधार पर बाह्य मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा मौखिक एवं लिखित (रिपोर्ट एवं दस्तावेज) मूल्यांकन किया जायेगा और अंक माध्यमिक शिक्षा मण्डल को नोडल संस्था के माध्यम से प्रेषित किये जायेंगे। बाह्य मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा निम्नलिखित गतिविधियों पर चर्चा कर मौखिक एवं लिखित रिकार्ड का मूल्यांकन किया जायेगा।

इंटर्नशिप अवधि के पश्चात् जमा करने वाले रिकार्डः–

1. शाला प्रोफाईल रिकार्ड
2. शाला अवलोकन रिपोर्ट
3. विषय विशेषज्ञों द्वारा दी गई आदर्श पाठ योजना का रिकार्ड– प्राथमिक और माध्यमिक
4. छात्राध्यापकों द्वारा दी गई समालोचनात्मक पाठ योजना का रिकार्ड– प्राथमिक और माध्यमिक
5. इकाई योजना का रिकार्ड– प्राथमिक और माध्यमिक
6. पाठ योजना का रिकार्ड– प्राथमिक और माध्यमिक
7. साथी एवं शाला शिक्षक की कक्षा अवलोकन रिपोर्ट– प्राथमिक और माध्यमिक
8. ब्लू प्रिंट एवं आदर्श प्रश्न पत्र निर्माण का रिकार्ड– प्राथमिक और माध्यमिक
9. निदानात्मक परीक्षण और उपचारात्मक शिक्षण योजना का रिकार्ड– प्राथमिक और माध्यमिक
10. नवाचारी केन्द्र की भ्रमण रिपोर्ट
11. सामुदायिक सर्वे रिपोर्ट
12. केस स्टडी रिपोर्ट
13. क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन
14. TLM /अधिगम स्त्रोत सामग्री का रिकार्ड– 10 प्राथमिक और 10 माध्यमिक
15. CCE का रिकार्ड– प्राथमिक और माध्यमिक
16. रिफ्लेक्टिव जर्नल का रिकार्ड– प्राथमिक और माध्यमिक
17. छात्राध्यापकों द्वारा अंतिम पाठ योजना का रिकार्ड एवं लैब एरिया की शाला में 01 पाठ योजना के प्रदर्शन के आधार पर मूल्यांकन – (04प्राथमिक और 02माध्यमिक स्तर की पाठ योजना का निर्माण)
18. शाला इंटर्नशिप गतिविधियों पर तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक रिपोर्ट/प्रतिवेदन

टीप – समस्त रिकार्ड एवं दस्तावेज सबूतों, तथ्यों, फोटोग्रफ्स् एवं छात्रों की सूचि के साथ शाला प्रमुख/मेंटर शिक्षक और संस्थान सुपरवाईजर और विषय विशेषज्ञ के प्रमाणीकरण के पश्चात् ही जमा करें।

- **शाला इंटर्नशिप द्वितीय वर्ष मूल्यांकन योजनाः–** शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम द्वितीय वर्ष में आंतरिक मूल्यांकन के 200 अंक तथा बाह्य मूल्यांकन के 200 अंक निर्धारित हैं। इस प्रकार कुल 400 अंक शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान दिये जायेंगे। आंतरिक मूल्यांकन संस्थान स्तर पर तथा बाह्य मूल्यांकन माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा नियुक्त बाह्य मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा उपलब्ध रिकार्ड और मौखिक एवं लिखित आकलन के आधार पर किया जाएगा।

शाला इंटर्नशिप द्वितीय वर्ष मूल्यांकन योजना

क्र	गतिविधि का नाम	अधिभार /अंक	रिपोर्ट/दस्तावेजों/ गतिविधियों का प्रकार	संख्या एवं शाला का प्रकार	आंतरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन		योग
					शाला प्रमुख /मेंटर द्वारा	संस्थान सुपरवाईजर /विषय विशेषज्ञों द्वारा	मौखिक	लिखित	
1	**योजना**	30%/ 120 अंक	शाला प्रोफाईल रिकार्ड	1, शा., 1, अशा.	10	–	10	–	20
			शाला अवलोकन रिपोर्ट	1, शा., 1, अशा.	10	–	10	–	20
			विषय शिक्षक की आदर्श पाठ योजना का रिकार्ड	4, प्रा.शा. 2, मा.शा.	–	10	10	–	20
			समालोचनात्मक पाठ का रिकार्ड	4, प्रा.शा. 2, मा.शा.	–	20	20	–	40
			इकाई योजना का रिकार्ड	4, प्रा.शा. 2, मा.शा.	–	10	10	–	20
2	**शिक्षण**	30%/ 120 अंक	पाठ योजना का रिकार्ड	40, प्रा.शा.(4 विषय) 40, मा. शा. (2 विषय)	–	20	20	–	40
			नियमित शिक्षक की कक्षा का अवलोकन रिकार्ड	16, प्रा.शा.(4 विषय) 08, मा. शा. (2 विषय)	20	–	20	–	40
			साथी की कक्षा का अवलोकन का रिकार्ड	16, प्रा.शा.(4 विषय) 08, मा. शा. (2 विषय)	–	20	20	–	40
3	**चिंतनशील (रिफ्लेक्टिव) जर्नल एवं रिकार्ड का रखरखाव**	40%/ 160 अंक	ब्लू प्रिंट एवं आदर्श प्रश्न पत्र निर्माण का रिकार्ड	4, प्रा.शा. 2, मा.शा.	–	–	5	10	15
			निदानात्मक परीक्षण और उपचारात्मक शिक्षण का रिकार्ड	4, प्रा.शा. 2, मा.शा.	–	–	5	10	15
			नवाचारी केन्द्र की भ्रमण रिपोर्ट	1	–	10	–	–	10
			सामुदायिक सर्वे रिपोर्ट	1	–	10	–	–	10
			केस स्टडी रिपोर्ट	1	–	10	–	–	10
			क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन	1	–	10	–	–	10
			TLM और स्त्रोत सामग्री रिकार्ड	10, प्रा.शा. 10, मा.शा.	–	10	–	–	10
			CCE रिकार्ड (2)	1, प्रा.शा. 1, मा.शा.	–	10	–	–	10
			रिफ्लेक्टिव जर्नल रिकार्ड (2)	1, प्रा.शा. 1, मा.शा.	10	–	–	–	10
			अंतिम पाठ योजना का रिकार्ड (एक पाठ योजना के प्रदर्शन के साथ)	4, प्रा.शा. 2, मा.शा.	–	–	10	40	50
			शाला इंटर्नशिप प्रतिवेदन (तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित)	1, (शासकीय और अशासकीय शालाओं पर)	–	10	–	–	10
	योग	100%			50	150	140	60	400

9. शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम क्रियान्वयन एवं निर्देश :–

स्कूल इंटर्नशिपः फ्रेमवर्क एण्ड गाइडलाईनस् जनवरी– 2016 NCTE द्वारा जारी की गई है। जिसके आधार पर इंटर्नशिप कार्यक्रम क्रियान्वयन की मार्गदर्शिका NCERT द्वारा 2016 में बनाई गई। इसी के आधार पर राज्य के निर्देशानुसार इंटर्नशिप निर्देश डी.एल.एड. (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) संचालित करने वाली प्रशिक्षण संस्थाओं (शासकीय एवं अशासकीय) हेतु जारी किये जा रहें हैं। समस्त जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान तथा अशासकीय शिक्षक शिक्षा संस्थाओं के लिए डी.एल.एड. (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) के शाला इंटर्नशिप निर्देश निम्नानुसार है जिसका पालन अनिवार्यतः सुनिश्चित किया जाए–

1) शालाओं के चयन हेतु जिला स्तरीय समिति का गठन–

इंटर्नशिप कार्यक्रम हेतु शालाओं के चयन के लिए जिला स्तर पर एक जिला स्तरीय समिति का गठन निम्नानुसार किया जाना हैः–

1. अध्यक्ष– जिला शिक्षा अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय
2. सचिव– प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
3. सदस्य– जिला परियोजना समन्वयक, जिला शिक्षा केन्द्र
4. सदस्य– शाला इंटर्नशिप समन्वयक, डाइट
5. सदस्य– शाला इंटर्नशिप समन्वयक, अशासकीय शिक्षक शिक्षा संस्थान (प्राचार्य डाइट द्वारा मनोनीत एक सदस्य)

2) समिति के उत्तरदायित्व–

- जिला शिक्षा अधिकारी, जिले में संचालित शासकीय/अशासकीय संस्थानों का इंटेक एवं प्रवेशित छात्राध्यापकों की सूची SCERT के शिक्षक शिक्षा कक्ष से समन्वय कर प्राप्त करें।
- जिला परियोजना समन्वयक अपने जिले की अच्छी संसाधन युक्त प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं की सूची ग्रेडवार, कक्षावार एवं दर्ज छात्र संख्या के आधार पर उपलब्ध करायें।
- प्राचार्य डाइट शिक्षक शिक्षा संस्थानों में दर्ज छात्राध्यापक की संख्या के मान से जिले की शासकीय एवं अशासकीय शालाओं की सूची में से अच्छी शालाओं का चयन कर समिति के समक्ष रखें।
- जिला शिक्षा अधिकारी एवं डाइट प्राचार्य, शाला इंटर्नशिप हेतु अच्छी शालाओं का आवंटन कर संयुक्त हस्ताक्षर से सूची जारी करेगें एवं उसकी एक–एक प्रति माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं SCERT को दी जायेगी जिसे माध्यमिक शिक्षा मण्डल की वेबसाइट और एजुकेशन पोर्टल पर प्रसारित किया जायेगा।

3) शालाओं के चयन का आधार–

- जिला शिक्षा अधिकारी, डाइट प्राचार्य के सहयोग से जिले के सभी शिक्षक शिक्षा संस्थाओं के लिए शालाओं (शासकीय एवं अशासकीय) का आवंटन करेगें।
- प्रत्येक शिक्षक शिक्षा संस्थान को इंटेक के आधार पर शालाओं का आवंटन किया जायेगा, उदाहरणार्थ 50 इंटेक वाली शिक्षक शिक्षा संस्थानों हेतु 05–05 (शासकीय–अशासकीय) शालाओं का चयन, 100 इंटेक वाली शिक्षक शिक्षा संस्थानों हेतु 10–10 (शासकीय–अशासकीय) शालाओं का चयन एवं 150 इंटेक वाली शिक्षक शिक्षा संस्थानों हेतु 15–15 (शासकीय–अशासकीय) इंटर्नशिप शालाओं का चयन किया जायेगा।
- शिक्षक शिक्षा संस्थाओं के आठ किलोमीटर की परिधि में स्थित शासकीय एवं अशासकीय शालाओं का ही चयन किया जाए। शासकीय एवं अशासकीय शालाओं के अंतर्गत प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर होना आवश्यक है।
- ग्रामीण क्षेत्रों का चयन करते समय 8 किलोमीटर से अधिक दूरी की शलाओं के चयन की छूट रहेगी।

- शालाओं की संख्या का चयन संस्था में प्रवेशित छात्राध्यापको की दर्ज संख्या के आधार पर ही किया जायेगा अतः प्रत्येक शिक्षक शिक्षा संस्थान के प्रवेशित छात्राध्यापकों की सूची इंटर्नशिप चयन समिति के पास इंटर्नशिप कार्यक्रम के पूर्व उपलब्ध होना आवश्यक है।
- शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम हेतु प्रत्येक छात्राध्यापक के लिए 01 शासकीय और 01 अशासकीय शाला का चयन करना आवश्यक है जिसमें प्राथमिक और माध्यमिक स्तर संचालित हों।
- किसी भी एक शिक्षकीय शाला का चयन नहीं किया जाये।
- यदि किसी शाला में कुल दर्ज संख्या 50 से कम हो तो भी उक्त शाला का चयन नहीं किया जायेगा।
- जिला शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में चयन समिति की बैठक द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम का वार्षिक केलेण्डर जारी किया जायेगा, जिसके आधार पर समस्त शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम संचालित किया जाएगा। वार्षिक केलेण्डर की प्रतियाँ सचिव, माध्यमिक शिक्षा मण्डल और संचालक SCERT को दी जायेगी जो माध्यमिक शिक्षा मण्डल की वेबसाइट और एजुकेशन पोर्टल से इसे प्रसारित करेगें।
- वार्षिक केलेण्डर के अनुसार कम से कम 2 बार इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान जिला शिक्षा अधिकारी एवं प्राचार्य डाइट चयनित शालाओं की मॉनिटरिंग कर रिपोर्ट राज्य मुख्यालय एवं NCTE को भेजेगें।
- शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम के पश्चात सम्पूर्ण कार्यक्रम का संकलित प्रतिवेदन तैयार कर नोडल संस्था (डाइट) और NCTE को भेजा जाना आवश्यक है।
- सभी संस्थान आंतरिक मूल्यांकन का रिकार्ड माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा निर्धारित प्रपत्र पर नोडल संस्था को भेजेंगे। जिन संस्थाओं द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम का प्रतिवेदन नहीं भेजा जायेगा, उनके अंक नोडल संस्था द्वारा माध्यमिक शिक्षा मंडल को नहीं भेजे जायेंगे, जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी संबंधित शिक्षक शिक्षा संस्थान के संस्था प्रमुख की होगी।
- वार्षिक केलेण्डर अनुसार समय सीमा का पालन सुनिश्चित करना प्रत्येक शिक्षक शिक्षा संस्थान के प्रमुख की जिम्मेदारी होगी।
- राज्य द्वारा समय–समय पर चल रही नवाचारी योजनाओं एवं पद्धतियों पर छात्राध्यापको का उन्मुखिकरण एवं शाला में क्रियान्वयन शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक शिक्षा संस्थाओं के प्रमुख का उत्तरदायित्व होगा।
- IASEs, CTEs, DIETs के अकादमिक सदस्य शाला इंटर्नशिप के दौरान सुपरवीजन एवं मॉनिटरिंग का कार्य करेगें, जिसकी व्यक्तिगत एवं संकलित रिपोर्ट संस्थानों द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, SCERT एवं NCTE को भेजना होगी।
- निर्धारित शाला इंटर्नशिप के दौरान सभी आवंटित शालाओं की मॉनिटरिंग राज्य तथा शिक्षक शिक्षा संस्थान के फेकल्टी द्वारा की जायेगी। निर्धारित मापदंडो का पालन नहीं पाए जाने पर आवश्यक वैधानिक कार्यवाही राज्य स्तर पर प्रस्तावित की जावेगी।
- आवंटित लैब एरिया की प्रत्येक शाला में 05–06 से अधिक छात्राध्यापकों को नहीं भेजा जायें।

4) **नोडल संस्था द्वारा शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयक और चयनित लैब शाला के प्रधानाध्यापकों का उन्मुखिकरण–**

- **इंटर्नशिप समन्वयक के उत्तरदायित्व–** शिक्षक शिक्षा संस्थान के प्राचार्य द्वारा संस्थान के एक अकादमिक सदस्य को इंटर्नशिप समन्वयक के रूप में नियुक्त किया जाए। यह इंटर्नशिप समन्वयक सम्पूर्ण शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम में समन्वयन का कार्य करेगा।
    - आवंटित शासकीय/अशासकीय शालाओं में संस्थान के छात्राध्यापकों की दर्ज संख्या के आधार पर क्रमानुसार शासकीय/अशासकीय शालाओं में भेजना।
    - छात्राध्यापकों को शासकीय एवं अशासकीय शालाओं में भेजने के क्रम का निर्धारण इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा निर्धारित किया जाएगा।

- शाला में छात्राध्यापकों की संख्या का निर्धारण समिति द्वारा निर्धारित संख्या से अधिक नहीं होना चाहिए।
- छात्राध्यापकों को शाला आवंटन के दौरान एक विकल्प दिया जाना चाहिए अन्यथा की स्थिति में प्राचार्य/इंटर्नशिप समन्वयक का निर्णय अंतिम होगा।

- **लैब शाला के प्रधानाध्यापकों का उत्तरदायित्व–**
  - लैब शाला के प्रधानाध्यापक प्रथम दिवस प्रत्येक छात्राध्यापक से परिचय एवं शपथ पत्र प्राप्त करेंगे।
  - शाला को आवंटित छात्राध्यापकों की सूची अनुसार कार्यालय में संस्थान द्वारा आवंटित उपस्थिति रजिस्टर संधारित करेंगे और इंटर्नशिप अवधि पूर्ण होने पर प्रमाणित कर शिक्षक शिक्षा संस्थानों को भेजेंगे।
  - छात्राध्यापक से दोनों समय उपस्थिति रजिस्टर में हस्ताक्षर करवायेंगे।
  - प्रथम दिवस प्रार्थना सभा के दौरान स्टाफ और बच्चों से प्रत्येक छात्राध्यापक का परिचय करवायेंगे।
  - छात्राध्यापकों की शाला में बैठक व्यवस्था सुनिश्चित करेंगे।
  - प्रत्येक छात्राध्यापक को निर्धारित गणवेश मे ही शिक्षण कार्य करने की अनुमति प्रदान करेंगे। छात्राध्यापक के गणवेश में ना होने पर शिक्षण कार्य न करवाकर शाला के अन्य कार्य में संलग्न करेंगें।
  - छात्राध्यापक को विभिन्न अभिलेखों, उनके संधारण के तरीकों और उपयोगिता से अवगत करायेंगे।
  - विभिन्न शालेय गतिविधियों में मेंटर शिक्षक की मदद से छात्राध्यापकों के कार्य का विभाजन कर समय सारणी बनायेंगे। यह समय सारणी छात्राध्यापकों को भी उपलब्ध करायेंगे।
  - छात्राध्यापकों को समय सारणी नोट करवाकर हस्ताक्षर लेंगे।
  - प्रथम वर्ष में इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों को शाला का वास्तविक अनुभव प्राप्त करने में मदद करेंगें। प्रथम वर्ष में छात्राध्यापक पढ़ाने का कार्य नहीं करेंगे। केवल कक्षाओं का अवलोकन कर कक्षा शिक्षण प्रक्रिया को समझेंगे।
  - छात्राध्यापकों की रिफ्लेक्टिव जर्नल में दिन–भर की वास्तव में की गई गतिविधियों के आधार पर ही चिंतन एवं अनुभव को प्रमाणित करेंगे।
  - छात्राध्यापक को विशेष परिस्थितियों में आवश्यकता होने पर अवकाश का आवेदन लेकर उपस्थिति रजिस्टर में दर्ज करेंगे और इंटर्नशिप समन्वयक को सूचित करेंगे।
  - छात्राध्यापक द्वारा लगातार अनुपस्थिती/अनुशासनहीनता की स्थिति में संस्थान के इंटर्नशिप समन्वयक को शीघ्र सूचित करते हुए छात्राध्यापक को संस्थान के लिए कार्यमुक्त कर सकते हैं।

5) **लैब शालाओं को तैयार करनाः–**

शिक्षक शिक्षा संस्थानों एवं लैब एरिया स्कूल के मध्य अच्छा सामजस्य होना चाहिये इसके लिए निम्न तैयारी करें।

- आवंटित लैब शाला में पर्याप्त मात्रा में भौतिक एवं मानवीय संसाधन होना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार शिक्षक शिक्षा संस्थान सहयोग कर सकते हैं।
- लैब शाला द्वारा छात्राध्यापको को शाला की सभी सुविधाये जैसे पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल का मैदान उपलब्ध करवाई जाए।
- छात्राध्यापकों को लैब शाला की समस्त गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति दी जाये।

- ➢ मेन्टर के चयन हेतु लैब शाला के उच्च योग्यताधारी एवं प्रेरित शिक्षकों का चुनाव करें।
- ➢ चयनित मेंटर शिक्षक का शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा उन्मुखिकरण किया जाये जिसके लिये चयनित मेन्टर को सूचना भेजी जायें।
- ➢ लैब शाला के छात्राध्यापकों की समस्याओं और कठिनाईयों का तुरन्त समाधान प्रधानाध्यापक, मेंटर शिक्षक, इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा किया जाये।
- ➢ लैब शालाओं के प्रधानाध्यापक, मेन्टर शिक्षक एवं शिक्षक शिक्षा संस्थानों के अकादमिक सदस्यों (सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ) की संयुक्त जिम्मेदारी के आधार पर निर्धारित प्रपत्र में छात्राध्यापकों का आकलन किया जाये।

6) **शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा मेंटर शिक्षक का उन्मुखिकरणः–**

- **मेंटर शिक्षक तैयार करनाः–**

  लैब एरिया की आवंटित शालाओं में छात्राध्यापकों को उच्च योग्यताधारी शिक्षक के साथ जोड़ा जाता है। जिसे मेंटर शिक्षक कहते हैं। एक मेंटर शिक्षक के पास 5–6 छात्राध्यापक से अधिक नहीं होना चाहिये। जोड़ा जाने वाला मेंटर शिक्षक छात्राध्यापक के चयनित विषय से संबंधित विशेष योग्यता वाला होना चाहिये।

- **मेंटर शिक्षक के लिए तैयारी–**
  - ➢ लैब एरिया शाला के उच्च योग्यताधारी शिक्षक का चयन करें एवं उन्हें आवंटित छात्राध्यापकों की सूची देवें एवं रिकार्ड रखने हेतु फाईल दे।
  - ➢ संबंधित शिक्षक शिक्षा संस्थान चयनित मेंटर को शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका (हैण्ड बुक) उपलब्ध करायें।
  - ➢ संबंधित शिक्षक शिक्षा संस्थान, शाला प्राधानाध्यापक और मेंटर शिक्षक के साथ बैठक का आयोजन कर उनकी भूमिका और जवाबदारी से अवगत कराये।
  - ➢ अतिरिक्त गतिविधियों में सहयोग के लिए पूरक सामग्री का विकास कर मेंटर शिक्षक को उपलब्ध करवायें।
  - ➢ शाला इंटर्नशिप के दौरान भरे जाने वाले आकलन के प्रपत्रों की प्रतियाँ उपलब्ध करवा कर मेंटर शिक्षक का उन्मुखिकरण करें।
  - ➢ मेंटर शिक्षक को निर्धारित अकादमिक सत्र के दौरान बार–बार नहीं बदला जाये।
  - ➢ संबंधित संस्था अपने विषय विशेषज्ञों और मेंटर शिक्षक के मध्य गहन विचार विमर्श और उन्मुखिकरण के अवसर उपलब्ध कराये जिससे छात्राध्यापकों को सही दिशा में प्रशिक्षित किया जा सके।
  - ➢ लैब शाला के मेंटर शिक्षक को शिक्षक शिक्षा संस्थान के विस्तारक अकादमिक सदस्य के आधार पर प्रशिक्षित करें और विषय विशेषज्ञों द्वारा नवाचारी पद्धतियों से समय–समय पर मेंटर शिक्षक को प्रशिक्षित किया जाए।

- **मेंटर शिक्षक के उत्तरदायित्वः–**
  - ➢ छात्राध्यापक को विभिन्न शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों में मार्गदर्शन देना एवं शाला की कार्य शैली को समझने में सहयोग करना।
  - ➢ छात्राध्यापक को इंटर्नशिप अवधि के दौरान निरंतर फीडबैक देना और उसे व्यवसायिक रूप से तैयार करने में सहयोग करना।
  - ➢ छात्रों को शैक्षिक अवधारणाओं को समझने में सहयोग करना।

- कक्षा शिक्षण प्रक्रिया, कक्षा प्रबंधन, खेल–कूद, साहित्यिक–सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे– विभिन्न अनुभवों को प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाना।
- छात्राध्यापक की उपलब्धि का आकलन कर कमियों में सुधार हेतु निरंतर सुझाव देना।
- निर्धारित समय पर छात्राध्यापकों के आंतरिक मूल्यांकन के लिए शिक्षक शिक्षा संस्थान को सहयोग करना।

7) **शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा अकादमिक सदस्यों का उन्मुखिकरणः–**शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के अकादमिक सदस्यों की पूर्व इंटर्नशिप, इंटर्नशिप कार्यक्रम एवं प्रथम इंटर्नशिप तीनों चरणों में महत्वपूर्ण भूमिका है।

- शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के अकादमिक सदस्यों का शिक्षण शास्त्र और संदर्भ सामग्री के आकलन में RTE एवं निर्माणवादी पद्धति के आधार पर ज्ञान अद्यतन होना चाहिये, तभी वह छात्राध्यापकों के लिए इंटर्नशिप के दौरान सुविधादाता के रूप में कार्य कर सकता है।
- अकादमिक सदस्य को बाल केन्द्रित शिक्षा और RTE के क्रियान्वयन एवं सिफारिशों के बारे मे पूर्ण पता होना चाहिये।
- अकादमिक सदस्यों को शाला अवलोकन पद्धति, पाठ्यपुस्तक विश्लेषण, समुदाय में सहभागिता, नियमित शिक्षक से विचार विमर्श इत्यादि विषयों पर छात्राध्यापकों को मार्गदर्शन देना होगा।
- अकादमिक सदस्य द्वारा एक शाला में कम से कम 5–6 छात्राध्यापकों के शिक्षण अभ्यास का सुपर विजन एवं मार्गदर्शन करना होगा एवं प्रत्येक छात्राध्यापक की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का आंकलन निर्धारित प्रपत्र में कर समय–समय पर फीडबेक देना होगा की किस प्रकार बाल केन्द्रित पाठ योजना का निर्माण किया जाना चाहिये।
- संस्थान के अकादमिक सदस्यों द्वारा पूर्व इंटर्नशिप के दौरान RTE एवं निर्माणवादी पद्धति पर छात्राध्यापकों को शिक्षण अभ्यास करवाया जाना चाहिये।
- पश्च इंटर्नशिप के दौरान प्रत्येक छात्राध्यापकों को शाला अनुभव और रिफलेक्टिव जर्नल पर अपने अनुभवों को साझा करने के अवसर देना चाहिये, जिससे छात्राध्यापक अपने व्यवहारिक ज्ञान को सैंद्धातिक ज्ञान से जोड़ना में समर्थ हो सकें।
- संस्थान के को अकादमिक सदस्यों को सुविधदाता के रूप में छात्राध्यापकों का सही आकलन एवं मार्गदर्शन करना चाहिए।

- **संस्थान सुपरवाईजर के उत्तरदायित्वः–** इंटर्नशिप समन्वय द्वारा समय–समय पर लैब शालाओं में संस्थान सुपरवाईजर को छात्राध्यापको के अवलोकन एवं मार्गदर्शन के लिए नियुक्त किया जायेगा। इनके उत्तरदायित्व निम्नानुसार हैं:–
  - इंटर्नशिप अवधि के दौरान छात्राध्यापक को निरंतर मार्गदर्शन एवं सुझाव देना। छात्राध्यापकों के दस्तावेजों, अभिलेखों का अवलोकन करना एवं उन पर आकलन टीप देना जिससे छात्राध्यापकों के उपलब्धि स्तर में निरंतर वृद्धि हो।
  - छात्राध्यापक की कठिनाईयों को सप्ताहिक बैठकों में चर्चा कर दूर करने का प्रयास करना और आवश्यकता होने पर संस्थान के विषय विशेषज्ञ की मदद लेना।
  - छात्राध्यापकों का आंतरिक मूल्यांकन मेंटर शिक्षक के सहयोग से पूर्ण कर इंटर्नशिप समन्वयक को देना।
  - छात्राध्यापको के द्वारा पाठ योजनाओं के प्रदर्शन के दौरान पूर्ण समय उपस्थित रहकर पाठों का अवलोकन करना और कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में सुधारात्मक एवं सुझावात्मक टीप देना।
  - छात्राध्यापकों के अनुपस्थित होने पर इंटर्नशिप समन्वयक को सूचित करना।

- छात्राध्यापकों को लैब शाला में समायोजन हेतु आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करना।

- **विषय विशेषज्ञ के उत्तरदायित्वः–** इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा शाला इंटर्नशिप में विषय संबंधित पाठों के प्रदर्शन के दौरान प्राथमिक/माध्यमिक शासकीय शालाओं में संस्थान के विषय विशेषज्ञों को नियुक्त किया जायें।
  - संस्थान के विषय विशेषज्ञ द्वारा संस्थान में आदर्श पाठों का प्रस्तुतीकरण दिया जाये।
  - विषय विशेषज्ञ द्वारा आदर्श पाठ योजना विषय से संबंधित दक्षताओं और कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं को विभिन्न शैक्षणिक कौशलों के प्रदर्शन के साथ जोड़कर दी जाये।
  - प्राथमिक स्तर पर 4 विषय एवं माध्यमिक स्तर पर 2 विषयों का आदर्श पाठ प्रस्तुतीकरण छात्रों के समक्ष विषय विशेषज्ञों द्वारा आवश्यक रूप से किया जाए जिससे लैब शालाओं में छात्राध्यापकों द्वारा कक्षा शिक्षण प्रक्रिया को गुणवत्ता युक्त बनाया जा सके।
  - इकाई योजना, पाठ योजना का निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण के विभिन्न चरण एवं आकलन की प्रक्रिया से छात्राध्यापक को व्यावहारिक रूप से विषय विशेषज्ञों द्वारा दक्ष किया जाए।
  - विषय संबंधित विभिन्न पाठ योजनाएँ, इकाई योजनाएँ, ब्लू प्रिंट निर्माण, प्रश्न पत्र निर्माण और निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण का आकलन एवं मार्गदर्शन फीडबैक एवं सुझाव विषय विशेषज्ञों द्वारा दिया जाए।
  - विषय विशेषज्ञों द्वारा छात्राध्यापकों के आंतरिक मूल्यांकन में मेंटर शिक्षक, संस्थान सुपरवाईजर के साथ सहयोग कर निर्धारित मूल्यांकन प्रक्रिया में सहयोग किया जाए।

8) **शाला इंटर्नशिप हेतु छात्राध्यापकों को तैयार करनाः–** शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम के पूर्व इंटर्नशिप के दौरान प्रत्येक शिक्षक शिक्षा संस्थान द्वारा प्रवेशित छात्राध्यापकों को शाला इंटर्नशिप के लिए तैयार करना आवश्यक है। इसके अंतर्गत संस्थानों द्वारा निम्नलिखित तैयारी कि जाना चाहिएः–

- संस्थान के अकादमिक सदस्यों द्वारा अपने–अपने विषय के सैद्धांतिक पहलुओं को व्यावहारिक पहलुओं से जोड़ने का प्रशिक्षण छात्राध्यापकों को दिया जाये।
- संस्थान के अकादमिक सदस्यों द्वारा इंटर्नशिप के दौरान सम्पन्न होने वाले सत्रगत कार्यों पर छात्राध्यापकों का उन्मुखिकरण किया जाये।
- संस्थान के विभिन्न विषयों के उद्देश्यों की पूर्ति छात्राध्यापकों द्वारा पाठ योजना प्रदर्शन के दौरान किस प्रकार कि जाये इसका अभ्यास कराया जाये।
- छात्राध्यापकों को TLM और स्त्रोत सामग्री का विकास करने का प्रशिक्षण दिया जाये।
- छात्राध्यापकों को पाठ योजना निर्माण करने पर ही कक्षा शिक्षण कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाये।
- व्यवस्था स्वरूप बिना पाठ योजना के कक्षा शिक्षण का कार्य किया जा सकता है।
- छात्राध्यापकों को नियमित अपनी कक्षा के छात्रों को अभ्यास कार्य व गृह कार्य देने के लिए प्रेरित किया जाए और नियमित गृह कार्य और अभ्यास कार्य को जांचा जाए।
- छात्राध्यापकों द्वारा निर्धारित पाठ योजनाओं को इंटर्नशिप अवधि के दौरान ही पूर्ण करना है इसके लिए अलग से समय नहीं दिया जायेगा। इसके लिए छात्राध्यापक नियमितता और समय बद्धता अनुसार कार्य करें।
- छात्राध्यापकों को शाला की सामान्य सुविधाओं के साथ उत्कृष्ठ कार्य करने हेतु प्रेरित करें।
- छात्राध्यापकों को समय सारणी अनुसार अपने पढ़ाये जाने वाले विषय के कालखण्ड में समय पर उपस्थित होने हेतु निदेर्शित करें।

- शाला इंटर्नशिप की समस्त गतिविधियों को स्व निर्मित योजना बनाकर समयबद्ध तरीके से पूर्ण करने हेतु तैयार करें।
- छात्राध्यापक अपनी समस्त रिपोर्ट/प्रतिवेदन और दस्तावेजों को समयानुसार प्रमाणित करवाकर संधारित करें जिन्हें आकलन के समय प्रस्तुत किया जायेगा।
- छात्राध्यापक आने वाली कठिनाईयों के समाधान हेतु शाला के प्रधानाध्यापक, मेंटर शिक्षक, सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ और इंटर्नशिप समन्वयक से सहयोग प्राप्त करें।
- जिन छात्राध्यापकों की इंटर्नशिप अवधि में 90 प्रतिशत उपस्थिति नहीं होगी उन्हें परीक्षा में बैठने की पात्रता नहीं होगी। जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वयं छात्राध्यापक की होगी।
- छात्राध्यापक विशेष परिस्थिति में चिकित्सा/मानवीय आधार पर 10 प्रतिशत उपस्थिति संस्था प्रमुख से स्वीकृत करवा सकते हैं परन्तु 90 प्रतिशत उपस्थिति इंटर्नशिप अवधि के दौरान अनिवार्य है।
- संस्थान प्रमुख को भी इंनर्टशिप अवधि में 10 प्रतिशत से अधिक अवकाश स्वीकृत करने का अधिकार नहीं है। 10 प्रतिशत अवकाश भी तथ्यों एवं रिकार्ड के आधार पर स्वीकृत किया जाए और रिकार्ड संधारित किया जाए।
- यदि छात्राध्यापक की इंटर्नशिप अवधि में 90 प्रतिशत उपस्थिति पूर्ण नहीं हो पा रही है तो केवल उन्हीं छात्राध्यापकों को उपस्थिति पूर्ण करने का एक विकल्प संस्थान से जुड़ी हुयी लैब शाला में दिया जाएगा, जिन्होनें 10 प्रतिशत अवकाश पूर्व में शिक्षक शिक्षा संस्थान के प्राचार्य द्वारा स्वीकृत करवा रखा है।
- इन छात्राध्यापकों को संस्थान सुपरवाईजर और विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में नियुक्त मेंटर शिक्षक के सहयोग से शेष इंटर्नशिप अवधि पूर्ण करनी होगी।
- छात्राध्यापकों का आकलन पुनः शाला के प्रधानाध्यापकों और मेंटर शिक्षक के माध्यम से संस्थान के इंटर्नशिप समन्वयकों को भेजा जाएगा।

10. शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम का वार्षिक केलेण्डर :– शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम के लिए वार्षिक केलेण्डर का निर्माण किया गया है जिसकी समयावधि अनुमानित आधार पर प्रस्तावित की गई है। इसके आधार पर प्रत्येक वर्ष जिला स्तरीय समिति द्वारा वार्षिक केलेण्डर का निर्माण कर लागू किया जायेगा। इसको सम्पादित करने का उत्तरदायित्व सभी शिक्षक शिक्षा संस्थानों के संस्थान प्रमुख का होगा। द्विवर्षीय प्रस्तावित समय सारणी निम्नानुसार हैः–

i. प्रथम वर्ष शाला इंटर्नशिप की प्रस्तावित समय सारणी

प्रथम वर्ष शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की प्रस्तावित समय सारणी

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
1	जिला स्तरीय चयन समिति का गठन	अक्टूबर माह प्रथम सप्ताह	1 दिवस	जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा	• इंटर्नशिप निर्देशों के आधार पर जिला स्तरीय समिति का गठन करना। • सभी सदस्यों को आदेश प्रसारित करना। • सम्भावित बैठकों की सूचना सूचना देना। • SCERT के शिक्षक शिक्षा कक्ष से समन्वय कर शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटेक के साथ प्रवेशित छात्राध्यापकों की सूची प्राप्त करना। • DPC से जिले की अच्छी प्राथमिक एवं माध्यमिक शासकीय एवं अशासकीय शालाओं की सूची कक्षावार एवं दर्ज छात्रों की संख्या के साथ प्राप्त करना।
2	जिला स्तरीय चयन समिति की बैठक और शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए शासकीय एवं अशासकीय शालाओं का चयन करना। 50 – पर 5–5 शालाओं (शासकीय और अशासकीय) 100 – पर 10–10 शालाओं (शासकीय और अशासकीय) 150– पर 15–15 शालाओं (शासकीय एवं अशासकीय) का चयन	अक्टूबर माह द्वितीय सप्ताह	1 दिवस	जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा	• जिला स्तरीय समिति की बैठक के दौरान इंटर्नशिप के दिशा निर्देशों के आधार पर शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिये शालाओं का चयन करना। • शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटेक एवं प्रवेशित छात्राध्यापकों की संख्या के आधार पर शालाओं का आंवटन करना। • प्रत्येक दर्ज छात्राध्यापक को 02 शालाओं (शासकीय एवं अशासकीय) का आवंटन किया जाए। • प्रत्येक शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए आवंटित शासकीय शाला के पास ही आवंटित अशासकीय शालाएँ होना चाहिए क्योंकि प्रत्येक छात्राध्यापक को आवंटित शासकीय शाला का मेंटर शिक्षक ही अशासकीय शाला में भी मार्गदर्शन में सहयोग एवं आकलन करेगा। • जिला स्तरीय समिति को शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका में दिये गये उत्तरदायित्व के आधार पर कार्य करना है। • जिला स्तरीय समिति को अध्यक्ष एवं सचिव के हस्ताक्षर से प्रत्येक शिक्षा सत्र में लागू होने वाला शाला इंटर्नशिप का वार्षिक केलेण्डर दिनांक सहित इंटर्नशिप अवधि (24 एवं 96 दिवस) हेतु जारी करना हैं। वार्षिक केलेण्डर की प्रतियाँ माध्यमिक शिक्षा मण्डल और SCERT के माध्यम से मण्डल की वेब साइट और एजुकेशन पोर्टल पर प्रसारित करने हेतु भेजी जाए।
3	इंटर्नशिप समन्वयक की नियुक्ति करना	अक्टूबर माह तृतीय सप्ताह	1 दिवस	शिक्षक शिक्षा संस्थान के प्राचार्य	• शिक्षक शिक्षा संस्थान के प्राचार्य द्वारा इंटर्नशिप समन्वयक की नियुक्ति करना। • इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा शिक्षक शिक्षा संस्थान को आवंटित शालाओं में संस्थान के दर्ज छात्राध्यापकों आवंटन करना। • छात्राध्यापकों को एक विकल्प की सुविधा दी जा सकती है, परन्तु अंतिम निर्णय संस्थान प्राचार्य और इंटर्नशिप समन्वयक का रहेगा।

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
4	शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयकों और चयनित शालाओं के प्रधानाध्यापकों/ प्राचार्यों का शाला इंटर्नशिप उन्मुखिकरण कार्यक्रम	अक्टूबर माह चतुर्थ सप्ताह	1 दिवस	नोडल संस्थान के (डाईट) प्राचार्य द्वारा	• प्राचार्य डाइट, शिक्षक शिक्षा संस्थानों के प्राचार्यो द्वारा नियुक्त इंटर्नशिप समन्वयकों के नाम और आंवटित शालाओं की सूची (शासकीय/माध्यमिक) दर्ज प्रवेशित छात्राध्यापकों के नाम के साथ प्राप्त करें। • आवंटित शालाओं के प्रधानाध्यापकों/प्राचार्य एवं शिक्षक शिक्षा संस्थान के इंटर्नशिप समन्वयकों को एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम की सूचना दें। (निर्धारित सप्ताह में तिथि तय कर) • सभी इंटर्नशिप समन्वयकों एवं शाला के प्रधानाध्यापकों/प्राचार्यो को इंटर्नशिप मार्गदर्शिका एवं मूल्यांकन और सुपरविजन के प्रपत्रों की प्रतिलिपियों के 1–1 सेट उपलब्ध करायें और उनके उत्तरदायित्वों से परिचित करवायें। • समस्त शासकीय प्रधानाध्यापकों/प्राचार्यो से अपनी–अपनी शाला में बनाये जाने वाले चयनित मेंटर शिक्षकों के नाम, पद, और फोन नम्बर के साथ सूची प्राप्त करें। • अशासकीय शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयकों को आवंटित शासकीय शालाओं के मेंटर शिक्षक की सूची उपलब्ध करायें और उनको अपनी संस्था में उन्मुखिकरण हेतु निर्देशित करें।
5	शिक्षक शिक्षा संस्थान स्तर पर अकादमिक सदस्यों का संस्थान सुपरवाईजर और विषय विशेषज्ञ के रूप में उन्मुखिकरण	नवम्बर माह प्रथम सप्ताह	1 दिवस	शिक्षक शिक्षा संस्थान प्राचार्य एवं इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा	• संस्थान के सुपरवाईजर और विषय विशेषज्ञों का चयन कर इंटर्नशिप कार्यक्रम हेतु उन्मुखिकरण करें। • संस्थान सुपरवाईजर और विषय विशेषज्ञों को इंटर्नशिप मार्गदर्शिका उपलब्ध करायें और उनके उत्तरदायित्वों से परिचित करायें। • संस्थान सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ, मेंटर शिक्षक की छात्राध्यापकों के मार्गदर्शन में समन्वित भूमिका को स्पष्ट करें।
6	शिक्षा शिक्षा संस्थान स्तर पर मेंटर शिक्षक का उन्मुखिकरण	नवम्बर माह द्वितीय सप्ताह	1/2 दिवस	शिक्षक शिक्षा संस्थान के इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा	• आवंटित शासकीय शालाओं के मेंटर शिक्षक का उन्मुखिकरण करें। • मेंटर शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट करें। • मेंटर शिक्षकक को शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका के आधार पर प्रशिक्षित कर शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका की प्रति दें और उसमें लिखे मेंटर शिक्षक के उत्तरदायित्वों पर अमल करने हेतु प्रशिक्षित करें। • आवंटित छात्राध्यापकों की सूची उपलब्ध करायें। • शासकीय एवं अशासकीय शाला के अवलोकन कार्यक्रम से परिचित करवायें। • शासकीय और अशासकीय शाला की समस्त गतिविधियों में छात्राध्यापकों का कार्य विभाजन कर समय सारणी संधारित करने हेतु प्रशिक्षित करें। • शाला और संस्थान के मध्य, मध्यस्थ की भूमिका निभाते हुए दोनों संस्थाओं की शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु प्रेरित करें। • समय–समय पर संस्थान को छात्राध्यापक की प्रगति से अवगत कराने हेतु निदेर्शित करें। • छात्राध्यापक के संबंध में आवश्यकता होने पर संस्थान को अनुशासन संबंधी समस्या की जानकारी देना और मार्गदर्शन देने हेतु निदेर्शित करें। • छात्राध्यापक के आकलन में संस्थान विशेषज्ञ या सुपरवाईजर के साथ निरन्तर सहयोग हेतु मागदर्शन करें।

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
			1/2 दिवस		• प्रत्येक मेंटर शिक्षक को आवंटित छात्राध्यापकों की सूची के साथ संस्थान में उपस्थित आवंटित छात्राध्यापकों से परिचय करवायें। • मेंटर शिक्षक अपनी शाला की समय सारणी और संचालित गतिविधियों का परिचय छात्राध्यापकों को देंगे और छात्राध्यापकों को शाला की अपेक्षाओं से अवगत करायेंगे। • वर्तमान में चल रहे सभी विषयों के पाठ्यक्रमों से परिचय करवायेंगें ताकि छात्राध्यापक पूर्व तैयारी के साथ शाला अवलोकन/कक्षा शिक्षण का कार्य करें।
7	शिक्षक शिक्षा संस्थान स्तरीय छात्राध्यापकों का उन्मुखिकरण	नवम्बर माह द्वितीय सप्ताह	5 दिवस	इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा	• छात्राध्यापकों का शाला अनुभव कार्यक्रम से परिचय करायें। • शाला अनुभव कार्यक्रम के उद्देश्य से लेकर आकलन तक की प्रक्रिया पर छात्राध्यापकों का उन्मुखिकरण करें। • छात्राध्यापकों को शाला अनुभव की समस्त गतिविधियों में आकलन की प्रक्रिया पर उन्मुखिकण करें। • शाला की समस्त शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता पर उन्मुखिकण करें। • शासकीय एवं अशासकीय शाला के शाला अनुभव कार्यक्रम के पश्चात् तुलनात्मक विश्लेषण कर दोनों शालाओं की श्रेष्ठ शिक्षण प्रक्रियाओं को चयन करने हेतु प्रेरित करें। • शाला प्रोफाइल, शाला अवलोकन प्रपत्र, पाठ्यपुस्तक विश्लेषण, शिक्षण अधिगम सामग्री का विकास, रिफ्लेक्टिव जर्नल का विकास, सेमीनार प्रस्तुतीकरण के आकलन एवं अधिभारों से परिचित करवाते हुए छात्राध्यापकों की समझ विकसित करें। • संस्थान के विषय विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों के इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान किये जाने वाले सत्रगत कार्यों पर समझ विकसित कर सत्रगत कार्यों का आंवटन करें और रिकार्ड संधारित रखें।

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
8	चयनित शालाओं (शासकीय/अशासकीय) में छात्राध्यापकों द्वारा शाला और समुदाय के साथ शाला अनुभव कार्यक्रम (प्रथम चरण)	नवम्बर माह तृतीय और चतुर्थ सप्ताह	2 सप्ताह (12 दिवस)	इंटर्नशिप समन्वयक, शाला प्रधानाध्यापक /प्राचार्य, मेंटर शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाईजर द्वारा	• छात्राध्यापकों को शासकीय या अशासकीय (क्रम उपलब्धता के आधार पर निर्धारित करें।)शालाओं में शालाओं में अनुभव कार्यक्रम हेतु भेजा जाये। • शाला अवलोकन के दौरान प्रत्येक छात्राध्यापक शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका में दिये गये अपने उत्तरदायित्वों के आधार पर शाला अवलोकन का कार्य पूर्ण करने हेतु निर्देशित करें। • छात्राध्यापकों द्वारा उन्मुखिकरण के दौरान बताई गयी समस्त शैक्षिक व अशैक्षिक गतिविधियों का सम्पादन मेंटर शिक्षक के मार्गदर्शन में किया जाये। • प्रत्येक छात्राध्यापक को निर्धारित शाला इंटर्नशिप के पाठ्यक्रम के अनुसार अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु निर्देशित करें। • छात्राध्यापक शाला (शासकीय/अशासकीय) अवलोकन के साथ–साथ शाला के बच्चों से बच्चों के पालकों से, प्रबंध समिति के सदस्यों और समुदाय के साथ चर्चा कर रिकार्ड संधारित करने हेतु प्रेरित करें। • छात्राध्यापकों द्वारा शासकीय/अशासकीय शालाओं में शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान शाला अवलोकन और कक्षा अवलोकन कार्य किया जाए और साथ ही एक नवाचारी केन्द्र का भ्रमण भी किया जाए। • शासकीय और अशासकीय शालाओं के अवलोकन का क्रम शिक्षक शिक्षा संस्थान के इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा निर्धारित किया जायेगा।
			6 दिवस (शासकीय प्राथमिक शाला)		• शासकीय प्राथमिक शाला में छात्राध्यापक द्वारा 5 कक्षा अवलोकन प्राथमिक स्तर के नियमित शिक्षकों के किए जायें।
			6 दिवस (शासकीय माध्यमिक शाला)		• शासकीय माध्यमिक शाला में छात्राध्यापकों द्वारा 5 कक्षा अवलोकन माध्यमिक स्तर के नियमित शिक्षकों के किए जाए।
9	शिक्षक शिक्षा संस्थानों में प्रथम चरण की समीक्षा	दिसम्बर माह प्रथम सप्ताह	1 सप्ताह (6 दिवस)	इंटर्नशिप समन्वयक, शाला, संस्थान सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ एवं मेंटर शिक्षक द्वारा	• शिक्षक शिक्षा संस्थान द्वारा छात्राध्यापक के प्रथम चरण की गतिविधियों पर समूहवार संस्थान के विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में समीक्षा की जाये। • सप्ताह के अंतिम दिवस समस्त छात्राध्यापकों द्वारा प्रथम चरण का प्रस्तुतीकरण और समीक्षा मेंटर शिक्षक को बुलाकर की जाए। एक दिवसीय सेमीनार में फीडबैक के साथ–साथ मेंटर शिक्षक, संस्थान सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ द्वारा मागदर्शन और अनुभवों को साझा कर द्वितीय चरण में सुधार हेतु छात्राध्यापकों को निर्देशित किया जाए।

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
10	चयनित शालाओं (शासकीय / अशासकीय) में छात्राध्यापकों द्वारा शाला और समुदाय के साथ शाला अनुभव कार्यक्रम (द्वितीय चरण)	दिसम्बर माह द्वितीय और तृतीय सप्ताह	2 सप्ताह (12 दिवस)	इंटर्नशिप समन्वयक शाला प्रधानाध्यापक प्राचार्य, मेंटर शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाईजर द्वारा	• जिन छात्राध्यापकों द्वारा प्रथम चरण में शासकीय शाला में कार्य किया गया वे द्वितीय चरण में अशासकीय शाला में भी उपरोक्त निर्देशानुसार कार्य करेंगे।
			6 दिवस (अशासकीय प्राथमिक शाला)		• अशासकीय प्राथमिक शाला में छात्राध्यापक द्वारा 5 कक्षा अवलोकन प्राथमिक स्तर के नियमित शिक्षकों का किया जायें।
			6 दिवस (अशासकीय माध्यमिक शाला)		• अशासकीय माध्यमिक शाला में छात्राध्यापक द्वारा 5 कक्षा अवलोकन माध्यमिक स्तर के नियमित शिक्षकों का किया जायें।
11	छात्राध्यापकों का मूल्यांकन	दिसम्बर माह चतुर्थ सप्ताह	1 सप्ताह (6 दिवस)	इंटर्नशिप समन्वयक शाला प्रधानाध्यापक प्राचार्य, मेंटर शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाईजर द्वारा	• प्रत्येक छात्राध्यापक के द्वारा शाला अवलोकन के दौरान की गयी विभिन्न गतिविधियों के आकलन प्रपत्र संधारित कर अधिभार के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन का कार्य 1 या 2 दिवसीय सेमीनार का आयोजन कर किया जाये। • शिक्षक शिक्षा संस्थान में मेंटर शिक्षक को बुलाकर अनुभव को साझा करें और संस्थान सुपरवाईजर मेंटर शिक्षक, विषय विशेषज्ञ प्रत्येक छात्राध्यपक का आकलन कर रिकार्ड संधारित करें। • जिन छात्राध्यपकों की इंटर्नशिप अवधि 90 प्रतिशत पूर्ण नहीं हो पा रही हैं उन्हें संस्थान प्रमुख द्वारा पूर्व में स्वीकृत की गई केवल 10 प्रतिशत अवधि को ही पूर्ण करने का एक अवसर संस्थान प्राचार्य और इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा दिया जाएगा। • इन छात्राध्यापकों को संस्थान समय के अलावा, प्रातः कालीन लैब एरिया की शालाओं में प्राचार्य और मेंटर के मार्गदर्शन में अपना कार्य पूर्ण करने का अवसर प्रदान किया जाये। • इन छात्राधपकों का आकलन भी पुनः शाला के प्रधानाध्यापक और मेंटर से प्राप्त किया जाये। • इन छात्राध्यापकों को संस्थान के सुपरवाईजर के मार्गदर्शन में शाला गतिविधियों के लिए भेजा जाये। • इंटर्नशिप अवधि के समय किसी भी संस्थान प्रमुख द्वारा छात्राध्यापक को संस्थान समय में छुट नहीं दी जायेगी और अवकाश भी स्वीकृत नहीं किया जाये। विशेष परिस्थिति में ही 10 प्रतिशत अवकाश स्वीकृत करने की छूट रहेगी। • जिन छात्राध्यापकों की उपस्थिति 90 प्रतिशत पूर्ण नहीं होगी उनकों परीक्षा में बैठने की पात्रता नहीं होगी। उनका आंतरिक मूल्यांकन भी माध्यमिक शिक्षा मण्डल को नहीं भेजा जाएगा।

i. द्वितीय वर्ष शाला इंटर्नशिप की प्रस्तावित समय सारणी

द्वितीय वर्ष शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की प्रस्तावित समय सारणी

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
1	जिला स्तरीय चयन समिति का गठन	जुलाई माह प्रथम सप्ताह	1 दिवस	जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा	• इंटर्नशिप निर्देशों के आधार पर जिला स्तरीय समिति का गठन करना। • सभी सदस्यों को आदेश प्रसारित करना। • सम्भावित बैठकों की सूचना सूचना देना। • SCERT के शिक्षक शिक्षा कक्ष से समन्वय कर शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटेक के साथ प्रवेशित छात्राध्यापकों की सूची प्राप्त करना। • DPC से जिले की अच्छी प्राथमिक एवं माध्यमिक शासकीय एवं अशासकीय शालाओं की सूची कक्षावार एवं दर्ज छात्रों की संख्या के साथ प्राप्त करना।
2	जिला स्तरीय चयन समिति की बैठक और शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए शासकीय एवं अशासकीय शालाओं का चयन करना। 50 – पर 5–5 शालाओं (शासकीय और अशासकीय) 100 – पर 10–10 शालाओं (शासकीय और अशासकीय) 150– पर 15–15 शालाओं (शासकीय एवं अशासकीय) का चयन	जुलाई माह द्वितीय सप्ताह	1 दिवस	जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा	• जिला स्तरीय समिति की बैठक के दौरान इंटर्नशिप के दिशा निर्देशों के आधार पर शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिये शालाओं का चयन करना। • शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटेक एवं प्रवेशित छात्राध्यापकों की संख्या के आधार पर शालाओं का आंवटन करना। • प्रत्येक दर्ज छात्राध्यापक को 02 शालाओं (शासकीय एवं अशासकीय) का आवंटन किया जाए। • प्रत्येक शिक्षक शिक्षा संस्थानों के लिए आवंटित शासकीय शाला के पास ही आवंटित अशासकीय शालाएँ होना चाहिए क्योंकि प्रत्येक छात्राध्यापक को आवंटित शासकीय शाला का मेंटर शिक्षक ही अशासकीय शाला में भी मार्गदर्शन में सहयोग एवं आकलन करेगा। • जिला स्तरीय समिति को शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका में दिये गये उत्तरदायित्व के आधार पर कार्य करना है। • जिला स्तरीय समिति को अध्यक्ष एवं सचिव के हस्ताक्षर से प्रत्येक शिक्षा सत्र में लागू होने वाला शाला इंटर्नशिप का वार्षिक केलेण्डर दिनांक सहित इंटर्नशिप अवधि (24 एवं 96 दिवस) हेतु जारी करना हैं। वार्षिक केलेण्डर की प्रतियाँ माध्यमिक शिक्षा मण्डल और SCERT के माध्यम से मण्डल की वेब साइट और एजुकेशन पोर्टल पर प्रसारित करने हेतु भेजी जाए।
3	इंटर्नशिप समन्वयक की नियुक्ति करना	जुलाई माह तृतीय सप्ताह	1 दिवस	शिक्षक शिक्षा संस्थान के प्राचार्य द्वारा	• शिक्षक शिक्षा संस्थान के प्राचार्य द्वारा इंटर्नशिप समन्वयक की नियुक्ति करना। • इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा शिक्षक शिक्षा संस्थान को आवंटित शालाओं में संस्थान के दर्ज छात्राध्यापकों आवंटन करना। • छात्राध्यापकों को एक विकल्प की सुविधा दी जा सकती है, परन्तु अंतिम निर्णय संस्थान प्राचार्य और इंटर्नशिप समन्वयक का रहेगा।
4	शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयकों और चयनित शालाओं के प्रधानाध्यापकों / प्राचार्यों का शाला इंटर्नशिप	जुलाई माह चतुर्थ सप्ताह	1 दिवस	नोडल संस्थान के (डाईट) प्राचार्य द्वारा	• प्राचार्य डाइट, शिक्षक शिक्षा संस्थानों के प्राचार्यो द्वारा नियुक्त इंटर्नशिप समन्वयकों के नाम और आंवटित शालाओं की सूची (शासकीय / माध्यमिक) दर्ज प्रवेशित छात्राध्यापकों के नाम के साथ प्राप्त करें। • आवंटित शालाओं के प्रधानाध्यापकों / प्राचार्य एवं शिक्षक शिक्षा संस्थान के इंटर्नशिप समन्वयकों को एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम की सूचना दें। (निर्धारित सप्ताह में तिथि तय कर)

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
	उन्मुखिकरण कार्यक्रम				• सभी इंटर्नशिप समन्वयकों एवं शाला के प्रधानाध्यापकों/प्राचार्यों को इंटर्नशिप मार्गदर्शिका एवं मूल्यांकन और सुपरविजन के प्रपत्रों की प्रतिलिपियों के 1–1 सेट उपलब्ध करायें और उनके उत्तरदायित्वों से परिचित करवायें। • समस्त शासकीय प्रधानाध्यापकों/प्राचार्यों से अपनी–अपनी शाला में बनाये जाने वाले चयनित मेंटर शिक्षकों के नाम, पद, और फोन नम्बर के साथ सूची प्राप्त करें। • अशासकीय शिक्षक शिक्षा संस्थानों के इंटर्नशिप समन्वयकों को आवंटित शासकीय शालाओं के मेंटर शिक्षक की सूची उपलब्ध करायें और उनको अपनी संस्था में उन्मुखिकरण हेतु निर्देशित करें।
5	शिक्षक शिक्षा संस्थान स्तर पर अकादमिक सदस्यों का संस्थान सुपरवाईजर और विषय विशेषज्ञ के रूप में उन्मुखिकरण	अगस्त माह प्रथम सप्ताह	1 दिवस	शिक्षक शिक्षा संस्थान प्राचार्य एवं इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा	• संस्थान के सुपरवाईजर और विषय विशेषज्ञों का चयन कर इंटर्नशिप कार्यक्रम हेतु उन्मुखिकरण करें। • संस्थान सुपरवाईजर और विषय विशेषज्ञों को इंटर्नशिप मार्गदर्शिका उपलब्ध करायें और उनके उत्तरदायित्वों से परिचित करायें। • संस्थान सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ, मेंटर शिक्षक की छात्राध्यापकों के मार्गदर्शन में समन्वित भूमिका को स्पष्ट करें।
6	शिक्षा शिक्षा संस्थान स्तर पर मेंटर शिक्षक का उन्मुखिकरण	अगस्त माह द्वितीय सप्ताह	1/2 दिवस	शिक्षक शिक्षा संस्थान के इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा	• आवंटित शासकीय शालाओं के मेंटर शिक्षक का उन्मुखिकरण करें। • मेंटर शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट करें। • मेंटर शिक्षकक को शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका के आधार पर प्रशिक्षित कर शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका की प्रति दें और उसमें लिखे मेंटर शिक्षक के उत्तरदायित्वों पर अमल करने हेतु प्रशिक्षित करें। • आवंटित छात्राध्यापकों की सूची उपलब्ध करायें। • शासकीय एवं अशासकीय शाला के अवलोकन कार्यक्रम से परिचित करवायें। • शासकीय और अशासकीय शाला की समस्त गतिविधियों में छात्राध्यापकों का कार्य विभाजन कर समय सारणी संधारित करने हेतु प्रशिक्षित करें। • शाला और संस्थान के मध्य, मध्यस्थ की भूमिका निभाते हुए दोनों संस्थाओं की शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु प्रेरित करें। • समय–समय पर संस्थान को छात्राध्यापक की प्रगति से अवगत कराने हेतु निदेर्शित करें। • छात्राध्यापक के संबंध में आवश्यकता होने पर संस्थान को अनुशासन संबंधी समस्या की जानकारी देना और मार्गदर्शन देने हेतु निदेर्शित करें। • छात्राध्यापक के आकलन में संस्थान विशेषज्ञ या सुपरवाईजर के साथ निरन्तर सहयोग हेतु मागदर्शन करें।

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
			1/2 दिवस		• प्रत्येक मेंटर शिक्षक को आवंटित छात्राध्यापकों की सूची के साथ संस्थान में उपस्थित आवंटित छात्राध्यापकों से परिचय करवायें। • मेंटर शिक्षक अपनी शाला की समय सारणी और संचालित गतिविधियों का परिचय छात्राध्यापकों को देंगे और छात्राध्यापकों को शाला की अपेक्षाओं से अवगत करायेंगे। • वर्तमान में चल रहे सभी विषयों के पाठ्यक्रमों से परिचय करवायेंगें ताकि छात्राध्यापक पूर्व तैयारी के साथ शाला अवलोकन/कक्षा शिक्षण का कार्य करें।
7	शिक्षक शिक्षा संस्थान स्तरीय छात्राध्यापकों का उन्मुखिकरण	अगस्तर माह द्वितीय सप्ताह	5 दिवस	इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा	• छात्राध्यापकों का शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम से परिचय करायें। • शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम के उद्देश्य से लेकर आकलन तक की प्रक्रिया पर छात्राध्यापकों का उन्मुखिकरण करें। • छात्राध्यापकों को शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की तीनों चरणों की गतिविधियों के अंतर्गत आकलन की प्रक्रिया पर उन्मुखिकण करें। • शाला की समस्त शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता पर उन्मुखिकण करें। • शासकीय एवं अशासकीय शाला के शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम के पश्चात् तुलनात्मक विश्लेषण कर दोनों शालाओं की श्रेष्ठ शिक्षण प्रक्रियाओं को चयन करने हेतु प्रेरित करें। • संस्थान के विषय विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों के इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान किये जाने वाले सत्रगत कार्यों पर समझ विकसित कर सत्रगत कार्यों का आंवटन करें और रिकार्ड संधारित रखें। • ब्लू प्रिंट और प्रश्न पत्र निर्माण, यूनिट टेस्ट, निदानात्मक प्रशिक्षण का उपचारात्मक शिक्षण योजना के साथ निर्माण करना सिखायें। • CCE द्वारा आकलन पर परीक्षण दे। • शाला इंटर्नशिप के दौरान शाला के विभिन्न अभिलेखों के रखरखाव पर चर्चा करें। • इकाई योजना एवं पाठ योजना पर चर्चा कर प्राथमिक स्तर पर 4 विषयों की आदर्श पाठ योजना का एवं माध्यमिक स्तर पर सभी विषयों की आदर्श पाठ योजनाओं का प्रस्तुतीकरण विषय शिक्षक द्वारा किया जाए। यह आदर्श पाठ योजना का प्रस्तुतीकरण संस्थान से जुड़ी हुयी लैब शाला में जाकर किया जाए जिस पर छात्राध्यापकों और शिक्षकों के बीच में पर्याप्त चर्चा होना चाहिए। • छात्राध्यापकों द्वारा प्राथमिक स्तर पर सभी विषयों की एवं माध्यमिक स्तर पर चयनित विषयों की एक–एक पाठ योजना (आलोचनात्मक पाठ योजना) का निर्माण कर संस्थान से जुड़ी लैब शाला में प्रदर्शन किया जाएगा। जिस पर विषय विशेषज्ञ, संस्थान सुपरवाईजर, साथी छात्राध्यापकों द्वारा आलोचनात्मक आधार पर अवलोकन कर फीडबैक और सझाव दिये जाएंगे

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
					जो भविष्य में कक्षा शिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों को अपनाने हैं। ● छात्राध्यापकों द्वारा कम से कम अपने साथी की दो पाठ योजनाओं का अवलोकन कर फीडबैक अवश्य दिया जाए। क्योंकि यह प्रशिक्षण है। यह कार्य इंटर्नशिप के दौरान भी किया जाएगा। ● रिफ्लेक्टिव जर्नल लिखने की कार्यशाला की जाए और लैब एरिया से जुड़ी शाला में विशेषज्ञों के आदर्श पाठ प्रदर्शन एवं छात्राध्यापकों के आलोचनात्मक पाठ प्रदर्शन के दौरान रिफ्लेक्टिव जर्नल लिखने का व्यावहारिक कार्य दिया जाए और उस पर चर्चा कर फीडबैक दिया जाए साथी ही भविष्य में इंटर्नशिप अवधि के दौरान छात्राध्यापक द्वारा रिफ्लेक्टिव जर्नल लिखने का कार्य अच्छी तरह सम्पादित किया जा सके।
8	चयनित अशासकीय शालाओं में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर का अवलोकन एवं समुदाय के साथ चर्चा।	अगस्त माह तृतीय सप्ताह से सितंबर प्रथम सप्ताह तक	3 सप्ताह (18 दिवस)	इंटर्नशिप समन्वयक, शाला प्रधानाध्यापक /प्राचार्य, मेंटर शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाईजर द्वारा	● शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका में दिये गये निर्देशोनुसार कार्यवाही। ● छात्राध्यापकों द्वारा चयनित अशासकीय शालाओं के अंतर्गत 1 सप्ताह प्राथमिक स्तर का 2 सप्ताह माध्यमिक स्तर का तीसरे सप्ताह बच्चों एवं पालकों के साथ तथा समुदाय के साथ चर्चा कर अपने अनुभव को रिफ्लेक्टिव जर्नल में लिखकर संधारित किया जाए। ● अशासकीय शालाओं के प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के कक्षा शिक्षण का अवलोकन कर अनुभवों को रिफ्लेक्टिव जर्नल में लिखें। ● अशासकीय शालाओं के प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर का शाला अवलोकन कर प्रपत्र संधारित करें।
9	चयनित शासकीय शालाओं (प्राथमिक और माध्यमिक) का अवलोकन एवं समुदाय के साथ चर्चा।	सितंबर माह द्वितीय सप्ताह	1 सप्ताह (6 दिवस)	इंटर्नशिप समन्वयक, शाला प्रधानाध्यापक /प्राचार्य, मेंटर शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाईजर द्वारा	● शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका में दिये गये निर्देशोनुसार कार्यवाही। ● अशासकीय शालाओं के अनुसार ही शासकीय शाला की संपूर्ण गतिविधियों की समझ का विकास। ● छात्राध्यापकों द्वारा चयनित शासकीय शालाओं से प्राथमिक और माध्यमिक स्तर का अवलोकन किया जाए। ● प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के बच्चों एवं पालकों के साथ–साथ समुदाय के साथ भी चर्चा कर अपने अनुभवों को रिफ्लेक्टिव जर्नल में लिखकर संधारित करें। ● शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर वर्तमान समय में पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम का अवलोकन कर कक्षा शिक्षण के लिए इकाई योजना का निर्माण करें। इकाई योजना के आधार पर ही आगामी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर पाठ योजनाओं का निर्माण कर शिक्षण करें।

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
10	चयनित शासकीय शालाओं के प्राथमिक स्तर पर शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम (प्रथम चरण)	सितंबर माह तृतीय सप्ताह से अक्टूबर माह चतुर्थ सप्ताह तक	6 सप्ताह (36 दिवस)	इंटर्नशिप समन्वयक, शाला प्रधानाध्यापक /प्राचार्य, मेंटर शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाईजर द्वारा	• शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका में दिये गये निर्देशोनुसार कार्यवाही। • शासकीय शालाओं की सम्पूर्ण गतिविधियों का अवलोकन करें। • प्राथमिक स्तर पर पढ़ाये जाने वाले चारों विषयों पर नियमित शिक्षकों की कक्षाओं का अवलोकन करें। • नियमित शिक्षक की प्रत्येक विषय की 4 पाठयोजनओं का अवलोकन करें। • 40 पाठ योजनाओं का निर्माण एवं शिक्षण (4 विषयों का शिक्षण अर्थात प्रत्येक विषय की 10 पाठ योजनाओं का निर्माण एवं शिक्षण) करें। • अपने साथी की प्रत्येक विषय की 4 पाठ योजनाओं का अवलोकन करें। • 2 यूनिट टेस्ट का निर्माण (निदानात्मक परीक्षण उपचारात्मक शिक्षण योजना के आधार पर) करें। • क्रियात्मक अनुसंधान, केस स्टडी, शाला प्रोफाईल और छात्राध्यापक पोर्टफोलियों (शैक्षिक सहशैक्षिक गतिविधियों के आधार पर) का निर्माण और अन्य अभिलेखों का संधारण करें। • रिफ्लेक्टिव जर्नल का निर्माण करें।
11	शिक्षक शिक्षा संस्थानों में प्रथम चरण की समीक्षा	नवम्बर माह प्रथम सप्ताह	1 सप्ताह (6 दिवस)	इंटर्नशिप समन्वयक, शाला, संस्थान सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ एवं मेंटर शिक्षक द्वारा	• प्रथम चरण की समीक्षा के दौरान मेंटर शिक्षक के साथ संबंधित छात्राध्यापक का 1 दिवसीय फीडबैक कार्यक्रम • शिक्षक शिक्षा संस्थान द्वारा छात्राध्यापक के प्रथम चरण की गतिविधियों पर समूहवार संस्थान के विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में समीक्षा की जाये। • सप्ताह के अंतिम दिवस समस्त छात्राध्यापकों द्वारा प्रथम चरण का का प्रस्तुतीकरण और समीक्षा मेंटर शिक्षक को बुलाकर कि जाए। एक दिवसीय सेमीनार में फीडबैक के साथ–साथ मेंटर शिक्षक, संस्थान सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ द्वारा मागदर्शन और अनुभवों को साझा कर द्वितीय चरण में सुधार हेतु छात्राध्यापकों को निर्देशित करें।
12	चयनित शासकीय शालाओं के माध्यमिक स्तर पर शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम (द्वितीय चरण)	नवम्बर–दिसंबर माह नवम्बर माह द्वितीय सप्ताह से दिसंबर माह तृतीय सप्ताह	36 दिवस माध्यमिक शालाओं में	इंटर्नशिप समन्वयक, शाला प्रधानाध्यापक /प्राचार्य, मेंटर शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाईजर द्वारा	• शासकीय माध्यमिक शाला के अन्तर्गत 40 पाठ योजना का निर्माण एवं शिक्षण अर्थात प्रत्येक विषय की लगभग 20 पाठ योजनाओं का निर्माण एवं शिक्षण। • छात्राध्यापक को अपने साथी की प्रत्येक विषय की 4 पाठ योजनाएँ अर्थात 2 विषय की 8 पाठ योजनाओं का अवलोकन करें। • 2 यूनिट टेस्ट का निर्माण (निदानात्मक परीक्षण उपचारात्मक शिक्षण योजना के आधार पर) करें। • क्रियात्मक अनुसंधान, केस स्टडी, शाला प्रोफाईल और छात्राध्यापक पोर्टफोलियों (शैक्षिक सहशैक्षिक गतिविधियों के आधार पर) का निर्माण और अन्य अभिलेखों का संधारण करें। • रिफ्लेक्टिव जर्नल का निर्माण करें।

क्र.	प्रस्तावित गतिविधियाँ	प्रस्तावित माह एवं (अनुमानित समय)	अवधि	जवाबदारी	कार्य विवरण
13	छात्राध्यापकों का आंतरिक मूल्यांकन	दिसंबर माह चतुर्थ सप्ताह	1 सप्ताह (6 दिवस)	इंटर्नशिप समन्वयक, शाला, संस्थान सुपरवाईजर, विषय विशेषज्ञ एवं मेंटर शिक्षक	• प्रत्येक छात्राध्यापक के द्वारा शाला अवलोकन के दौरान की गयी विभिन्न गतिविधियों के आकलन प्रपत्र संधारित कर अधिभार के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन कार्य का आकलन 1 या 2 दिवसीय सेमीनार का आयोजन कर किया जाये। • शिक्षक शिक्षा संस्थान में मेंटर शिक्षक को बुलाकर अनुभव को साझा करें और संस्थान सुपरवाईजर मेंटर शिक्षक विषय विशेषज्ञ प्रत्येक छात्राध्यपक का आकलन कर रिकार्ड संधारित करें। • जिन छात्राध्यापकों को इंटर्नशिप अवधि 90 प्रतिशत पूर्ण नहीं हो पा रही हैं उन्हें संस्थान प्रमुख द्वारा पूर्व में स्वीकृत की गई केवल 10 प्रतिशत अवधि को ही पूर्ण करने का एक अवसर संस्थान प्राचार्य और इंटर्नशिप समन्वयक द्वारा दिया जाएगा। • इन छात्राध्यापकों को संस्थान समय के अलावा, प्रातः कालीन लैब एरिया की शालाओं में प्राचार्य और मेंटर के मार्गदर्शन में अपना कार्य पूर्ण करने का अवसर प्रदान किया जाये। • इन छात्राध्यापकों का आकलन भी पुनः शाला के प्रधानाध्यापक और मेंटर से प्राप्त किया जाये। • इन छात्राध्यापकों को संस्थान के सुपरवाईजर के मार्गदर्शन में शाला गतिविधियों के लिए भेजा जाये। • इंटर्नशिप अवधि के समय किसी भी संस्थान प्रमुख द्वारा छात्राध्यापक को संस्थान समय में छुट नहीं दी जायेगी और अवकाश भी स्वीकृत नहीं किया जाएगा। विशेष परिस्थिति में 10 प्रतिशत अवकाश स्वीकृत करने की छूट रहेगी। • जिन छात्राध्यापकों की उपस्थिति 90 प्रतिशत पूर्ण नहीं होगी उनकों परीक्षा में बैठने की पात्रता नहीं होगी। उनका आंतरिक मूल्यांकन भी माध्यमिक शिक्षा मण्डल को नहीं भेजा जाएगा।

11. उपसंहार

शिक्षा की गुणवत्ता अच्छे शिक्षकों पर निर्भर करती है। प्रारंम्भिक शिक्षा में अच्छे निर्माणवादी और नवाचारी शिक्षकों की आवश्यकता है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम इस उद्देश्य की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हे। इसी संदर्भ में NCTE द्वारा इंटर्नशिप की अवधि को बढ़ाया गया है। लम्बी अवधि के साथ–साथ राज्य शिक्षा संस्थान, SCERT,IASEs/CTEs/DIETs/ और शालाओं के साथ–साथ शिक्षक अकादमिक सदस्यों, प्रधानाध्यापकों, मेंटर शिक्षकों की भी जवाबदारी तय कि गई है ताकि शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम को सार्थक और उपयोगी बनाया जा सकें। इस शाला इंटर्नशिप मार्गदर्शिका का निर्माण सुझावात्मक रूप से किया गया है ताकि सभी शिक्षक शिक्षा संस्थायें इंटर्नशिप कार्यक्रम को बेहतर तरीके से लागू कर भविष्य के शिक्षकों के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका और जिम्मेदारी का निर्वहन कर सकें।

12. संदर्भ ग्रंथ सूची

- भारत का राजपत्र–असाधारण, भाग II खण्ड 4 परिशिष्ठ 2
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE Act -2009)
- School Intership: Framework and Guidelines 2016 by NCTE
- NCFTE-2009 by NCTE
- School Intership program for diploma in elimantry education, guidlines for effective implimentation by NCERT 2016

13. परिशिष्ठ

इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापकों द्वारा शाला में कई प्रकार के कार्यों का सम्पादन किया जाएगा जिनका रिकार्ड संधारित करना अति आवश्यक है। कुछ महत्वपूर्ण कार्यों के सुझावात्मक प्रारूप परिशिष्ठ में दिए जा रहें हैं जो निम्नानुसार हैं।

- **परिशिष्ठ क्रमांक– 1:** पाठ्यपुस्तक / स्रोत सामग्री विश्लेषण प्रारूप
- **परिशिष्ठ क्रमांक –2:** रिफ्लेक्टिव जर्नल का प्रारूप
- **परिशिष्ठ क्रमांक –3:** कक्षा अवलोकन का प्रारूप
- **परिशिष्ठ क्रमांक –4:** इकाई योजना प्रारूप
- **परिशिष्ठ क्रमांक –5:** पाठयोजना का प्रारूप
- **परिशिष्ठ क्रमांक –6:** केस स्टडी का प्रारूप
- **परिशिष्ठ क्रमांक –7:** नवाचारी केन्द्र के भ्रमण का प्रारूप
- **परिशिष्ठ क्रमांक –8:** क्रियात्मक अनुसंधान का प्रारूप
- **परिशिष्ठ क्रमांक–9:** पर्यवेक्षण / आकलन का प्रारूप

परिशिष्ठ क्रमांक– 1

पाठ्यपुस्तक/स्रोत सामग्री विश्लेषण

पाठ्य सामग्री की सामान्य जानकारी

1. सामग्री का नाम
2. विषय
3. कक्षा
4. प्रकाशक
5. लेखक/लेखकगण/पाठ्य सामग्री विकास समूह
6. संपादक
7. सामग्री की कुल पृष्ठ संख्या
8. पाठ्य सामग्री का मूल्य/निःशुल्क वितरण

अ.) विषय वस्तु और शिक्षण शास्त्र

1. पाठ्यपुस्तक/अन्य स्रोत सामग्री में विषय वस्तु के संगठन की प्रकृति कैसी है? क्या वह विशेष पद्धति के अनुरूप है?
2. विषय वस्तु की अधिगम सामग्री किस सीमा तक विषय के उद्देश्यों को पूरा कर पा रही है? उदाहरण सहित समझाइये।
3. विषयवस्तु की अधिगम सामग्री किस सीमा तक सही और प्रमाणित है? इसके बारे में विस्तार से लिखिये।
4. अधिगमकर्ता में क्या यह सामग्री अधिगम सिद्धांतों की नींव का निर्माण कर पा रहीं हैं?
5. क्या अधिगम सामग्री में दी गयी विषयवस्तु/गतिविधियाँ/क्रियाकलाप एवं लक्ष्य निम्नलिखित शैक्षिक और सामाजिक कौशलों का विकास कर पा रहे हैं?
   i. स्त्रोत के आधार पर
   ii. दूसरों के प्रति संवेदनशीलता के आधार पर, दूसरों के प्रति भलाई और भावनाओं से संबंधित
   iii. भूमिका/आलोचनात्मक दृष्टिकोण
   iv. सीखने के लिए सीखना
   v. कार्य और दक्षता की आर्थिक जीवन में उपयोगिता
   vi. सौन्दर्यअनुभूति के दृष्टिकोण से प्रोत्साहन

6. देश/राज्य के विभिन्न भागों के ग्रामीण और शहरी वातावरण के आधार पर अधिगम सामग्री की विषयवस्तु है या नहीं?
7. अवधारणाओं को विस्तारित करने के लिए स्थानीय/राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण दिये गये हैं या नहीं। क्या इनका विषय/उपविषय, विषयवस्तु में दिये गये पाठों और उनमें लिखी गयी पाठ्यवस्तु से संबंधित है?
8. अवधारणाओं के साथ स्थानीय मुद्दों को जोड़ा गया है या नहीं। उदाहरण दे कर समझाइये।
9. अधिगम सामग्री में स्थानीय और राज्य के विशिष्ट मुद्दें जोड़े गये है? हाँ या नहीं विवरण दीजियें।
10. क्या अधिगम सामग्री में रचनात्मक विश्लेषण और रचनात्मक चितंन को जगह दी गयी हैं? हाँ, तो विस्तार से समझाईये।
11. विषयवस्तु में दी गयी सामग्री की भाषा स्थानीय और राज्य के संदर्भ में या नहीं ? विवरण दीजिये।
12. व्यापक अवधारणाओं को समझने के लिए अधिगम प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय रूप में संलग्न करने की सुविधा पाठ्यपुस्तक में दी गयी है या नहीं। उदाहरण की सहायता से समझाइयें।

13. स्वअधिगम एवं स्वप्रेरणा के आधार पर विषयवस्तु को विस्तार से समझने की गुजांईश दी गयी है? यदि हाँ तो विवरण दीजिये।
14. क्या पाठ्यसामग्री में ऐसे मुद्दे हैं जिनका विपरित मनौवैज्ञानिक प्रभाव छात्रों पर पड़ेगा? यदि हाँ तो विस्तार से समझाइये।

शिक्षण शास्त्र

1. क्या परस्पर प्रभाव डालने वाला कोई विवरण सामग्री में दिया गया है? यदि हाँ तो बताइये।
2. क्या पाठ्यपुस्तक में गतिविधि और उत्पादक काम पर आधारित अवधारणाओं को स्थान दिया गया है? हाँ या नहीं, उदाहरण द्वारा समझाइये।
3. क्या अधिगम सामग्री में दी गयी विषय वस्तु के द्वारा उत्पादक कार्य से संबंधित गतिविधियों की प्रेरणा मिलती है? यदि हाँ, तो कैसे?
4. क्या अवधारणाओं को विस्तृत करने के लिए जो अधिगम सामग्री द्वारा उदाहरण समझाया गया है वह स्पष्ट है, इससे अधिगमकर्ता की समझ में भ्रम की स्थिति तो नहीं हो रही है? यदि हाँ तो उसे पहचान कर बताये।
5. क्या पाठ्यपुस्तक में दिये गये उदाहरण छात्रों को दैनिक जीवन में परिस्थितियों को समझने में मदद कर रहे हैं? यदि हाँ, कुछ उदाहरण द्वारा बतायें।
6. क्या छात्रों के लिए पाठयपुस्तक की भूमिका लिखी गई है? यदि हाँ, तो भूमिका की मुख्य बातों को बतायें।
7. क्या पाठ के प्रांरभ में ही उसका मुख्य उद्देश्य/विचार स्पष्ट रूप से दिया गया है।
8. क्या शिक्षक के लिए कुछ मार्गदर्शन या प्रशिक्षण की बात कही गयी है कि कैसे वह इस सामग्री का कक्षा में उपयोग करेगा? यदि हाँ, तो विस्तृत रूप से बतायें।
9. क्या आप सोचते हैं कि शिक्षक को कुछ अतिरिक्त सामग्री का उपयोग पाठों को पढ़ाने के लिए करना चाहिए? यदि हाँ, तो सामग्री की सूची बनायें।
10. क्या आप सोचते हैं की शिक्षक संपूर्ण अधिगम सामग्री का शिक्षण में उपयोग पाठ्यक्रम पूर्ण करने के लिए दिये गये निर्धारित समय पर कर पाते हैं? यदि नहीं, तो कारण बताइये एवं सुझाव दीजिये।
11. क्या विषय की विशिष्ट अवधारणा को अवलोकन के दौरान सीखने के और अधिगम सामग्री द्वारा बाह्य और आंतरिक गतिविधियों को सम्पन्न करने के अवसर दिये गये हैं? हाँ तो बताइये।
12. क्या अधिगम अवधारणाओं को समझने में अधिगम सामग्री के रूप में सूचना एवं प्रौद्योगिक (ICT) का उपयोग शिक्षक और छात्रों को प्रोत्साहित कर रहा हैं? उदाहरण सहित समझाइये।
13. क्या सीखने की सामग्री शिक्षकों को सूचना एवं प्रोद्योगिक के अलावा अन्य शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं? उदाहरण सहित समझाइये।

सामाजिक, राजनैतिक सोच एवं दृष्टिकोण

1. क्या आप समझते हैं कि दी गयी सामग्री निष्पक्ष रूप से लिंग, वर्ग और समावेशी मुद्दों को प्रस्तुत कर रही है? उदाहरण द्वारा समझाइये।
2. कैसे और कहाँ सामग्री निम्नलिखित पहलुओं को एकीकृत कर रहीं हैं? (एकीकरण की प्रकृति एवं पृष्ठ संख्या का वर्णन करें)
   - i. भरोसा
   - ii. परस्पर आदर
   - iii. विविधता के लिए सम्मान
   - iv. मानव अधिकार – मानव गरिमा और अधिकार
   - v. अन्तःविषय दृष्टिकोण
   - vi. लिंग (gendar) के प्रति सोच
   - vii. लिंग समानता
   - viii. उदाहरण में बालक एवं बालिका के लिए प्रयुक्त विश्लेषण

ix. महिला एवं पुरूष के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले व्यवसाय
x. प्रचलित तथागत प्रथाओं के चित्रण को कम महत्व देना
xi. सामर्थ्य संबंधो (लिंग) का उपयोग
xii. लिंग चिंताओं का प्रतिनिधित्व प्रतीकवाद के एकीकरण के रूप में
xiii. महिलाओं का प्रस्तुतिकरण परिवर्तन के प्रतिनिधि के रूप में
xiv. सक्रिय बनाम निष्क्रिय भूमिका, वस्त्रो के आधार पर (घुंघट, पर्दा)
xv. पुरूषों और स्त्रियों का दृश्यों में स्थान
xvi. लिंग–संवेदनशील भाषा

3. क्या वर्तमान विषय वस्तु विशेष आवश्यकता आधारित बच्चों और समावेशी शिक्षा पर आधारित है?

i. पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु में चरित्र का चित्रण– मुकबधिर, दृष्टि बाधित, मानसिक परेशानी वाले बच्चों के लिए उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग
ii. विषय–वस्तु में ऐसे पात्रों का समावेश करना जिनमें मानव जीवन के सामान्य बच्चों के विपरित कुछ कठिनाईयाँ आती हैं।
iii. अधिगम कठिनाई वाले बच्चों के लिए उचित Font size के शब्दों का चयन
iv. विभिन्न अधिगम कठिनाईयों वाले बच्चों के लिए ICT के उपयोग को विस्तृत उदाहरण देना।
v. पढ़ने की कठिनाई वाले बच्चों के लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में सारांश देना।

आकलन

i. क्या अधिगम सामग्री यह मार्गदर्शन देती है की अधिगमकर्ता का किस प्रकार मूल्यांकन किया जाये?
ii. क्या प्रत्येक पाठ के विभिन्न उपविषयों की अधिगम सामग्री में भी आकलन के प्रश्न और गतिविधियाँ समाहित की गयी है?
iii. क्या आप सोचते हैं की विषय वस्तु के प्रश्न उपविषय के महत्वपूर्ण विचार को समझने में मदद करते हैं?
iv. क्या अधिगम सामग्री में गतिविधियाँ, उदाहरण, नक्शे, चित्र दिये गये हैं? क्या वह पर्याप्त मात्रा में सही स्थान पर दिये गये हैं?
v. क्या आप समझते है शिक्षक एवं छात्र अधिगम सामग्री के रूप में दी गई समस्त सुधारात्मक गतिविधियाँ कर पायेंगे?
vi. क्या प्रत्येक पाठ के अन्त में दिये गये अभ्यास, पाठों में दी गई अवधारणाओं, विषयों की चर्चाओं पर आधारित है? क्या इसके द्वारा पाठ की विषय वस्तु की पुनरावृत्ति और सारांशीकरण हो रहा है?
vii. क्या पाठ के अन्त में दिये गये अभ्यास, पाठ में चर्चा के लिए दिए गए विषय और अवधारणाओं से संबंध रखते हैं।
viii. क्या पाठ्यपुस्तक के अन्त में दी गयी विवरणात्मक (टिप्पणी) और अभ्यास पाठ्यपुस्तक के पाठों का स्वमूल्यांकन करने में मदद करते हैं? क्या पाठों के मध्य और अन्त में दिये गये प्रश्न बच्चों को निम्न प्रकार सोचने में मदद करते हैं–
    - गहन चिन्तन (रिफ्लेक्शन)
    - विश्लेषणात्मक सोच
    - समस्या समाधान
    - सृजनात्मक सोच
ix. क्या उपरोक्त गतिविधियों को करने में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को कठिनाईयाँ आती हैं?

संरचनात्मक पहलु (प्रस्तुतीकरण और भाषा और दृश्यों का उपयोग)

1. पाठों का विभाजन तर्क के आधार पर किस प्रकार किया गया है? जैसेः– वर्ग/भाग और परिच्छेद
2. क्या पाठों की लम्बाई निर्धारित आयु के स्तर को ध्यान में रखकर बनाई गयी है?
3. क्या विषय वस्तु की सामग्री अधिगम सामग्री के रूप में एक या दो कॉलम के रूप में प्रस्तुत की गयी है?
4. क्या अधिगम सामग्री का अभिन्यास पढ़ने की दक्षता को बढ़ाता है?
5. क्या विषय वस्तु में दी गई सामग्री और उसका प्रस्तुतीकरण बच्चे की आयु और संज्ञानात्मक स्तर के अनुरूप है?
6. क्या आप सोचते है वाक्यों की औसत लम्बाई अधिगमकर्ता के उपयुक्त है?
7. क्या दी गयी भाषा अधिगमकर्ता के लिए सरल और व्यापक है?
8. क्या तकनीकी शब्द और अवधारणा कोष्ठक या शब्दकोष या दोनों रूप में दिये गये हैं?
9. क्या अधिगम सामग्री में यूनिट से यूनिट और यूनिट के अन्दर संबंध है?
10. क्या विषय वस्तु छात्रों के लिए रोचक और आनन्ददायी है? इसके द्वारा बच्चे की रूचि को कितना स्थायीत्व मिलेगा?
11. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण किस प्रकार आधुनिक रूझानों का संज्ञान देता है?
12. प्रासंगिक बॉक्स में दी गयी जानकारी/प्रश्न/केस स्टडी किस प्रकार विषय वस्तु का संवर्धन करती है?
13. क्या आपको विषय वस्तु में त्रुटियाँ और विसंगतियाँ मिलती हैं? यदि हाँ तो निम्न प्रकार बतायें–
    त्रुटि का नाम..
    स्थान..
    पुरानी जानकारी. (Outdated).....................
    चित्रण..
    अभ्यास ....
    पृष्ठ क्रमांक..

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

मेंटर के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

सुपरवाईज़र/विषय विशेषज्ञ के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

रिफ्लेक्टिव जर्नल का प्रारूप

गतिविधि का नाम–

गतिविधि का उद्देश्य–

- गतिविधि को लागू करने के बारे में आपका विचार?
- आप कैसे गतिविधि को लागू कर रहें हैं?
- गतिविधि में आने वाली समस्यायें क्या हैं?
- आगामी आने वाले समय में इसे कैसे बेहतर बनायेंगे?

विवरण–क्या ?

- (वस्तुनिष्ठता के आधार पर समझायें की क्या हुआ?) बिना किसी निष्कर्ष और व्याख्या के विस्तृत रूप से कक्षा प्रस्तुतीरकण और कक्षा में उपयोग की जा रही पद्धतियों के बारे में विस्तार से वर्णन करें।
- मार्गदर्शन देने वाले प्रश्नों को बतायें?
- किस मुद्दे या विषय पर प्रस्तुतीकरण किया गया?
- आपने प्रस्तुतीकरण के दौरान क्या देखा?
- क्या कुछ सकारात्मक लगा? अगर हाँ, तो विस्तृत रूप से समझाइये?

विवरण को कुछ गहन चिंतन के साथ लिखेंः क्यों (व्याख्या में आपने जो सीखा उसे अवश्य लिखें)

- आप अपनी भावनाओं, विचारों के आधार पर चर्चा कर सत्र का विश्लेषण करें। यह एक विवरणात्मक वर्णन होगा पर यह आपकी प्रतिक्रिया पर आधारित होगा। यह प्रतिक्रिया सीधे रूप में नहीं की जाये, यह स्पष्ट रूप से कुछ अर्थ के आधार पर गहन चितंन के रूप में की जानी चाहिए।

प्रश्न निम्नानुसार हो सकते हैं–

- क्या आपने नये कौशल को सीखा? यदि हाँ तो वर्णन करें।
- आपने सत्र के दौरान क्या सीखा? या आप सत्र के दौरान सीखने को लेकर अपनी असहमति देना चाहते हैं।
- इस सत्र में क्या अलग लगा?
- क्या आपने जो सोचा था उससे यह सत्र अलग लगा? किस प्रकार
- इस सत्र में आपकों क्या आश्चर्यजनक लगा?
- क्या सत्र के दौरान प्राप्त सूचना आपके पूर्व के अनुभव और विश्वास पर आधारित थी? हाँ या नहीं।
- क्या सत्र के पश्चात् आपकी सोच में परिवर्तन आया है?

गहन चितंन– आगे क्या करना है?

(इस अनुभव के आधार पर आगे आप क्या सोचते हैं?)

प्रश्न निम्नानुसार हो सकते हैं–

- इस अनुभव के आधार पर आपने क्या सीखा?
- आप अपने शिक्षण के दौरान इस अधिगम अनुभव को किस प्रकार लागू करेंगे? लिखिये।
- आपने जो इस सत्र में सीखा, क्या नये शिक्षक के रूप में आपको चुनौती लगता है?
- क्या इस के दौरान कोई वैकल्पिक व्याख्या को आप शामिल करना चाहते हैं?
- क्या इस सत्र के विषय से पीछे हटना चाहते हैं? क्या आपको यह अलग लगता हैं?
- अधिगमकर्ता के रूप में मैनें स्वयं से गहन चितंन कर क्या सीखा है कि भविष्य का शिक्षक बनने के लिए मुझमें क्या–क्या गुण होना चाहिए? लिखिये।
- संबंधित सत्र के दौरान आप किस प्रकार निर्णय करेंगे कि आपकी योग्यता के अनुसार आपने प्रतिक्रिया दी है।
- सत्र से संबंधित आप और क्या सीखना चाहते हैं? लिखिये।
- चुनौतियों और कठिनाईयों को दूर करने के लिए आप और क्या–क्या कार्यवाही चाहते हैं?

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

मेंटर के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

सुपरवाईज़र/विषय विशेषज्ञ के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

परिशिष्ठ क्रमांक – 3

कक्षा अवलोकन प्रारूप

कक्षा अवलोकन के मुख्य घटकः–

1. **योजना–यूनिट/पाठ**
   - उद्देश्य
   - पाठ्य सामग्री
   - पद्धति/शिक्षण की तकनीक/गतिविधियाँ
   - TLM शिक्षण अधिगम सामग्री
   - अधिगम के परिणाम
2. **पाठों का प्रस्तुतीकरण**
   - पाठ्यसामग्री
   - प्रस्तुतीकरण
   - शिक्षण शास्त्र के इनपुट– पद्धतियाँ/तकनीक/गतिविधियाँ
3. **कक्षा प्रबंधन**
   - प्रश्नावली वार्तालाप और प्रश्नोत्तर कौशल इत्यादि।
   - अनुशासन
   - शिक्षक की गतिविधियाँ
   - प्रभावशाली अदान–प्रदान
   - विद्यार्थियों की सहभागिता
   - श्यामपट्ट कार्य
4. **अधिगम की सम्प्राप्तियाँ**
   - उद्देश्यों से संबंधित
   - विषयवस्तु की पूर्णता
   - सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित
   - छात्र का विशिष्ट व्यवहार और उसकी प्रतिक्रियाएँ
5. **फीडबैक/अनुसरण**
   - मेंटर शिक्षक और सुपरवाईज़र के साथ परामर्श/सलाह–मशवरा करना।

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

मेंटर के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

सुपरवाईज़र/विषय विशेषज्ञ के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

परिशिष्ठ क्रमांक – 4

इकाई योजना का प्रारूप

कक्षा.............................

विषय...........................

क्र.	इकाई का नाम	उपइकाई / विषय वस्तु	आवश्यक पाठों की संख्या	शीर्षक का नाम	अधिगम उद्देश्य और कौशल प्रक्रिया	शैक्षिक विधि / पद्धति का नाम	**TLM/** अधिगम स्त्रोत	मूल्यांकन / आकलन

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

मेंटर के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

सुपरवाईज़र / विषय विशेषज्ञ के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

परिशिष्ट क्रमांक – 5

पाठ योजना का प्रारूप

कक्षा.............................. **दिनांक.............................**

विषय........................... **इकाई................................**

पाठ.............................. **कालांश.............................**

पाठयांश.................... **समय अवधि.....................**

कुंजी शब्द..

मेंटर शिक्षक का नाम..

- **अधिगम दक्षताएँ–** पाठ योजना के दौरान पढ़ाई जाने वाली विषय वस्तु से बच्चों में कौन–कौन सी दक्षताओं को विकसित करना चाहतें हैं?

- **अधिगम उद्देश्य–** दो प्रकार से बनाये जायें।
  - ➢ विषय की प्रकृति और उद्देश्य पर आधारित।
  - ➢ अधिगम दक्षताओं पर आधारित।

- **कौशल प्रक्रियाएँ–** पाठ योजना के दौरान निम्नलिखित कौशल प्रक्रियाओं को अपनाकर अधिगम परिस्थितियों का निर्माण करें।
  - ➢ अवलोकन, वर्गीकरण, अनुमान, वार्तालाप, व्याख्या, प्रशंसा, तर्क, वाद–विवाद (बहस), समस्या समाधान, तर्क शक्ति, महत्वपूर्ण चिंतन, चिंतनशील सोच, इत्यादि।

- **अधिगम स्रोत सामग्री–** शिक्षण सहायक सामग्री (TLM)**, अधिगम स्रोत जैसे–** कहानी, नाटक, अन्य बाल केन्द्रित साहित्य, सूचना एवं **सम्प्रेषण सामग्री जैसे–** रेडियो, टी.वी., पी.पी.टी., मोबाईल, कम्प्यूटर आदि, **अधिगम परिस्थितियों का निर्माण जैसे–** एकल अभिनय, रोल प्ले, गीत, कविता, प्रेरक प्रसंग, पात्र अभिनय, मुखोटा अभिनय इत्यादि।
- **पाठ योजना वाले दिनांक छात्रों की उपस्थिति–**
  - ➢ **दर्ज संख्या–** ....
  - ➢ **उपस्थित संख्या–**...
  - ➢ **अनुपस्थित संख्या–**...
  - ➢ **अनुपस्थित छात्रों की सूची (नाम सहित)–**..
  - ➢ **विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की सूची (नाम सहित)–** ....

नोट– अनुपस्थित एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के आधार पर प्रतिदिन छात्राध्यापक को अपनी पाठ योजना में कक्षा शिक्षण के दौरान परिवर्तन करना चाहिए ताकि शत्–प्रतिशत अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके।

- **कक्षा शिक्षण प्रक्रिया–** छात्राध्यापक अपनी कक्षा शिक्षण प्रक्रिया को तीन मुख्य चरणों में पूर्ण करेगा–

प्रथम चरण–प्रस्तावना
अधिगम वातावरण का निर्माण

अवधारणा/शिक्षण बिन्दु	प्रक्रिया कौशल	शिक्षक गतिविधियाँ	छात्र गतिविधियाँ	श्यामपट्ट कार्य	विशेष ध्यान केन्द्रित करने वाली गतिविधि

द्वितीय चरण–प्रस्तुतीकरण
अधिगम की समझ का निर्माण

अवधारणा/शिक्षण बिन्दु	प्रक्रिया कौशल	शिक्षक गतिविधियाँ	छात्र गतिविधियाँ	श्यामपट्ट कार्य	विशेष ध्यान केन्द्रित करने वाली गतिविधि

तृतीय चरण–मूल्यांकन
अधिगम का आकलन

अवधारणा/शिक्षण बिन्दु	प्रक्रिया कौशल	शिक्षक गतिविधियाँ	छात्र गतिविधियाँ	श्यामपट्ट कार्य	विशेष ध्यान केन्द्रित करने वाली गतिविधि

- **पुनरावृत्ति एवं पाठ का सार (सारांश) समझाना–** पाठ योजना के आकलन के पश्चात् एक बार पुनः सम्पूर्ण पाठ योजना की पुनरावृत्ति पाठ सार के रूप में समझाई जाए।
- **अभ्यास कार्य–** विषय वस्तु से संबंधित अभ्यास कार्य छात्रों के अधिगम को सुदृढ़िकरण के लिए दिया जाए।
- **विशेष शिक्षण–** छात्रों के आकलन के पश्चात् छात्राध्यापक द्वारा पाये कठिन बिन्दुओं और समस्यात्मक क्षेत्रों पर आवश्यकतानुसार व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कक्षा शिक्षण के दौरान या अतिरिक्त अन्य समय में विशेष शिक्षण कर छात्रों की समस्याओं को हल किया जाए।

नोट– समय–समय पर राज्य द्वारा जारी निर्देशों, स्थानीय परिस्थितियों और नवाचारी पद्धतियों को ध्यान में रखते हुए पाठ योजना में परिवर्तन किया जाए। यह प्रारूप सुझावात्मक है।

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

मेंटर के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

सुपरवाईज़र/विषय विशेषज्ञ के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

परिशिष्ठ क्रमांक – 6

केस स्टडी का प्रारूप

I. कवर पेज या मुख्य पृष्ठ

i. शीर्षक– केस स्टडी रिपोर्ट
ii. छात्राध्यापक का नाम–
iii. लैब शाला का नाम–
iv. लैब शाला का पता–
v. संकुल का नाम–
vi. जनशिक्षा केन्द्र का नाम–
vii. विकासखण्ड का नाम–
viii. जिले का नाम–
ix. जमा करने की दिनांक–

II. विषयवस्तु (केस की पहचान के संबंधित आंकड़े)

i. छात्र (केस) का नाम
ii. जन्म दिनांक
iii. M/F/T
iv. माता पिता/पालक
- माता का नाम
- पिता का नाम
- पालक का नाम

v. अध्ययनरत कक्षा का नाम
vi. निवास का पता
vii. पिता/पालक की शिक्षा
viii. पिता/पालक का व्यवसाय
ix. माता/पालक की शिक्षा
x. माता/पालक का व्यवसाय
xi. भाई बहनों की संख्या
भाई की संख्या.......
बहन की संख्या......

III. केस स्टडी के उद्देश्य

i. स्पष्ट रूप से केस स्टडी के उद्देश्य और महत्व को समझाइये।

ii. प्राथमिक रूप से उन कारकों पर चर्चा जिसके आधार पर छात्राध्यापक ने केस का चयन केस स्टडी के लिये किया है।

iii. समस्या की प्रकृति (शैक्षिक, सहशैक्षिक, नियमित, अनियमितता, अनुशासन, समयबद्धता इत्यादि)

iv. कार्यपद्धति (Methodology)

- उपकरण
- तकनीक का प्रकार
- डाटा का विश्लेषण
- परिणाम
- व्याख्या (क्या हुआ, क्यों हुआ–विस्तार से समझने)
- कार्ययोजना (Plan of Action)
- निष्कर्ष के आधार पर सुझावात्मक क्रियाएँ
- निष्कर्ष/उपसंहार
- संप्राप्तियाँ (केस स्टडी के दौरान क्या संप्राप्तियाँ हुई)
- क्रियान्वयन (अन्य शिक्षकों के लिए क्रियान्वयन के अभ्यास तरीकों पर चर्चा करें एवं शिक्षा पद्धति में क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित करें)

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

मेंटर के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

सुपरवाईज़र/विषय विशेषज्ञ के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

परिशिष्ठ क्रमांक – 7

नवाचारी केन्द्र के भ्रमण का प्रारूप

नवाचारी केन्द्र का नाम...
स्थान...
भ्रमण का दिनांक ....

- नवाचारी केन्द्र की विशिष्टता..
  ....
  ....
- संस्थान के अवलोकन की समयावधि ....
- नवाचारी केन्द्र के भ्रमण का उद्देश्य ....
  - ➢ ....
  - ➢ ....
  - ➢ ....
- नवाचारी केन्द्र के प्रमुख से संस्थान के बारे में चर्चा व अवलोकन कर अपनी टीप लिखें–
  - ➢ ....
  - ➢ ....
- भ्रमण के दौरान प्राप्त अधिगम अनुभव
  - ➢ अवलोकन एवं चर्चा के दौरान प्राप्त अनुभव के मजबूत पक्ष को लिखें।
    ....
    ....
  - ➢ अवलोकन तथा चर्चा के दौरान प्राप्त अनुभव के कमजोर पक्ष को लिखें।
    ....
    ....

हस्ताक्षर...	हस्ताक्षर..
नवाचारी केन्द्र प्रमुख का नाम...............	छात्राध्यापक का नाम ....
दूरभाष नं..	संस्थान का नाम ....
दिनांकः...	दिनांकः..

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर	**मेंटर के हस्ताक्षर**
नाम–	**नाम–**
दिनांक–	**दिनांक–**

सुपरवाईज़र/विषय विशेषज्ञ के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

परिशिष्ठ क्रमांक – 8

क्रियात्मक अनुसंधान का प्रारूप

I. प्रस्तावनाः–

- अध्ययन का उद्देश्य
- शोध प्रश्न
- प्रयोग की गयी शब्दावली की परिभाषा
- अध्ययन का महत्व

II. साहित्य की समीक्षा (समस्या से संबंधित):–

- कम से कम पांच संदर्भ साहित्य का चयन
- सारांश

III. प्रक्रियाएँः–

- समस्या को गुणात्मक एवं परिमाणात्मक शोध (Qualitative & Quantitative) के आधार पर युक्तिसंगत बनाना।
- कार्यप्रणाली– आंकड़ों का संग्रहण
- स्थान और प्रतिभागी (कक्षा / वर्ग / शाला / समुदाय इत्यादि)
- क्रियात्मक अनुसंधान की कार्ययोजना
- आंकड़ों (प्रदत्तों) के विश्लेषण की प्रक्रिया
- सारांश

IV. परिणामः–

- आंकड़ों (प्रदत्तों) का विश्लेषण
- व्याख्या
- प्रश्नों का पुनः कथन और परिणामों पर चर्चा
- सारांश

V. विचार–विमर्शः–

- उपसंहार
- क्रियान्वयन
- शक्तियाँ और सीमाएँ (Strengths and Limitations)
- समापन कथन (समाप्ति व्याख्यान)

VI. परिशिष्ठः–

- उपकरण
- शिक्षण अधिगम सामग्री/अन्य अधिगम स्त्रोत सामग्री
- फोटोग्राफ
- उत्तर पुस्तिकायें/अन्य रिकार्ड

VII. संदर्भः–

- संदर्भ ग्रंथसूची (Bibliography)
- इंटरनेट सामग्री लिंक के साथ (Wibliography)

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

मेंटर के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

सुपरवाईज़र/विषय विशेषज्ञ के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

परिशिष्ठ क्रमांक– 9

पर्यवेक्षण/आकलन का प्रारूप

कक्षा............................ दिनांक............................

विषय.......................... इकाई..............................

पाठ............................ कालांश............................

पाठयांश.................. समय अवधि....................

कुंजी शब्द **(Key Word)**..

मेंटर शिक्षक का नाम...

क्र.	मापदण्ड के पहलु	फीडबैक एवं सुझाव	स्तर					आकलन का स्तर (ग्रेड के आधार पर) A,B,C,D,E
			5 उच्च	4	3	2	1 निम्न	
1	**प्रस्तावना–** पूर्व तैयारी, पूर्व ज्ञान का उपयोग, मौलिकता, कल्पनाशीलता, रूचिकर, प्रभावशीलता इत्यादि							
2	**प्रस्तुतीकरण–** पाठ योजना के उद्देश्य, पाठ्यवस्तु की उपयुक्तता, स्पष्टता, लिखावट, उदाहण, व्याख्या, क्रमबद्धता, प्रश्नोत्तर, चिंतन का विकास, छात्र शिक्षक अंतःक्रिया, पाठ्यवस्तु पर अधिकार, पर्याप्तता, समय प्रबंधन इत्यादि।							
3	**कक्षा प्रबंधन–** अनुशासन, अधिगम वातावरण, विद्यार्थियों की सहभागिता, छात्र शिक्षक अंर्तःक्रिया, कक्षा पर नियंत्रण इत्यादि।							
4	**अधिगम स्रोत सामग्री का प्रबंधन–** प्रभावी प्रस्तुतीकरण, सामग्री की गुणवत्ता, विषय संबंधित मौलकिता, विविधता, TLMउपयोग करने का कौशल (तकनीकी कौशल) इत्यादि।							

क्र.	मापदण्ड के पहलु	फीडबैक एवं सुझाव	स्तर					आकलन का स्तर (ग्रेड के आधार पर) A,B,C,D,E
			5 उच्च	4	3	2	1 निम्न	
5	**श्यामपट्ट कार्य**–लिखने का कौशल, लिखावट, स्वच्छता, उपयुक्त शब्द, शब्दों के मध्य का स्थान, शब्दों में एक रूपता, चित्र कौशल, आलेख कौशल, श्यामपट्ट कार्य की अधिगम से संबद्धता।							
6	**व्यक्तित्व**–आत्मविश्वास, अभिवृत्ति, सम्प्रेषण कौशल, छात्रों के साथ व्यवहार, समयबद्धता, स्वयं का प्रस्तुतीकरण का तरीका, गणवेश, शब्दों की प्रावहता/गति, स्फूर्ति, आवाज, भाषा इत्यादि।							
7	**पाठ योजना का समापन**– पुनरावृत्ति, पाठ का सार, अभ्यास कार्य, सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन।							

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

मेंटर के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

सुपरवाईज़र/विषय विशेषज्ञ के हस्ताक्षर
नाम–
दिनांक–

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि

डी.एल.एड.(द्विवर्षीय पाठ्यचर्या)

प्रकाशन वर्ष 2017 – 18

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् म.प्र. भोपाल

निर्माण

प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान,भोपाल

lj{kd & Jh ykdsk'k dqekj tkVo
संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल (म.प्र.)

ijke'kZ & Jherh f'kYik xqIrk
अपर मिशन संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र
Jh vk-,y- eqMyksbZ
अपर संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र, (SCERT) भोपाल

ekxZn'kZd & Jh jkedqekj Lo.kZdkj
प्राचार्य, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल

leUo;u & Jherh jkfxuh miyiokj
सहायक प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल

fuekZ.k & ixr 'kSf{kd v/;;u laLFkku Hkksiky

lykgdkj

1. MkW- HkkxhjFk dqekor
   उपाध्यक्ष एवं शिक्षा विद्, माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल
2. MkW- ts-,l- xqoky
   सेवानिवृत्त प्राध्यापक, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल एवं सदस्य (NCTE)
3. MkW- Jherh vfouk'k xqoky
   सेवानिवृत्त प्राध्यापक, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल
4. MkW- vfuy dqekj
   प्राध्यापक, NITTTR भोपाल
5. Jh vrqy Muk;d, नियंत्रक, शिक्षक–शिक्षा, राज्य शिक्षा केन्द्र
6. MkW- jes'k ckcw] प्राध्यापक, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल
7. MkW- r:.k xqgk fu;ksxh] सहा. प्राध्यापक,
   प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान जबलपुर
8. Jh dq'ko ikjk'kj, वरिष्ठ व्याख्याता,
   जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, खण्डवा

vke|[k

राष्ट्र निर्माण के प्रमुख घटक के रूप में हम बच्चों को देखते है। उनको परिवार, समाज व राष्ट्र का एक जिम्मेदार नागरिक बनाने वाला शिक्षक, इसका महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा विकास की प्रक्रिया मानी जाती है, जिसमें बालक के बहुमुखी तथा सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। अतः शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी शिक्षक है। अध्यापक शिक्षा के अंतर्गत शिक्षण अनुदेश तथा प्रशिक्षण की क्रियाओं को प्रयुक्त करते हैं, जिनसे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन होता है। शिक्षक की क्षमता योग्यता में वृद्धि, शिक्षण की तैयारी का दायित्व शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं का है। पाठ्यचर्या शिक्षक प्रशिक्षण का अभिन्न अंग है, जिस पर भविष्य के शिक्षकों की गुणवत्ता और तैयारी निर्भर है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद–2015 के दिशा निर्देश के परिप्रेक्ष्य में प्रदेश में संचालित ''प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि'' कोर्स को प्रासंगिक और परिणामोन्मुखी बनाने के लिए पाठ्यचर्या की समीक्षा की गई। प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल द्वारा प्रदेश के महत्वपूर्ण शैक्षिक संस्थानों के विशेषज्ञों की सहायता से राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के प्रारूप पाठ्यक्रम के आधार पर प्रदेश की आवश्यकता एवं समय की मांग अनुरूप पाठ्यचर्या का पुनरीक्षण किया गया है।

पाठ्यचर्या विकास में प्रतिष्ठित संस्थानों– क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजीम प्रेमजी फाऊन्डेशन, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, शासकीय शिक्षा विद्यालयों एवं जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षा विदों, विषय विशेषज्ञों के द्वारा प्रदत्त सहयोग तथा प्रक्रिया में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी व्यक्तियों के प्रति हम आभारी हैं।

अपेक्षा है कि, प्रस्तुत प्रत्रोपाधि पाठ्यक्रम प्रदेश में चिन्तनशील एवं प्रतिबद्ध शिक्षक तैयार करने में सहयोगी सिद्ध होगा।

¼ykdi'k d|ekj tkVo½
संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल

अनुक्रमणिका

भाग 'अ'

Øekad	fo"k;	i"B la[;k
1.	Hkwfedk	01
2.	Mh-,y-,M ikB~;p;kZ dk mís';	02
3.	ikB~;p;kZ esa cnyko dh vko';drk	02
4.	ikB~;p;kZ dk <kapk	03
5.	eY;kadu ;kstuk	06

पाठ्यक्रम का वितरण
भाग 'ब'

iz'u& i= 1	ckY;koLFkk ,oa cky fodkl **Childhood and development of Children**	13
iz'u& i= 2	lelkef;d Hkkjrh; lekt esa f'k{kk **Education in contemporary Indian Society**	20
iz'u& i= 3	iwoZ ckY;koLFkk& ifjp;kZ ,oa f'k{kk **Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)**	27
iz'u& i= 4	Hkk"kk cks/k ,oa izkjfEHkd Hkk"kk fodkl **Understanding Language and Early Language Development**	31
iz'u& i= 5	ikB~;p;kZ esa lwpuk ,oa lEizs"k.k rduhdh dk ,dhdj.k **ICT Integration across the caricullumn**	38
iz'u& i= 6	**Proficiency in English**	42
iz'u& i= 7	;ksx f'k{kk **Yoga Education (First Year)**	47
iz'u& i= 8	{ks=h; Hkk"kk f'k{k.k d- fgUnh Hkk"kk f'k{k.k **Hindi Language Teaching** [k- laLd`r Hkk"kk f'k{k.k **Sanskrit Language Teaching** x- ejkBh Hkk"kk f'k{k.k **Marathi Language Teaching** ?k- mnwZ Hkk"kk f'k{k.k **Urdu Language Teaching**	51
iz'u& i= 9	**Pedagogy of English**	68
iz'u& i= 10	xf.kr f'k{k.k ¼izkFkfed rFkk iwoZ izkFkfed ds fy;s½ **Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)**	74

प्रथम वर्ष– व्यावहारिक

1.	स्व बोध **Towards Self-Understanding**	81
2.	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा **Creative Drama, Fine Art and Education**	90
3.	बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा **Children's Physical and Emotional Health and Education**	96
4.	शाला स्थान बद्ध कार्यक्रम (इंटर्नशिप) **Teaching Practice and School Internship**	102

द्वितीय वर्ष

i'u& i= 11	संज्ञान अधिगम और बाल विकास **Cognition, Learning and Child Development**	106
i'u& i= 12	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध **Understanding of Society, Education and Curriculum**	112
i'u& i= 13	शिक्षा में समावेशी एवं जेंडर मुद्दे **Emerging Gender and Inclusive Perspecitives in Education**	116
i'u& i= 14	शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं शिक्षक विकास **School culture, leadership and teacher development**	120
i'u& i= 15	**Proficiency in English**	125
i'u& i= 16	योग शिक्षा **Yoga Education (Second Year)**	129
i'u& i= 17	पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण **Pedagogy of Environmental Studies (for early Primary and Primary)**	132
i'u& i= 18	वैकल्पिक विषय शिक्षण **Optional Pedagogy Courses** क. सामाजिक विज्ञान शिक्षण **Pedagogy of Social Science** ख. अंग्रेजी भाषा शिक्षण **Pedagogy of English Language** ग. गणित शिक्षण **Pedagogy of Mathematics** घ. विज्ञान शिक्षण **Pedagogy of Science**	138

द्वितीय वर्ष – व्यावहारिक

5.	कार्य और शिक्षा **Work & Education**	158
6.	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा **Creative Drama, Fine Art and Education**	171
7.	बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा **Children's Physical and Health Education**	175
8.	शाला स्थान बद्ध कार्यक्रम (इंटर्नशिप) **Teaching Practice and School Internship**	180
9.	मूल्याकंन प्रपत्र	186

ikjfHkd f'k{kk esa fMIyksek ¼Mh-,y-,M-½

Hkwfedk &

हमारे देश भारत में शिक्षक शिक्षा के द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन कर शिक्षकों को तैयार किया जाता है। इसी क्रम में प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा (डी.एल.एड.) शिक्षक शिक्षा की एक ऐसी व्यवस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य है– प्रारंभिक स्तर पर (कक्षा I से VIII) शिक्षकों का निर्माण करना। चूंकि इस स्तर पर मुख्यतः 6–14 वर्ष के बालक/बालिकायें शिक्षण के केन्द्र बिन्दु होते हैं। अतः जरूरी है कि शिक्षकों का निर्माण इस तरह से किया जाये ताकि वे अपने विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार एवं समाज की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ढाल सकें। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 21 A के अनुसार निःशुल्क और आवश्यक शिक्षा का अधिकार सबके लिये है। तीव्र गति से बदलते इस दौर में जीवन के समक्ष नई–नई चुनौतियाँ आती रहती है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए जरूरी है कि भावी पीढ़ी का निर्माण करने वाले और भविष्य में शिक्षक बनने वाले प्रशिक्षणार्थी की आवश्यकतानुसार शिक्षा की पाठ्यचर्या की रूपरेखा इस तरह की हो जिससे न सिर्फ भावी शिक्षक अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें बल्कि उन्हें इस योग्य बनाया जाय ताकि वे अपने विद्यार्थियों को भी जीवन की समस्याओं से निबटने हेतु सक्षम बना सके।

वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अंतर्गत कुछ मुख्य बिन्दुओं का समावेश किया गया है जो कि निम्नलिखित है–

- प्रशिक्षणार्थियों को इस योग्य बनाना ताकि प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत वे अपने विद्यार्थियों को न सिर्फ सैद्धान्तिक बल्कि व्यावहारिक गतिविधियों में सक्रिय बना सकें।
- भावी शिक्षक में रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करते हुए समझने के साथ–साथ कौशल का विकास कर उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त किये जा सकते है।
- पाठ्यचर्या में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को शामिल किया जाय जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके।
- कक्षा का पर्यावरण प्रजातांत्रिक हो ताकि सभी को अभिव्यक्ति के समान अवसर मिल सके।
- परीक्षा को कक्षा की विभिन्न गतिविधियों से सहसम्बन्धित किया जाना।

    इसी प्रकार से निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार के अधिनियम (RTE) 2009 के अंतर्गत कुछ मूलभूत बिन्दुओं को शामिल किया गया है जिसमें से कुछ मुख्य बिन्दु हैं–

- शिक्षा वैसी हो जो संविधान में निहित मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाये।
- प्रशिक्षणार्थियों में निहित क्षमता एवं प्रतिभा का विकास करना।
- बालकेन्द्रित शिक्षण विधियों को उपयोग करना ताकि एक रूचिपूर्ण पर्यावरण का निर्माण हो सके।

- कक्षा का माहौल न सिर्फ भयमुक्त बल्कि रूचिपूर्ण भी हो जिससे सार्थक अधिगम का लाभ सभी प्रशिक्षणार्थियों को समान रूप से मिल सके।
- प्रारंभिक कक्षा में शिक्षण कार्य मातृभाषा में हो ताकि सीखना न सिर्फ आसान होगा बल्कि रूचिपूर्ण भी होगा।

एन.सी.टी.ई. 2014 के द्वारा राजपत्र में उल्लेखित प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम में डिप्लोमा के मानदंड और मानक में प्रस्तावित किया गया है कि प्रारंभिक शिक्षा का डिप्लोमा (डी.एल.एड.) दो वर्ष का व्यवसायिक कार्यक्रम है जिसके द्वारा कक्षा I से VIII तक के लिए आध्यापकों को तैयार किया जाएगा जिनकी सक्रिय सहभागिता से सामाजिक और लिंगीय अंतरों को दूर करते हुए समावेशी स्कूल पर्यावरण में सभी बच्चों की शिक्षा प्राप्त करने की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करना है।

Mh-,y-,M-&ikB;p;k

डी.एल.एड.–पाठ्यचर्या के अंतर्गत बाल्यावस्था के अध्ययन, शिक्षा के सामाजिक संदर्भ, विषय का ज्ञान, शिक्षण शास्त्र संबंधी ज्ञान, शिक्षा के उद्देश्यों और संप्रेषण कौशल को एकीकृत करने के लिए तैयार किया गया है इसमें न सिर्फ अनिवार्य बल्कि वैकल्पिक, सिद्धान्त एवं प्रायोगिक पाठ्यक्रम को भी सम्मिलित किया गया है। आई.सी.टी. योग, आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट, सामुदायिक संसाधन एवं लोककलाओं आदि को शिक्षण शास्त्र के उपकरण के रूप में सम्मिलित किया गया है।

इसी तरह से निर्मित शालेय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम से कुशल, प्रभावशाली एवं सक्षम शिक्षक तैयार किये जा सकते है।

mÌ'; &

1. छात्राध्यापक, प्रारंभिक शिक्षा की प्रकृति, उद्देश्य, आने वाली समस्या एवं प्रारंभिक शिक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दों को समझ सकेंगे।
2. सामाजिक सांस्कृतिक, राजनैतिक संदर्भो में बच्चों को समझते हुए उपयुक्त सीखने सिखाने की विधि का प्रयोग कर सकेंगे।
3. सीखने –सिखाने की प्रक्रिया को आनंददायी बनाने की आवश्यकता को समझते हुए उसी अनुरूप कार्य कर सकेंगे।
4. शिक्षा में समावेषण, विविधता, समानता की समझ बनेगी।
5. विद्यालय के विकास के लिए संसाधनों को प्रबंधन, उपयोग व्यवस्थापन कर सकेंगे।
6. शिक्षण सिद्धांन्तों तथा मूल्यांकन के लिए नवीन तकनीक का उपयोग कर सकेंगे।
7. शिक्षण सामग्री की अवधारणा और उपयोग को समझ सकेंगे।
8. समाजिक विज्ञान, विज्ञान, पर्यावरण विषय में नवीनतम तथ्यों और अनुसंधानों से परिचित होकर बच्चों कों नवीन ज्ञान सीखने के लिए प्रेरित कर सकेंगे।
9. शिक्षण संप्रेषण तकनीक के लाभ एवं अन्य अधिगम प्रक्रिया में उपयोग सीख सकेंगे।
10. वर्तमान में प्रचलित शिक्षण पद्धतियां (गतिविधि आधारित, बालकेन्द्रित, एवं रचनावादी) को सीख सकेंगे।

Mh-,y-,M- ikB;p;kZ dh iez[k ?kVd gS&

1. fo"k;oLrq – बच्चों के सीखने को ध्यान में रखकर विषय के लिये लक्ष्य और उद्देश्य विषयवस्तु संयोजित की गई है।

2. izfØ;k– विषयवस्तु अनुरूप शिक्षण विधियां, गतिविधियां प्रयोजना कार्य शामिल है।

3. lanHkZ–उन घटको को जो (लर्निंग घटक) अधिगम लक्ष्य के अनुसार है, संदर्भित किया गया है।

- पाठ्यचर्या की अवस्थाओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है–
    1. पूर्व प्राथमिक शिक्षण प्रशिक्षण
    2. प्राथमिक शिक्षण प्रशिक्षण
    3. उच्च प्राथमिक शिक्षण प्रशिक्षण

- डी.एल.एड. पाठ्यचर्या में मुख्य दक्षता जोड़ी गई है–
    - अ. मातृभाषा में संप्रेषण/अभिव्यक्ति
    - ब. अंग्रेजी भाषा में संप्रेषण
    - स. गणितीय दक्षताएं
    - द. विज्ञान और तकनीकी की मूल दक्षताएं
    - इ. संख्यात्मक दक्षताएं
    - प. सीखने के लिये सीखना
    - फ सामाजिक और नागरिक दक्षताएं
    - ब. उद्यमिता के लिये पहल करने की सोच रखना
    - भ. सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति

इस पाठ्यचर्या को ऐसे तैयार किया गया है कि छात्राध्यापक पाठ्यक्रम प्रक्रिया और गतिविधियों से लगातार जुड़े रहेंगे। आलोचनात्मक चिंतन को इस पाठ्यचर्या में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

Mh-,y-,M- ikB;Øe dk <kapk

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा सुझाई गयी द्विवर्षीय पाठ्यचर्या के अनुरुप ही विषयो को समाहित किया गया है।

समूह 1 – बच्चों से संबधित अध्ययन

समूह 2– शिक्षा और समकालीन विषयों का अध्ययन

समूह 3 – पाठ्यचर्चा और शिक्षा शास्त्रीय अध्ययन

समूह 4 – अन्य मूल्य आधारित कोर्स जिससे संर्वांगीण विकास हो सके।

leg 1 cPpk l: lcf/kr v/;;u %& **Child Studies**

इस विषयसमूह के अंतर्गत बच्चों का विकास कैसे होता हैं। विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश एवं सामाजिक संदभों से आये बच्चों में शिक्षा का विकास कैसे किया जाए, इसकी समझ बनाने का प्रयास शामिल हैं। बच्चों को विभिन्न शैक्षिक सामाजिक सिद्वांत के साथ जोड़ना, विभिन्न संदर्भो में परवरिश, समाजिकरण को ध्यान रखकर इन विषयों की तैयारी की गई हैं।

- बाल्यावस्था एवं बाल विकास **Childhood and Development of Children**
- संज्ञान अधिगम एवं बाल विकास **Cognation Learning and Child Development**

leg &2 f'k{kk vkj lelkef;d fo"k;k ij v/;;u%&

इन विषयों को डी.एल.एड. के पाठ्यचर्या में शामिल करने का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा और समाज के मध्य (linkege) जुड़ाव को जानना है जो अधिगम कर्ता जान सकें, सीख सकें, समालोचनात्मक रूप से समझ सकें। समाज में फैली हुई विविधता को अधिगमकर्ता समझ सकें।, समझ कर अपने अध्ययन में शामिल कर सकें। उसी तरह ‘‘भाषाबोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास’’ विषय में सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में अधिगम कर्ता के भाषाई विकास को समझााने का प्रयास हैं। ‘‘स्वबोध ’’ विषय को शामिल करते हुए यह कोशिश की जायेगी की अधिगमकर्ता अपनी शक्ति अपनी कमजोरियों को जान सके उसके विकास के लिये प्रयत्नशील हो सकें।

- समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा **Education in contemporary Indian Society**
- समाज शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध **Understanding of Society, Education and Curriculum**
- स्वबोध **Towards Self-Understanding**
- भाषाबोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास **Understanding Language and Early Language Development**

leg &3 ikB;p;k vkj f'k{kk 'kkL=h; v/;;u

इस विषय समूह का उद्देश्य अधिगम कर्ता में प्रारंभिक स्तर पर यथायोग्य शिक्षा शास्त्रीय प्रविधियों का चयन हैं, उस विषय संदर्भ को लेना हैं, इसमें Proficiency in English I & II, Yoga Education I & II पाठ्यचर्या में शिक्षण संप्रेषण शामिल है।

- पाठ्यचर्या में शिक्षण संप्रेषण तकनीकी का एकीकरण **(Padagogy and IT integration across the Curriculum)**
- **Proficiency in English**

- योग शिक्षा **(Yoga Education)**
- मातृभाषा /क्षेत्रीय भाषा शिक्षण **(Pedagogy of Mother Tongue / Regional Language)**

  क. हिन्दी भाषा शिक्षण **(Hindi Teaching)**

  ख. संस्कृत भाषा शिक्षण **(Sanskrit Teaching)**

  ग. मराठी भाषा शिक्षण **(Marathi Teaching)**

  घ. उर्दू भाषा शिक्षण **(Urdu Teaching)**
- अंग्रेजी भाषा शिक्षण **English language Teaching**
- गणित शिक्षण (प्राथमिक तथा पूर्व प्राथमिक के लिए) **Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)**
- पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण **(Pedagogy of Environmental Studies)**

  वैकल्पिक विषय शिक्षण **(Optional Pedagogy Courses)**

  क. सामाजिक विज्ञान शिक्षण **(Pedagogy of Social Science)**

  ख. अंग्रेजी भाषा शिक्षण **(Pedagogy of English Language)**

  ग. गणित शिक्षण **(Pedagogy of Mathematics)**

  घ. विज्ञान शिक्षण **(Pedagogy of Science)**

leg &4 vU; eY; vk/kkfjr dkslZ – जिससे सर्वांगीण विकास हो सके इस विषय समूह का उद्देश्य शिक्षक, विद्यार्थी और प्रतियोगियों को सृजनात्मक कार्य से जोड़ना है । अपने स्वास्थ्य के (शारीरिक भावनात्मक) प्रति सजगता तथा अपनी शाला के स्वास्थ्य को लेकर सजगता आये ।

इस समूह में शामिल है –

- रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा **(Creative Drama, Fine Art and Education)**
- बच्चों का शारीरिक – भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा **(Children's Physical -Emotional Health and Education)**
- कार्य और शिक्षा **(Work & Education)**

vrj.k dh fof/k;k & **Mode of Transaction**

संपूर्ण पाठ्यचर्या के अंतरण के लिए निम्नलिखित शिक्षण विधियॉ की रूपरेखा तैयार की गई है ।

1. अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए कक्षा में चर्चा विधि
2. पाठ्यवस्तु और शोध पत्रों का गहनता से अध्ययन करना
3. सत्रगत कार्यो और विभिन्न शैक्षिक मुद्दों पर व्यक्तिगत या समूह में प्रस्तुतीकरण

4. सैद्धान्तिक और प्रायोगिक गतिविधियां /अभ्यास /खोज/विश्लेषण ,संग्रहण अवलोकनों की व्याख्या करना व्यवस्थित आंकडों का संग्रहण करना।

5. गहन और समीक्षात्मक विषयवस्तु को पढना, लेखों का विश्लेषण करना, नीतिगत अभिलेख, पाठ्यवस्तु डाक्यूमेन्ट्री, फिल्म का विकास करना ।

6. क्षेत्र आधारित प्रायोजना तैयार करना उसका अभिलेख तैयार करना

7. संवाद और चर्चा करते हुए कोर्स का अंतरण करना।

i:o'k ifØ;k

म.प्र. शासन स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा समय–समय पर जारी डिप्लोमा इन एज्यूकेशन नियमित पाठ्यक्रम प्रवेश में नियम के अनुसार प्रवेश की प्रक्रिया होगी। इन नियमों में समय–समय पर शासन द्वारा परिवर्तन/परिवर्द्धन/संशोधन तद्नुसार लागू होगे।

vof/k

डी.एल.एड. कार्यक्रम दो शैक्षणिक वर्षो की अवधि वाला होगा किन्तु विद्यार्थियों को इस कार्यक्रम में प्रवेश की तारीख से अधिकतम तीन वर्ष तक की अवधि में कार्यक्रम को पूरा करने की अनुमति होगी।

ijh{kk d: volj

माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. द्वारा समय–समय पर जारी निर्देश अनुसार परीक्षा के अवसर तथा नियम लागू होगें।

eY;kdu ;ktuk%&

डिप्लोमा इन एलीमेन्ट्री एजुकेशन का यह द्विवर्षीय पाठ्यचर्या (Curriculum) हैं । प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम (Syllabus) का मूल्यांकन दो भागों में किया जायेगा ।

1- l)kfUrd eY;kdu

2- 0;kogkfjd eY;kdu

प्रतिवर्ष कक्षा संचालन हेतु कम से कम 200 कार्य दिवस का होना आवश्यक है जिसमें आवंटित शाला में इंटर्नशिप भी शामिल है। प्रथम वर्ष में 4 सप्ताह अर्थात प्रति सप्ताह 6 कार्यदिन (कुल 6X4=24) छात्राध्यापकों को इंटर्नशिप के लिए जाना होगा जबकि द्वितीय वर्ष में इंटर्नशिप कार्यक्रम 16 सप्ताह अर्थात (16X6=96 दिन) 96 दिन का होगा । विद्यार्थी अध्यापकों के लिये सारे पाठ्यक्रम कार्य के लिए जिसमें प्रायोगिक कार्य भी शामिल है, न्यूनतम उपस्थिति 80% और इंटर्नशिप के लिए न्यूनतम उपस्थिति 90% होगीA इंटर्नशिप कार्यक्रम अनिवार्य रूप से करना होगा तथा इसके बिना वार्षिक परीक्षा में बैठने की पात्रता नही होगी। प्रथम वर्ष में 1150 तथा द्वितीय वर्ष में 1250 अंक होगें इस तरह कुल पूर्णाक 2400 अंक होगें।

1- l)kfUrd eY;kdu%&

1. सैद्धान्तिक परीक्षा के अंतर्गत प्रथम वर्ष में 10 एवं द्वितीय वर्ष में 8 प्रश्न पत्र शामिल हैं । प्रथम वर्ष में 7 प्रश्न पत्रों के पूर्णांक 100 तथा 3 प्रश्न पत्रों के पूर्णाक 50 अंक हैं। 100 अंकों मे से प्रत्येक विषय में 30% अंकों का आंतरिक मूल्यांकन तथा 70% अंकों का बाह्‌य मूल्यांकन होगा। 50 पूर्णाक वाले प्रश्न पत्रों में 25 अंक बाह्‌य मूल्यांकन और 25 अंक आंतरिक मूल्याकन के लिए होगें। अर्थात 50% अंक आतंरिक एवं 50% अंक बाह्‌य मूल्यांकन के होगें। प्रथम वर्ष के 'प्रश्न पत्र पाठ्‌यचर्या में शिक्षण संप्रेषण तकनीकी का एकीकरण' (ICT Intergation across the Curriculum) में बाह्‌य मूल्यांकन 50 अंक एवं आंतरिक मूल्यांकन 50 अंक का होगा।
2. द्वितीय वर्ष में सैद्धान्तिक परीक्षा के अंतर्गत 8 प्रश्न पत्र हैं जिसमें से 6 प्रश्न पत्रों में पूर्णांक 100 तथा 2 प्रश्न पत्र में पूर्णांक 50 हैं। यहाँ भी प्रथम वर्ष के अनुरूप 30 अंक आंतरिक मूल्यांकन एवं 70 अंक बाह्‌य मूल्यांकन के लिये होगे। 50 पूर्णांक वाले प्रश्न पत्रों में 25 अंक आंतरिक मूल्यांकन एवं 25 अंक बाह्‌य मूल्यांकन के होंगे।
3. प्रत्येक विषय में बाह्‌य लिखित परीक्षा में न्यूनतम अंक 36% प्राप्त करने होगें अर्थात 70 में 25 तथा 50 में 18 अंक प्राप्त करनें होगे। आंतरिक अंक में न्यूनतम 40% अनिवार्य होगें अर्थात 30 में से 12 अंक प्राप्त करने होगें। प्रत्येक विषय में अलग–अलग 36% अंक उत्तीर्ण होने हेतु अनिवार्य होंगे

l)kfUrd i'u i= dk vkrfjd eY;kdu&

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों का आंतरिक मूल्यांकन दो तरह से होगा–

Øekd	xfrfof/k	vd	
1	सत्रगत कार्य के रूप में छात्राध्यापकों को प्रदत्त गतिविधियों का अभिलेख प्रस्तुत करना	25	20
2	मौखिक (वायवा) मूल्यांकन	5	5
	dy	30	25

2- 0;kogkfjd eY;kdu

mÌ';& प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि पाठ्‌यचर्या के व्यावहारिक अभ्यास की शिक्षा के पश्चात् छात्राध्यापक निम्नलिखित उपलब्धियों को हासिल कर सकेंगे।

1. प्रारंभिक स्तर तक के विभिन्न विषयों (भाषा, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत आदि) में बाल केंद्रित, गतिविधि आधारित योजना, रचनात्मक पाठ योजना, प्रचलित नवीन पद्धतियों पर आधारित पाठ योजना तैयार कर शिक्षण कार्य कर सकेंगे।
2. बच्चों को समझ सकेगें, जिससे उनके सीखने की समस्याएँ, कठिनाईयां, समस्याओं को समझकर सीखने की योजना बना सकेंगे।

3. सामाजिक सहभागिता एवं सहयोग की प्रकृति तथा विषयों के व्यावहारिक रूप से जुड़कर, प्रयोग करते हुए छात्रों को भी समाज से जुड़ने के लिए प्रेरित कर सकेंगे।

4. बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक, स्वास्थ्य और शिक्षा तथा योग शिक्षा का नियमित अभ्यास करते हुए छात्राध्यापक स्वास्थ्य, शारीरिक एवं भावनात्मक शिक्षा की अवधारणा को समझ सकेगें।

5. डाइट स्तर पर कार्य और शिक्षा के अंतर्गत बागवानी, चित्रकला के साथ साथ बाजार की अवधारणा समझने को स्थान दिया गया है। अपने स्वयं के व्यवसाय को प्रारंभ करने की तैयारी के रूप में इसे समझा जा सकता है। चित्रकला, ललितकला के नियमित अभ्यास द्वारा बच्चों में सृजनात्मकता बढ़ाने के साथ सांस्कृतिक, साहित्यिक क्रिया कलापों के माध्यम से स्वंय एवं छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ाते हुए स्वस्थ्य मनोरंजन के लिए कार्य करते हुए छात्राध्यापक कला और शिक्षा को जान सकेगें।

0;kogkfjd vH;kl dh eY;kdu ;ktuk& iFke o"k

Øekd	0;kogkfjd ijh{kk & fo"k;	vkrfjd eY;kdu	ckg; eY;kdu	;kx
1	स्वबोध	50	50	100
2	रचनात्मक नाटक ललितकला और शिक्षा	25	25	50
3	बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा	25	25	50
4	शाला का स्थान बद्ध कार्यक्रम (इंटर्नशिप)	50	50	100
	dy vd	150	150	300

0;kogkfjd vH;kl dh eY;kdu ;ktuk& f}rh; o"k

Øekd	0;kogkfjd ijh{kk & fo"k;	vkrfjd eY;kdu	ckg; eY;kdu	;kx
1	कार्य और शिक्षा	25	25	50
2	रचनात्मक नाटक ललितकला और शिक्षा	25	25	50
3	बच्चों का शारीरिक भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा	25	25	50
4	शाला का स्थानबद्ध कार्यक्रम (इंटर्नशिप)	200	200	400
	dy vd	275	275	550

नोटः— व्यावहारिक परीक्षा का बाह्य मूल्यांकन हेतु मौखिक (वायवा) मूल्यांकन बाह्य परीक्षक द्वारा किया जायेगा।

ikjfHkd f'k{kk esa i=kikf/k ¼D.El. Ed.½
iFke o"kZ

l)kfUrd ikB~;Øe

Ø-	ikB~;Øe 'kh"kZd	i'u i=	iLrkfor dky[kaM	cká; eY;kadu	vkarfjd eY;kadu	i.kkd
1	बाल्यावस्था एवं बाल विकास **(CHILDHOOD AND DEVELOPMENT OF CHILDREN)**	1	120	70	30	100
2	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा **Education in contemporary Indian Society**	2	120	70	30	100
3	पूर्व बाल्यावस्था– परिचर्या एवं शिक्षा **Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)**	3	120	70	30	100
4	भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास **Understanding Language and Early Language Development**	4	60	25	25	50
5	पाठ्यचर्या में शिक्षण संप्रेषण तकनीकी का एकीकरण **Padagogy and IT integration across the Curriculum**	5	120	50	50	100
6	Proficiency in English	6	60	25	25	50
7	योग शिक्षा **Yoga Education (First Year)**	7	60	25	25	50
8	मातृभाषा /क्षेत्रीय भाषा शिक्षण **Pedagogy of Mother Tongue / Regional Language** क. हिन्दी भाषा शिक्षण **Hindi Language Teaching** ख. संस्कृत **Sanskrit Teaching** ग. मराठी **Marathi Teaching** घ. उर्दू **Urdu Teaching**	8	120	70	30	100
9	Pedagogy of English	9	120	70	30	100
10	गणित शिक्षण (प्राथमिक तथा पूर्व प्राथमिक के लिये) **Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)**	10	120	70	30	100
;ksx				545	305	850

0;kogkfjd ikB;Øe

Ø-	ikB;Øe 'kh"kd	i'u i=	iLrkfor dky[kM	ckg; eY;kdu	vkrfjd eY;kdu	i.kkd
1	स्व बोध **Towards Self-Understanding**	1	16	50	50	100
2	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा **Creative Drama, Fine Art and Education**	2	10	25	25	50
3	बच्चों का शारीरिक– भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा **Children's Physical - Emotional Health and Health Education**	3	10	25	25	50
4	इंटर्नशिप (शाला स्थानबद्ध कार्यक्रम) **(Teaching Practice and School Internship)**	–	24 दिन	50	50	100
	;kx			150	150	300
	¼ l)kfUrd + 0;kogkfjd ½ egk;kx			695	455	1150

ikjfEHkd f'k{kk esa i=ksikf/k ¼D.El. Ed.½

f}rh; o"k

l)kfUrd ikB~;Øe

Ø-	ikB~;Øe 'kh"kd	i'u i=	iLrfor dky[k M	ckg; eY;kd u	vkrfjd eY;kd u	i.kk d
1	संज्ञान अधिगम और बाल विकास **(Cognition learning and the Devlopment of children)**	11	80	70	30	100
2	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध **Understanding of Society, Education and Curriculum**	12	80	70	30	100
3	शिक्षा में समावेशी एवं जेंडर मुद्दे **Emerging Gender and Inclusive Perspecitives in Education**	13	88	70	30	100
4	शालेय संस्कृति, नेतृत्व और शिक्षक विकास **(School culture, leadership and teacher development)**	14	80	70	30	100
5	Proficiency in English	15	50	25	25	50
6	योग शिक्षा **Yoga Education**	16	50	25	25	50
7	पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण **Pedagogy of Environmental Studies (for early Primary and Primary)**	17	80	70	30	100
8	वैकल्पिक विषय शिक्षण **Optional Pedagogy Courses** क. सामाजिक विज्ञान शिक्षण **Pedagogy of Social Science** ख. अंग्रेजी भाषा शिक्षण **Pedagogy of English Language** ग. गणित शिक्षण **Pedagogy of Mathematics** घ. विज्ञान शिक्षण **Pedagogy of Science**	18	80	70	30	100
	;kx		580	470	230	700

0;kogkfjd ikB;Øe

Ø-	ikB;Øe 'kh"kd	i'u i=	iLrkfor dky[kM	ckg; eY;kdu	vkrfjd eY;kdu	i.kkd
1-	कार्य और शिक्षा **Work & Education**	4	24	25	25	50
2	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा **Creative Drama, Fine Art and Education**	5	10	25	25	50
3-	बच्चों का शारीरिक– भावनात्मक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य शिक्षा **Children's Physical - Emotional Health and Health Education**	6	10	25	25	50
4-	इंटर्नशिप (शाला स्थानबद्ध कार्यक्रम) **Internship (Teaching Practice and School Internship)**	–	96 दिन	200	200	400
	;kx			275	275	550
	(सैद्धान्तिक + व्यावहारिक + Internship) egk;kx					1250

iFke ,o f}rh; o"k dk dy ;kx

	l)kfUrd	0;kogkfjd	;kx
iFke o"k	850	300	1150
f}rh; o"k	700	550	1250
dy ;kx	1550	850	2400

Mh-,y-,M- izFke o"kZ

cky;koLFkk ,oa cky fodkl

(Childhood and Development of Children)

¼iz'u i=&1½

पूर्णांक अंक –100
बाह्य मूल्यांकन–70
आंतरिक मूल्यांकन–30

1- vkSfpR; ,oa mn~ns'; ¼**Rationale and Aim**½

प्रारंभिक स्कूल शिक्षकों के लिए बहुत जरूरी है कि वे अपने विद्यार्थी बच्चों को पूरी तरह और गहराई से समझें। यह पाठ्यक्रम प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा से जुड़े प्राध्यापकों को बचपन और बाल विकास के अध्ययन से व्यवस्थित रूप से परिचित कराने के लिए बनाया गया है। यह पाठ्यक्रम निश्चित रूप से एक बुनियाद है जिस पर आगे पाठ्यक्रम और स्कूल से संबंधित प्रायोगिक कार्य आधारित होंगे। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राध्यापकों को प्रारंभिक स्कूली बच्चे और उसके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश के बारे में जरूरी व आधारभूत समझ बनाने में मदद करना है। इसमें सिद्धान्तों के साथ ही साथ बच्चों और बचपन से जुड़े सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दों को गहनता से समझने के मौके शामिल होंगे। इन सब बातों को शामिल करने के पीछे उद्देश्य है कि सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में बच्चों की विकास संबंधी जरूरतों के प्रति संवेदनशीलता बने।

2- fof'k"V mn~ns'; ¼ **Specific objectives** ½

- बच्चे और बचपन के बारे में आम धारणा की समीक्षा करना (खासतौर से भारतीय समाज के संदर्भ में), बचपन पर असर डालने वाली विभिन्न सामाजिक/शैक्षिक/सांस्कृतिक वास्तविकताओं की संवेदनशील और आलोचनात्मक समझ विकसित करना।
- बच्चे के शारीरिक, गत्यात्मक (motor), सामाजिक एवं भावनात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं पर समझ विकसित करना।
- सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में विविध क्षमताओं वाले बच्चों के विकास की प्रक्रिया को समझना।

- बच्चों के साथ रूबरू बातचीत करने के मौके उपलब्ध कराना और बच्चों के विकास के पहलुओं को समझने की विधियों पर प्रशिक्षण देना।

बाल विकास और सीखना के तहत बच्चे, बचपन और सीखने की बदलती हुई मान्यताओं के प्रकाश में विकास के विविध पहलुओं को समाहित किया गया है। अध्ययन के एक विषय के रूप में यह शिक्षक को बच्चों, उनके विकास के विविध पहलुओं और विकास के निहित प्रक्रियाओं को समझने का पर्याप्त अवसर और दृष्टि देता है। साथ ही अनेक प्रकार के कौशल और अवधारणाओं/तरीकों को भी सीखने में मदद करता है। यह सच है कि शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक विकास, जो कि बच्चों के जीवन के शुरुआती सालों में होता है, वह भविष्य में सीखने की नींव रखता है। इसलिए शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे बच्चों, बचपन, बच्चों के सोचने, तर्क करने और सीखने की स्पष्ट समझ रखते हों; वयस्क होने के नाते और खासतौर पर एक शिक्षक होते हुए हम बच्चों की तरफ से खुद ही निर्णय लेते हैं। ये कमोबेश हमारे अपने अनुभवों पर आधारित होते हैं जो हम अवलोकनो के आधार पर हासिल करते हैं। इस तरह हम सभी, खासतौर से शिक्षकों के पास बच्चों के विकास संबंधी कुछ स्वाभाविक समझ होती है। बच्चे नाना प्रकार से सीखते हैं और सभी बच्चे सीखने के प्रति सहज रूप से प्रेरित होते हैं और इस दुनिया को समझते हैं। पर हो सकता है यही सहजता और प्रेरणा, स्कूली विषयों को सीखने समझने के लिए न हो। बाल विकास से परिचित कराने के पीछे यही उद्देश्य रहेगा कि शिक्षक, बच्चों व उनके बौद्धिक और सामाजिक–भावनात्मक विकास संबंधी गहरी सैद्धान्तिक एवं बारीक समझ को हासिल कर पायें। इससे उम्मीद की जा सकती है शिक्षकों में यह योग्यता पनपेगी कि वे पाठ्यचर्या, स्थान, जानकारी और सीखने का संयोजन करते समय समुचित निर्णय ले सकें, जो हो सकता है कि पहले तो बच्चों के बारे में प्रचलित बहुत ही आम धारणाओं और मान्यताओं के आधार पर लिए जाते रहे हों, और जो बच्चों के संबंध में सैद्धांतिक व जमीनी समझ के विपरीत रहे हो।

इसलिए एक विषय के रूप में, पिछले कुछ दशकों में बच्चों को समझने की दिशा में आये बदलावों को इसमें शामिल करना महत्वपूर्ण है। यह आनुवांशिक कारणों वाली मान्यता से निकलकर, व्यवहारवाद, फिर उससे निर्माणवाद और फिर सामाजिक निर्माणवाद तक आता है। बच्चों के विकास संबंधी एक बहुत ही आम प्रचलित जैविक कारणों वाली धारणा से हटकर, हम बच्चों को उनके बहुत ही विशिष्ट संदर्भों में समझने के महत्व को जान पाये हैं। यह सब व्यापक रूप से दूसरे विषय क्षेत्रों के प्रभाव से संभव हो पाया है जैसे कि, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, भाषा विज्ञान और मनोविज्ञान में हुए शोध और विकास। इस प्रश्नपत्र का एक और उद्देश्य यही रहेगा कि शिक्षक, बच्चों को उनके सामाजिक आर्थिक संदर्भ में समझ सकें। इस तरह यह प्रश्नपत्र बच्चों के बीच विविधता को समझने और उसे स्वीकारने, स्थान देने की दृष्टि प्रदान करेगा तथा छात्राध्यापकों को तद्नुसार उनकी कक्षा आयोजित करने में मदद करेगा।

3- bdkbZokj foHkktu&

lj y Ø-	bdkbZ dk uke	vad
1	विकास संबंधी दृष्टिकोण	15
2	शारीरिक– गत्यात्मक विकास	13
3	भाषा सामाजिक एवं भावनात्मक विकास	15
4	समाजीकरण का संदर्भ	15
5	बचपन	12
vkrfjd vad		30
dqy ;ksx		100

bdkbZ 1- fodkl lEca/kh n`f"Vdks.k (Perspective in Development)

- cky fodkl dk ifjp; % वृद्धि, विकास एवं परिपक्वता की अवधारणा, विकास के संबंध में विविध दृष्टिकोण की अवधारणा एवं परिचय, मानविकी मनोविज्ञान एवं विकासात्मक सिद्धान्त।
- cky fodkl d s v/;;u dh LFkk;h fo"k;oLrq % बहुआयामी एवं बहुलता रूप में विकास, जीवनकाल में सतत् रूप से विकास, विकास पर सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव।
- cky fodkl d s v/;;u d s fy, fofHkUu i)fof/k;k¡ प्रकृतिवादी अवलोकन, साक्षात्कार, विशिष्ट झलकियां एवं वर्णात्मक कथाएं, पियाजे का बाल विकास का सिद्धान्त।
- cPpksa dh lekos'kh f'k{kk % अवधारणा और प्रविधियां।

bdkbZ 2- 'kkjhfjd& xR;kRed fodkl (Physical-Motor Development)

- शारीरिक – गत्यात्मक विकास, वृद्धि एवं परिपक्वता।
- शारीरिक– गत्यात्मक विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराने में अभिभावक एवं शिक्षकों की भूमिका, जैसे खेल आदि।

bdkbZ& 3- Hkk"kk lkekftd ,oa HkkoukRed fodkl **(Langauage, Social and Emotional Development)**

ckyuk ,oa Hkk"kk fodkl

- पूर्व–भाषायी संप्रेषण
- भाषा विकास की अवस्थाएं
- भाषा विकास के स्रोत : घर, शाला एवं मीडिया
- भाषा के उपयोग : संवाद एवं वार्तालाप में बच्चों की बातचीत को सुनना
- संवाद में सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नताएं : उच्चारण
- संप्रेषण के विभिन्न तरीके और कहानी कहना

lkekftd fodkl

- सामाजिक विकास में परिवार, सहपाठियों एवं स्कूल की भूमिका
- सामाजिक विकास में स्पर्धा, अनुशासन, पुरस्कार एवं दण्ड की भूमिका
- संवेगों की आधारभूत समझः गुस्सा, डर, चिंता, खुशी आदि।
- संवेगों का विकास, संवेगों के कार्य, बाल्वी का लगाव सिद्धांत

bdkbZ 4- lekthdj.k dk lanHkZ **(Context of Socializaltion)**

- समाजीकरण की अवधारणा एवं प्रक्रियाएं।
- समाजीकरण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएं।
- परवरिश, परिवार एवं वयस्क एवं बच्चों के बीच संबंध, पालन पोषण के तरीके, बच्चों का अभिभावकों से अलग रहना, झूलाघरों में रहने वाले बच्चे, अनाथालय।
- स्कूलिंग : शिक्षक बालक का साथ संबंध एवं शिक्षक की भूमिका
- सहपाठियों के साथ संबंध : साथी मित्रों के साथ संबंध, स्पर्धा एवं सहयोग, बचपन के दौरान उग्रता एवं शरारत।
- सामाजिक सिद्धान्त एवं लैंगिक (जेंडर) विकास : लिंग आधारित भूमिकाओं का आशय, लिंग आधारित भूमिकाओं पर प्रभाव, रूढ़ वादिता, खेल के मैदान में लिंग (पहचान) का प्रभाव।
- शाला त्यागी की समस्या।

bdkbl 5- cpiu (Childhood)

- बालश्रम, बाल शोषण, गरीबी, वैश्वीकरण विद्यालय से गैरहाजिरी की समस्या एवं वयस्क संस्कृति के संदर्भ में बचपन
- बचपन की धारणा में समानताएं एवं विविधताएं और खासतौर से भारतीय संदर्भ में किस तरह बचपन पनपते हैं।

4-0 vrj.k dh fof/k;k (Mode of Transaction)

- अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए कक्षा में परिचर्चा।
- पाठ सामग्री/शोध पत्रों का गहन पाठन।
- असाइनमेंट में उठाये गये मुद्दों और सरोकारों का व्यक्तिगत रूप से एवं समूह में प्रस्तुतीकरण।
- सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक गतिविधियां/अभ्यास कार्य/अन्वेषण, संकलित अवलोकनों, जानकारियों का विश्लेषण एवं वर्णन

5-0 l=xr dk;l ¼Assignment)

बच्चे के संसार में झांकना : क्या और कैसे–1

(लोगों के बीच जाना, रिकार्ड तैयार करना व कक्षा में चर्चा)

नोट : निम्नांकित में से कोई तीन प्रायोगिक कार्य लिये जा सकते हैं–

5-1 ik;ktuk dk;&1

विद्यार्थी, अखबार में प्रकाशित कोई दस आलेखों को संकलित करेंगे, जिसमें बच्चों के लालन पालन और बचपन से संबंधित मुद्दे होंगे। विद्यार्थी इनका विश्लेषण करेंगे और कक्षा में चर्चा करेंगे।

5-2 ik;ktuk dk;&2

बच्चों और बचपन के विविध संदर्भों का अध्ययन करने की विधियों का प्रत्यक्ष अनुभव करने के मौके।

विद्यार्थी, विविध पृष्ठभूमि वाले 5 से 14 साल तक की उम्र के बच्चों को समझने के लिए किसी भी बच्चे को ले सकते हैं और उसका अध्ययन करने के लिए केस प्रोफाइल विधि का इस्तेमाल कर सकते हैं। शिक्षक प्रशिक्षक, अलग–अलग विद्यार्थियों द्वारा लाई गई विभिन्न प्रोफाइल से चुनकर कक्षा को इस तरह संयोजित कर सकता है

कि विविध सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों की जानकारी प्रस्तुत हो सके। इससे व्यापक दायरे में जानकारी मिलेगी जिसे बाद में समूहों में चर्चा कर विश्लेषित किया जा सकता है। यह कार्य हाशियाकृत बचों, पहली पीढ़ी के अधिगमकर्ता, सड़कों पर जीने एवं झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों, विशेष जरूरतों वाले बच्चों को समझने और उनकी विकासात्मक व शैक्षिक जरूरतों में सहयोग करने में मददगार हो सकेगा।

केस प्रोफाइल विधि में अवलोकन और साक्षात्कार जैसे साधनों का उपयोग, सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों, बच्चों के लालन पालन के तरीकों, स्कूल से अपेक्षाओं और बच्चों के सपनों व कल्पनाओं का अध्ययन करने में किया जा सकता है।

5-3 ik;k tuk dk;&3

गिजूभाई बधेका की पुस्तक दिवास्वप्न का अध्ययन करते हुए बचपन और बच्चों को कैसे सिखाए पर आलेख तैयार करें।

5-4 ik;k tuk dk;&4

विद्यार्थी एक फिल्म देखेंगे, जैसे कि सलाम बॉम्बे या तारे जमीं पर या कोई अन्य संबंधित फिल्म। फिल्म का चुनाव शिक्षक और विद्यार्थी संयुक्त रूप से मिलकर करेंगे। बाद में मिलकर उसमें दिखाये गये बच्चों के चित्रण पर अपनी राय और अनुभूति साझा करेंगे। इसमें विविध पृष्ठभूमि के बच्चों और उनके बचपन पर चर्चा की जा सकेगी।

5-5 ik;k tuk dk;&5

विद्यार्थी, विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले 4–5 अभिभावकों से, बच्चों के लालन पालन एवं परवरिश के तरीकों के संदर्भ में साक्षात्कार करेंगे और फिर अपनी रिपोर्ट कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

f'k{k.k d fy, fun'k % उपरोक्त प्रायोगिक कार्य हेतु योजना बनाना, विद्यार्थियों को जोड़ियों या समूह में कार्य आवंटित करना, अधिकतम स्थानीय संसाधनों एवं उपलब्ध आई सी टी का उपयोग कर शिक्षण एवं प्रगति का आकलन किया जाना है।

l>kokRed lnHk xFk lph

- बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंडल
- जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- माथुर, एस.एस. (द्वितीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- पाठक, पी.डी. (चालीसवाँ संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- पाण्डेय, रामशकल (तृतीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर

- वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- जॉन होल्ट– बच्चे असफल क्यों होते है ? एकलव्य प्रकाशन, भोपाल
- राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा कक्षागत प्रक्रियाओं पर विकसित सामग्री
- राज्य शिक्षा केन्द्र की बेवसाइट www.ssa.mp.gov.in
- एज्युकेशन पोर्टल www.mp.gov.in/education portal.
- बाल विकास – डॉ. ओ.पी. सिंह
- छात्र का विकास एवं शिक्षण – डॉ. आर.ए.शर्मा
- बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान –प्रो. सुरेश भटनागर
- बचपन और बाल विकास – पी.डी. पाठक, अग्रवाल पब्लि. आगरा
- बचपन और बाल विकास – श्रीमति शर्मा, डॉ. बरौलिया एवं प्रो. दुबे राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
- Developmental Psychology & H.E.
- Sasaswati T.S.(Ed.) (1999) Culture Socialigation & Human Development] Theory Reearch & Applications in india, Sage Publications.
- Chapter 9: Physical Development in Middle Childhood.
- Mukunda, K.V. (2009) Chapter is Child Development, 79-96.s
- Post- Colnial Indian Childhood, Sharda Balgopal.
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M i`Fke o"kZ

fo"k; % lelkef;d Hkkjrh; lekt esa f'k{kk

Education in contemporary Indian Society

¼iz'u i= & 2½

iw.kkZad & 100

cká; vad & 70

vkarfjd vad & 30

1- vkfpR; ,oa mn~ns'; ¼Rationale and Aim½

इस पाठ्यक्रम में उन परिस्थितियों और मुद्दों को सम्मिलित किया गया है, जो भारत में लोगों के जीवन पर असर डालते हैं और उसका स्वरूप तय करते हैं। छात्राध्यापक भारतीय समाज के ऐतिहासिक, राजनैतिक आर्थिक उतार–चढ़ाव के बारे में नजरिया बना पायेंगे। यह पाठ्यक्रम भारत की राजनीति, संस्थानों, अर्थव्यवस्था, समाज और मुद्दों से रूबरू कराता है। किसी शिक्षक के लिए, हमारे भारतीय समाज की एक समालोचनात्मक समझ प्रस्तुत करना बड़ा कठिन हो जाता है। बच्चों के सामाजिक संदर्भों और उनके विविध जीवन अनुभवों को ध्यान में रखते हुए बात रख पाने की चुनौती उसके सामने होती है। इसलिए इस पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयवस्तु व मुद्दों के जटिल स्वरूप की एक व्यापक समझ के लिए सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों में इसे ढाला गया है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों व शिक्षकों को समालोचनात्मक ढंग से सोचने और एक व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अपने निजी व सामान्य मत मान्यता को देख पाने में सक्षम बनाता है।

2- fof'k"V mn~ns'; ¼Specific objectives½

- अवधारणाओं, विचारों और सरोकारों के अंतर–विषयक विश्लेषण से परिचित होना।
- भारतीय समाज के सामाजिक–राजनैतिक आर्थिक आयामों से परिचित कराना और इसकी विविधता को सराहना।
- समसामयिक भारतीय समाज में व्याप्त एवं प्रचलित मुद्दे और प्रस्तुत चुनौतियों की समझ विकसित करना।
- भारतीय समाज की उपलब्धियों, लगातार बनी रहने वाली समस्याओं और प्रस्तुत चुनौतियों को समझने की दिशा में विशिष्ट राजनैतिक संस्थानों, आर्थिक नीतियों और सामाजिक संरचनाओं के बीच संबंधों को समझना।

पाठ्यक्रम की इकाईयों में समसामयिक समाज के राजनैतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों को सम्मिलित किया गया है। पाठ्यवस्तु के सीखने–सिखाने के लिए छात्राध्यापक इन सभी कारकों से रूबरू हो, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रत्येक इकाई की पाठ्य सामग्री एक दूसरे में गुंथी हुई है। इन सभी पहलुओं को पृष्ठभूमि में रखते हुए ही समसामयिक भारत की एक अर्थपूर्ण समझ विकसित की जा सकती है। यह पाठ्यक्रम एक समाजशास्त्रीय, समालोचनात्मक ढंग से सोचने व सवाल उठाने वाले नजरिये की पृष्ठभूमि बनाता है। छात्राध्यापकों से अपेक्षा है कि वे अपनी पूर्व धारणाओं का विश्लेषण करें और उससे परे जाकर सोच पायें।

3- bdkbZokj vadks dk foHkktu

Øekad	bdkbZ	fo"k;	vad
1	1	jkT;] jktuhfr ,oa Hkkjrh; f'k{kk	15
2	2	lekt o 'kkyh; f'k{kk dk ifjis{;	15
3	3	Hkkjrh; lafo/kku ,oa f'k{kk	15
4	4	f'k{kk esa ledkyhu enns ,oa ljksdkj	15
5	5	lkekftd cnyko drk dk :i esa f'k{kd	10
vkrfjd vad			30
कुल अंक			100

bdkbZ 1 % jkT;] jktuhfr ,oa Hkkjrh; f'k{kk ¼**State, Politics and Indian Education**½

- राज्य एवं शिक्षा
- शिक्षा की राजनैतिक प्रकृति
- नव आर्थिक सुधार एवं शिक्षा पर उनका प्रभाव
- सार्वजनिक शिक्षा बनाम निजी शिक्षा
- सार्वजनिक शिक्षा का निजीकरण
- हाशियाकृत (marginalised) एवं सामाजिक रूप से वंचितों की शिक्षा
- भारत में शिक्षा के अवसरों की समानता लाना

bdkbZ 2 % lekt o 'kkys; f'k{kk dk ifjizs{; ¼Perspectives on Society and Schooling½

- भारत में वर्ग, जाति, धर्म, परिवार एवं राजनीति के विशेष संदर्भ में सामाजिक संरचना एवं शिक्षा
- संस्कृति एवं शिक्षा
- आधुनिकीकरण, सामाजिक बदलाव एवं शिक्षा

bdkbZ 3 % Hkkjrh; lafo/kku ,oa f'k{kk ¼Constitution of India and Education½

- स्वतंत्र भारत की संवैधानिक दृष्टि : तब और अब
- संविधान एवं शिक्षा : शिक्षा की समवर्ती स्थितियाँ , शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान
- विशिष्ट संदर्भों से जुड़े बच्चे (जाति, वर्ग, धर्म, भाषा एवं लिंग) और शिक्षा से संबंधित नीतियां, अधिनियम एवं प्रावधान
- (प्रारंभिक शिक्षा की विभिन्न शैक्षिक नीतियाँ एवं उनका क्रियान्वयन व प्रभाव)
- भारतीय संविधान में समता एवं न्याय, भेदमूलक शाला प्रणाली (differential school) एवं समान पड़ोस शाला (common neighbour school) प्रणाली का विचार
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 एवं म.प्र. नियम 2011

bdkbZ 4 % f'k{kk esa ledkyhu eqnn~s ,oa ljksdkj ¼Contemporary Issues and Concerns in Education½

- लोकतंत्र एवं शिक्षा
- उदारीकरण एवं शिक्षा
- वैश्वीकरण एवं शिक्षा
- खेतिहर, दलित एवं नारीवादी आन्दोलन और शिक्षा पर उनके प्रभाव
- समानता, निष्पक्षता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लोकतंत्रीयकरण

bdkbZ 5 % lkekftd cnykodrkZ ds :i esa f'k{kd ¼Teacher as Social Transformer½

- एक चेतनशील बुद्धिजीवी के रूप में शिक्षक
- शिक्षक की भूमिका एवं दायित्व
- शिक्षक नैतिकता
- शिक्षक एवं सामुदायिक विकास
- सामाजिक बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक

8- l=xr dk;Z& **(Assignments)**

समसामयिक भारतीय समाज में शैक्षिक चुनौतियों के संदर्भ में नियत कार्य एवं प्रायोजना कार्य – कुल तीन कार्य दिये गए हैं। प्रत्येक खंड में से एक कार्य लिखिए।

[kM ^v* fu;r dk;Z – **(Assignments)**

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में प्रारंभिक शिक्षा हेतु की गई अनुशंसाओं की सूची बनाइए।
- प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के पूर्व और पश्चात् हुए शालेय तंत्र में बदलाव का तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन कीजिए।
- सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की सूची बनाइए । किसी एक योजना के मूलभूत लक्ष्य, उद्देश्य एवं क्रियान्वयन की प्रक्रिया लिखिए।
- बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में कमजोर वर्ग एवं वंचित समूह हेतु शिक्षा के प्रावधानों एवं शैक्षिक विकास पर इनके प्रभाव लिखिए।
- शिक्षा का अधिकार लागू होने के पश्चात् आपके क्षेत्र में हुए सामयिक बदलाव पर आलेख तैयार कीजिए।
- अपने जिले की विभागीय संरचना को स्पष्ट करते हुए फ्लोचार्ट बनाइए।
- आर्थिक विकास में प्रारंभिक शिक्षा की भूमिका की तर्क युक्त विवेचना कीजिए।
- अपनी शाला में संवैधानिक प्रावधान (RTE 2009) की धारा 19 के तहत मानक एवं मापदंडों के अनुरूप शालेय संसाधनों की समीक्षा कीजिए।
- अपने क्षेत्र में अल्पसंख्यकों/सुविधावंचित बच्चों हेतु संचालित विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं की सूची बनाते हुए किसी एक संस्था के कार्य, प्रक्रिया एवं उपलब्धि पर आलेख तैयार कीजिए।
- अपने ग्राम के VER में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, प्रवेश एवं उन्हें प्राप्त सुविधाओं की स्थिति पर आलेख तैयार कीजिए।
- किन्ही 5 प्राथमिक शालाओं में राष्ट्रीय एकता विकास के लिए बच्चों हेतु विभिन्न गतिविधियों की सूची बनाईए।
- **ABL** अथवा **ALM** शिक्षण पद्धतियों के क्रियान्वयन में आने वाली व्यावहारिक कठिनाईयों की सूची बनाईए एवं इनके निराकरण के सुझाव लिखिए।
- शाला में उपलब्ध बाल पुस्तकालय/ विज्ञान/गणित किट आदि के माध्यम से बच्चों के बेहतर सीखने – सिखाने की योजना तैयार कीजिए।
- अपनी शाला में हेतु किसी एक विषय में बहुकक्षा शिक्षण / बहुस्तरीय शिक्षण हेतु कार्य योजना बनाईए।

[kM ^c* iktDV dk; (Porject Work)

- अपने ग्राम/ वार्ड के 20 परिवारों का सर्वेक्षण कर ग्राम शिक्षा पंजी तैयार कीजिए।
- अपने ग्राम /वार्ड के 6 से 14 आयु वर्ग के अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अल्पसंख्यक छात्रों की जनसंख्या, वर्ग व शिक्षा की जानकारी एकत्र कीजिए।
- अपने ग्राम /वार्ड के सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछड़े 10 परिवारों के 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों की शैक्षिक कठिनाईयों की सूची बनाइए एवं इनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए कार्य योजना तैयार कीजिए।
- आपके क्षेत्र /जिले में विशेष समूह के बच्चों के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं में से किसी एक योजना प्रभाव का अध्ययन कीजिए (किन्ही 5 बच्चों /पालकों के साक्षात्कार के माध्यम से)
- ABL पर आधारित दो शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) का निर्माण कीजिए।
- ALM पर आधारित दो शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) का निर्माण कीजिए।
- विद्यालय के बच्चों में राष्ट्रीय एकता विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों की सूची बनाइए एवं इसका त्रैमासिक केलेण्डर तैयार कीजिए।
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के संदर्भ में कमजोर एवं वंचित समूह बच्चों के प्रवेश प्रक्रिया का किन्ही दो विद्यालयों में जाकर अध्ययन कीजिए (किन्ही 5–5 बच्चों एवं उनके पालक के साक्षात्कार के माध्यम से)
- आपके क्षेत्र के प्रथम पीढ़ी की शिक्षा प्राप्त करने वाले परिवार एवं शिक्षित परिवारों में सामाजिक अंधविश्वास/कुरीतियों की स्थितियों की तुलना कीजिए । (किन्ही 5 परिवारों के संदर्भ में)
- अपने क्षेत्र पलायन करने वाले परिवारों के शाला जाने योग्य बच्चों की जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनके शैक्षिक विकास हेतु किए गए प्रयासों की जानकारी एकत्र की कीजिए।

[kM ^l* ledkyhu Hkkjrh; ennk ij l>kb xb dN ifj;ktuk,i %

e/;in'k d lnHk e& ftle d{kk e ifjppk djokb tk,@vky[k fy[kok, tk,A

- किसी शैक्षणिक संस्थान में अपनाए जाने वाले संवैधानिक मूल्यों का समालोचनात्मक मूल्यांकन।
- विभिन्न कार्यस्थलों का तुलनात्मक अध्ययन।
- मध्यप्रदेश में सामाजिक द्वंद और आन्दोलन : महिला, दलित और आदिवासी आन्दोलन, विस्थापन, भूमि, मानवाधिकार, सांप्रदायिक आन्दोलन।
- विस्थापन और विकास
- शैक्षिक बहस और आन्दोलन
- स्कूल में पहली पीढ़ी के सीखने वाले बच्चे

- लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका
- भारत में बचपन को समझना
- मीडिया में समकालीन बहस का विश्लेषण
- शान्ति के लिए शिक्षा
- शिक्षा का अधिकार कानून में बच्चे और स्कूल की स्थिति
- स्कूल में भाषा
- किसी खेती या औद्योगिक उत्पाद के प्रारंभ से वर्तमान तक का ब्यौरा हासिल करना
- हाशियाकरण को उत्पन्न करने और उसे हल करने में राज्य और अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था की भूमिका
- भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता
- अल्पसंख्यक अधिकारों का महत्व
- भारत में दलितों, आदिवासियों और धार्मिक अल्पसंख्यकों की शैक्षणिक स्थिति, अवसर एवं अनुभव
- वंचित बस्तियों में रहने वाले एवं पलायन का दंश झेलने वाले बच्चों का हाशियाकरण एवं उनकी शिक्षा
- द्वंदों के टकरावों के परिप्रेक्ष्य में बहुलवादी शिक्षा की चुनौतियां
- बच्चों पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव
- वर्तमान में युवा संस्कृति एवं इंटरनेट व अन्य दृश्य माध्यमों के प्रभाव को समझना

vrj.k dk rjhdk % **Mode of Transaction**

- शिक्षकों को अपने अध्यापन में परिचर्चा, परियोजना, डॉक्यूमेन्ट्रीज, फिल्में और फील्ड प्रॉजेक्ट को शामिल करना चाहिए।
- सघन और समालोचनात्मक पठन हो, साथ ही विभिन्न आलेखों, नीति दस्तावेजों, पाठ्यसामग्री, डॉक्यूमेन्ट्रीज और फिल्मों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- छात्राध्यापक समूह में फील्ड आधारित प्रोजेक्ट करें और अपनी जानकारियों व निष्कर्षों को विश्लेषणात्मक ढंग से लिख पाने में सक्षम बनें।
- संवाद और परिचर्चा ही इस पाठ्यवस्तु को सिखाने के प्रमुख तरीके होंगे।

9- l>kokRed lnHk xFkk dh lph

- राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत प्रकाशित निर्देश एवं पाठ्य सामग्री।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (प्रारंभिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग) भारत सरकार द्वारा प्रकाशित सामग्री
- जनशिक्षा अधिनियम 2002 और जनशिक्षा नियम 2003
- बालशिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एवं मध्यप्रदेश नियम 2011

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का दस्तावेज
- प्राथमिक शिक्षक एन.सी.ई.आर.टी. एवं एन.यू.ई.पी.ए. नई दिल्ली द्वारा प्रारंभिक शिक्षा संबंधी प्रकाशन
- शैक्षिक पलाश – मध्यप्रदेश शिक्षक प्रशिक्षण मण्डल द्वारा प्रकाशित
- शिक्षा का सिद्धान्त – पाठक एवं त्यागी
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार– डॉ. सरोज सक्सेना
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त – एन. आर. स्वरूप सक्सेना
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठिभूमि – रामशकल पाण्डेय
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त – रमन बिहारी लाल
- सामाजिक परिवर्तन एवं शिक्षा – उमराव सिहं चौधरी
- शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय आधार –एस.पी. चौबे
- शिक्षा का समाज शास्त्र – चन्द्रा एवं वर्मा
- शिक्षा दर्शन – आर.एन. शर्मा
- फाउण्डेशन ऑफ एज्यूकेशन – एस. भट्टाचार्य
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका – मंजरी सिन्हा व डॉ आई.एम.सिन्धु आगरा
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका – श्रीमति निर्मला गुप्ता व श्रीमति अमृता गुप्ता साहित्य प्रकाश आगरा
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा – राजस्थान हिन्दी अकादमी द्वारा प्रकाशित
- इन्टरनेट से शैक्षणिक क्षैत्र की विभिन्न संस्थाओं की वेबसाइट
- समसामायिक भारतीय समाज, पाठ्यचर्या एवं शिक्षार्थी – श्रीमति शर्मा, डॉ. बरौलिया एवं प्रो. दुबे, राधा प्रकाशन मंदिर आगरा।
- समसामायिक भारतीय समाज, पाठ्यचर्या एवं शिक्षार्थी – गुरूसरनदास, अग्रवाल पब्लि. आगरा।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M- iFke o"k

iol ckY;koLFkk&ifjp;k ,o f'k{kk

Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)

¼ i'u i= & 3½

i.kkd vd &100
cká eY;kdu & 70
vkrfjd eY;kdu & 30

1- vkfpR; ,o mnn'; &¼Rationale and aim½

प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं उसकी शिक्षा विश्व में एक उच्च प्राथमिकता से उभरने वाले क्षेत्रों में से एक है। तंत्रिका विज्ञान (Neuro science) की नई शोध कहती है कि नब्बे प्रतिशत मस्तिष्क का विकास 5 साल की उम्र तक होता है और इस विकास पर न केवल पोषण एवं सेहत का असर होता है, बल्कि इन सालों में बच्चे को मिलने वाले मनोसामाजिक अनुभवों का भी गहरा असर पड़ता है। पहली पीढ़ी के सीखने वाले बच्चों की एक बड़ी संख्या अब विद्यालयी व्यवस्था में आ रही है। ये बच्चे ऐसे घरो से आ रहे हैं जहाँ सीखने का वातावरण अपर्याप्त है। इससे दुनियाभर में विद्यालय प्रारंभिक लिखने पढ़ने और गणित की दक्षताओं के बिना ही अगली कक्षा में पहुँच रहे हैं। एक महत्वपूर्ण कारक यह देखा गया है कि बच्चे स्कूल के लिए पर्याप्त तैयारी के बिना ही सीधे शाला में आ रहे है जबकि यह तैयारी उन्हें आवश्यक अवधारणात्मक एवं भाषात्मक आधार दे सकती है। शोध से यह बात उभरी है कि प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) यदि सही उम्र में मिले तो इस अंतर को काफी हद तक कम किया जा सकता है। प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) जो छः वर्ष तक की उम्र के लिए थी उसे अब दुनियाभर में जन्म से आठ साल तक की वर्ष की देखभाल और शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जा रहा है। इस तरह से प्राथमिक स्कूल के पहले दो से तीन साल भी इस में सम्मिलित है। इसके पीछे यह तर्क है कि बाल विकास के सिद्धांत के अनुसार छः से आठ साल के बच्चें अपने विकास लक्षणों और रूचियों में छोटे बच्चों से ज्यादा समानता रखते हैं और उनकी जरूरते भी एक सी होती है। परिणामस्वरूप प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) में खेल और गतिविधि आधारित विधियाँ इनके लिए ज्यादा उपयुक्त होती है और इसके साथ यह कि शाला पूर्व प्राथमिक वर्षों को एक समान अवस्था में या एक इकाई के रूप में मिलाने से बच्चे के सीखने की प्रक्रिया को सतत् बनाए रखने में मदद मिलती है। इससे बच्चों की लचीले रूप से और अपनी गति के अनुसार सीखने की प्रक्रिया चल पाती है और औपचारिक रूप से सीखने की तरफ बढ़ना आसान हो जात है। प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में दो उप–अवस्थाएं सम्मिलित है–

iol ikFkfed voLFkk 3 l 6 lky&

प्राथमिक अवस्था या कक्षा 1 एवं 2 (6 से 8 साल) बच्चों के बेहतर मानसिक विकास एवं जीवन पर्यन्त सीखने तथा अपने आगामी जीवन में एक अच्छा नागरिक जो एक जिम्मेदार समाज की संरचना कर सकें। बच्चें

के प्रारंभिक वर्षो में हर चीज को अपनी तर्क शक्ति तथा जिज्ञासा से परखने की क्षमता को बढ़ाया जाये उसमें ऐसे गुणों का विकास किया जाये ताकि वह किसी बात को सीधे मनाने की बजाए उसकी उपयोगिता और महत्ता मे से सम्बधित प्रश्न करें और संतुष्ट होने पर ही उसे स्वीकार करे, ताकि वह भीड़ का हिस्सा न बने और उसमें नेतृत्व करने की क्षमता का विकास हो।

शिक्षक भी तभी अपनी शिक्षा देने की पद्धति से संतुष्ट हो जब बच्चा हर पाठ की समाप्ति पर या कक्षा के दौरान प्रश्न करें।

2- fof'k"V mn~ns'; ¼**Specific Objectives**½

- जीवन पर्यन्त सीखने और विकास के आधार के रूप में प्रारंभिक बचपन के वर्षों की परिभाषा और महत्व को समझना।
- पूर्व, मध्य एवं पश्च बचपन के वर्षों में बालक के गुणों, विकास की जरूरतों के अनुसार संवेदनाओं का विकास करना और प्राथमिक शिक्षा में उसका क्रियान्वयन करना।
- विकास के संदर्भ में उपयुक्त प्रारंभिक बचपन में देखभाल एंव शिक्षा (ECCE) की पाठ्यचर्या और विद्यालयीन शिक्षा के लिए उसके महत्व एवं सिद्धांत व विधियों को समझना।
- प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) में घर पर रह कर सीखना (Home School) और समुदाय से जुड़ाव के महत्व को समझना।

3- bdkbZokj vad foHkktu&

lj y Ø-	bdkbZ dk uke	vad
1	प्रारंभिक बचपन में देखभाल एंव शिक्षा की परिभाषा प्रकृति एवं महत्व	20
2	विकास की दृष्टि से समुचित प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) पाठ्यक्रम के सिद्धांत और विधियाँ	20
3	बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की पाठ्यचर्या की योजना एवं प्रबंधन	15
4	बच्चों के प्रगति का आंकलन	15
	vkrfjd vad	30
	dqy vad	100

bdkbl %1 ikjfHkd cpiu e ns[kHkky ,o f'k{kk dh ifjHkk"kk iÑfr ,o egRo

(Definition, Nature and Significance of Early Childhood and Education)

- प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की समग्र पाठ्यचर्या की परिभाषा एवं उद्देश्य।
- जीवन पर्यन्त सीखने एवं विकास में प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को महत्वपूर्ण अवधि के रूप में महत्व जानना।
- अधिगम को सुगम बनाने के लिए प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की अवधि को आठ साल की उम्र तक बढ़ाने संबंधी तर्क।
- विद्यालयों में प्रारंभिक अधिगम की चुनौतियाँ एवं शाला पूर्व तैयारी की अवधारणा।

bdkbl % 2 fodkl dh nf"V ls lefpr ikjfHkd cpiu e ns[kHkky vkj f'k{kk ¼ECCE½ ikB~;Øe ds fl)kr vkj fof/k;k **(Principles and Methods of Developmentaly Appropriate ECCE Curriculum)**

- बच्चे कैसे सीखते हैं : प्रारंभिक, मध्य एवं बाद के बचपन तक अवस्थावार विशिष्टताएँ।
- प्रारंभिक वर्षों में सीखने के लिए खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का महत्व।
- बच्चों के समग्र विकास के क्षेत्र एवं गतिविधियाँ ।
- प्रारंभिक वर्षों में साक्षरता एवं अंक ज्ञान।

bdkbl % 3 cpiu e ns[kHkky ,o f'k{kk dh ikB~;p;kl dh ;kstuk ,o icU/ku

(Planning and Mannagement of ECCE Curriculum)

- सुगठित एवं संदर्भयुक्त पाठ्यचर्या की योजना के सिद्धांत
- दीर्घ एवं अल्पकालिक उद्देश्य एवं योजना
- परियोजना विधि एवं विशिष्ट कार्यक्षेत्र केन्द्रित उपागम (Approach)
- विकास की दृष्टि से उपयुक्त एवं समावेशी कक्षा प्रबंधन

bdkbl % 4 cPpk ds ixfr dk vkdyu **(Assessing Children's Progress)**

- प्रारंभिक बचपन में सीखने एवं विकास के मापदन्ड
- बच्चों की प्रगति का अवलोकन एवं उसका अभिलेखीकरण
- बच्चों की प्रगति का प्रतिवेदन
- घर और शाला के बीच जुड़ाव सुनिश्चित करना

4- l=xr dk;l ¼**Assignment**½ dkbl& 3

1. प्रारंभिक बचपन के वर्षों (3–8 वर्ष) के लिए कोई दो स्थानीय खेलों/गतिविधियों को लिखिए एवं उसके द्वारा होने वाले विकास पर रिपोर्ट प्रस्तुत करें।
2. किसी आंगनवाड़ी केन्द्र का भ्रमण कर बच्चों को ऊँचाई और वजन का तुलनात्मक अध्ययन कर स्वास्थ्य सम्बन्धी विश्लेषण प्रस्तुत करना।
3. कक्षा 1 में आगंनवाड़ी से अध्ययन करके पहुँचे बच्चे एवं सीधे शाला आने वाले बच्चों की शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
4. शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियाँ।

vrj.k dh fof/k;k **(Mode of Transaction)**

- अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए कक्षा में परिचर्चा।
- पाठ सामग्री/शोध पत्रों का गहन पाठन।
- सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक गतिविधियां/अभ्यास कार्य/अन्वेषण, संकलित अवलोकनों, जानकारियों काा विश्लेषण एवं वर्णन

ukV– इसके अतिरिक्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को अन्य सम्बंधित प्रयोजना कार्य दे सकते हैं।-

l>kokRed lnHk xFkk dh lph

1 राजलक्ष्मी मुरलीधरन एवं शोभिता अस्थाना– शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियाँ

2 शिशु शिक्षा संदर्शिका – म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

3 शिशु शिक्षा एवं देख–भाल – मीना स्वागीनाथन

4 NCERT, (2006). Position paper: National Focus Group on ECE, New Delhi.

5 (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M- iFke o"k

Hkk"kk cks/k ,o izkjfEHkd Hkk"kk fodkl

Understanding Language and Early Language Development

¼ iz'u i=&4½

iw.kkd	&	50
ckg; vad	&	25
vkarfjd vad	&	25

vkfpR; ,o mn~ns'; (Rationale and Aim)

भाषा केवल संचार या संप्रेषण का माध्यम नहीं है बल्कि ऐसा माध्यम है जिससे ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यह एक ऐसी संरचना है जो हमारे आस–पास की वास्तविकता को व्यवस्थित करके हमारे मस्तिष्क में इसे प्रस्तुत करती है, इसका प्रतिनिधित्व करती है। भाषा केवल भाषा की कक्षा तक ही सीमित नहीं होती, यह सभी दृष्टिकोणों, विषयों, गतिविधियों और संपूर्ण समाज में व्याप्त है। इसके महत्वपूर्ण पहलुओं के व्यवस्थित अध्ययन की आवश्यकता है।

इस प्रश्नपत्र का प्राथमिक उद्देश्य शिक्षकों को कक्षा में, बच्चों के घर में, समाज में और राष्ट्र में भाषा किस तरह परिचालित होती है, इस बारे में जागरूक करना है। भाषा की कक्षाओं में शिक्षण एवं निर्देशों के लिए योजना बनाते समय सिद्धांतों से जुड़ाव बनाए रखना भी इस प्रश्नपत्र का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि भाषा हम सभी के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। यह केवल संप्रेषण के लिए ही आवश्यक नहीं है वरन यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा विविध क्षेत्रों में ज्ञान हासिल किया जाता है। चिंतन, तर्क करना, निर्णय लेना आदि सभी कार्य भाषा के कारण ही संभव हो पाते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि हम कोई भी काम भाषा के जरिए और भाषा के साथ ही करते हैं। भाषा हमारे चारों ओर चल रही घटनाओं व बातों को स्वरूप देती है और फिर हमारे मस्तिष्क में इसे व्यक्त करती है।

इस प्रश्नपत्र का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को भाषा की कार्यप्रणाली को समझने में मदद करना है जैसे भाषा से क्या आशय है? भाषा के अंतर्गत क्या–क्या आता है? भाषा के कार्य क्या है? भाषा, विचार और समाज के बीच क्या संबंध हैं आदि।

fof'k"V mn~ns'; ¼ (Specific Objectives)

- भाषा की प्रकृति एवं संरचना से प्रतिभागियों को परिचित कराना।
- भाषा के कार्यों के प्रति जागरूक बनाना
- प्राथमिक कक्षाओं में स्कूली पाठ्यक्रम के वृहद परिप्रेक्ष्य में भाषा के महत्व, उसके अधिग्रहण तथा अधिगम को समझना।
- विभिन्न भाषाई कौशलों एवं उनके विकास के तरीकों को समझना
- भाषा, विचार एवं समाज के अंर्तसबंधों को समझना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं की प्रकृति, उनके शिक्षण के उद्देश्य तथा अधिगम के तरीकों को समझना
- व्याकरण को पाठ्यवस्तु के साथ रचनात्मक तरीके से जोड़ते हुए पढ़ाने के तरीकों को समझना

अच्छा शिक्षण शास्त्र वही होता है जो विषय की प्रकृति, शिक्षार्थी और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए संयोजित किया जाए।

bdkbZokj vad dk foHkktu &

Øekad	bdkbZ	fo"k;	vad
1	1	भाषा क्या है (What is Language)	2
2	2	भाषाई विविधता और बहुभाषिकता (Listening & Speaking)	2
3	3	भाषा अधिग्रहण और भाषा सीखना (Language Accquistion and Learning)	2
4	4	भाषा की कक्षा (Language Classroom)	2
5	5	भाषा कौशल क्या है (Developing Language Skills)	4
6	6	भाषाई कौशल का विकास (Developing Language Skills)	4
7	7	साहित्य (Literature)	3
8	8	पाठ्यपुस्तक एवं उसके शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding text book and Pedogogy)	3
9	9	कक्षा शिक्षण की योजना एवं आकलन (Classroom Planning and Evaluation)	3
		vkrfjd vad	25
		dqy vad	50

bdkbl 1 Hkk"kk D;k g ¼What is language½

- परिचय
- भाषा, विचार और समाज
- पशु एवं मानव संप्रेषण के बीच अंतर
- भाषा की विशेषताएँ, भाषा के कार्य
- भाषा की संरचना
- भाषा और उसमें निहित शक्ति

bdkbl 2 Hkk"kkbl fofo/krk vkj cgqHkkf"kdrk ¼ Liestenig & Speaking)

- भाषा के बारे में संवैधानिक प्रावधान
- बहुभाषिकता की प्रकृति और कक्षा में इसका प्रभाव
- भाषाई विविधता– भारत एवं मध्यप्रदेश के संबंध में
- बहुभाषिकता– कक्षा संसाधन और रणनीति के रूप में

bdkbl 3 Hkk"kk vf/kxg.k vkj Hkk"kk lh[kuk (Language Accquistion and Learning)

- परिचय
- भाषा और बच्चे
- अधिग्रहण और सीखना
- प्रथम भाषा अधिग्रहण
- द्वितीय भाषा और विदेशी भाषाओं को सीखना

bdkbl 4 Hkk"kk dh d{kk (Language Classroom)

- परिचय
- भाषा शिक्षण के उद्देश्य (aims & objectives)
- भाषा शिक्षण के वर्तमान तरीके और उनका विश्लेषण
- शिक्षक की भूमिका
- त्रुटियों की भूमिका

bdkbl 5 Hkk"kkbl dk'ky D;k gl (Developing language skills) ¼1½

- परिचय–
- सुनना– सुनने से तात्पर्य
- बोलना– बोलने से तात्पर्य
- सुनने और बोलने के कौशल का विकास– संवाद, लघु नाटक, कहानी सुनाना, कविता सुनाना

bdkbl 6 Hkk"kkbl dk'ykı dk fodkl (Developing language skills) ¼2½

- परिचय
- साक्षरता और पढ़ना–पढ़ने से तात्पर्य
- वर्णनात्मक पाठ्यवस्तु को पढ़ना– पाठ्यवस्तु को समझना, आलेख का विस्तार करना, पठित सामग्री को अपने अनुभव से जोड़ना, नए अनुभवों को आलेख में शामिल करना, पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त भी विविध सामग्री को पढ़ पाना
- पढ़ने की रणनीतियाँ– पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद की रणनीतियाँ
- भाषा के विविध साधनों की समझ, बच्चों को अच्छा पाठक बनाना
- लेखन एक कौशल?
- पढ़ने और लिखने के बीच का संबंध
- लेखन कौशल का विकास करना, मौलिक लेखन कर पाना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं से सम्बधित साहित्यिक उदाहरण दिए जाएँ जिससे कि पढ़ाना आसान हो।

bdkbl 7 lkfgR; (Literature)

- पाठ्यपुस्तक के प्रकार– कथात्मक एवं वर्णात्मक साहित्य से परिचय, उन्हें पढ़कर समझना, पाठ्यवस्तु के साथ संबंध स्थापित करना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण के उद्देश्य
- साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़कर समझना
- संपूर्ण पाठ्यक्रम में साहित्य का प्रयोग कर पाना।
- गद्य एवं पद्य को पढ़ाने की विधियाँ– व्याकरण–रचनात्मक तरीके

bdkbZ 8 ikB;iqLrd ,oa mlds f'k{k.k 'kkL= dh le> (Understanding text book and pedogogy)

- भाषा की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत
- विषयवस्तु एवं उसके शिक्षण के तरीके
- पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु, उसके शिक्षण के तरीके, इकाइयों की रूपरेखा, अभ्यास कार्य की प्रकृति और उसकी बारीकियों का विश्लेषण
- अकादमिक मापदंड और सीखने के तरीके
- भाषा की कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री

bdkbZ 9 d{kk f'k{k.k dh ;kstuk ,oa vkdyu (Classroom planning and evaluation)

- कक्षा शिक्षण की तैयारी– भाषा की कक्षाओं की वार्षिक एवं कालखण्डवार कार्ययोजना बनाना
- आकलन सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में अंतर (CCE)
- भाषा की कक्षा में रचनात्मक आकलन (पढ़ने–लिखने का आकलन)
- भाषा की कक्षा में योगात्मक आकलन (कौशल आधारित)

l=xr dk;Z ¼**Assignments**½

निम्नलिखित खंड अ एवं ब में से एक–एक प्रयोजना कार्य कीजिए

[kaM v

- गतिविधि आधारित अधिगम (ए.बी.एल.)/सक्रिय अधिगम प्रविधि (ए.एल.एम.) की एक –एक पाठ योजना गद्य एवं पद्य की पृथक –पृथक तैयार कीजिए।
- भाषाई कौशलों के विकास हेतु एक प्रभावी पाठ योजना सहायक सामग्री सहित तैयार कीजिए।
- भाषा प्रयोगशाला के प्रत्यक्ष अवलोकनके अधार पर एक भाषाई खेल गतिविधि तैयार करें।
- भाषागत किसी एक समस्या का चयन कर क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोजना निर्माण कर संपादन कीजिए।
- भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए एवं मौखिक मूल्यांकन के लिए ब्लूप्रिंट के अनुसार किसी एक कक्षा का आदर्श प्रश्नपत्र तैयार कीजिए।

[kM c

- विद्यालयीन पुस्तकालय में उपलब्ध साहित्य की विधाओं एवं लेखकों के नाम की सूची तैयार कीजिए । अपनी पसंद की किसी पुस्तक की समीक्षा लिखिए।
- आपके विद्यालय में पुस्तकालय के प्रभावी उपयोग की कार्य योजना तैयार कीजिए।
- किसी स्थानीय लोककथा को स्थानीय बोली और हिन्दी भाषा में लिखकर प्रस्तुत कीजिए।
- अपने आसपास के किसी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व के स्थल, मेले, त्योहार अथवा स्थानीय स्वतंत्रता–सेनानी के जीवनवृत्त में से किसी एक पर आलेख लिखिए।
- स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन कीजिए।

vrj.k dh fof/k;k **(Mode of Transaction)**

- छात्राध्यापकों को पठन हेतु चयनित सामग्री प्रदान करना एवं उस पर चर्चा करना।
- छात्राध्यापकों को छोटे समूह में पठन हेतु अवसर देना एवं उसका प्रस्तुतिकरण करवाना, छूटी हुई बातों को समूह चर्चा द्वारा जोड़ना।
- प्रश्नोत्तर माध्यम से चर्चा एवं सहभागिता द्वारा छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना एवं विषयवस्तु का सुदृढ़ीकरण करना।
- छात्राध्यापकों को विषयवस्तु से संबंधित प्रायोजना कार्य देना एवं उसके प्रस्तुतिकरण से विषयवस्तु का विकास करना।

Lk>kokRed lanHkZ xzaFk lwph &

1. NCF-2005
2. भारतीय भाषाओं का शिक्षण–आधार पत्र NCERT–2005
3. हिन्दी भाषा शिक्षण– डॉ. प्रकाश चंद्र भट्ट
4. भाषा विज्ञान–डॉ. भोलानाथ तिवारी
5. भाषा की प्रकृति इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली
6. बच्चे की भाषा और अध्यापक – N.B.T. कृष्ण कुमार
7. भाषा शिक्षण– SCERT छत्तीसगढ़
8. भाषा और पहचान– डेविड क्रिस्टल
9. भाषा, बोली और समाज– देशकाल प्रकाशन
10. पढ़ने की समझ– NCERT, नई दिल्ली
11. लिखने की शुरुआत– NCERT, नई दिल्ली

12. पढ़ना सिखाने की शुरुआत– NCERT, नई दिल्ली
13. हिन्दी व्याकरण सार– डॉ. ब्रजरतन जोशी, पत्रिका प्रकाशन नई दिल्ली
14. राजभाषा हिन्दी – मनोज कुमार
15. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना– डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद
16. भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास – श्रीमति शर्मा एवं प्रो. दुबे, राधा पब्लिकेशन, आगरा।
17. भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास – भाई योगेन्द्र जीत, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
18. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M-iFke o"k

ikB;p;k e lpuk ,o lEi"k.k rduhdh dk ,dhdj.k

ICT integration across the Curriculum

¼ i'u i=&5½

iw.kkd % 100

ckg; vd % 50

vkrfjd vd % 50

vkfpR; ,o mnn'; (Rationale and Aim)

वर्तमान समय में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने एवं सम्प्रेषण करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है, तथा सम्प्रेषण तकनीकी का पाठ्यक्रम में समेकन विषय अध्ययन के द्वारा छात्राध्यापकों की कम्प्यूटर अनुप्रयोग की समझ विकसित होगी। आई सी टी का उपयोग किस प्रकार किया जाए, इसकी समझ पैदा होगी। यह विषय उनकी शिक्षण–अधिगम की समझ को विकसित करेगा। इसका उपयोग वे शिक्षण कक्ष में कर सकेंगे। यह आशा की जाती है कि यह तकनीकी उनके कक्षा शिक्षण में अत्यन्त उपयोगी होगी।

इस विषय के अध्ययन का अन्य उद्देश्य यह है कि इससे छात्राध्यापकों में अनुसंधान विधियों की समझ विकसित होगी जिसका उपयोग वे बहुआयामी संदर्भों में कर सकेंगे। वे निम्नांकित कार्यो हेतु सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का उपयोग कर सकेगें।

- दस्तावेज तैयार करने हेतु
- प्रस्तुीकरण स्लाइड तैयार करने हेतु।
- सरल ग्राफिक्स बनाने के लिए
- शैक्षिक संदर्भों में उचित मुक्त शैक्षिक संसाधनों का उपयोग

fof'k"V mn'; ¼Specific Objectives½

- स्कूल शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की आवश्यकता समझना।
- अधिगम प्रक्रियाओं में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग के माध्यम से अधिगम को प्रभावी बनाना।
- विषय में छात्र मूल्याकंन/आकलन हेतु विभिन्न सूचना एवं सम्प्रेंषण तकनीकी माध्यमों को बढ़ावा देना।

- विभिन्न विषयों में उपलब्ध सूचना एवं तकनीकी साफ्टवेयर एवं टूल्स के उपयोग को बढ़ावा देना।
- उपलब्ध मुक्त शैक्षिक संसाधनों को उपयोग करना।
- शिक्षक को सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के उपयोगकर्ता के तौर पर योग्य, कुशल एवं संवेदनशील बनाना जिससे कि वह उचित समय पर उचित तकनीकी का प्रयोग कर सकें

bdkbokj vdk dk foHkktu

Ø-	bdkb dh la[;k	fo"k; dk 'kh"kd	vad vf/kHkkj
1.	1	स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी आधार	15
2.	2	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	15
3	3	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन	10
4	4	विषय आधारित वेब साइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग	10
vkrfjd vad			50
dqy vad			100

bdkb&1 स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी आधार

शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी– परिभाषा, अर्थ एवं भूमिका

- शिक्षा में कम्प्यूटर
  हार्डवेयर– डाटा स्टोरेज, डाटा बैकअप
  सॉफ्टवेयर–सिस्टम सॉफ्टवेयर (विंडोस, लिनेक्स, एड्रोइड), एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (वर्ड, पावरपॉइंट, एमएस एक्सेल)
- इंटरनेट और इंट्रानेट– खोज करना, चयन करना डाउनलोड करना, अपलोड करना
- दस्तावेज़ निर्माण और प्रस्तुतीकरण– टेक्स्ट दस्तावेज निर्माण, स्प्रेडशीट निर्माण, पावरपॉइंट निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण (स्लाइड, चार्ट, कार्टून, चित्र के साथ)
- मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओईआर)– अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व नेशनल रिपोजीटरी ऑफ ओईआर

ओईआर फॉर स्कूल्स— एचबीसीएसई, टीआईएफआर, एमकेसीएल एवं आई—कोन्सेंट का संयुक्त प्रयास अन्य जैसे— स्कूल फ़ार्ज, ओपेन सोर्स एडुकेशन फाउंडेशन, नेशनल सेंटर फॉर ओपेन सोर्स एंड एडुकेशन तथा फ्लॉसएड, ऑर्ग

bdkbi&2 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

- मस्तिष्क आधारित अधिगम (बीबीएल)
- ई—लर्निंग एवं ब्लैंडेड लर्निंग
- एल 3 समूह रचना, कापरेटिव एवं कोलोब्रेटीव अधिगम
- फ्लिप्ड एवं स्मार्ट क्लासरूम, इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित अधिगम के वैकल्पिक तरीके— पैकेज (काई / सीएएल पैकेज, मल्टीमीडिया पैकेज, ई—कंटैंट, एमओओसी), सोशल मीडिया (मोबाइल, ब्लॉग, विकि, व्हाट्सएप, चैट आदि)
- आभासी प्रयोगशाला (वर्चुअल लैब)— अर्थ एवं भूमिका
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित अधिगम संसाधन निर्माण (एडुकाप्ले आदि द्वारा)

bdkbi&3 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन / मूल्यांकन

- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित आंकलन / मूल्यांकन के वैकल्पिक तरीके— ई—पोर्टफोलियो, कम्प्यूटर आधारित प्रश्न बैंक आदि)
- आकलन रूब्रिक के निर्माण के लिए ऑनलाइन रुब्रिक जेनेरेटर जैसे— आरयूबीआईएसटीएआर, आईआरयूबीआरआईसी
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन / मूल्यांकन टूल (एसओसीआरएटीआईवीई, पीआईएनजीपीओएनजी, सीएलएएसएस बीएडीजीईएस, सीएलएएसएसएमकेईआर आदि)
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित परीक्षण निर्माण टूल्स (एचओटीपीओटीएटीओ, एसयूआरवीईवाईएमओएनकेईवाई, जीओओजीएलई एफओआरआरएम आदि)

bdkbi&4 विषय आधारित वेब साइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग

- भौतिक विज्ञान आधारित— फीजिओन, ब्राइट स्टोर्म, कॉम, नासा वर्ल्ड वाइड
- रसायन विज्ञान आधारित— पिरियोडिक टेबिल क्लासिक, कलजिअम
- मेथ्स आधारित— जियो ज़ेबा, मेथ्सइसफ़न, सेज मेथ्स, खानएकदेमी, ओआरजी, टूक्स मेथ्स
- समाज विज्ञान आधारित— सेलास्टिया, जी कॉपरिस, वर्ल्ड वाइड टेलेस्कोप, जी कोम्प्रिस,

- भाषा आधारित–ब्राइट स्टोर्म, कॉम,
- अन्य (नॉलेज एडवेंचर, माइंड जीनियेस, डिज़्नी इंटरैक्टिव, द लर्निंग कंपनी, थिंकिंगब्लोक्स)
- कार्यशालाओं के माध्यम से।
- करके सीखने के अवसर देना।

vrj.k dh fof/k;k **Mode of Transaction**

- कम्प्यूटर लैब के माध्यम से ।
- इंटरनेट का उपयोग करते हुए।
- डाउनलोड और अपलोड करके सिखाना।
- इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड के माध्यम से ।
- लैपटॉप की सहायता से।
- मोबाइल के एप से।

l>kokRed lnHk xFk lph

best sites for free educational resorces

- http://www.resfseek.com/directory/education_video.html
- http://www.marcandangel.com2010/11/15/12-dozen-places-to-self-educate-yourself-online/
- http://www.jumpstart.com/parents/resources
- http://opensource.com/education/13/4/guide-open-source-education

  Additional Reference Material & Resource Repositions
- http://www.edlproject.eu/
- http://books.google.com/googlebooks/library.html
- http://www.wikipedia.org/
- http://www.nasa.gov/
- http://wikieducator.org/Learing4Content
- http://www.eduworks.com/index.php/Publications/Learning-Object-Tutorial.html
- http://oscar.iitc.ac.in/aboutOscar.do
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Proficiency in English

(D.El.Ed First year)

Question Paper -6

Maximum Marks : 50

External : 25

Internal : 25

Rationale and Aim -

The purpose of this course is to enable the student-teachers to improve their proficiency in English. A teacher's confidence in the classroom is often Undermined by a poor command of the English language. Research has shown that improving teachers efficiancy, or one's own belief in one's effectiveness, has a tremendous impact on the classroom teaching who perceives oneself as a proficient in English and more likely to use communicative strategies for teaching English. The Teacher is less likely to resort to using simple translation or guide-books for teaching English.

This course focuses on the receptive (listening and reading) and productive (speaking and writing) skills of English and combines within each of these, both an approach on proficiency in usage in classroom teaching.

SPECIFIC OBJECTIVES

- To strengthen the student-teacher's own English language proficiency.
- To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English.
- To enable students to link this with pedagogy.
- to re- sequence units of study for those who may have no knowledge of English.

This Course will attempt to use a variety of resources, talks and activities to enable the student-teacher to develop/increase their proficiency in English. The Focus will not be on learning and memorizing aspects of grammar and pure linguistics only. Instead, the aim will be to enjoy learning English and to constantly reflect on this learning and also link it with pedagogical strategies.

Unit-wise division of marks

Unit S. No.	**Unit Name**	**Marks**
1.	Status of English in India	2
2.	Listening & Speaking	4
3.	Reading	6
4.	Writing	8
5.	Vocabulary & Grammar	5
	Internal Marks	**25**
	Total Marks	**50**

Unit 1- Status of English in India

- English as a global language
- English as a Language of Science & Technology.
- English as a library language.

Unit 2- Listening & Speaking.

- Phonetics and phonology- How sounds are produced, transmitted and received; stress, rhythm and intonation in pronuciation.

Unit 3- Reading.

- Importance of reading
- Reading strategies – word attack, inference, extrapolation

Unit 4- Writing.

- Mechanics of writing-strokes and curves, capital and small letters, cursive and print script, punctuation.
- Different forms of writing- formal and informal letters, messages, notices, posters, advertisements, note making, report writing, diary entry, resume (bio data/CV) writing.
- Controlled and guided writing with verbal and visual inputs
- Free and creative writing.

Unit 5- Vocabulary & Grammar in context

- Synonyms, antonyms, homophones.
- Word formation- prefix, suffix, compounding
- Parts of speech
- Tense, modals
- Articles, determiners
- Types of sentences (assertive, interrogative, imperative, exclamatory)

Mode of Transaction

The teaching would be done on the basis of

(a) Group work

(b) Work shop

(c) Seminar

(d) Actual classroom teaching.

Assignment

Put the internal assessment activities at one place and let the learners do any 5

Suggested Activities for Active learning-

- Group discussions,
- Speech, debate

- Paragraph writing.
- Writing in a digital format (Text or document file)
- Short digital presentation
- Searching internet for specific information
- Using Phonemic drills.
- Organizing listening and speaking activities
- Rhymes, songs, stories, poems, role-play and dramatization
- Search for websites that support listening and speaking
- Download relevant audio clips
- Interpreting tables, graphs, diagrams, pictures
- Reading different types of texts (descriptions, conversations, narratives, biographical sketches, plays, essays, poems, screen play, letters, reports)
- Searching for texts for reading for Primary level of learners.
- Searching for websites and apps that promote language games.
- Writing individually and refining through collaboration.
- Writing dialogues, speeches, poems, short stories, short essays.
- Describing events, processes.
- Downloading and printing cursive writing exercises.
- Searching for exercises to download for guided writing.
- Presenting their own writings in a digital format.
- Use of dictionary
- Use of reference books, journals
- Devising own vocabulary games for learners at different levels
- Searching websites which promote grammar activities
- Searching websites which promote vocabulary activities
- Preparing digital presentation of a language game

References

- Proficiency in English- Dr. Sharma, Dayal and Smt. Panday, Agrawal Publication, Agra.
- Agnihori, R.K. and Khanna, A.L.(1996). Grammar in context. New Delhi: Ratnasagar. Cook, G, Guy(1989).Discourse, Oxford University Press, Great Clarendon Street, Oxford OX26DP
- Craven, M. (2008). Real listening and speaking-4. Cambridge: Cambridge University Press.
- Driscoll, L. (2008). Real Speaking. Cambridge: Cambridge University Press.
- Grellet, F. (1981). Developing reading skills UK: Cambridge: Cambridge University Press.
- Haines, S. (2008).Real Writing. Cambridge: Cambridge University Press.
- Hedge, T. 1988). Writing. Oxford: Oxford University Press.
- IGNOU (1999).Reading Comprehension (material for Couse ES-344 Teaching of English). New Delhi: New Delhi: IGNOU.
- Lelly, C. Gargagliano, A. (2001). Writing from Within. Cambridge: Cambridge University Press.
- Maley, A. & Duff, A. (1991). Drama techniques in language learning: A resource book of communication activities for language teachers (2nd ed.). Cambridge: Cambridge University Press.
- Morgan, J. and Rinvolucri, M. (1983). Once upon a time: Using stories in the language classroom, Cambridge: Cambridge University Press.
- Radford, A. (2014). English syntax Cambridge University Press.
- Seely, J. (1980). The Oxford guide to writing and speaking. Oxford: Oxford University Press.
- Slatterly, M. and Willis, J. (2001). English for primary teachers: A handbook of activites & Classroom language. Oxford: Oxford University Press.
- Thornbury, Scout(2005)Beyond the Sentence- Introducting Discourse analysis.
- wright, A.(1989). Pictures for language learning, Cambridge: Cambridge University Press.
- (http://www.tess-india.edu.in/ in OER & Vedio)

Mh-,y-,M- ¼iFke o"k½

;kx f'k{kk

Yoga Education

¼ i'ui=&7½

i.kkd& 50

ckg; vd & 25

vkrfjd vd& 25

vkfpR; ,o mnn'; (Rationale and Aim)

आज मानव के ज्ञान में अपार वृद्धि के साथ–साथ तीव्र गति से अनेकानेक सामाजिक परिवर्तन हो रहे है। आधुनिक विज्ञान तथा प्राद्यौगिकी ने जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। वैज्ञानिकों ने प्रकृति के सूक्ष्म रहस्य को जानने में सफलता प्राप्त कर ली है। आज व्यक्ति के पास अनेकानेक सुख सुविधाओं के साधन उपलब्ध है, लेकिन दुःख की बात यह है कि धीरे–धीरे स्वास्थ्य खोता जा रहा है। शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ा मानसिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य होता है। यह सब उत्तम हो इसके लिए शरीर का संचालन जरूरी है। योग से तन के साथ मन भी स्वस्थ होता है।

डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में शामिल करने का औचित्य यह है कि शालेय स्तर पर आसन और प्राणायाम को करवाया जाये । जिससे बच्चों में एकाग्रता, ध्यान केन्द्रण के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य बन सके।

fof'k"V mnn'; (Specific Objective)

1. छात्र–शिक्षकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिए योग व्यवहारों के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु।
2. उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक व मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक संतुलन बना रहे।
3. युवाओं की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना, जैसे जागरुकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति।
4. युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना।
5. भारतीय संस्कृति के उन व्यवहारों के लिए सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती हैं।
6. आदर्श सामाजिक कौशल एवं ताकत का विकास करने के लिए अवसरों का निर्माण करना।

7. योग दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं के बारे में एक व्यापक विचार विकसित करना।

8. मानव जीवन के लिए योग की अवधारणा एवं व्यवहार व उसके आशय को समझना।

9. योग की अवधारणा को समझना व योग के विभिन्न सिद्धान्तों को व्यवहार में प्रदर्शित करना।

10. पतञजलि, अरबिन्दो व भागवद्गीता के योग सिद्धान्तों के विषय में एक अन्तरदृष्टि विकसित करना।

11. योग व्यवहार के उपचारात्मक महत्त्व के बारे में एक सम्पूर्ण विचार प्राप्त करना।

12. योग सिद्धान्त एवं इसकी आध्यात्मिक पवित्रता के बारे में अन्तरदृष्टि प्राप्त करना।

bdkbZokj vadk dk foHkktu

Øekad	bdkbZ	fo"k;	vad
1	1	योग का परिचय (Introduction to Yoga)	5 अंक
2	2	पतॅ्जलि के समय और पंतजलि के पश्चात योग का विकास (Patanjali Yoga and post patanjali developments)	5 अंक
3	3	योग एवं ध्यान की अन्य महत्वपूर्ण प्रणालियां (Other Important system of Yoga and meditation)	7 अंक
4	4	शरीर रचना विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव (Effect of yoga on Physilogy and mental health)	8 अंक
		vkarfjd vad	25
		dqy vad	50

bdkbZ&1 ;kSx dk ifjp; ¼**Introduction to Yoga** ½

- योग का अर्थ एवं परिभाषा, योग का क्षेत्र, योग के उद्देश्य, योग के प्रकार (भक्ति योग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, हठयोग, मन्त्रयोग, लययोग, कुण्डलिनी योग), योग व व्यायाम में अन्तर, योग के पूरक व्यायाम– सूक्ष्म यौगिक क्रियायें, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए योग का महत्व।
- योग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य– पतॅ्जलि से पूर्व में योग की स्थिति (सिन्धु घाटी की सभ्यता, वैदिककाल, उपनिषदकाल, रामायणकाल महाभारतकाल) सांख्य और योग, जैन धर्म एवं योग बौद्ध धर्म एवं योग।

bdkbl&2 ir¬tfy d le; vkj irtfy d i'pkr ;kx dk fodkl

¼Patanjali Yoga and post patanjali developments½

- महर्षि पतञ्जलि द्वारा योग का सुव्यवस्थीकरण, अष्टांग योग का परिचय–नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, महर्षि पतञ्जलि का योग के क्षेत्र में योगदान।
- पतञ्जलि के पश्चात योग का विकास– योग के विभिन्न ग्रथों का सामान्य परिचय–योगसूत्र, घेरण्डसंहिता, हठयोग प्रदीपिका, आधुनिक युग में योग का पुर्नजागरण।
- योग के क्षेत्र में विभिन्न योग संस्थाओं का योगदान जैसे– कैवल्यधाम लोनावाला, बिहार योग विद्यालय मुंगेर, स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर, दिव्य जीवन संघ शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश, मोरार जी देशाई राष्ट्रीय योग अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली, पतञ्जलि योगपीठ हरिद्वार।

bdkbl&3 ;kx ,o /;ku dh vU; egRoi.k i.kkfy;k

¼Calucation and other Important system of Yoga and meditation½

- ध्यान का अर्थ, प्रकार एवं लाभ, ध्यान में उपयोगी एवं बाधक तत्व।
- पंचकोष की अवधारणा, भगवद्गीता और योग, ध्यानयोग– (गीता, अध्याय 6 में वर्णित श्लोक संख्या 10 से श्लोक संख्या 36 तक की व्याख्या) जप ध्यान, अजपाध्यान, पतञ्जलि के आधार पर ध्यान पद्धति।
- प्रेक्षा ध्यान अर्थ और उद्देश्य, विपश्यना ध्यान का अर्थ और उद्देश्य।

bdkbl&4 'kjhj jpuk foKku vkj ekufld LokLF; ij ;kx dk iHkko

(Effect of yoga on Physilogy and mental health)

- शारीरिक तन्त्रों पर योग का प्रभाव–परिसंचरण तन्त्र, कंकाल तन्त्र, पाचन तन्त्र, श्वसन तन्त्र, तन्त्रिकातन्त्र, उत्सर्जन तन्त्र।
- अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ का परिचय एवं उन पर योग का प्रभाव।
- मानसिक स्वास्थ्य, चिन्ता, अवसाद, तनाव कम करने में योग की भूमिका।

l=xr dk;l &

;kx vH;kl vkj xfrfof/k;k **¼Practium and Suggested Activities½** dkbl 3 fd;k tk;xk

1. योग केन्द्र का भ्रमण करना और केन्द्र में आयोजित गतिविधियों पर आधारित प्रतिवेदन लिखना।

2. किसी एक योग अभ्यासकर्ता का साक्षात्कार लेना और उसके द्वारा अनुभव किए गए लाभों पर एक प्रतिवेदन लिखना।

3. योगासनों से सम्बन्धित जानकारी आधिकारिक स्त्रोतों से एकत्रित करना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।

4. अपने सहयोगी समूह के समक्ष किसी पांच आसनों को प्रदर्शित करना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।

vklu

क) ध्यानात्मक आसन – सुखासन, अर्ध पद्मासन, पद्मासन, सिद्धासन, सिद्धयोनिआसन, बज्रासन।

ख) विश्रामात्मक आसन – योगनिद्रा, शवासन, मकरासन।

ग) खड़े होकर किये जाने वाले आसन – ताड़ासान, पादहस्तासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, गरुणासन, उत्तानासन, अर्धकटिचक्रासन, उत्कटासन, पादांगुष्ठासन, वीरभद्रासन।

घ) बैठकर किये जाने वाले आसन– बद्धकोणासन, वक्रासन, पश्चिमोत्तासन, शशांकासन, गोमुखासन–1 एवं 2, वीरासन, मारिच्यासन, जानुशीर्षासन, उष्ट्रासन, योगमुद्रा, सुप्त बज्रासन।

i.kk;ke

नाड़ी शोधन प्राणायाम, कपालभाति, भ्रामरी प्राणायाम, शीतली प्राणायाम, भस्त्रिका प्राणायाम, शीतकारी प्राणायाम तथा उज्जायी प्राणायाम।

vrj.k dh fof/k;k (Mode of Transaction)

1. अवलोकन एवं अनुकरण द्वारा
2. विभिन्न योग केन्द्रो का भ्रमण
3. योग पर आधारित साहित्य का समूह में वाचन एवं संवाद

l>kokRed lanHk xzUFk lwph &

1. पातञ्जलि योग प्रदीप – स्वामी ओमकारानन्दनन्द – गीता प्रेस गोरखपुर
2. योगांक – गीता प्रेस गोरखपुर
3. योग और हमारा स्वास्थ्य– आर.के. स्वर्णकार आरती प्रकाशन इलाहबाद
4. योगदर्शनम् – आचार्य उदयजी शास्त्री विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली।
5. पातञ्जलि योग सार – डॉ. साधना, दौनेरिया, मधूलिका प्रकाशन इलाहबाद
6. योग और यौगिक चिकित्सा – प्रो. राम हर्ष सिंह चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी ।
7. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M- iFke o"k

fgUnh Hkk"kk f'k{k.k

Hindi Language Teaching

¼i'u i=& 8½

पूर्णांक अंक –100

बाह्य मूल्यांकन–70

आंतरिक मूल्यांकन–30

1- vkfpR; ,o mnns'; ¼**Rationale and Aim**½½&

भाषा संप्रेषण का माध्यम है, ज्ञान प्राप्त करने का साधन है। यदि कही कोई विचार देना होता है। तो उसके लिये भाषा की आवश्यकता होती है और यदि वह अपनी भाषा दें तो खुलकर अभिव्यक्ति हो पाती है। देश की आबादी का बहुत बड़ा भाग हिन्दी भाषा का उपयोग करता है। हिन्दी भाषा शिक्षण का उद्देश्य परिवार, समाज और राष्ट्र में अच्छी भाषा का संचालन होता है। हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशलों का विकासकरना व्याकरण संबंधी जानकारियाँ देना। इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य है। भाषा के मूल तत्वों को प्रकृति को जानकर छात्राध्यापक अपनी पाठयोजना तैयार कर सकें, शुद्ध बोलना, शुद्ध वाचन बच्चों को सिखा सकें, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हिन्दी भाषा शिक्षण को डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

2- fof'k"V mnns'; ¼**Specific Objectives**½

- हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं संरचना से छात्राध्यापकों को परिचित कराना।
- स्कूली पाठ्यक्रम के वृहद परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा के महत्व, उसके अधिग्रहण तथा अधिगम को समझना।
- हिन्दी भाषा के विभिन्न कौशलों एवं उनके शिक्षण के उद्देश्य तथा अधिगम के तरीकों को समझना।
- हिन्दी भाषा की विषयवस्तु में व्याकरण के रचनात्मक प्रयोग करना।

bdkbZokj vadk dk foHkktu

lj y Ø-	bdkbZ	bdkbZ dk uke	vad
1	1	fgUnh Hkk"kk f'k{k.k ds mÌs'; vkSj d{kk izfrfØ;k	13
2	2	fgUnh Hkk"kk f'k{k.k ds dkS'ky	12
3	3	Hkk"kk f'k{k.k ds dkS'ky	12
4	4	x| vkSj i| f'k{k.k	13
5	5	0;kogkfjd 0;kdj.k	10
6	6	eY;kadu	10
vkarfjd vad			30
dqy ;ksx			100

bdkbZ 1 fgUnh Hkk"kk f'k{k.k ds mÌs'; vkSj d{kk izfrfØ;k

- हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य
- माध्यम भाषा / प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप
- हिन्दी भाषा का अधिग्रहण और उस संदर्भ में कक्षा की प्रतिक्रिया
- शिक्षण की भूमिका

bdkbZ 2 fgUnh Hkk"kk f'k{k.k ds dkS'ky

- सुनना और इस कौशल से क्या आशय है।
- हिन्दी भाषा की कक्षा में सुनना कौशल का विकास संबधी गतिविधियाँ
- बोलने के कौशल का आशय
- हिन्दी भाषा कक्षा में बोलना कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ (गीत, कविता, संवाद, संभाषण, विडियो, सिनेमा)

bdkbZ 3 Hkk"kk f'k{k.k ds dkS'ky

- पढ़ना कौशल से तात्पर्य
- हिन्दी भाषा कक्षा में पढ़ने के कौशल से संबधित गतिविधियाँ –विषयवस्तु का वाचन, वाचन पश्चात् अपने अनुभव से जोड़ना–1 विभिन्न प्रकार की पठनीय सामग्री का वाचन कर उसका आनंद उठाना।
- हिन्दी भाषा की कक्षा में पढ़ने के कौशल विकास के लिए रणनीति – पढ़ने के पूर्व और पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ।
- लेखन के कौशल से तात्पर्य
- हिन्दी भाषा की कक्षा में लेखन कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ।

bdkbl 4 x| vkj i| f'k{k.k

- गद्य और पद्य शिक्षण के उद्देश्य
- हिन्दी भाषा को कक्षा, लेख, व्यंग, निबंध आदि शिक्षण की पाठ योजना बनाना और कक्षा की प्रतिक्रिया।

bdkbl 5 0;kogkfjd 0;kdj.k

- कक्षा के स्तरानुरूप व्याकरण तत्व का रचनात्मक पद्धति से शिक्षण
- व्याकरण के खेल/गतिविधि

bdkbl 6 eY;kdu

- हिन्दी भाषा कक्षा का रचनात्मक मूल्यांकन
- हिन्दी भाषा की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन
- आकलन/मूल्यांकन का रख–रखाव, टीप लिखना, फीडबैक

l=xr dk;l ¼**Assignments**½ dkbl rhu ik;ktuk dk;l dhft,&

1. सुनना कौशल पर आधारित ऑडियो तैयार करना जिसमें विभिन्न प्रकार की आवाजों को पहचानना, किसी के व्याख्यान को समझना, उस पर आधारित प्रश्नो के उत्तर लेना।
2. पढ़ना एवं लिखना कौशल पर आधारित पाठयोजना तैयार करना।
3. किसी एक कथा की भाषा की पाठ्यपुस्तक की समीक्षा करना।
4. स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
5. किसी स्थानीय स्थल के भ्रमण पर प्रतिवेदन तैयार करना।
6. बच्चों को व्याकरण सिखाने के ICT का प्रयोग करते हुए तीन हिन्दी भाषाई खेल तैयार करें

vrj.k dh fof/k;k (Mode of Transaction)

1. छात्राध्यापकों को पठन हेतु सामग्री प्रदान कर उस पर चर्चा करना, चिन्तन करना।
2. छोटे—छोटे समूह में वाचन करवाना उस पर चर्चा करवाना।
3. विभिन्न प्रकार के ऑडियो सुनवाकर सुनना कौशल पर जोर देना।
4. विषयवस्तु पर प्रश्न पूछ कर विषयवस्तु का सुदृढ़ीकरण करना।
5. तत्कालिन प्रचलित संदर्भो पर आलेख लिखवाना और उस पर चर्चा करना।

l>kokRed lnHk xFk dh lph

1. NCF-2005
2. भारतीय भाषाओं का शिक्षण—आधार पत्र NCERT—2005
3. हिन्दी भाषा शिक्षण— डॉ. प्रकाश चंद्र भट्ट
4. भाषा विज्ञान—डॉ. भोलानाथ तिवारी
5. भाषा की प्रकृति इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली
6. बच्चे की भाषा और अध्यापक – N.B.T. कृष्ण कुमार
7. भाषा शिक्षण— SCERT छत्तीसगढ़
8. भाषा और पहचान— डेविड क्रिस्टल
9. पढ़ने की समझ— NCERT, नई दिल्ली
10. लिखने की शुरुआत— NCERT, नई दिल्ली
11. पढ़ना सिखाने की शुरुआत— NCERT, नई दिल्ली
12. हिन्दी व्याकरण सार— डॉ. ब्रजरतन जोशी, पत्रिका प्रकाशन नई दिल्ली
13. राजभाषा हिन्दी – मनोज कुमार
14. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना— डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद
15. भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास – श्रीमति शर्मा एवं प्रो. दुबे, राधा पब्लिकेशन, आगरा।
16. भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास – भाई योगेन्द्र जीत, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
17. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M- iFke o"k

lLd`r Hkk"kk f'k{k.k

Sanskrit Education

¼i'ui=&8½ ¼oSdfYid½

i.kkd &100

ckg; vd & 70

vkrfjd vd & 30

vkfpR; ,o mn~n's; (Rationale and Aim) %&

संस्कृत यूरोपीय भाषा परिवार की भाषा है। संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। अनेक भारतीय भाषाओं के विकास में संस्कृत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत की भूमि पर विकसित होने, क्षेत्र विशेष से संबद्ध नहीं होने और संस्कृत साहित्य की प्रचुर उपलब्धता के आधार पर इस भाषा के महत्व को अलग से रेखांकित किया जाता है। संस्कृत भाषा का विशाल साहित्य पाठकों के लिये अमूल्य निधि है। संस्कृत की मुख्यधारा में एक ओर वैदिक वाड्मय है तो दूसरी ओर भास, कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, बाणभट्ट, भर्तृहरि जैसे रचनाकारों की कृतियाँ हैं। इसके साथ ही संस्कृत साहित्य की लोकधारा भी है, जिसमें सामान्य जन–जीवन की कठिनाइयों को भी स्वर मिला है।

छात्राध्यापक भाषा का उचित एवं सही प्रयोग कर सकें इसके लिए भाषायी दक्षताएँ तथा कौशल विकसित करने का दायित्व भाषा शिक्षक का ही होता है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक प्रशिक्षक संस्कृत भाषा सीखने एवं प्रयोग व्यवहार में लाने योग्य कक्षा में अनुकूल परिस्थितियों एवं अवसरों का निर्माण करें।

त्रिभाषा सूत्र के अनुसार प्रदेश के विद्यालयों में कक्षा 6 से 10 तक मातृभाषा के साथ संस्कृत को भी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है।

4- fof'k"V mn~n's; (Specific Objectives) %&

- छात्राध्यापकों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि एवं समझ जागृत करना।
- संस्कृत भाषा के भाषायी कौशलों का विकास करना।
- छात्राध्यापकों को संस्कृत भाषा की शब्दावली, व्याकरण, शुद्ध उच्चारण एवं लेखन से परिचित कराना (रचनात्मक तरीकों से)

- संस्कृत साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करना एवं लेखन एवं संवाद कौशल को बढ़ावा देना।
- छात्राध्यापकों के संस्कृत व्याकरण ज्ञान एवं उनके व्याकरण के प्रयोग कौशल में वृद्धि करना।
- छात्राध्यापकों को संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं, यथा– काव्य, कथा, गद्य आदि का शिक्षण कर सकने योग्य बनाना।
- संस्कृत भाषा की संरचना को रटे बिना समझना (समझ विकसित करना)
- संस्कृत माध्यम में शिक्षण की चुनौतियों को समझना।
- संस्कृत के प्राचीन एवं आधुनिक साहित्यकारों लोक साहित्यकारों की कृतियों से परिचित कराना।

bdkbokj vidk dk foHkktu &

Øekad	bdkbZ	fo"k;	vad
1	1	संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं कक्षा प्रक्रियाएँ	12 अंक
2	2	भाषा शिक्षण के कौशल – सुनना	13 अंक
3	3	भाषा शिक्षण के कौशल – पढ़ना	12 अंक
4	4	गद्य एवं पद्य शिक्षण	13 अंक
5	5	व्यावहारिक व्याकरण	10 अंक
6	6	मूल्यांकन	10 अंक
		vkarfjd vad	30
		dqy vad	100

bdkbZ 1& laLd`r f'k{k.k ds mn~ns'; ,oa d{kk izfØ;k,¡

- संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य
- द्वितीय भाषा के रूप में संस्कृत की कक्षा का स्वरूप
- भाषा का अधिग्रहण और इसके संदर्भ में कक्षा की प्रक्रियाएँ
- द्वितीय भाषा के शिक्षण के रूप में संस्कृत शिक्षक की भूमिका

bdkbl 2& Hkk"kk f'k{k.k d dk'ky& l|uuk

- सुनने का तात्पर्य
- संस्कृत की कक्षा में श्रवण कौशल के विकास की गतिविधियाँ
- बोलने का तात्पर्य
- संस्कृत की कक्षा में बोलने के कौशल के विकास की गतिविधियाँ
  (संस्कृत गीत, कहानी, संवाद, संभाषण आदि के द्वारा)

bdkbl 3& Hkk"kk f'k{k.k d dk'ky& i<uk

- पढ़ना यानी क्या?
- संस्कृत की कक्षा में पठन गतिविधियाँ— पाठ्यपुस्तक को संस्कृत माध्यम से पढ़ना, पढ़कर उसे अनुभवों से जोड़ना, विविध तरह की पाठ्यसामग्री को पढ़कर उसका आनंद ले पाना।
- संस्कृत की कक्षा में पढ़ने की रणनीतियाँ— किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने से पूर्व पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद अपनाई जाने वाली रणनीतियाँ
- लिखना यानी क्या?
- संस्कृत की कक्षा में बच्चों को मौलिक लेखन के कौशल के विकास हेतु की जाने वाली गतिविधियाँ

bdkbl 4& x| ,o i| f'k{k.k

- गद्य एवं पद्य शिक्षण के उद्देश्य
- संस्कृत की कहानी, आलेख, निबंध आदि को पढ़ाने की पाठयोजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ
- संस्कृत की कविता, गीत, श्लोक आदि को पढ़ाने की पाठयोजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ

bdkbl 5& 0;kogkfjd 0;kdj.k

- कक्षानुसार व्याकरण के तत्वों को रचनात्मक तरीके से पढ़ाने के तरीके
- व्याकरण के खेल/गतिविधियाँ

bdkbl 6& eY;kdu

- संस्कृत की कक्षा में रचनात्मक (मौलिक/लिखित) मूल्यांकन
- संस्कृत की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन
- मूल्यांकन/आकलन के दस्तावेजों का संधारण, टिप्पणी लेखन, फीडबैंक

l>ko

- संस्कृत की शिक्षण प्रक्रियाओं में पाठ्यपुस्तक से इतर गीत, कविताएँ, कहानियाँ आदि का समावेश किया जाए।

l=xr dk;Z@ **Assignments** dksbZ rhu djuk gSA

1. बहुभाषिक कक्षा को संसाधन के रूप में उपयोग में लाते हुए पाठ योजना तैयार करना
2. संस्कृत सुनने एवं बोलने के कौशल के विकास हेतु कक्षा की गतिविधियाँ तैयार करना व उनका प्रदर्शन करना जैसे– कहानी, कविता सुनाकर उन पर बात करना।
3. अलग–अलग विधाओं के पाठ को पढ़कर उन पर अपनी राय रखना, सारांश लिखना, प्रश्न बनाना जैसी गतिविधियाँ करना
4. विभिन्न पाठ्यपुस्तकों (निजी प्रकाशन/राज्य की) के पाठों का विश्लेषण करना व रिपोर्ट तैयार करना
5. प्रादेशिक गीत, लोककथाओं, कहावतों का संकलन करना।

l>kokRed lanHkZ xzaFk lwph&

- ग्रंथ संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका – लेखक डॉ. बाबूराम सक्सेना, इलाहबाद
- संस्कृत भाषा शिक्षण – रामशकल पाण्डेय, इलाहबाद
- वृहद अनुवाद चंद्रिका – चक्रधर नौटियाल'हंस', मोतीलाल बनारसीदास
- रचना अनुवाद कौमुदी – डॉ. कपिल देव द्विवेदी
- संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
- संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- संस्कृत हिन्दी कोश – वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M- iFke

ejkBh Hkk"kk f'k{k.k

Marathi Language Teaching

¼i'ui=&8½ ¼oSdfYid½

i.kkZd & 100

ckg; ewY;kadu & 70

vkarfjd ewY;kadu & 30

vkSfpR; ,oa mn~ns'; (Rationale and Aim) %&

छात्राध्यापक भाषा का उचित एवं सही प्रयोग कर सकें इसके लिए भाषायी दक्षताएँ तथा कौशल विकसित करने का दायित्व भाषा शिक्षक का ही होता है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक प्रशिक्षक मराठी भाषा सीखने एवं प्रयोग व्यवहार में लाने योग्य कक्षा में अनुकूल परिस्थितियों एवं अवसरों का निर्माण करें।

4- fof'k"V mn~ns'; (Specific Objectives) %&

- छात्राध्यापकों में मराठी भाषा के प्रति रुचि एवं समझ जागृत करना।
- मराठी भाषा के भाषायी कौशलों का विकास करना।
- छात्राध्यापकों को मराठी भाषा की शब्दावली, व्याकरण, शुद्ध उच्चारण एवं लेखन से परिचित कराना (रचनात्मक तरीकों से)
- मराठी साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करना तथा लेखन एवं संवाद कौशल को बढ़ावा देना।
- छात्राध्यापकों के मराठी व्याकरण ज्ञान एवं उनके व्याकरण के प्रयोग कौशल में वृद्धि करना।
- छात्राध्यापकों को मराठी की विभिन्न विधाओं, यथा– काव्य, कथा, गद्य आदि का शिक्षण कर सकने योग्य बनाना।

bdkbZokj vadk dk foHkktu &

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	मराठी भाषा शिक्षणाचे उद्‌देश्य आणि कक्षा (वर्ग) प्रतिक्रिया	13
2	2	मराठी भाषा शिक्षणाचे कौशल्य	12
3	3	भाषा शिक्षणाचे कौशल्य	12
4	4	गद्य आणि पद्य शिक्षण	13
5	5	व्यावहारिक व्याकरण	10
6	6	मूल्यांकन	10
		आंतरिक अंक –	30
		कुल अंक –	100

?kVd ¼bdkbZ 1½ & ejkBh Hkk"kk f'k{k.kkps mn~ns'; vkf.k d{kk ¼oxZ½ izfrfØ;k

- मराठी भाषा शिक्षणाचे उद्देश्य
- माध्यम भाषा/द्वितीयच्यारूपात मराठीच्या वर्गाचे स्वरूप
- मराठी भाषेचे अधिग्रहण आणि त्या संदर्भात वर्गातील प्रतिक्रिया
- शिक्षकाची भूमिका

?kVd ¼bdkbZ 2½ & ejkBh Hkk"kk f'k{k.kkps dkS'kY;

- ऐकणे या कौशल्याचा काय आशय आहे ?
- मराठीच्या वर्गातील ऐकण्याच्या कौशल्या विकासाच्या गतिविधि
- बोलण्याच्या कौशल्याचा काय आशय आहे ?
- मराठीच्या वर्गातील बोलण्याच्या कौशल्याच्या विकासाच्या गतिविधि
  (मराठीतील गीत, कविता, संवाद, संभाषण, वीडियो, सिनेमा)

?kVd ¼bdkbZ 3½& Hkk"kk f'k{k.kkps dkS'kY;

- वाचनाच्या कौशल्याचे तात्पर्य
- मराठीच्या वर्गात वाचन गतिविधि– पाठ्यवस्तुचे वाचन, वाचन करून ते स्वतःच्या अनुभवांशी जोड़ता येणे, विविध प्रकारा ची पाठ्य साम्रगी वाचुन त्याचा आनंद घेउ शकणे.
- मराठीच्या वर्गात वाचनासाठी रणनीति– वाचना पूर्व वाचना करताना आणि वाचना नंतरच्या गतिविधि
- जिहेव्या कौशज्याचे तात्पर्य
- मराठीच्या वर्गात लेखन कौशल्याच्या विकासासाठी करण्याच्या गतिविधि

?kVd ¼bdkbZ&4½& x| vkf.k i| f'k{k.k

- गद्य व पद्य शिक्षणाचे उद्देश्य
- मराठी तील कथा, लेख, व्यंग, निबंध वगैरेच्या शिक्षणाची पाठयोजना आणि वर्गातील प्रतिक्रिया
- मराठी कविता, गीत वगैरेच्या अध्यापणाची पाठयोजना आणि वर्गातील प्रतिक्रिया

?kVd ¼bdkbZ&5½ 0;kogkfjd 0;kdj.k

- वर्गा तील स्तरा अनुरूप व्याकरणच्या तत्वांचे रचनात्मक पद्धतीने शिकविण्याची पद्धत
- व्याकरणाचे खेळ/गतिविधि

?kVd ¼bdkbZ&6½ eY;kadu

- मराठीच्या वर्गात रचनात्मक मूल्यांकन
- मराठीच्या वर्गात योगात्मक मूल्यांकन
- आकलन/मूल्यांकन च्या कागदपत्रां चा (दस्तावेज) रखरखाव (संधारण), टीप लेखन, फीडबैक

l=xr dk;Z ¼**Assignments**½ dkbZ rhu ik;ktuk dk;Z dhft,&

1. सुनना कौशल पर आधारित आलेख तैयार करना जिसमें विभिन्न प्रकार की आवाजों को पहचानना, किसी के व्याख्यान को समझना, उस पर आधारित प्रश्नो के उत्तर लेना।
2. पढ़ना एवं लिखना कौशल पर आधारित पाठयोजना तैयार करना।
3. भाषा की पाठ्यपुस्तक से किसी एक कथा की समीक्षा करना।
4. स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।

5. किसी स्थानीय स्थल के भ्रमण पर रिपोर्ट तैयार करना।
6. बच्चों को व्याकरण सिखाने के ICT का प्रयोग करते हुए तीन हिन्दी भाषाई खेल तैयार करें

vrj.k dh fof/k;k (Mode of Tranjection)

1. छात्रोंध्यापकों को पठन हेतु सामग्री प्रदान कर उस पर चर्चा करना, चिन्तन करना।
2. छोटे–छोटे समूह में वाचन करवाना उस पर चर्चा करवाना।
3. विभिन्न प्रकार के ऑडियो सुनवाकर सुनना कौशल पर जोर देना।
4. विषयवस्तु पर प्रश्न पूछ कर विषयवस्तु का सुदृढ़ीकरण करना।
5. तत्कालिन प्रचलित संदर्भो पर आलेख लिखवाना और उस पर चर्चा करना।

l>kokRed lnHk xFk lph&

1. मराठी व्याकरण – मोरेश्वर सखाराम मोरे
2. सुलभ व्याकरण – श्री शनिवारे
3. बोबड़े गीते –
4. इसप नीती मराठी भाषांतर

Diploma in Elementary Education

I[st] Year

Pedagogy of Urdu Language
(Mother Toungue)

جملہ نمبرات	100
خارجی نمبرات	70
داخلی نمبرات	30
جملہ گھنٹے	140

تعارف (Introduction) :—

اعلیٰ ثانوی سطح کی تعلیم مکمل کرنے والے طلبا سے زبان کی خاص مہارتیں سننا، بولنا، پڑھنا، لکھنا کے علم اور عملی زندگی میں ان کا استعمال کی توقع کی جاتی ہے۔ طلبا میں مطلوبہ لسانی صلاحیتوں کے فروغ کی ذمہ داری خاص طور سے اساتذہ کی ہوتی ہے۔ اس نقطۂ نظر سے تدریس کے طریقوں کو بہتر بنانے اور طلبا کو زبان و بیان کے تمام پہلوؤں کو سمجھانے کی کوشش میں معلمین کو مختلف کردار، جیسے دوست، معاون، محرک اور مواقع فراہم کرانے والا وغیرہ وغیرہ ادا کرنا ہوتا ہے جس سے طلبا کی فکری، تعمیری، تخلیقی، تخیلی اور تفہیمی صلاحیتوں میں خاطر خواہ اضافہ ہو اور وہ پُر لطف آموزش سے ہمکنار ہو سکیں۔ اردو زبان کے اس نصاب کے ذریعے معلم طالب علم کے کردار میں درج ذیل تبدیلیوں کی توقع کی جاتی ہے۔

مقاصد خصوصی (Specific objectives) :—

☆ اردو زبان کی بنیادی مہارتوں میں عبور حاصل کرنا۔

☆ تدریس کے مختلف طریقے سکھانا اور ضرورت کے مطابق ان کا اطلاق کرنا۔

☆ تنقیدی مطالعہ کی صلاحیت کو فروغ دینا۔

☆ اردو زبان کے لئے جذبہ استحسان پیدا کرنا۔

☆ زبان وادب سے متعلق بنیادی معلومات میں اضافہ کرنا۔

☆ قواعد کی تکنیک سے واقفیت اور ان کا صحیح استعمال کرنا سکھانا۔

☆ اردو زبان وادب کی تدریس کے خاص اور عام مقاصد میں فرق سکھانا۔

☆ درسی کتب کے علاوہ اکتساب کے مختلف امدادی وسائل کا استعمال کرنا/سکھانا۔

☆ منصوبہ سبق کی تدریس کی ضرورت اہمیت اور استعمال کی عادت پیدا کرنا۔

☆ اردو کے جدید رجحانات میں رغبت پیدا کرنا۔

☆ مسلسل اور جامع جانچ کے لئے مختلف ریکارڈ تیار کرنا۔

P.T.O.

اکائی وار نمبرات اور گھنٹے

نمبر شمار	اکائی کا نام	نمبرات	گھنٹے
1	اردو زبان! آغاز وارتقا تدریسی مقاصد اور سرگرمیاں	14	23
2	اردو زبان کی تدریسی مہارتیں	14	24
3	اردو نثر و نظم کی تدریس	12	24
4	عملی قواعد کی تدریس	10	23
5	اردو تدریس کے جدید رجحانات	10	23
6	تعین قدر اور آزمائش	10	23
کُل		**70**	**140**

☆☆☆

اردو نصاب تعلیم برائے ڈی.ایل.ایڈ

فرسٹ ایر (مادری زبان)

Time : M.M. : 70

اکائی نمبر 1 : اردو زبان! آغاز وارتقا تدریسی مقاصد اور سرگرمیاں۔ **گھنٹے 23 نمبرات 14**

☆ اردو زبان کا مختصر تعارف۔

☆ اردو زبان کی تدریس کے مقاصد (عام/ خاص مقاصد)

☆ اردو تدریس برائے مادری زبان (ابتدائی سطح)

☆ اردو تدریس برائے ثانوی زبان (ابتدائی سطح)

☆ مادری زبان کی تدریس برائے اعلیٰ ابتائی سطح۔

☆ مادری زبان کی تدریس میں معلم کا کردار۔

☆ اردو زبان کی تدریسی سرگرمیاں۔

اکائی نمبر 2 : اردو زبان کی تدریسی مہارتیں۔ **گھنٹے 24 نمبرات 14**

☆ سننا

☆ بولنا

☆ پڑھنا

☆ لکھنا

اکائی نمبر 3 : اردو نثر و نظم کی تدریس۔ **گھنٹے 24 نمبرات 12**

☆ نثری اصناف کی تدریس کے مقاصد

☆ نثری اصناف کی تدریس کے طریقہ کار

☆ شعری اصناف کی تدریس کے مقاصد

☆ شعری اصناف کی تدریس کے طریقہ کار

☆ منصوبہ سبق

اکائی نمبر 4 : عملی قواعد کی تدریس (اسباق میں شامل اردو قواعد کی تفہیم)۔ گھنٹے 23 نمبرات 10

☆ عملی قواعد کی تدریس کے طریقہ کار۔

☆ مفرد الفاظ، مرکب الفاظ، جملہ، فقرہ۔

☆ اسم، فعل، ضمیر، صفت، تذکیر و تانیث، واحد جمع، تضاد، سابقے، لاحقے۔

☆ تشبیہہ، استعارہ، تلمیح، مبالغہ، محاورے، کہاوتیں، رموز اوقاف، پہیلی، کہہ مکرنیاں۔

☆ لسانی کھیل (بیت بازی، نظم خوانی، تعلیمی تاش، کوئز، تقریری مقابلے، کہانی سنانا)۔

☆ ہیئت، شعر، مصرع۔

اکائی نمبر 5 : اردو تدریس کے جدید رجحانات۔ گھنٹے 23 نمبرات 10

(New Techniques and Trends of Urdu Teaching)

☆ شمولیاتی تعلیم (Inclusive Education)

☆ تعمیریت (Constructivist Approch)

☆ پُرلطف آموزش (Joyful Learining)

☆ تخلیقی اور تفہیمی طریقہ کار (Creative and Counprehensive Attitude)

☆ کر کے سیکھنا (Learning by doing)

☆ تدریسی عمل میں آئی سی ٹی کا استعمال۔

☆ تدریسی عمل میں معاون ہم نصابی تعلیم سرگرمیاں (Co-curricular Activities)

☆ تدریس میں ٹی.ایل.ایم.کی اہمیت وافادیت۔

اکائی نمبر 6 : تعین قدر اور آزمائش۔ گھنٹے 23 نمبرات 10

(Assessment and Evaluation)

☆ پیمائش (Measurement) اندازۂ قدر (Assessment) اور تعین قدر (Evaluation) میں فرق۔

☆ مسلسل اور جامع اندازۂ قدر۔ C.C.E.

☆ تشخیصی اور معالجی تعین قدر۔

☆ امتحانی اصلاحات (Examination reforms)

☆ اچّھے سوال نامے کی خصوصیات۔

تفویضات (Assignments) :—

☆ اردو تدریس میں پیش آنے والے مسائل۔

☆ کسی لوک کہانی کا اردو میں ترجمہ اور پیش کش۔

☆ اردو زبان کی مہارتوں کے فروغ کے لئے معاون اشیا کی تشکیل۔

☆ تخلیقی، لسانی اور ثقافتی صلاحیتوں کے فروغ کے لئے درج ذیل میں سے کسی ایک سرگرمی کا خاکہ بنائیں جیسے خطابت، مضمون نگاری، افسانہ نگاری، تلخیص، فی البدیہہ تقریر، بیت بازی، ڈرامہ میں اداکاری وغیرہ۔

☆ اردو زبان کو سیکھنے میں پیش آنے والے کسی ایک مسئلہ پر ایکشن ریسرچ کا خاکہ بنانا۔

☆ اردو درسی کتاب کا تنقیدی تجزیہ۔

مثالی سوال نامے کی تشکیل (CCE) کے تناظر میں مجوزہ مطالعہ جات (Suggested Reading)

☆ انصاری، ایف. (2013). تدریس کے عصری تقاضے، گولڈن گرافک اینڈ پرنٹرس دہلی.

☆ احمد آر.(2013). اردو تدریس، مکتبہ جامعہ نئی دہلی لمیٹیڈ.

☆ بچھ، ایم.(2004). طریقہ تعلیم اردو، آر لال بک ڈپو میرٹھ.

☆ غضنفر. (2008). لسانی کھیل، بشرا پبلی کیشنز نئی دہلی.

☆ معین الدین (2004). ہم اردو کیسے پڑھائیں، مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ.

☆ منظر، او. (2009). ٹیچنگ آف اردو لینگویج، شیرا پبلی کیشن نئی دہلی.

☆ ماڈیولس، دوسالہ ڈی.ایڈ.اردو.

☆ ماڈیولس، مختلف اردو ٹریننگ راجیہ شکشا کیندر.

☆ این.سی.ایف.(2005).

☆ نجم السّحر اور سعید ایس. (2007). تدریس اردو پریمئر، پبلشنگ ہاؤس حیدرآباد.

☆ ندیم آفاق. (2015). تعلیمی نفسیات کے پہلو، ایجوکیشنل بک ہاؤس علی گڑھ.

☆ سعید، آصف اور کوثر، صالحہ. رہبر تدریس.

☆ پوزیشن پیپر، نیشنل فوکس گروپ. (2010). ہندوستانی زبانوں کی تدریس NCERT

☆ آر.ٹی.ای. (2009).

☆ ایچ.زبیدہ. (2012). تدریس اردو، ادبستان پبلی کیشنز، دہلی.

☆☆☆

Pedagogy of English Language
First year

(For primary)

(Question Paper - 9)

Maximum Marks : 100

External : 70

Internal : 30

(Rationale and Aim) ¼&

This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is also to expose the student-teacher to contemporary practices in English language Teaching (ELT). The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student-teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Specific Objective

- Equip student-teachers with a theortical perspective on English as a "Second Language"(ESL)"
- Enable student-teachers to grasp general principles in language learning and teaching.
- To understand young learners and their learning context.
- To grasp the principles and practice of unit and lesson planning for effective teaching of English.

- To develop classroom management skills; procedures and techniques for teaching language.
- To Examine and develop resources and materials and there usage with young learners for language teaching and testing.
- To examine issue in language assessment and their impact on classroom teaching.

The Course is designed to be very practical in nature and includes equipping the student-teacher with numerous teaching ideas to try out in the classroom. Of course, all practical ideas must be related to current theory and best practice in the teaching of young learners. It is important to make a constant to make a constant theory-practice connection for the student-teachers.

Unit-wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Marks allotted
1.	Teaching of English at the elementary level	10
2.	Approaches to teaching of English	15
3.	Classroom transaction process	15
4.	Curriculum, text book & Material development	15
5.	Planning & Assesment	15
Internal Marks		30
Total		100

The theory paper will comprise of the five units-

Unit 1- Teaching of English at the Elementary level

- Issues of learning English in a multilingual' multicultural society.

- Issues of teaching Englilsh as second language at (a) Early primary- class I and II, (b) Primary- class III, IV and V.
- Learner socio-Cultural background and need learning English

Unit 2- Understanding of Textbooks and Approaches to the Teaching of English

- The cognitive and constructive approach-nature and role of learner, catering to different types of learners, age, of learning, learning style, teaching large classes, socio-cultural pace factors and socio-psychological factors
- Behaviouristic approach- direct method, grammar- translation method, structural, approval, communicative approach, state specific methods- Activity Based Learning (ABL) and Active learning Methodology (ALM)

  The internal assessment will be done on the following two sub-sections

Unit 3- Classroom transaction process.

- Stating learning outcomes and achieving them
- Pair work, group work
- Use of story telling, role play, drama, songs as pedagogical tools.
- Pre-reading, reading and Post-reading, objectives and procsses.
- Questioning to promote thinking.
- Dealing with textual exercises.

  The internal assessment will be done on the following section-

A. **Preparing teaching plan (five) using constructive approch and including at least three of the following activities:**
   - **(i) pair work**
   - **(ii) group work**
   - **(iii) story telling**
   - **(iv) role-play**
   - **(v) drama**
   - **(vi) songs/rhymes**
   - **(vii) questioning to promote thinking.**

B. Peer analysis of the lession plan

C. Suggested ICT activities

- Searching and downloading lesson plan based on constructivist approch
- Edit, moderate and contextalize at least one leasson plan.
- Present lesson plan digitally (on LCD projection or on smartphone)

Unit 4- Curriculum, textbook and material development.

- Preparing material for young learners.
- Using local resources.
- Using open resource (OER's) text, video, audio
- Analyzing and receiving teaching- learning materials and OER's.
- Academic standards, learning indicators and learning outcomes.
- Need and process of curriculum revision
- Text analysis of school textbooks for English

Unit 5- Planning & Assessment

- Planning for teaching
- Year plan, unit plan and period plan.
- Teachers' reflection on their own teaching learning practices
- Continuous and comprehensive evaluation (CCE)
- Monitoring of learning and giving feed back

Mode of transaction

The teaching would be done -

(a) Group work

(b) Work shop

(c) Seminar & actual classroom teaching.

Assignment

- Reading Passages and analyzing the distribution of linguistic elements.
- Making generalization on syntactic and morphological properties.

- Checking the generalizations and editing them individually and also through collaboration, feedback.
- Critical reading of specific areas of grammar as discussed in a few popular grammar books and reaching at conclusions.
- Put the internal assessment activities at one place and let the learners do any 5

Suggested activities for active learning

- Group discussion with Bal cabinet, SC
- Speech, debate on issues of teaching- learning English
- Short essay.
- Short digital presentation on issues of teaching- learning English.
- Search and download open educational resources for Madhya Pradesh preferably in Hindi.
- Find out which websites host open educational video resources relevant to Madhya Pradesh
- Download at least one video resource from state and National repositories.
- Group discussion on Individual differences Including all
- prepare and display charts on different approaches/Methods of teaching English
- Compare and contrast state specific programmers- ABL and ALM
- collect reference material on (a) learning styles and (b) Pace of learning, from different websites
- prepare and present digitally on (a)learning styles and (b) Pace of learning from different websites.
- Preparing teaching plan (at least five) using constructive approach and including at least three of the following activities- Pair work, group work, story telling, role play, drama, songs/rhymes, questioning to promote thinking
- Peer analysis of the lesson plans
- Searching and downloading lesson plans based on constructivist approach.
- Edit, moderate and contextualize at least one lesson plan.
- Present lesson plan digitally (on LCD projection or on Smartphone)

- prepare a unit plan and present it in a peer group.
- Organize a reflection session after a teaching session in the DIET/ College/ Institute
- Prepare a test for any class- the text should include a mix of objective type, short answer type and long answer type questions.
- on your mobile phone, prepare short video clips of 3 to 7 minutes duration, capturing different stages of administration of test.

The internal assessment will be done on the following two subsections-

A. Suggested activities for active learning

- Analyze (in pairs) at least one of the textual open educational resources (OER's) and present the analysis in a seminar mode.
- Read and summarize any one of the following documents-NCF (2005), (any one portion paper)

B. Suggested ICT activities

- Download at least one educational video, prepare three to five questions (viewing tasks) to be posted to viewers (like," What does the teacher do to assess learning?")
- Show the videos (on Smartphone/ LCD projector/Monitor) to peers along with viewing tasks discuss among them the tasks and give your feedback

Referances

Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.

Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin. (New Edition)

Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.

NCERT (2005). National Curriculum Framework, 2005. New Delhi: NCERT

NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi.

Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatternly, M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities and Classroom Language, Oxford: Oxford University Press.

(http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M-

iFke o"kZ & xf.kr f'k{k.k

¼iwoZ izkFkfed vkSj izkFkfed d{kk ds fy,½

Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)

¼ iz'u i= &10 ½

iw.kkZad &100

ckg~; vad & 70

vkUrfjd vad & 30

vkfpR; ,oa mn~ns'; **(Rationale and Aim)** %&

एक शिक्षार्थी गणित भाषा, संकेतों का इस्तेमाल उस समय शुरु करता है जब वह व्यवस्थित रूप में गणित का अध्ययन शुरु करता है। इसके अलावा जब उन्हें कक्षा में गणितीय अवधारणाएं सिखाई जाती है तो उनमें अमूर्त चिंतन, सामान्यीकरण, अनुमान लगाना, मात्रा निर्धारण, तर्क के गणितीय तरीकों की समझ विकसित होना चाहिए। एक शिक्षक को अवधारणात्मक ज्ञान के साथ इन प्रक्रियाओं, पढ़ाने के तरीकों और गणित सीखने के अन्य आयामों की जानकारी होनी चाहिए। यह कोर्स गणित के मूलभूत कार्यक्षेत्रों पर एक गहरी दृष्टि डालता है जो बीजगणितीय चिंतन, स्थान की समझ (Visualization of Space) संख्या बोध और आँकड़ों का प्रबंधन (Data Handling) आदि के विकास के लिए आवश्यक है।

दशकों से गणित प्राथमिक स्कूलों में अनिवार्य विषय रहा है। लेकिन अभी तक बच्चों के जीवन में यह कोई उल्लेखनीय स्थान नहीं बना पाया है। बच्चों को स्कूल के पहले के अपने गणित के ज्ञान को कक्षा में पढ़ाये जाने वाले व्यवस्थित गणित से जोड़ने में दिक्कत होती है और अन्त में एक विरोधाभास पैदा हो जाता है। इसे रोकने के लिए शिक्षकों को ना सिर्फ गणित की समझ होनी चाहिए बल्कि बच्चों द्वारा गणित सीखने की प्रक्रिया की भी जानकारी होनी चाहिए। इस कोर्स से जुड़ने से ऐसे भावी शिक्षकों का निर्माण होगा जो ऐसी वैकल्पिक शिक्षण पद्धतियों से अवगत होंगे, जो विषय के प्रकृति और बच्चों की सीखने की प्रक्रिया के अनुरूप हों। यह पेपर उन्हें इस बात के लिए तैयार करेगा कि वे पढ़ाने के दौरान बच्चों के पूर्व गणितीय ज्ञान का इस्तेमाल करते हुए व उनकी गलतियों को समझते हुए कार्य कर सकें और इस तरह बच्चों के दिमाग में उस अन्तर को भरने में सहायता कर उन्हें स्वतंत्र चिन्तन के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

स्कूल आने से पहले ही बच्चे गणित से परिचित हो चुके होते हैं और अपनी तरह से उसका प्रयोग भी कर रहे होते हैं। स्कूल में उनका सामना गणित के व्यवस्थित रूप से होता है जो प्रायः गणित के ज्ञान की

उनकी अपनी आन्तरिक प्रक्रिया के विरोध में खड़ा हो जाता है। प्रभावी शिक्षण के लिए यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों को इस विरोधाभास और अन्तर की समझ होनी चाहिए।

राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार पत्र गणित शिक्षण (एनसीईआरटी, 2006) के अनुसार ''गणित शिक्षा, शिक्षक की अपनी तैयारी, उसकी अपनी गणित की समझ, गणित के शिक्षा शास्त्रीय स्वभाव की समझ तथा उसकी अपनी अध्यापन–विधा की तकनीकों पर बहुत हद तक निर्भर करता है।'' प्रत्येक शिक्षक को गणित की अपनी समझ को नये तरीके से विकसित करने की जरूरत होती है जो बच्चों के दिमाग में चल रही सीखने की प्रक्रिया को समझ सके और उसे अपना प्रस्थान बिन्दु बना सके। शिक्षकों को उन तरीकों के बारे में पता होना चाहिए जिन तरीकों से बच्चे सोचते हैं, जिससे वे अपनी शिक्षण विधि को इस तरह मोड़ सकें कि वह बच्चे के गणितीय ज्ञान की वैकल्पिक अवधारणाओं से अपना सामंजस्य बिठा सकें।

इस कोर्स का उद्देश्य भावी शिक्षकों को इस तरह संवेदनशील बनाना है कि वे न सिर्फ प्राथमिक स्तर पर पढ़ाए जाने वाले गणित के विषय के अपने ज्ञान का चिंतन कर सकें, बल्कि बच्चों और उनके अनुभवों से अपने आप को जोड़ सकें। इस कोर्स से जुड़ने से भावी शिक्षक इस योग्य हो सकेंगे कि वे बच्चों और उनकी गणित शिक्षा के बारे में शोध में कही गई चीजों से सीख सकें और उस पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकें तथा सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकें।

fof'k"V mn~ns'; **(Specific Objectives)**

Nk=k/;kid dk

- प्राथमिक स्तर के गणित के विषय क्षेत्र पर अपनी गहरी समझ विकसित करने योग्य बनाना।
- उन घटकों के प्रति जागरूक करना जो गणित सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव डालते हैं।
- उन तरीकों के बारे में संवेदनशील बनाना जिन तरीकों से छात्र गणितीय ज्ञान के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।
- कौशल विकास, गहरी अन्तर्दृष्टि पैदा करने, उपयुक्त सोच हासिल करने एवं बच्चों के प्रभावी तरीके से सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए कारगर रणनीतियों की समझ विकसित करने में मदद करना।
- अर्थपूर्ण तरीके से गणित सीखने और पढ़ाने के लिए आत्मविश्वास का निर्माण करना।
- मुख्यतः संख्या और स्थान (space) से सम्बन्धित गणितीय अवधारणाओं और पढ़ाने के दौरान बच्चों के साथ इसका प्रयोग करने के कौशल और समझ को विकसित करना।
- गणितीय तरीके से सोचने और तर्क कर सकने के योग्य बनाना।
- अवधारणाओं को उसकी तार्किक परिणति तक ले जा पाये और कक्षा में छात्रों के साथ इसका प्रयोग कर पाने योग्य बनाना।
- बच्चों के लिए उचित गतिविधियों को डिज़ाइन कर सकने के ज्ञान एवं कौशल में समर्थ बनाना।

ये इकाइयाँ इस तरह बनाई गई हैं कि भावी शिक्षकों को यह समझने में मदद मिले कि छात्रों का सीखना इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षक ने विषयवस्तु को कैसे सीखा है और बच्चे किस तरह गणितीय ज्ञान को ग्रहण करते व प्रतिक्रिया देते हैं।

bdkbZokj vadksa dk foHkktu

Øekad	bdkbZ	fo"k;	vad
1	1	गणित से परिचय (Introduction to Mathematics)	10
2	2	गणित शिक्षण सिद्धांत और शिक्षण विधियां (Mathematics Teaching Principles and Teaching Method)	15
3	3	गणना, संस्थाएं एवं उनकी संक्रियाएं (Counting, Numbers and its Operations)	10
4	4	ज्यामितिय आकार एवं पैटर्न (Geometrical Shapes and Pattern)	10
5	5	पाठ्यपुस्तकों और शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding of Text book and Pedagogy)	15
6	6	कक्षा योजना एवं आकलन (Classroom Planning and assisment)	10
		vkarfjd vad &	30
		dqy vad &	100

bdkbZ 1 % xf.kr ls ifjp; (Introduction to Mathematics)

- गणित क्या है और जीवन में यह कहाँ–कहाँ है?
- हम गणित क्यों पढ़ाते हैं?
- दैनिक जीवन में गणित की क्या आवश्यकता व महत्व है?
- गणित के आयाम : अवधारणा, प्रक्रिया, प्रतीक व भाषा।
- गणितीकरण।

bdkbZ 2 % xf.kr& f'k{k.k fl)kUr vkSj f'k{k.k fof/k;k¡

(Mathematics Teaching Principles and Teaching Method)

- सीखने वाले को समझना
- सीखने की प्रक्रिया को समझना
- सीखने एवं शिक्षण की त्रुटियाँ

- गणित सीखने एवं सिखाने की विधियाँ– आगमनात्मक और निगमनात्मक (Induction and Deduction), विशिष्टीकरण एवं सामान्यीकरण, गणित के सिद्धान्त

bdkbZ 3 % x.kuk] la[;k,¡ ,oa mudh lafØ;k,¡ **(Counting, Numbers and its Operations)**

- संख्या–पूर्व अवधारणाएँ।
- संख्या की समझ एवं प्रस्तुति।
- अंक और संख्या।
- गणना और स्थानीयमान।
- भिन्न की अवधारणा और उसकी प्रस्तुति।
- संख्याओं और गणितीय संक्रियाएँ।

bdkbZ 4 % T;kferh; vkdkj ,oa iSVuZ **(Geometrical Shapes and Pattern)**

आकृतियों के प्रकार– द्विविमीय एवं त्रिविमीय (2 डी और 3 डी)।

- आकृतियों की समझ– परिभाषा, आवश्यकता और अन्तर।
- गणित में विभिन्न आकारों की समझ।
- पैटर्न– परिभाषा, आवश्यकता और प्रकार।
- संख्याओं और आकृतियों में पैटर्न की समझ।

bdkbZ 5 % ikB~;iqLrdk vkSj f'k{k.k 'kkL= dh le> **(Understanding of Text book and Pedagogy)**

गणित की पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए दार्शनिक और मार्गदर्शी सिद्धान्त।

- गणित शिक्षण के लिए विषयवस्तु, दृष्टिकोण तथा विधि– संवादमूलक और सहभागी तरीका, एक सुविधादाता के रूप में शिक्षक।
- विषय (Theme), इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और उसके प्रभाव।
- अकादमिक मानक और सीखने के संकेतक।
- गणितीय पाठ्यचर्या के प्रभावी अंतरण (transaction) के लिए अधिगम स्त्रोत (Learning Resources)।

bdkbl 6 ½ d{kk ;kstuk ,o vkdyu ¼eY;kdu½ (Classroom Planning and assisment)

- शिक्षण तैयारी : गणित शिक्षण के लिए योजना, वार्षिक योजना, इकाई योजना और कालखंड योजना।
- योजना का आकलन (मूल्यांकन)।
- आकलन व मूल्यांकन – परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आकलन (CCE)– अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उपकरण, योगात्मक आकलन, भारिता टेबल (वेटेज टेबल), पृष्ठपोषण एवं रिपोर्टिंग, रिकार्ड एवं रजिस्टर।

l=xr dk;l ¼Assignments½

सत्रगत कार्य अंतर्गत छात्राध्यापक पूरी प्रक्रिया का अभिलेखीकरण कर सामग्री सहित प्रस्तुत करेंगे। (कोई दो)

1. एबाकस का निर्माण तथा इसका कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
2. ज्यो (GEO) बोर्ड का निर्माण एवं कक्षा–श्क्षिण में इसका उपयोग करना।
3. संख्या रेखा के मॉडल का निर्माण व इसके द्वारा शिक्षण ।
4. कागज को मोड़कर गतिविधियों से गणित शिक्षण करना।
5. भिन्न डिस्क का निर्माण एवं दशमलव की समझ हेतु कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
6. पथ के क्षेत्रफल हेतु मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना।
7. पाइथागोरस प्रमेय का मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना।
8. गणित की किसी एक अवधारणा के मूल्यांकन हेतु उपकरण का निर्माण कक्षा में उपयोग करना।
9. बच्चों को आने वाली कठिनाई की पहचान कर कारणों का विश्लेषण व निराकरण करना।
10. इंटर्नशिप की शाला मे गणितीय कोने (Maths Corner) की स्थापना करना।
11. अपने परिवेश से विभिन्न गणितीय पहेलियाँ/खेल का संग्रह करना एवं स्वयं पहेलियाँ/खेल बनाना।
12. अपने साथी छात्राध्यापक के गणित कक्षा शिक्षण (कम से कम 5) का विशेलषणात्मक अवलोकन करना।
13. विभिन्न प्रकार के क्षमता वाले बच्चों के अधिगम के पाठ –योजना तैयार करना।
14. दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न प्रकार की मापन इकाईयों का अध्ययन तथा उनमें परस्पर संबंध स्थापित करना।

vrj.k dh fof/k;k ¼Mode of Transaction½

- गणितीय ज्ञान के प्रति बच्चे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, इसकी समझ हासिल करने के लिए भावी शिक्षकों को बच्चों द्वारा किए गए काम के अवलोकन पर आधारित चर्चा में बच्चों को शामिल करना चाहिए।

- गणित की विभिन्न अवधारणाओं के बीच जुड़ाव और सम्बन्धों को समझने के लिए भावी शिक्षकों को समूह में अवधारणात्मक ख़ाका (concept maps) बनाना । जिससे समूह कार्य के महत्व को आत्मसात किया जा सके।
- उठाए गए मुद्दों के नज़रिये से सिद्धान्त को समझने के लिए पाठ्य वस्तु (जैसा कि चर्चा के रूप में सुझाव दिया गया है) को संवाद के साथ पढ़ना चाहिए।
- गणित के ज्ञान के ऐतिहासिक उदाहरणों को विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से एकत्र करना और उस पर अपनी राय व्यक्त करना।
- गणितीय मॉडल (विशेषकर ज्यामिति से संबंधित) बनाना।
- प्रस्तुति के माध्यम से शिक्षण–अधिगम की सामग्रियों को आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

I>kokRed IndHk xiFk Iph

1. म.प्र. पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा 1 से 8 तक की गणित विषय की प्रचलित पाठ्य पुस्तकें।
2. गणित शिक्षण – एम.एस. रावत व एस.बी.लाल
3. गणित अध्ययन सत्संगी एवं दयाल
4. NCF 2005 NCERT द्वारा प्रकाशित
5. Position Paper National Focus Group on Teaching of Mathematics
6. NCERT द्वारा तैयार गणित किट प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर
7. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009
8. वैदिक गणित स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ
9. वैदिक गणित भाग 1,2,3, – डॉ. कैलाश विश्वकर्मा
10. मापन एवं मूल्यांकन –आर.ए. शर्मा
11. राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका
12. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

0;kogkfjd

izFke o"kZ

Mh-,y-,M- iFke o"k

Lo ck/k

Towards Self-Understanding

(0;kogkfjd&1)

पूर्णांक–100

बाह्य मूल्यांकन – 50

आन्तरिक मूल्यांकन – 50

vkfpR; ,o mís'; (Rationale And Aim)

इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्व के विकास को सुगमित करना है जो अपने सीखने की जिम्मेदारी स्वंय ले सके और स्वयं के जीवन को उचित दिशा दे सकें। छात्राध्यापक आत्म–चिंतन के द्वारा अन्वेषण करें। अपने जीवन के लक्ष्यों, अपनी शक्तियों और दुर्बलताओं की पहचान कर अपने व्यक्तित्व की तत्त्वों की अंर्तदृष्टि प्राप्त कर विकास करें। छात्राध्यापकों में सामाजिक सम्बंधों के प्रति संवेदनशीलता, प्रभावी सम्प्रेषण कौशल की क्षमताओं का विकास हो सके। छात्राध्यापक अपने व्यक्तित्व में सामंजस्य और समाज में समन्वय करने की क्षमता का विकास कर सकें। आयोजित होने वाली कार्यशालाएँ ऐसी हो कि छात्राध्यापको में सकारात्मक प्रवृत्तियों, गुणों और कौशलों का इस तरह विकास हो कि अध्यापन करते हुए वे अपने विद्यार्थियों में इन गुणों का संचार करने में समर्थ हो सकें।

fof'k"V mn~ns';& (Specific Objectives)

- छात्राध्यापक को उदारता और स्वतन्त्र– चितंन के लिए सक्षम करना ।
- छात्राध्यापक को सीखने के लिए स्वप्रेरित करना।
- छात्राध्यापकों को आत्मज्ञान और आत्मानुशासन विकसित करने में सक्षम बनाना।
- छात्राध्यापक को संवेदनशील बनने तथा तनाव–मुक्त होकर मानसिक शांति और सामाजिक सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम बनाना छात्राध्यापकों को सम्प्रेषण कौशल में निपुण बनाना।
- छात्राध्यापक को अपने विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास और सामाजिक कौशलों के विकास में सक्षम बनाना।

ikB~;Øe dh :ijs[kk

पाठ्यक्रम को अन्य विषयों की तरह इकाई आधारित न करते हुए दो समान्तर कड़ियों में विभाजित किया गया है। पहली कड़ी में छात्राध्यापक स्व–चिन्तन के आधार पर लेखन कार्य करेंगे और दूसरी कड़ी में कार्यशालाओं और सेमिनार के माध्यम से अपने चिंतन, विचार, व्यवहार और सम्प्रेषण को सुदृढ़ कर सकेंगे। प्रथम कड़ी में आंतरिक मूल्यांकन उनके लेखन कार्य के आधार पर किया जाएगा। द्वितीय कड़ी में आंतरिक मूल्यांकन, कार्यशालाओं व सेमिनार में उनके प्रदर्शन के आधार पर किया जाएगा।

कार्यशाला व सेमिनार के विषय व थीम पर आधारित प्रश्नों की लिखित परीक्षा होगी। लिखित परीक्षा द्वारा बाह्य मूल्यांकन किया जाएगा।

vad dk foHkktu

प्रथम कड़ी– लेखन कार्य	दैनंदिनी (दैनिक डायरी)	15 अंक
	अन्य लेखन कार्य	15 अंक
द्वितीय कड़ी– कार्यशाला व संगोष्ठी	कार्यशाला 1 से 6 तक	10 अंक
	सेमिनार 1 से 4 तक	10 अंक
आतंरिक अंक		50
कुल अंक		100 अंक

iFke dM+h

इस कड़ी मे छात्राध्यापको द्वारा लेखन कार्य किया जाएगा । लेखनकार्य निम्नलिखित दो तरीकों से किया जा सकता है –

1- nSufUnuh ys[ku_– इसके अंतर्गत छात्राध्यापक नियमित दैनंदिनी लिखेंगे। दैनंदिनी के बिन्दु स्पष्ट हो। यह दैनंदिनी दिनचर्या एवं अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के कारण दिनचर्या एवं स्वयं के व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों एवं अनुभवों पर आधारित हो।

nSufUnuh ys[ku ds mÌs';

i- छात्राध्यापकों के जीवन के अनुभवों, घटनाओं के अवलोकन तथा मन में उठने वाले विचारों व मुद्दों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए सजग करना। इस प्रकार उनमें चिंतनशीलता और आत्म समीक्षात्मक चिंतन को विकसित करना।

ii- छात्राध्यापकों और संकाय सदस्यों के बीच अंतः सम्वाद स्थापित करना और इस तरह उनके व्यक्तित्व का विकास करना।

iii- प्रत्येक छात्राध्यापक द्वारा नियमित दैनंदिनी लिखी जाएगी। इसमें वे दिनांक डालते हुए निम्नलिखित विषयों पर अपने अनुभव लिखेंगें–

(अ.) अपने जीवन में होने वाली किसी विशिष्ट घटनाओं जैसे कोई पुरस्कार प्राप्ति, किसी विशिष्ट व्यक्ति से मुलाकात, कोई पढ़ी गयी पुस्तक आदि पर अपनी प्रतिक्रिया लिखेगें।

(ब.) समसामयिक विषय या मुद्दे पर अपने विचार लिखना ।

(स.) ऐसी शैक्षिक समस्या जिसका वे सामना कर रहे हो उस पर अपने विचार लिखना।

(द.) संस्था में हुए किसी विशिष्ट आयोजन पर लेख लिखना। प्रत्येक 15 दिन में किसी संकाय सदस्य द्वारा संस्थान में दैनंदिनी पढ़ी जाएगी और प्रत्येक दैनंदिनी पर अपनी टीप अंकित कर छात्राध्यापक को वापस की जाएगी। सत्र के अंत में सभी छात्राध्यापकों से उनकी दैनंदिनी समग्र मूल्यांकन के लिए ले ली जाएगी और संस्था में दैनंदिनी सहित मूल्यांकन का अभिलेख रखा जाएगा।

2- vU; y[ku & इसके अंतर्गत अपने जीवन से सम्बधित अनुभवों का लेखन कार्य किया जाएगा।

vU; y[ku dk;Z d mís';

- छात्राध्यापकों को अपनी शैक्षणिक यात्रा को याद दिलाना, जिसके अंतर्गत उनके विद्यालय, शिक्षक, शैक्षिक वातावरण आदि शामिल होगें जिससे उनकी आकांक्षाएँ और उम्मीदों ने एक स्वरूप ग्रहण किया। इन विषयों पर चिंतन करते हुए अपने अनुभव और अभिमत लिखना।
- एक समय अंतराल के बाद अर्थात डी.एल.एड. के एक वर्ष पूर्ण होने पर अपनी स्थिति और परिवेश पर लिखना ।
- आपके जीवन में क्या परिवर्तन आया, उसे लिखना। उपर्युक्त आधार पर अपने अनुभवों को व्यक्त करना।

प्रथम वर्ष के सत्रारंम्भ में प्रत्येक छात्राध्यापक द्वारा अपनी ''शैक्षिक आत्मकथा'' लिखी जाएगी। सत्रांन्त पर अपने नवीन अध्ययन और अनुभव के आधार पर अपने अनुभवों और आकांक्षाओं पर आलेख तैयार किया जाएगा। संकाय सदस्यों द्वारा इन पर चर्चा होगी। आलेखों को सत्रांत में लिया जाएगा। संस्था में आलेख और समग्र मूल्यांकन का अभिलेख रखा जाएगा।

vrj.k dh fof/k;k (Mode of Transaction)

दोनों लेखन कार्य (दैनंदिनी व अन्य) एक संकाय सदस्य के मार्गदर्शन व निर्देशन में लिखे जाएगें। गिजुभाई बधेका का ''दिवास्वप्न'' जैसी रचनाएँ पढ़ने के लिए कही जाएँगी। प्रारंभिक प्रारूपों में संकाय सदस्य द्वारा सुधार और सुझाव दिये जाएगें।

f}rh; dMh

इस कड़ी में सालभर कार्यशालाओं और संगोष्ठियों की एक श्रृँखला आयोजित की जाएगी। कार्यशाला व संगौष्ठी के विषय व थीम इस तरह रखे जाएँगे कि उसमें सभी छात्राध्यापक अपनी सहभागिता करें ।

dk;l'kkyk vkj lfeukj d lkekU; mÌ';

''शिक्षक वही पढ़ाते हैं जो वह जानते हैं और वही सिखाते है जो उनके व्यक्तित्व में है।''– इस कथन का तात्पर्य यह है, कि अन्य व्यवसायों की तुलना में शिक्षक के व्यवसाय में सफलता तभी होती है जब शिक्षक का व्यक्तित्व बहुआयामी और सुदृढ़ हो। शिक्षा और शिक्षण में शिक्षक के धैर्यवान, विवेकशील, सजग और सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षक को आत्म समीक्षा और आत्मावलोकन द्वारा अपने व्यक्तित्व विकास के अवसर प्राप्त होने चाहिए । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्यशाला व सेमिनार आयोजित किए जाएगें।

fof'k"V mÌ'; (Specific Objectives) &

कार्यशाला व संगोष्ठी के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित है।–

- i- छात्राध्यापकों में स्व बोध का विकास करना ताकि वे अपने सीखने और अपने विद्यार्थियों को सिखाने की जिम्मेदारी ले सकें।
- ii- छात्राध्यापकों में आत्मसमीक्षा की क्षमता का विकास करना ताकि वे अपने व्यक्तित्व और पहचान को गढ़ने वाले कारकों को जान सकें।
- iii- छात्राध्यापको को अपनी चिंतन–शैली, प्रेरणा और व्यवहार के प्रति सजग करना ताकि वे खुले दिमाग से नया कुछ सीखने को तैयार रहे, और स्वंय को ज्ञान और कर्म के नवीन स्त्रोतों की और उन्मुख रखें।
- iv- छात्राध्यापकों को सामाजिक संबंधों के प्रति संवेदनशील बनाना ताकि वे विद्यार्थियों व स्वयं की सामाजिक परिस्थितियों के प्रति जागरूक होकर व्यवहार कर सकें।
- v- छात्राध्यापक स्वंय की आन्तरिक दुनिया और बाह्य दुनिया से सामंजस्य स्थापित कर सकें।
- vi- छात्राध्यापक विद्यार्थियों, सहकर्मियों और अन्य लोगों के साथ गहन सम्प्रेषण स्थापित कर सकें।

vii- छात्राध्यापकों में मौलिक चिंतन की क्षमता का विकास करना।

viii- छात्राध्यापक व्यापक शैक्षिक मुद्दों के प्रति सजग होकर स्वयं की शैक्षिक दृष्टि का विकास कर सकें।

dk;Z'kkyk ds fo"k; &

कार्यशालाएँ निम्नलिखित छह विषयों पर आयोजित किए जाएगें।

1- fQYe] dyk] fFk,Vj vkSj lh[kuk

mÌs';&

- फिल्म, नाटक और कला के विविध रूपों से परिचित होना और उनके शैक्षणिक महत्व को जानना।
- देखे गए फिल्म, नाटक और कला की समीक्षा करना।
- दृश्य माध्यमों के प्रति दृष्टिकोण विकसित करना।
- विभिन्न कला रूपों की सराहना करना। उन मापदण्डों को समझना जिनसे एक कला रूप सार्थक होता है।
- अशाब्दिक सम्प्रेषण के माध्यमों को समझना और स्वंय उनका प्रयोग करना।
- हिन्दी के अभ्यास से स्वंय की शरीर भंगिमाओं और शारीरिक गतियों में सामंजस्य स्थापित करना सीखना। इसी माध्यम से शारीरिक संतुलन तथा अपनी आवाज के उतार–चढ़ाव पर नियंत्रण करना सीखना।

xfrfof/k;k¡ &

- शैक्षिक महत्व की फिल्म और नाटक देखना और उनकी समीक्षा करना।
- फिल्म या नाटक के किसी एक दृश्य का विश्लेषण करना।
- रेखाकंन चित्रकला आदि दृश्य माध्यमों को देखना और स्वंय उनमें से किसी एक को बनाना।
- थिएटर गेम्स में भाग लेकर शरीर संतुलन, शारीरिक गति में सामंजस्य और आपसी सहयोग की भावना को विकसित करना।
- नाटक के संवादों को बोलकर तथा स्वंय नाटक में भाग लेकर स्वर नियंत्रण सीखना । इस प्रकार सम्प्रेषण के कौशल को विकसित करना।

2- tsaMj vkSj ijofj'k

mÌs';&

- सामाजिक जीवन में जेण्डर भिन्नता के कारकों को पहचानना।
- भारतीय समाज में जेण्डर भिन्नता के कारकों को पहचानना।
- जेण्डर आधारित विभेद और उनके कुप्रभावों को जानना और उनके समाधानों को खोजना।

xfrfof/k;k¡ &

- छात्राध्यापकों द्वारा अपने जीवन के जेण्डर भिन्नता और विभेद उदाहरण प्रस्तुत करना।
- विभिन्न परिवारों में (जैसे निम्नवर्ग, ग्रामीण क्षेत्र आदि) बड़े होते बच्चों में जेण्डर भिन्नता और विभेद पर चर्चा करना और अपनी राय बनाना।
- विद्यालयों में जेण्डर विभेद की 'केस स्टडी' करना।
- समाज में जेण्डर विभेद की 'केस स्टडी' करना।

3- i:frf"Br 0;fDr;k d: ckj: e: foLrkj l: tkuuk

(प्रतिष्ठित व्यक्तित्व, जैसे स्वामी रामतीर्थ, आदि शंकराचार्य, आदि कवि बाल्मीकी, तुलसीदास, मीराबाई, स्वामी रामतीर्थ, रैदास के बारे में जानना।½

mÌ:';&

- व्यक्तित्वों के जीवन के माध्यम से व्यापक सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होना।
- स्वयं के सांस्कृतिक मूल की खोज करना।

xfrfof/k;k &

- प्रमुख व्यक्तियों की कृतियों को पढ़ना और उन पर समूहों में चर्चा करना। (संकाय सदस्य छात्राध्यापकों को समूह में एक–एक सांस्कृतिक व्यक्तित्व के बारे में खोजने और जानने का कार्य दे सकते है।)
- सांस्कृतिक व्यक्तियों की जयन्तियाँ मनाना। उनकी रचनाओं का पाठ/गायन करना। उन पर विचार विमर्श करना।
- किसी एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व पर आलेख लिखना।

4- thou dh ie[k ?kVuk,i ,o vuHko &

mÌ:';&

- छात्राध्यापकों को उन प्रमुख कारकों के प्रति सजग करना जिससे उनके जीवन का स्वरूप निर्धारित हुआ।
- छात्राध्यापकों के द्वारा स्वंय के जीवन की किसी प्रमुख घटना या अनुभव को आज के संदर्भ में परखना।
- छात्राध्यापकों द्वारा उनके एक दूसरे के जीवन की घटनाओं या अनुभवों को जानना और उनसे सीख लेना।

xfrfof/k;k &

- छात्राध्यापक अपने जीवन की प्रमुख घटनाओं और अनुभवों को समय–आरेख (Time line), मानस चित्रण (Mind map), पोस्टर या अन्य किसी तरीके से व्यक्त करेंगें।
- छात्राध्यापक अपने जीवन की किसी एक प्रमुख घटना या अनुभव पर केन्द्रित होकर विचार करेगें कि
  - घटना/अनुभव कैसा था?
  - घटना/अनुभव का क्या प्रभाव उनके जीवन पर पड़ा?

➢ आज के संदर्भ में उस घटना/अनुभव का क्या महत्व है?

- छात्राध्यापक समूहों में घटना/अनुभव को साझा कर उन पर बातचीत करेंगें।
- जीवन की प्रमुख घटनाओं / अनुभव का सार लिखेगें।

3- dk;Z'kkyk Lo;a dh igpku& iFke

(शरीर –स्थूल, सूक्ष्म, एवं कारण, शरीर, ज्ञानेन्द्रिया एवं प´च प्राण)

mÌ';&

1. स्वयं के शरीर (स्थूल, सूक्ष्म, एवं कारण)के प्रति परिचित होना।
2. शरीर के निर्माण तत्वों (महाभूतों) एवं उनके गुणों से परिचित होना।
3. स्वयं की ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों के प्रति समझ विकसित करना।
4. जड़ एवं चेतन तत्वों (पदार्थो) के प्रति समझ विकसित करना।
5. स्वयं के श्वास/प्रश्वास अर्थात् प्राणों के बारे में समझ विकसित करना।

xfrfof/k;k¡&

1. विद्यार्थि स्वयं के व्यक्तित्व का विशलेषण कर स्वयं की सकारात्मक विशेषताओं के साथ कमजोरियों की सूची बनाते हुए स्वयं में क्रमशः होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों का विवरण लिखें (SWOT)

dk;Z'kkyk & Lo;a dh igpku& f}rh;

(अवस्थाओं – जाग्रत, स्वप्न, एवं सुषुप्ति, पञ्च कोष– अन्नमय
प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय कोष, आत्म तत्व की समझ)

mÌ'; %&

1. छात्राध्यापकों को स्वयं की जागृत, स्वप्न एवं सुषुप्ति के प्रति समझ विकसित करना।
2. छात्राध्यापकों को स्वयं का शरीर किन–किन कोषों से बना है इन कोषों को प्रति समझ विकसित करना।
3. छात्राध्यापकों में 'मैं कौन हूँ' की समझ विकसित करना।
4. छात्राध्यापकों में आत्म तत्व की सर्वोत्कृष्ट प्रियता की समझ विकसित करना।

xfrfof/k;k¡

1. छात्राध्यापकों को स्वयं की जागृत अवस्था का निरीक्षण करें। यह पता लगायें कि जाग्रत अवस्था को जानने वाला कौन हैं।
2. छात्राध्यापकों को स्वयं की स्वप्न अवस्था का निरीक्षण करें। यह पता लगाये कि स्वप्न अवस्था को जानने वाला कौन है।

3. छात्राध्यापकों को स्वयं की सुषुप्ति (गहरी नींद) का निरीक्षण कर गहरी नींद के अनुभवों को लिखें। यह पता लगायें कि सुषप्ति (गहरी नींद) को जानने वाला कौन है।

4. छात्राध्यापक तीनों अवस्थाओं अर्थात जाग्रत, स्वप्न एवं सुषुप्ति का एक साथ विश्लेषण कर यह पता लगायें कि इन तीनों अवस्थाओं को जानने वाले तीन अलग–अलग है या एक ही है। इन अवस्थाओं को जानने वाला जड़ है या चेतन हैं। अन्त में यह निष्कर्ष निकालें कि ''मैं कौन हूँ''।

5. छात्राध्यापक को अपने जीवन में धन, परिवार, शरीर एवं स्वंय का अनुभव है। इनसे यह निष्कर्ष निकालें कि सबसे प्रिय (अन्तिम प्रिय) कौन है।

lxk"Bh d fo"k; &

lxk"Bh fuEufyf[kr pkj fo"k;ksa ij vk;ksftr fd, tk,xsA

1. Hkkjr esa fofHkUu ifjos'kksa ds cPpksa dh >yd ¼ (ग्रामीण, शहरी, श्रमिक, सुदूर पहाड़ी क्षेत्र, विभिन्न राज्यों के बच्चे आदि)

Lo:i ¼& Nk=k/;kid fofHkUUk ek/;eksa ls विवरणों, चित्रों, पोस्टर, अखबार, पत्रिका में प्रकाशित आलेखों आदि । भारत में विभिन्न प्रकार के बच्चों और उनकी परिवरिश पर प्रस्तुतिकरण देगें।

rS;kjh :– संकाय सदस्य अपने निर्देशन में छात्राध्यापको को स्त्रोत सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगें। छात्राध्यापकों को किसी एक प्रकार के बच्चों पर प्रस्तुतीकरण के लिए तैयार किया जाएगा।

2. lekt esa foKku vkSj /keZ dh Hkwfedk ¼fofHkUu /keksZa tSls lukru /keZ] eqfLye /keZ] bZlkbZ /keZ] tSu /keZ] ,oa ckS/k /keZ vkfn ds y{k.k] Lo:i ,oa lnxq.k½

Lo:i ¼& चर्चा और विमर्श

rS;kjh :– संकाय सदस्य छात्राध्यापको को विषय से संबधित पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराएँगें। विषय से सम्बधित कोई थीम देकर छात्राध्यापकों से चर्चा , विमर्श, आदि आयोजित करेंगें।

3. Hkkjr esa izkphu ,oa vk/kqfud f'k{kk dk Lo:i

Lo:i :– चर्चा और विमर्श

rS;kjh :– संकाय सदस्य छात्राध्यापकों को विषय से सम्बधित पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराएँगें। छात्राध्यापकों को समूहों में विषय सम्बधित अलग–अलग थीम देकर चर्चा, विमर्श, वाद–विवाद आयोजित करेंगें।

4. izeq[k f'k{kkfonksa ds ¼egkRek xka/kh] Jh vjfoUn] jfoUnzukFk VSxksj] fxtqHkkbZ c/ksdk½ 'kSf{kd fparu

Lo:i :– चर्चा और विमर्श

rS;kjh :– छात्राध्यापकों द्वारा किसी एक शिक्षाविद के विचारों पर प्रस्तुतिकरण किया जाएगा। इस पर अन्य छात्राध्यापक व संकाय सदस्य प्रश्न करेंगें जिनका उत्तर छात्राध्यापक देगें।

dk;l'kkyk o lxk"Bh vrj.k dh fof/k

- कार्यशाला व संगोष्ठी को आयोजित करने के लिए एक संकाय सदस्य को जिम्मेदारी दी जाएगी।
- कार्यशाला के लिए 4–6 दिन, 1 दिवसीय या 2 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जाएगी।
- संगोष्ठी के लिए 2–4 दिन, अर्द्धदिवसीय या पूर्ण दिवसीय (1दिन) संगोष्ठी हेतु निर्धारित होगे।
- सप्ताह में प्रतिदिन एक कालखण्ड होगा जिसमें संकाय सदस्य कार्यशाला या संगोष्ठी की तैयारी कराएँगे।
- सत्रारम्भ में ही कार्यशाला व संगोष्ठी की तारीखें निर्धारित की जाएँगी। (आवश्यकता पड़ने पर तारीखों में परिवर्तन किया जा सकेगा।)

eY;kdu ¼vkrfjd½

- लेखन कार्य को जाँचा जाएगा और निर्धारित अंको में से अंक प्रदान किए जाएगें ।
- कार्यशाला व संगोष्ठी में प्रस्तुतिकरण व प्रदर्शन के आधार पर प्रत्येक कार्यशाला व संगोष्ठी पर 10–10 अंक दिए जाएँगें।
- कार्यशाला व संगोष्ठी में प्राप्त 10–10 अंकों को जोड़कर प्रतिशतांक में बदला जाएगा। प्रतिशतांक को 10 अंकों में प्रदान किया जाएगा। उदाहरण के लिए कार्यशाला में, प्रत्येक कार्यशाला पर 10 अंक दिए जाने से कुल 60 अंक होते है। यदि किसी छात्राध्यापक को 30 अंक प्राप्त होते है, तो प्रतिशतांक होगा 50ः तो उसे 10 में से 5 अंक दिए जाएँगें । इसी प्रकार सेमिनार में भी किया जाएगा।

eY;kdu ¼ckg;½ कार्यशाला विषयों पर लिखित परीक्षा होगी इसमें वस्तुनिष्ठ प्रश्न न होकर विवरणात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे।

Mh-,y-,M- iFke o"k
jpukRed ukVd] yfyr dyk vkj f'k{kk
Creative Drama, Fine Art and Education

0;kogkfjd&2

i.kkd&50

ckg; vd & 25

vkUrfjd vd & 25

vkfpR; vkj mnns'; **(Rationale and Aim)**

ललित कला के प्रकारों और रचनात्मक नाटक का एक समान सूत्र होता है कि किसी विद्यार्थी की रचनात्मक संभावनाओं को पूरा करना एवं उसके जीवन को बेहतर बनाना, क्योंकि यह कार्यानुभव व स्वास्थ्य शिक्षा से भी जुड़ता है। ललित कला शिक्षा का प्रथम उद्देश्य मनुष्य एवं प्रकृति के सृजनात्मकता को विकसित करना है। सृजनात्मकता और सौन्दर्यबोध प्रत्येक मानव की जन्मजात विशेषताएँ हैं। व्यक्ति अपनी अनुभूति को किसी सृजन के रूप में व्यक्त करने के लिए सदैव उत्सुक रहता है। इसके लिए वह शब्द, ध्वनि, गति एवं भाव–भंगिमा (हाव–भाव) को चुनता है कला शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यंत उपयोगी है। रचनात्मक नाटक, चित्रकला एवं विभिन्न प्रकार की कलाएँ न केवल हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम हैं बल्कि इससे हमें स्वयं को समझने, तराशने के अवसर भी मिलते हैं।

नाटक एवं विभिन्न प्रकार की सृजनात्मक गतिविधियों के माध्यम से छात्राध्यापक अपनी क्षमताओं को विकसित कर उन्हें निखारने हेतु प्रयास करते हैं। इन कलाओं के द्वारा विषयवस्तु को बड़े रोचक तरीके से सिखाया जा सकता है। कलाओं के माध्यम से शिक्षक और छात्र भयमुक्त वातावरण में स्वतंत्र अभिव्यक्ति करते हैं। यह व्यवहारिक अध्ययन क्षेत्र एक प्रकार से छात्राध्यापकों के अन्दर छिपी कलाओं, प्रतिभाओं को प्रदर्शित कर निखारने का एक मंच भी है।

f'k{kk d fy, ukVd d nk jpukRed lkekU; mnns'; g&

1- छात्राध्यपकों द्वारा नाटक की प्रक्रिया का उपयोग कर अपने वर्तमान को जाँचते हुए नवीनतम ज्ञान को अद्यतन कर समझ बनाना तथा उनकी अवधारणा विकसित करना।

2. रंगमंच के कौशल में दक्ष किया जाये ताकि सृजनशील शिक्षक के रूप में इनका विकास हो सके।

रचनात्मक नाटक एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ एक ही समय में शारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक, रचनात्मक एवं तर्कात्मक विकास संभव है। नाटकों के माध्यम से गुणवत्तायुक्त शिक्षण के साथ छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है, अतः शिक्षण में नाटको की उपयोगिता बहुत महत्वपूर्ण है। सीखने–सिखाने के दौरान इस बात पर जोर दिए जाने की आवश्यकता है कि नाटक सिर्फ स्वयं के बारे में या खुद की अभिव्यक्ति के बारे में ही नहीं होता वरन यह एक सामाजिक अनुभव है छात्र शिक्षक समाज और स्वयं के अंर्तसंबंधों के बारे में समझता है। समूह कार्य, समूह का महत्व तथा उसके द्वारा प्राप्त समझ को आत्मसात कर इसे व्यक्तिगत तथा सामाजिक सन्दर्भों में इसका उपयोग किया जाता है। नाटक का केंद्र बिन्दु छात्र–शिक्षक होता है जहाँ रंगमंच के माध्यम से उसकी रचनात्मक क्षमताओं को गढ़ा जाता है।

fof'k"V mn~ns'; **(Specific Objectives)** %&

- व्यावहारिक अभ्यास के माध्यम से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, तार्किक एवं भावनात्मकता का विकास करना।
- एकाग्रता एवं कल्पनाशक्ति को बढ़ाना। कल्पना को शारीरिक अभिव्यक्ति के द्वारा समन्वित कर प्रस्तुत करना।
- अपने नजरिये एवं दृष्टिकोण को चुनौती देना और उसे बदलना सीखना।
- स्वयं की रचनात्मक संभावनाओं को पहचानना और उन्हें विकसित करना।
- प्रारम्भिक शिक्षा में नाटक को शिक्षा के अंग के रूप में मान्यता देना।
- नाटक के लिए उन क्षेत्रों की पहचान करना सीखना जो सर्वाधिक अनुकूल, उपयुक्त हो।
- चुनी हुई थीम के माध्यम से यह पता लगाना एवं सीखना कि समूह नाटक के द्वारा कक्षा में कितना अधिगम रहा है।
- नाटक द्वारा सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका एक सृजनात्मक मार्गदर्शक के रूप में खोजना। रंगमंच वह स्थान है जहाँ जीवन के विविध रंग, रूप आकार लेते हैं। मन और आत्मा के भाव एक देह से निकलकर दूसरे देह में जा समाते हैं। रंगमंच शिक्षा में सबसे शक्तिशाली कला का रूप हैं। स्व की खोज, स्व की समझ का विकास, आलोचनात्मक दृष्टिकोण, सहानुभूति आदि गुणों का विकास रंगमंच के माध्यम से आसानी से हो सकता है।

रंगमंच एक विशेष कला है जो कि अभिनय कला के विभिन्न तत्वों पर आधारित है जिसमें संगीत, नृत्य, अभिनय, शारीरिक भाव भंगिमा तथा पृष्ठभूमि से जुड़े दृश्यों की अनेक गतिविधियाँ होती है और इनको सृजनात्मक ढंग से किया जा सकता है। इस वजह से बच्चों के साथ सामूहिक रूप से कार्य करने की बहुत सी संभावनाओं व अवसरों को तलाश किया जा सकता है। हम समझ चुके हैं कि व्यक्ति जन्म से कलाकार या विद्वान नहीं होता। यह हमें अलग–अलग कार्यों को करने के लिए मिलने वाले अवसर ही है जो हमारे अन्दर निहित रुचियों और कलाओं को असली आकार देने में सहायता करते हैं।

bdkbZokj vadksa dk foHkktu %

l Ø-	bdkbZ	fo"k;	ckg; eY;kadu vad	vkUrfjd eY;kadu vad	dqy vad
1	1	नाटक की अवधारणा, प्रकार, गतिविधियाँ, कार्ययोजनाएं	12	12	24
2	2	ललित कला की अवधारणा, प्रमुख प्रकार, चित्रकला, हस्तकला, लोककला।	13	13	26
		dqy vad	25	25	50

bdkbZ 1 & ukVd dh vo/kkj.kk] izdkj] xfrfof/k;k] dk;Z ;kstuk,¡&

jpukRed ukVd % egRoiw.kZ {ks= %&

1. जीवन को समझना। जीवन से सीखना, इसके अभ्यास के लिए शिक्षक द्वारा गतिविधियों का आयोजन करना और बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव से गुजारना।
2. सामाजिक विभिन्नताओं एवं विषमताओं एवं विशेषताओं को पहचानना और दूसरों के सन्दर्भ में स्वयं को रखकर देख पाना।
3. अपने अवलोकन को पैना बनाना और समान परिस्थिति को विभिन्न दृष्टिकोण से देखने की क्षमता विकसित करना।
4. सामान्य दिखाई देने वाली परिस्थितियों को व्यापक सन्दर्भ में समझना।
5. रोजमर्रा के जीवन में होने वाले परिवर्तन के कारण और उनके परिणामों की पहचान करना।
6. कक्षा की खोजों और उसके बाहर की दुनिया की परिस्थितियों और घटनाओं से जुड़ाव का विश्लेषण और उस पर लगातार अपनी प्रतिक्रिया देना सीखना।

jpukRed ukVd dh xfrfof/k;k¡

- नुक्कड़ नाटक : सामाजिक, शैक्षिक, मूल्य आधारित
- एकल अभिनय
- एकांकी
- नृत्य नाटिका
- लोक नाट्य
- इंटर्नशिप के दौरान कक्षा शिक्षण के समय पाठ आधारित नाटकों का मंचन छात्रों से करवाएँ।

- इंटर्नशिप के दौरान पाठ पर आधारित कहानियों को नाटक में प्रस्तुत करने छात्रों को प्रोत्साहित करें
- नाटकों में तकनीक का उपयोग कर प्रस्तुति करना देना।

b.dkbZ & 2 & yfyr dyk % vkfpR; vkj y{;

ललित कला का उद्देश्य विभिन्न कलाओं, क्राफ्ट, संस्कृति, सौन्दर्यबोध, स्वास्थ्य और आजीविका के बीच के अर्न्तसम्बन्धों को समझना है। साथ ही लोक कलाओं एवं शास्त्रीय विधाओं का प्रदर्शन और उनका आदान प्रदान कर कला प्रक्रिया, उत्पाद एवं प्रदर्शनों के विभिन्न आयामों के साथ जुड़ना एवं उन्हें सराहना भी है।
कला रूपों के माध्यम से छात्र और शिक्षकों में सौंदर्यबोध और गुणवत्ता पूर्ण जीवन के अनिवार्य पक्ष के रूप में सौन्दर्य एवं सामंजस्य को पहचानने की क्षमता विकसित होती है।

fof'k"V mn~ns'; (**Sepecific Object**)

- विभिन्न ललित कलाओं की समझ विकसित करना एवं कक्षा शिक्षा से जोड़ना।
- ललित कला के विभिन्न रूपों की सराहना करना एवं शिक्षा के आधार के रूप में कला को जानना।
- परम्परागत कला के प्रकारों को समझना और स्वयं कार्य करना।
- दृश्य कला एवं हस्तकला का उपयोग करते हुए कला कृतियों को बनाना एवं प्रदर्शन करना।
- मेला/जन उत्सव में विभिन्न कलाओं के प्रदर्शन हेतु प्रोजेक्ट तैयार करना।
- स्वयं का मूल्यांकन एक कलाकार और कला शिक्षक के रूप में करना।
- ललित कला के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने हेतु अवसर प्रदान करना।
- प्रदर्शनकारी कलाओं की प्रस्तुति हेतु बाल मेला/प्रदर्शनी का आयोजन करना
- कला शिक्षा की मौजूदा प्रक्रियाओं की समालोचना करते हुए परिवर्तन के लिए संभावित परिदृश्य को विकसित करना।

yfyr dyk %

1. किसी हस्तकला दीर्घा, कला संग्रहालय, जैसे स्थानों का भ्रमण करना और इस अनुभव के बारे में समूह में चर्चा करना।
2. छोटे समूहों के साथ हस्तकला, जनजातीय कला और संगीत के अभ्यास आयोजित करना तथा उन पर चर्चा करना।
3. विविध कला माध्यमों का उपयोग करते हुए कला कृतियों की रचना करना जैसे : पानी, कागज़, क्रियॉन, आइल पेंट, केनवास आदि के माध्यम से लाइन, रूप, संयोजन, रंग, स्थान विभाजन आदि के बारे में सीखना, स्वतंत्र चित्र बनाना, कोलाज़ बनाना, चित्रकला बनाना।
4. ''सिनेमा एक कला के रूप में मूल्यांकन करना, सीखना और हमारे जीवन पर इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रभाव को समझना।

5. सामाजिक एवं शैक्षणिक मुद्दों पर आधारित चर्चित वैकल्पिक फिल्मों को दिखाकर उन पर चर्चा करना।
6. भाषा साहित्य एवं प्रदर्शन कलाओं से जुड़ाव बनाना, विविध भाषाओं में कविता, कहानी, आदि को एकत्रित कर उनका पठन करना।
7. नाटक और साहित्य को पढ़ना और उनका आनन्द लेना।
8. वास्तु विरासत की गहरी समझ विकसित करना। स्थानीय ऐतिहासिक इमारतों का भ्रमण करना और उनमें निहित सौंदर्य शास्त्र का मूल्यांकन करना।

l=xr dk;l ¼**Assignment**½

- परिवार में प्रचलित ऐसी परंपराओं की जानकारी एकत्र करें जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है।
- अपने अंचल में प्रचलित मांडना, गोदना, मेहंदी, महावर आदि में उपयोग की जाने वाली आकृतियों की सूची बनाएँ, उनके चित्र एकत्रित करें।
- अपनी रुचिनुसार मांडना, गोदना, महावर आदि को कॉपी में बनाएँ। आप उनमें किस तरह की विविधता लाना चाहेंगे?
- आपके क्षेत्र में उपस्थित सांस्कृतिक धरोहरों (वास्तुकला या मूर्तिकला के) की सूची बनाएँ।

vrj.k d rjhd **(Mode of Transaction)**

- रंगमचीय अभ्यासों के द्वारा सम्वेदनाओं को जाग्रत करना।
- अभिनय करते हुए सामूहिक सहभागिता को सीखना।
- अनुभवों के आधार पर नाटकों को तैयार करना और उन्हें सामाजिक जागरूकता से जोड़ना।
- छात्रों में ऐसे कौशलों का विकास करना जिससे वे स्वयं नाटक तैयार कर सकें।
- आदर्श नाट्य प्रणाली– इंटर्नशिप के समय संपूर्ण पाठ को हावभाव एवं भाव भंगिमाओं के माध्यम से पात्रानुसार आरोह अवरोह के साथ पठन।
- कक्षाभिनय प्रणाली – हिन्दी पाठयोजना देते समय छात्र/छात्राओं को विविध पात्रों के रूप में उचित भाव के साथ पढ़ने को प्रेरित करना ।
- रंगमंचीय प्रणाली – पाठ की कथावस्तु का स्पष्टीकरण पात्रों का चरित्र चित्रण विविध भावों एवं अनुभूतियों की विवेचना के साथ रंगमंच पर प्रदर्शन
- समूह में समन्वय के साथ काम करना और शारीरिक संयोजन पर काम करना जैसे – राक्षस की नकल करों ।
- लिखे हुए शब्द से निरूपित वस्तु को पहचानों और उसकी तस्वीर बनाओ– कल्पना शक्ति और सृजनशीलता को प्रेरित करना

- सुनो और स्वांग करो – छात्राध्यापकों को कोई कहानी सुनाएँ और विभिन्न शब्दों को सुनने पर अलग–अलग शारीरिक गतिविधि कराएँ
- विभिन्न मनोभावों को शरीर का उपयोग एवं शब्द और वाक्यों के माध्यम से प्रदर्शित करना ।

I|>kokRed I|nHk I|ph &

1. एन.सी.एफ. 2000, एन.सी.एफ. 2005, NCERT न्यू दिल्ली
2. आधार पत्र– कला शिक्षा
3. दिवास्वप्न गिजूभाई बधेका NCERT न्यू दिल्ली
4. कला कारीगरी की शिक्षा– गिजू भाई बधेका का भाग– 1,2
5. हर दिवस कला दिवस – डॉ. पवन सुधीर वीडियो NCERT
6. बेसिक एज्यूकेशन – बेनीप्रसाद
7. शिक्षा का वाहन कला – देवीप्रसाद
8. बच्चों के लिए खेल– क्रियाएँ – मीना स्वामीनाथन
9. लोक संस्कृति – बंसन्त निरगुणे
10. प्रतिमा विज्ञान – डॉ. इन्दुमती मिश्र (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी)
11. कला चित्रकला – विनोद भारद्वाज (प्रवीण प्रकाशन)
12. कला एवं तकनीक – डॉ. अविनाश ब. वर्मा, अमित वर्मा
13. हस्तशिल्पों की धरोहर राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र
14. आधार पत्र 1.7 और 1.8 NCERT
15. ललित कला 2009 (राष्ट्रीय मानव संग्रहालय)
16. मध्यप्रदेश का इतिहास एवं संस्कृति – डॉ.एस.एल. वरे (कैलाश पुस्तक सदन भोपाल)
17. भारत की चित्र कला की कहानी – डॉ. भगवत शरण उपाध्याय (राजपाल एण्ड संस दिल्ली)
18. भारतीय संगीत की कहानी – डॉ. भगवत शरण उपाध्याय (राजपाल एण्ड संस दिल्ली)
19. लर्निंग कर्व – कला स्कूल शिक्षा में
20. कुछ–कुछ बनाना – एन. सायर वाइजमैन – (एकलव्य प्रकाशन)
21. शिक्षण सहायक सामग्री – मेरी ऐन दास गुप्ता (अनुवाद अरविन्द गुप्ता)
22. कला शिक्षा शिक्षण – डॉ. प्रभा शर्मा
23. चित्रकला के मूलतत्व – राजहंस प्रकाशन
24. कला से सीखना – जेन साही एवं रोशन साही (एकलव्य प्रकाशन)
25. मध्यप्रदेश सम्पूर्ण अध्ययन – डॉ. शादाब अहमद सिद्दीकी ।
26. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
27. ICT दिल्ली के कला शिक्षा के समस्त विडियो जैसे– कहानी एनिमेशन, कठपुतलीकला आदि।

Mh-,y-,y iFke o"k

cPpk dk 'kkjhfjd] HkkoukRed LokLF; vkj f'k{kk

Children's Physical - Emotional, Health, and Health Education

0;kogkfjd&3

i.kkd vd &25

ckg; vd & 25

vkUrfjd vd & 50

vkfpR; ,o mnn; (Rationale and Aim)

इस एक वर्षीय व्यवहारिक पाठ्यक्रम की संरचना प्रारम्भिक विद्यालयों के बच्चों के शारीरिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य के विकास हेतु किया गया है। पाठ्यक्रम में शिक्षा, संवेग और स्वास्थ्य के मूल अन्तर्सम्बन्धों को जोड़कर बताया गया है। बच्चों को ध्यान में रखकर छात्राध्यापक में संवेग और स्वास्थ्य विकास हेतु शिक्षा के योगदान को पूर्णतः मान्यता दी गई है। पाठ्यक्रम में शिक्षा और स्वास्थ्य के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों को प्रदर्शित किया गया है। अच्छा स्वास्थ्य अधिगम हेतु आवश्यक शर्त होने के साथ ही प्रत्येक बच्चे को मूल अधिकार भी हैं। कक्षाओं में नामांकन, ठहराव, ध्यानकेन्द्रण और अधिगम परिणाम बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य और संवेगात्मक विकास होने के साथ मजबूत सम्बन्ध रखता है।

स्वास्थ्य में केवल रोगाणुओं और व्याधियों से मुक्ति ही नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य के सामाजिक, आर्थिक, संवेगात्मक और शारीरिक पक्षों की समझ से परिपूर्ण है। शिक्षक को बच्चों के स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों को खोजकर स्वास्थ्य शिक्षा की जड़ें बच्चों में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में जमानी होंगी। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य शिक्षक को स्वयं और बच्चों दोनों के स्वास्थ्य मुद्दों की आर्थिक और सामाजिक परिपेक्ष्य में निर्धारित समझ विकसित करना है। केवल शिक्षक की अभिवृत्ति के बारे में कहने के बजाय यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापक को असमान और विविध प्रकार के बचपन और बाल–अनुभवों को समझने के अवसर देता है।

fof'k"V mnn'; % (Specific Objectives)

- स्वास्थ्य और कल्याण की अवधारणाओं की सम्पूर्ण समझ बनाना तथा सामाजिकता निर्धारण फ्रेमवर्क का उपयोग करते हुए बच्चों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को समझना।
- स्वास्थ्य और शिक्षा के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों को समझना तथा स्वास्थ्य मामलों में शिक्षकों के योगदान को समझना।

- प्रारंभिक शालाओं में संचालित विशिष्ट बाल–स्वास्थ्य कार्यक्रमों का परीक्षण करना।
- स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा में शिक्षण के ज्ञान और कौशल का विनिर्माण करना तथा अध्यापक शिक्षा के अन्य पाठ्यक्रमों और स्कूल विषयों के प्रसंगों से एकीकृत करना।
- प्रायोगिक कार्यों के माध्यम से स्कूल/कक्षा की वास्तविक यथार्थताओं से सैद्धान्तिक और अवधारणात्मक अधिगम को जोड़ना।

पाठ्यक्रम की सबसे महत्वपूर्ण बात शिक्षा और स्वास्थ्य के अन्र्तसम्बन्धों की समझ स्थापित करना और वे किस प्रकार बच्चें की स्वास्थ्य आवश्यकताओं के साथ जुड़ती हैं, बताना है। पाठ्यक्रम की विषयवस्तु शारीरिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य शिक्षा और कल्याण को प्रत्येक बच्चे के मूल अधिकार के रूप में जोड़ती है।

bdkbZokj vad foHkktu

सं क्र.	इकाई	विषय	अंक
1	1	स्वास्थ्य एवं कल्याण की समझ	8
2	2	बच्चों के स्वास्थ्य की समझ	9
3	3	विद्यालय के संदर्भ में बच्चों का स्वास्थ्य	8
		vkarfjd vad	25
		dqy vad	50

bdkbZokj foHkktu&

bdkbZ 1- LokLF; ,oa dY;k.k dh le>

- स्वास्थ्य एवं कल्याण का अर्थ
- जैवचिकित्सीय बनाम सामाजिक स्वास्थ्य प्रतिमान
- दरिद्रता, असमानता एवं सेहत के अंतर्सम्बन्ध की समझ
- सामाजिक स्वास्थ्य के कारण एवं निर्धारक तत्व–स्तरीकृत संरचना, भोजन, आजीविका, ठिकाना, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच ।

bdkbZ 2- cPpksa ds LokLF; dh le>

- स्वास्थ्य और शिक्षा के बीच संबंध

- बाल्यावस्था और स्वास्थ्य, भूख और कुपोषण अर्थ और उपाय, देश और राज्य की स्थिति
- मृत्यु/रूग्णता चित्रण – विधियाँ, अवलोकन, दैनिक टिप्पणी
- बच्चों के स्वास्थ्य की अनुभूति, स्वयं के स्वास्थ्य के आकलन को समझने की विधियाँ

bdkbl 3- fo|ky; d lnHk e cPpk dk LokLF;

- मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम, औचित्य, उद्देश्य, घटक
- कार्य पद्धति, कक्षा की जिज्ञासा की अवधारणा
- शालेय स्वास्थ्य का मापन– जल, स्वच्छता एवं शौचालय इत्यादि संबंधी मुद्दे
- कार्यक्रमों की संस्कृति की संकल्पना
- शिक्षक की भूमिका एवं कार्यक्रम संबंधी वचनबद्धता
- बच्चों में भोजन, कार्य, खेल, मध्यान्ह भोजन संबंधी बोध

अध्ययन की इकाईयों वाला खण्ड, प्रत्येक पाठ्यवस्तु के अन्तरण की प्रणाली में इस विचार को शामिल करता है कि पाठ्यक्रम के भीतर सैद्धान्तिक अध्ययन के साथ–साथ प्रायोगिक कार्य भी समाहित हों।

l=xr dk;l **(Assignment)** % कोई तीन

प्रायोगिक कार्य स्कूल इन्टर्नशिप प्रोग्राम (SIP) के साथ जुड़ा है। इन्टर्नशिप के पहले तीन घण्टे और बाद में छः घण्टे। इंटर्नशिप के पहले इसमें चर्चा, मार्गदर्शन और इन्टर्नशिप के दौरान प्रोजेक्ट हेतु इनपुट और इंटर्नसिप के बाद कार्यशाला के रूप में इन पर चिन्तन चर्चा होती है, जिसमें छात्राध्यापक अपने प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी साझा करते हैं। प्रोजेक्ट के बारे में कुछ प्रकरण दिये गये हैं जो छात्रों को आवंटित किये जा सकते हैं। इन्टर्नशिप के पूर्व प्रकरण का विचार और उसके औचित्य, शोध–प्रणालियों और उपकरणों पर चर्चा होगी। प्रत्येक छात्राध्यापक इन्टर्नशिप में जाने के पहले एक प्रोजेक्ट की उपकरणों समेत पूरी योजना तैयार करके ले जायेंगे।

- स्कूल इन्टर्नशिप प्रोग्राम में किये जाने वाले अभ्यास में एक बच्चे का प्रोफाइल तैयार करना और इन्टर्नशिप के दौरान उसके सामाजिक सन्दर्भ को समझने के साथ ही इसे बच्चे के स्वास्थ्य से जोड़कर देखना और सभी संभावित निर्धारकों को समझना। छात्राध्यापक को बच्चे के स्वास्थ्य का अवलोकन कर उसके स्वास्थ्य की परिस्थितियों को समझना है। बच्चे के जीवन से जुड़े सम्भावित स्वास्थ्य निर्धारकों को खोजने के लिए बच्चे का स्वास्थ्य प्रोफाइल तैयार रहना होगा। बसाहट/घर, परिवार की आजीविका गरीबी एवं बचत, खाने की आदतें, पानी की सुलभता, सुरक्षा आदि के मुद्दों का अवलोकन, अनौपचारिक समूह–चर्चा एवं समुदाय में भ्रमण के द्वारा खोजना होगा। संकाय सदस्य इन्टर्नशिप से

पहले छात्राध्यापकों को पद्धतियों, नैतिक मुद्दों, सवाल करते समय संवेदनशीलता आदि के बारे में दिशा–निर्देश देंगे।

- रुग्णता का पता लगाने के लिए अभ्यास करेंगे। इसमें छात्राध्यापक बच्चों की उपस्थिति को चिन्हित करेंगे और बच्चे की अनुपस्थिति के कारणों को पता लगाने का प्रयास करेंगे। वह बच्चों/साथियों के द्वारा बताई गई बीमारियों को दर्ज कर एक स्वास्थ्य रिपोर्ट कार्ड तैयार करेंगे।
- छात्राध्यापक स्कूल के स्वास्थ्य के लिए भी एक रिपोर्टकार्ड तैयार करेंगे। इन्टर्नशिप के दौरान पानी, शौचालय, सफाई, भवन खेल का मार्ग आदि मापदण्डों के आधार पर सर्वे करेंगे। इसके माध्यम से छात्राध्यापक को प्रत्येक मापदण्ड (जिससे बच्चों के स्वास्थ्य पर असर पड़ता है) के विभिन्न आयामों की खोज करना बताना है। उदाहरण के लिए केवल यह पूछना पर्याप्त नहीं है कि स्कूल में शौचालय है? बल्कि यह जानना भी जरूरी है कि वह काम कर रहा है? क्या साफ–सुथरा है? क्या उसमें पानी उपलब्ध है? आदि। छात्राध्यापक विकसित उपकरणों का उपयोग करते हुए अवलोकनों को दर्ज करेंगे।
- छात्राध्यापक स्कूल में चल रहे स्वास्थ्य कार्यक्रमों को बताते हुए मध्यान्ह भोजन के बारे में बच्चों की अवधारणाओं को समझने के लिए रचनात्मक कार्य प्रणालियों का उपयोग करेंगे। वे मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों (जैसे– खाने की मात्रा, गुणवत्ता वितरण व्यवस्था, खाने की तहजीब आदि) का अवलोकन करें और उस पर टिप्पणी करें। साथ ही मध्यान्ह भोजन पर बच्चों की अवधारणाओं (जैसे– खाने में क्या पसन्द है? क्या नहीं?, स्कूल आने के पहले क्या खाते हैं? भूख लगने पर पढ़ाई कर पाते हैं? आदि) को औचित्व प्रदान करना। यह सब साक्षात्कार से पता नहीं लग सकता बल्कि इसके लिए रचनात्मक वर्कशीट भरवानी होगी। इकाई दो में इसे इंटर्नशिप से पहले छात्राध्यापकों के दिशानिर्देश में तैयार किया जायेगा।
- इकाई 3 व 4 के अन्तर्गत इंटर्नशिप में जाने से पहले छात्राध्यापकों को चुने हुए स्वास्थ्य प्रसंगों को अन्य विषयों के साथ जोड़कर उन पर आधारित सामग्री/गतिविधियां/रणनीतियां बना लेना चाहिए। चुनी हुई प्रकरण या अवधारणा पर स्वास्थ्य शिक्षा की पाठयोजना तैयार कर इन्टर्नशिप के दौरान कक्षा में पढ़ानी चाहिए। स्वास्थ्य थीम से सम्बंधित विचार और सामग्री की पुष्टि हेतु शोध करके निम्नलिखित पर चिंतनशील रिपोर्ट बनानी चाहिए :
    - योग – सिद्धान्त और आधारभूत आसन सीखना,
    - एथलेटिक्स
    - कोर्ट चिन्हांकन और टूर्नामेंट का आयोजन, आदि।

    (यह रिपोर्ट आन्तरिक आकलन का एक हिस्सा होगी।)
- इकाई 5 पर आधारित प्रायोगिक कार्य, बेसिक कसरतें, ड्रिल, गतिविधियां और टीम के खेल (जैसे– खो–खो, कबड्डी, थ्रोबॉल, वॉलीबॉल, फुटबॉल आदि) डाइट स्तर पर सीखा/किया जाएगा। छात्राध्यापक को इन्हें करने की बेसिक पद्धतियों और तकनीकों का ज्ञान होना चाहिए। इंटर्नशिप के

दौरान छात्राध्यापकों को विद्यालय में शारीरिक शिक्षा से सम्बंध में हो रही गतिविधियों (जैसे– क्या खेलने के लिए पर्याप्त स्थान/उपकरण या सामान है?/ बालिका/बालक समान रूप से भाग लेते हैं? खेलों में तहजीब क्या है? क्या बच्चों को खेल में छोड़ दिया जाता है या शिक्षक भी सक्रिय हैं? विशेषज्ञ आवश्यकता वाले बच्चों के लिए क्या व्यवस्था है? आदि) का अवलोकन करना चाहिए तथा छात्राध्यापकों को परम्परागत और नये खेलों में विद्यार्थियों को शामिल करना चाहिए।

(छात्राध्यापकों को अपनी रिपोर्ट और निष्कर्षों को लिखना चाहिए, शिक्षक–प्रशिक्षकों को चर्चाओं के माध्यम से विभिन्न उन पर परामर्श देना होगा जिसमें शारीरिक शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए स्थान की कमी, आदि उत्पन्न बाधाओं के मामले में नवाचार द्वारा कक्षाओं का भली प्रकार से मार्गदर्शन हो सके।)

प्रायोगिक कार्य को छात्राध्यापकों के बीच बांटा जा सकता है। इसमें प्रत्येक शिक्षक इसे ई.टी.ई. शिक्षकों की बड़ी कक्षा में जरूर साझा करें। इसमें स्वास्थ्य अवलोकनों, प्रयोग की जाने वाली पद्धतियों, निष्कर्षों कार्यक्रमों की संस्कृति आदि पर चर्चा करके क्या सम्भावित कार्रवाई की जा सकती है पर चर्चा की जा सकती है। प्रोजेक्ट केवल बच्चों के स्वास्थ्य पर सूचनाएं एकत्र करना नहीं है बल्कि स्वास्थ्य के प्रति संवेदना और अन्वेषण और सीखने की प्रक्रिया से उसके जुड़ाव को मन में बिठाना है।

vrj.k dh fof/k;k **(Mode of Transaction)**

आवश्यकतानुसार छात्राध्यापक खेल, योग, पीटी, जैसी गतिविधियाँ मैदान में संचालित करेंगे।

- चार्ट कैलेण्डर, मॉडल, आदि के माध्यम से विषयांशों का शिक्षण आवश्यकतानुसार दिया जाएगा।
- हाथों की धुलाई का प्रदर्शन छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा।
- प्राथमिक चिकित्सा पेटिका का ज्ञान छात्राध्यापक को दिया जाना तथा उनसे तैयार कराए जाने का अभ्यास कराया जाना है।
- स्वास्थ्य सेवाओं, सफाई सेवाओं, वृद्धाश्रम, निःशक्तजन को संरक्षित करने वाली संस्थाओं का अवलोकन करना एवं संबधित स्थानों पर जाकर उनकी कार्यपद्धति को जानना और छात्राध्यापकों को इन सबके द्वारा प्रयत्नशील बनाने का प्रयास करना।
- पाठ्यक्रम के उपरोक्त विषयों पर छात्राध्यापकों के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद के लिए विषय की मांग के अनुसार वाद–विवाद, परिचर्चा, ड्रॉइंग, पेटिगं, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना।
- योग, खेल, पी.टी. (व्यायाम) का निरंतर अभ्यास डाइट प्रशिक्षण में सुबह के सत्र में कराया जाए, जिसका छात्राध्यापक इनके लिए अभ्यस्त हो सकें।

Lk>kokRed lnHk xFk lph

- आओ कदम उठाएं : एक सहायक पुस्तिका, USRN-JNU. New Delhi. (A resource tool/book for schools to address issues of health infrastructure and programme)
- Deshpande, M. Et al. (2008), The Case for Cooked Meals: Concerned Regarding Proposed Policy Shifts in the Mid-day Meal and ICDS Programs in *Indian Pediatrics*, pp 445-449.
- Dasgupta, R., et.al. (2009). Location and Deprivation: Towards an Understanding of the Relationship between Area Effects and School Health, Working paper, USRN - JNU.
- Samson, M., Noronha, C., and De, A (2005), Towards more benefits from Delhi's Mid-Day Meal Scheme; in Rama V Barn (ed.) *School Health Services in India: The Social and Economic Contexts*, Sage; New Delhi.
- Agarwal, P. (2009). Creating high level of learning for all students together. *Children First*, New Delhi. (Hindi and English).
- Ashtekar, S. (2001). *Health and Healing: A Manual of Primary Health Care*, Chapters 1, 3, 7
- Iyer, Kirti (2008). *A look at Inclusive Practices in Schools.* Source RRCEE, Delhi University.
- Sen, S. (2009). *One size does not fit all children.* Children First, NewDelhi. (Hindi and English)
- Shukla, A. And Phadke, A. (2000). Chapter 2, 3, 4, 6 and S.6 TR-6RTTafr: 6FT 1 Pune: Cehat

(http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

शिक्षण अभ्यास एवं शाला इंटर्नशिप

(Teaching Practice and School Internship)

व्यावहारिक

पूर्णांक – 100

समय अवधि– 4 सप्ताह	बाह्य अंक – 50
दिवस –24	आंतरिक अंक – 50

औचित्य एवं उद्देश्य – (Rationale and Aim)

शिक्षण अभ्यास के अंतर्गत शाला आधारित गतिविधियों के प्रारूप की रचना की जाती है ताकि छात्राध्यापक **(Student-Teacher)** सैद्धांतिक विषयों से व्यावहारिक रूप से जुड़ सके तथा उसे शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के परिप्रेक्ष्य में मदद मिल सकें और प्राप्त पूर्व ज्ञान और अभ्यास की क्रमबद्ध संरचना उनके शिक्षण को प्रभावशाली रूप से सक्षम बना सकें। शाला इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे अपने मेंटर/सहपाठियों की कक्षा शिक्षण प्रक्रिया का अवलोकन करे जिससे उनमें छात्रों के व्यवहार, अनुशासनात्मक अभ्यास, छात्र अधिगम वातावरण और कक्षा प्रबंधन के प्रति अंतःदृष्टि का विकास हो सके। छात्राध्यापकों से आशा की जाती है कि वे अभ्यास के दौरान समालोचनात्मक चिंतन एवं विचार विमर्श करे और अपने को शाला के अभिलेखों के रख–रखाव, पाठ योजनाओं के निर्माण, इकाई योजना के निर्माण, तकनीकी **(ICT)** का उपयोग करते हुए कक्षा प्रबंधन, शाला-समुदाय-पालक के हस्तक्षेपों से संबंधित गतिविधियों में संलग्न रखकर स्वयं के विकास एवं शिक्षण अभ्यास के व्यावसायिकरण पर चिंतन करें।

शाला आधारित गतिविधियों के अंतर्गत इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान किया जाने वाला अन्य प्रमुख कार्य पाठ योजनाएँ एवं इकाई योजनाएँ का प्रस्तुतीकरण है जिसके लिए प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में अलग से निर्दिष्ट किया गया है।

इंटर्नशिप अवधि के दौरान की गई समस्त गतिविधियों को पोर्टफोलियो एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल में प्रस्तुत किया जायेगा। छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे इंटर्नशिप के दौरान अपने द्वारा की गई समस्त गतिविधियों के अनुभवों का, अवलोकनों का एवं निष्कर्षों का रिकार्ड संधारित करेगें। रिफ्लेक्टिव जर्नल में की गई प्रविष्टियाँ विश्लेषणात्मक होनी चाहिए जैसे– पूर्व समझ के आधार पर क्या नया और भिन्न है, क्यों उसके द्वारा निर्देशों के आधार पर किये गये कुछ अवलोकन, कक्षा प्रबंधन, शिक्षक पालक संघ से समानता या भिन्नता रखते हैं। ये अवलोकन कैसे आलोचना पर आधारित होना चाहिए जिससे उसके अभ्यास में परिवर्तन आ सके। प्रत्येक छात्राध्यापक (इन्टर्न) का आंकलन उसके द्वारा बनाये गये पोर्टफोलियो एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल में की गई प्रविष्टि के आधार पर किया जायेगा।

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम का e[[; mn~ns'; छात्राध्यापक को यह अवसर उपलब्ध कराना है कि अभ्यासकर्ता के रूप में उसे vFkkZiw.kZ f'k{k.k vuqHko प्राप्त हो सके। इस धारणा के आधार पर शाला इंटर्नशिप की योजना इस प्रकार बनाई जाए जिसमें 'kkyk RkFkk f'k{kd iwf'k{k.k laLFkkuksa d s e/; HkkxhnkjH (Partnership) हो सके। छात्राध्यापक को शालेय गतिविधि में एक fu;fer f'k{kd की तरह सक्रिय भागीदारी करते हुए स्वयं को शाला के सभी कार्यों से जोड़ना चाहिए परन्तु इसके साथ यह प्रावधान भी होना चाहिए कि एक vH;kldrk d s :i e s mldh Hkwfedk jpukRed gksA इंटर्नशिप शाला के द्वारा उसे आवश्यक भौतिक स्थान के साथ–साथ नवाचार हेतु 'k{kf.kd Lora=rk भी दी जानी चाहिए। यह आवश्यक है कि iwLrkfor ikVîujf'ki EkkMy }kjk bVuf'ki 'kkyk dks Hkh ikIr gksu okys ykHkksa ij /;ku dsfnzr djrs gq, p;fur fd;k tk,A

यह कार्यक्रम iw.kZr% {ks= vk/kkfjr है, इसमें छात्राध्यापकों को सीधे समस्याओं से जूझते हुए सीखने का अनुभव मिलेगा। इंटर्नशिप कार्यक्रम के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए छात्राध्यापकों को एक fpUru'khy f'k{kd के रूप में ज्ञान के आधार पर बच्चों से जुड़ने, बच्चों के प्रति उसकी समझ और कक्षागत प्रक्रिया, सैद्धांतिक शैक्षणिक विचारों, रणनीतियों एवं कौशलों को क्रम से विकसित करने की आवश्यकता होगी तभी Nk=k/;kid dks d{kk e s i<k x, l S)kfUrd fopkjksa dks 'kkyk e s ij[kus d s volj feysaxsA

शाला इंटर्नशिप एक f}o"khZ; dk;Øe है। प्रत्येक वर्ष में छात्राध्यापकों से vyx&vyx अपेक्षाएँ हैं। iFke o"kZ में छात्राध्यापक का परिचय शाला से, शाला के वातावरण से, बच्चों को समझने से तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समझने से होगा। f}rh; o"kZ में छात्राध्यापक एक नियमित शिक्षक की भांति कार्य करेगा। यहाँ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के vdknfed lgijokbtj laokn और ppkZ के आधार पर ekxZn'ku और QhMcSd देकर उसकी सहायता करेंगे।

fof'k"V mn~ns'; **(Specific Objectives)**

- cPpksa और f'k{k.k vf/kxe izfØ;k का व्यवस्थित रूप से अवलोकन करना।
- बच्चों से lkeatL; और laokn बनाना।
- बच्चों के विकास और शैक्षणिक दृष्टिकोण के संदर्भ में शाला की पाठ्यपुस्तकों और अन्य संसाधन सामग्री का समालोचनात्मक मूल्यांकन करना।
- विभिन्न स्त्रोत सामग्री का ऐसा विविध संग्रह विकसित करना जिसे छात्राध्यापक बाद में अपने शिक्षण के दौरान प्रयोग कर सकें जैसे– पाठ्यपुस्तक, बाल साहित्य, खेल और गतिविधियाँ, भ्रमण इत्यादि।
- किसी एक अधिगम केन्द्र पर जाकर अभ्यास पर समालोचनात्मक चिंतन करना।
- d{kk 1 ls 5 rd ds cPpksa ds 'kkyk fo"k;ksa ds f'k{k.k esa lgHkkfxrk djukA

dk;Øe ds fuEu ?kVdksa ls mijksDr mn~ns';ksa dks iwLrkfor vf/kHkkj ds lkFk ikIr fd;k tk ldrk gSA

- छात्र प्रोफाइल विकसित करना – 10%
- पाठ्य पुस्तको और अन्य सामग्रियों का समालोचनात्मक विश्लेषण करना – 15%
- स्त्रोत सामग्री का विकास – 30%
- छात्रों के साथ बातचीत करना और उनका अवलोकन करना – 30%
- अधिगम केन्द्र का भ्रमण और रिपोर्ट करना – 15%

iFke o"k

bVu djx&

<u>'kkyk bVuf'ki& f'k{kd if'k{kdks d fy;s fun'k</u>

1. 'kkyk dh एवं 'kkyk d fo|kfFk;k की विशिष्ट विशेषताओं को समझने के लिये ikQkby तैयार करें। प्रोफाइल सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, अभिरूचि, विशेष अधिगम आवश्यकताओं स्वास्थ का स्तर, मध्यान भोजन, स्कूल स्वास्थवर्धक कार्यक्रम और बुनियादी ढाँचे के आधार पर तैयार की जाये। bl ikQkby dk LokLFk vkj 'kkfjfjd f'k{kk d l=xr dk;l d :i e eY;kdu fd;k tk;xkA
2. कक्षा में प्रयोग करने से पहले किसी एक स्त्रोत सामग्री (पाठ्यपुस्तक सहित) का lekykpukRed fo'y"k.k करें। पाठ विश्लेषण में fyx] /ke] tkfr और lenk; की रूढ़िवादी सोच के आधार पर आकलन किया जायें।
3. अपनी सामग्री की रिपोर्ट स्वयं विकसित करें जिसमें cky lkfgR;] fdrkc] idk'kd] lLk/ku और fopkj शामिल होना चाहिए।
4. किसी odfYid 'kkyk में जा कर वहाँ के अभ्यासों का lekykpukRed v/;;u करें, जो d{kk d{k एवं 'kkyk i;koj.k के मुद्दो पर केन्द्रित हो जैसे– मनोवैज्ञानिक, भौतिक एवं सामाजिक, बच्चों से बातचीत, शिक्षकों का शिक्षण अभ्यास । odfYid :i से ऐसे संस्थानों में कार्यरत लोगों को आमंत्रित कर उनकी सहायता लेकर उन संस्थानों की डाक्यूमेंटरी और AV फिल्म भी दिखाई जा सकती है।
5. विद्यार्थियों से बातचीत कर योजना बनाये और उसे लागू करें। एक कक्षा में 2 bVu को रखा जा सकता है जब ,d bVu बच्चों के साथ बातचीत करे तो nljk उसे देखे और अपने अवलोकन को जर्नल में अंकित (Record) करे। i'P; lid l= **(Post Contact Session)** के दौरान लगभग आधी बातचीत का रिकार्ड lijokbt j द्वारा आवश्यक रूप से अवलोकन किया जाये। tuly इंर्टन द्वारा संधारित किया जाये जिससे उसे Lo; को समझने में मदद मिलेगी तथा vf/kxedrk और lkekftd lnHk के प्रति उसकी :f<oknh lkp का पता चलेगा।

eY;kdu

मूल्यांकन fodklkRed idfr का हो जो स्पष्ट रूप से इंटर्न की प्रगति पर केन्द्रित होना चाहिए। जैसे प्रत्येक अवलोकन के माध्यम से vkl r vid (1/10, 3/10, 8/10) देने के बजायें l>kokRed fVIi.kh इंटर्न की ikQkby में जुड़ती चली जायें। यह प्रक्रिया बाद में स्वयं bVu के vH;kl का हिस्सा बन जायेगी।

f}rh; o"k

सैद्धान्तिक विषय

Mh-,y-,M- f}rh; o"kZ

laKku] vf/kxe vkSj cky fodkl

(COGNITION LEARNING AND THE DEVELOPMENT OF CHILDREN)

¼iz'u i=&11½

iw.kkZad &100
cká ewY;kadu & 70
vkarfjd ewY;kadu & 30

1- vkSfpR; ,oa mn~ns'; &¼**Rationale and Objective**½

इस कोर्स का उद्देश्य छात्राध्यापकों में शिक्षण और अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार की समझ बनाना है। इस कोर्स की सहायता से शिक्षकों में शिक्षण अधिगम की समझ बनेगी और कक्षा में इसको उपयोग कर सकेंगे। यह उम्मीद की जाती है कि शिक्षक अनुदेशक बनने की अपेक्षा अधिक से अधिक सहयोगी एंव सुविधादाता बनें।

एक और उद्देश्य यह है कि छात्रों में शोध विधि की समझ बनाना तथा बच्चों के बहु संदर्भों में इसे करके देखना।

2- fof'k"V mn~ns'; ¼**Specific Objectives**½ &

1. छात्राध्यापकों में शिक्षण और अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार की समझ बनाना।
2. चिन्तन की प्रक्रिया को समझना। विभिन्न सिद्धांन्तों/परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से बच्चों में अधिगम को समझना, जो उनके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रतिबिम्बत हों।
3. विकास और सार्वभौमिक सस्ंकृति विभिन्न सिद्धान्त/परिप्रेक्ष्य के योगदान को संपूर्ण रूप से समझना।
4. बच्चों को ध्यान में रखकर सिद्धान्तों को लागू करना/छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना जिससे वे सिद्धांत और वास्तविक जीवन में बच्चों की अंतःक्रिया में संबंध स्थापित करें।
5. सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को समझना।
6. शिक्षा के सिद्धान्तों को समझते हुये छात्र–शिक्षकों को शिक्षण में सक्षम करना।
7. उन कारकों की समझ बनाना जो सीखने में सुविधा प्रदान करते हैं।
9. सीखने के सिद्धान्तों को समझने के लिए छात्र शिक्षक को सक्षम बनाना और उन्हें पाठ्यक्रम नियोजन और पाठ्यक्रम अंतरण के लिए निहितार्थ करना।

छात्र–शिक्षक एक सामाजिक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बच्चों के विकास और सीखने के लिए विभिन्न प्रविधियों की एक महत्वपूर्ण समझ विकसित करता है साथ ही इसमें सामाजिक ऐतिहासिक दृष्टिकोण के साथ–साथ, व्यवहारवाद का सिद्धान्त, संज्ञानात्मक विकास , सूचना प्रविधि आदि भी शामिल है।

इकाई के साथ विकास के प्रत्येक पहलू के महत्व को शामिल करने का प्रयास किया गया। उदाहरण के लिए इकाईयों के साथ–साथ भौतिक विकास, अनुभूति और भाषा विकास के लिए खेल, कला तथा कहानी कहने जैसी गतिविधियों को शामिल करने का सचेत प्रयास किया गया।

3- bdkbZokj vadks dk foHkktu&

क्र.	इकाई का नाम	अंक
1.	अधिगम की अवधारणा एवं प्रक्रिया	10
2.	बचपन में अवधारणा निर्माण एवं चिंतन प्रक्रिया	15
3.	संज्ञान एवं अधिगम	20
4.	भाषा एवं सम्प्रेषण	15
5.	खेल, स्व एवं नैतिक विकास	10
	vkarfjd vad	30
	dqy vad	100

bdkbZ&1 vf/kxe dh vo/kkj.kk ,oa izfØ;k **(Concept and process of Learning)**

अधिगम : अधिगम की अवधारणा एवं प्रकार (गैंग्ने का वर्गीकरण)

- cPpksa ds lh[kus dh izfØ;k % अधिगम एंव स्मृति में सुधार, स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति।
- vf/kxe ,oa Le`fr : स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति, अधिगम का हस्तांतरण व्यवहार के आधारभूत सिद्धान्त एवं शैक्षिक निहितार्थ।
- अधिगम की कठिनाईयों की अवधारणा एवं प्रकार।
- सीखने में व्यक्तिगत और सामाजिक सांस्कृतिक विविधता।

bdkbZ 2- cpiu esa vo/kkj.kk fuekZ.k ,oa fpUru izfØ;k
(Concept Formation and thinking childhood)

vo/kkj.kk fuekZ.k :

- अवधारणा का अर्थ : अवधारणा निर्माण में होने वाली मानसिक प्रक्रियाएँ।

- बचपन में अवधारणाओं के विकास को प्रभावित करने वाले कारक।
- समय, स्थान, कार्य–कारण एवं स्वयं, की अवधारणाओं का विकास।
- अवधारणा अधिगम का ब्रूनर मॉडल।
- पियाजे का मानसिक विकास का सिद्धांत, पियाजे और अन्य मनोवैज्ञानिकों के अवधारणा निर्माण के बारे में विचार।

fpru ,o rd :

- चिंतन की अवधारणा एवं प्रकृति।
- चिंतन के साधन : ध्यान प्रत्यक्षीकरण, छवि, अवधारणा, प्रतीक, चिन्ह, सूत्र।
- चिंतन में अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ।
- चिंतन एवं अधिगम के बीच संबंध।

bdkb 3- lKku ,o vf/kxe **(Cognition and Learning)**

- fuekk.kokn : अवधारणा का परिचय, पियाजे का सिद्धान्त, अधिगम क्या है, संज्ञानात्मक विकास की संरचनाएं एवं प्रक्रियायें, विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक द्वंद्व के लक्षण, शिक्षण अधिगम के संदर्भ में इसका महत्व।
- ok;xkRldh dk fl)kUr : परिचय, सामान्य अनुवांशिकता संबंधी नियम, जेडपीडी (**ZPD**) की अवधारणा, विकास में उपकरण और प्रतीक, शिक्षण के संदर्भ में इसका महत्व।
- lpuk lii"k.k mikxe : मस्तिष्क की बुनियादी बनावट (कार्यकारी स्मृति, दीर्घकालिक स्मृति, अवधान, कूटरचना (encoding) एवं पुनर्प्राप्ति (retrieval), मुखर स्मृति (declarative memori) में बदलाव के रूप में ज्ञान की रचना एवं अधिगम, स्कीमा परिवर्तन या अवधारणात्मक परिवर्तन, किस तरह ये एक सतत् चलन में विकसित होते हैं।
- lKku e o;fDrd ,o lkekftd&lkLdfrd vrj : अधिगम कठिनाईयों को समझना, बहिष्करण एवं समावेशन की स्थितियां एवं प्रभाव।

bdkb 4- Hkk"kk ,o lEi"k.k **(Language and Communication)**

- बच्चे किस तरह संप्रेषण करते हैं?
- भाषा विकास के संबंध में दृष्टिकोण ¼ किस प्रकार बच्चे इसे सीखते हैं। (बच्चे शुरुआती उम्र में किस तरह भाषा सीखते हैं, के संदर्भ में)
- प्रारंभिक आयु में भाषा।
- स्किनर का सक्रिय अनुबंध का सिद्धांत सामाजिक अधिगम के बारे में बन्डूरा और वाल्टर का सिद्धान्त।
- जन्मजातवादी – चोम्स्कीवादी (Nativist-Chomskian) का दृष्टिकोण।
- व्यवहारवाद की समालोचना की दृष्टि से इन सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों की तुलना।
- भाषा के उपयोग : बातचीत में भागीदारी, संवाद, वार्तालाप करना और सुनना।

- भाषा में सामाजिक सांस्कृतिक विविधता : उच्चारण, संवाद में अंतर, भाषायी विविधता, बहु सांस्कृतिक कक्षा के लिए इसका महत्व।
- द्विभाषी एवं त्रिभाषी बच्चे : शिक्षकों के लिए इसका महत्व– बहुभाषिक कक्षा, शिक्षण विधि के रूप में कहानी कहना।

bdkbl 5- [ky] Lo ,o ufrd fodkl **(Play, Self and Moral Deveopment)**

- खेल का अर्थ, विशिष्टतायें एवं प्रकार।
- [ky ,o bld dk;l : बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, भाषा व स्नायु विकास (motor development) से इसका सम्बन्ध, बच्चों के खेल में सांस्कृतिक एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव।
- खेल एवं समूह गतिकी की अवधारणा (group dynamics) : खेलों के नियम; बच्चे किस तरह मतभेदों को सुलझाना एवं निपटाना सीखते हैं।
- स्वयं का बोध; स्व–विवरण, स्वयं की पहचान, स्वाभिमान का विकास, सामाजिक तुलना, आत्मसात करना एवं स्व–नियंत्रण।
- ufrd fodkl : इस संदर्भ में कोलबर्ग एवं कैरोल गिलिगन्स का नैतिक विकास के समालोचनात्मक विचार।

3- l=xr dk;l **(Assignment)**&

4- **(Theme)** Fkhe& cPpk d l lkj l D;k vkj dl&dl

- कुल घंटे– 25 (क्षेत्र पर + अभिलेख व्यवस्थापन और कक्षा कक्ष में चर्चा)

ikt DV dk;l&1

- 4 से 7 आयु समूह के बच्चों को अलग–अलग थीम पर (चित्र) बनाकर देकर छात्र अध्यापक छात्रों से चयन करने को कहेंगे। बच्चों को खींचे गये चित्र पर बात करने को कहेंगे। छात्र कोशिश करेंगे और समझेंगे क्या चित्र है समाज में क्या बातचीत हो रही है और देखा जायेगा कि ड्राइंग के सांकेतिक विचार को बच्चा कैसे देख रहा है। छात्र अध्यापक एक पैटर्न बनाएंगे कि चित्रों को देखकर बच्चों में क्या विचार उभरते हैं। छात्राध्यापक अन्य तरह की गतिविधियां भी आयोजित कर सकते हैं। वह इस तरह की गतिविधियां कराते हुये बच्चों के जवाब के अभिलेख तैयार करेंगे।

ikt DV dk;l&2 %

- 2 घंटे क्षेत्र पर लगाया गया समय/स्व अध्ययन 4 घंट
- छात्र अध्यापक खेलते हुये बच्चों का अवलोकन करेंगे तथा अभिलेख रखेंगे। 2 घंटे में कम से कम 4 अवलोकन करेंगे। यह अवलोकन आस पड़ोस के खेल मैदान के हो सकते, स्कूल के भी हो सकते हैं। बच्चों के द्वारा खेले जाने वाले खेल को छात्राध्यापक पहचानेंगे । खेल के दौरान बच्चों के व्यक्तिगत

और समूह के व्यवहार के अंतर्गत मित्रों के साथ और सामाजिक संबंध को देखेंगे। निम्नलिखित पहलुओं पर विश्लेषण करेंगे–

- गामक कौशल,
- खेलते समय उपयोग में लाई जाने वाली भाषा,
- समूह संरचना, अंतक्रिया नियम और उसका पालन,
- लिंगीय व्यवहार,
- समझौते का पैटर्न,
- संघर्ष करना,
- लोकगीत और खेल,
  यह सत्रगत कार्य पश्च सत्रगत कार्य का अनुसरण करेगा।
- संपर्क घंटे 6 (क्षेत्र पर + स्व अधिगम पर)

iktDV dk;&3

- स्कूली बच्चों के आयु समूह के हिसाब से कोई प्रसिद्ध फिल्म या कार्टून छात्राध्यापक को छांटना होगा। छात्राध्यापक साक्षात्कार शेड्यूल बच्चों के लिये और अवलोकन चेक लिस्ट बनाएंगे। चेक लिस्ट के माध्यम से फिल्म में वह चीज देखी जायेगी जो अधिकांश बच्चों को आकर्षित करती है और विभिन्न पहलुओं पर समालोचनात्मक विश्लेषण करेंगे। बच्चों में क्षमता का पता लगाएं कि वे कल्पना और वास्तविक में अंतर कर सकते हैं? छात्राध्यापक को इससे अवसर देना होगा।
- lidZ 2 ?kV {k= ij $ Lo&v/;;u& 5 ?kV

iktDV dk;&4

- छात्राध्यापक को ऐसे वीडियो गेम का चयन करना है जो स्कूली बच्चों में ज्यादा लोकप्रिय हो। इसके लिये एक ऐसा साक्षात्कार सेड्यूल और अवलोकन चेक लिस्ट बनाये जो वीडियो गेम के आक्रामक बिन्दुओं को लेकर बनाया गया है। जिसे लेकर बच्चों को देखना पसंद हो ऐसे पहलू शामिल हो।
- संपर्क 2 घंटे (क्षेत्र पर) 5 घंटे स्व अध्ययन के लिये
- शिक्षण के लिए निर्देश – उपरोक्त प्रायोगिक कार्य हेतु योजना बनाना, विद्यार्थियों को जोड़ियां या समूह में कार्य आवंटित करना, अधिकतम स्थानीय संसाधनों एवं उपलब्ध आई सी टी का उपयोग कर शिक्षण एवं प्रगति का आकलन किया जाना है।

5- vrj.k dh fof/k;k & **(Mode of transaction)**

- संप्रत्यात्मक समझ के लिये कक्षा में चर्चा करवाना
- पाठ्य सामग्री का गहन अध्ययन एवं पत्र लेखन करना।
- सत्रगत कार्यों संबंधित मुद्दे पर व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रस्तुतीकरण करना
- सैद्धान्तिक और प्रायोगिक गतिविधियां/अभ्यास/खोज,

- बाल अध्ययन की विधियां– अवलोकन, आंकड़ों का संग्रहण, शाला त्यागी संबंधी, एवं विशिष्ट बालकों का अध्ययन।

I>kokRed InHk xFk Iph

- बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा विनोद मंडल
- भटनागर, सुरेश (तृतीय सस्करण), शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास, दिल्लीः आर. एल. बुक डिपो
- भटनागर,वी (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, आर.एल. बुक डिपो
- जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण) बाल मनेविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- मंगल, एस. के. (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा पी. एच. आई. लर्निगं पी. एल.
- माथुर एस. एस. (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
- पाठक, पी. डी. (चालीसवां संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
- शर्मा, आर. (प्रथम संस्करण) शिक्षा अधिगम मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो
- शर्मा, वी. (पंचम संस्करण) अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान, मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो
- वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण) बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान डॉ. एस. पी. गुप्ता, डॉ. अलका गुप्ता
- गिजुभाई बधेका – प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षा
- गिजुभाई बधेका – बाल शिक्षण जैसे मैंने समझा
- गिजुभाई बधेका – चलते – फिरते।
- Mind in Society - Lev Vygotsky (Published by Harvard university press)
- Educational Psychology o" Kelly
- Educational Psychology, S.K. Mangal
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M- f}rh; o"kZ-

lekt f'k{kk vkSj ikB~;p;kZ ckS/k

Understanding of Society, Education and Curriculum

¼iz'u i= &12 ½

i.kkZd &100

ckg~; vad & 70

vkarfjd & 30

1- vkSfpR; ,oa mn~ns'; ¼**Rationale and Aim**½

भावी शिक्षकों के रूप में छात्राध्यापक को शिक्षा के मूल सिद्धांतों व अवधारणाओं की समझ बनाने की आवश्यकता होगी। यह प्रश्न पत्र छात्राध्यापक को शिक्षा के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से परिचित कराता है, जिससे वे शिक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विमर्श व तथ्यों की पड़ताल कर सकें। वर्तमान समय की जरूरत है कि समाज व शिक्षा के अंतर्संबंधों को समझा जाये जिससे समाज में व्याप्त असमानता व संघर्ष के मुद्दों के साथ निपटा जा सके। न्याय, समानता, स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा व विविधता को सम्बोधित किया जा सके। शिक्षा के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं व प्रचलित पद्धतियों की जब हम एक दार्शनिक व ऐतिहासिक समझ बनाते हैं तो हमें शिक्षा, ज्ञान और सत्ता के बीच का संबंध समझ में आता है।

भावी शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक, छात्राध्यापक को शिक्षा की मूल अवधारणाओं और सिद्धांतों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। यह पेपर भारत में शिक्षा के दार्शनिक, दृष्टिकोण से परिचित कराता है, जिससे छात्राध्यापक शिक्षा के मूलभूत सवालों पर विमर्श कर सकें। इसके माध्यम से शिक्षा के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं व प्रचलित पद्धतियों की समझ विकसित हो सकेंगी।

2- fof'k"V mn~ns'; ¼**Specific objectives**½

- शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व को समझना
- शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक और ऐतिहासिक आयामों की समझ विकसित करना।
- ज्ञान, शिक्षार्थी, शिक्षक और शिक्षा के बारे में लंबे समय से प्रचलित धारणाओं की पड़ताल करना और एक अर्थपूर्ण समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को अलग अलग तरह की विचारधारा व दृष्टिकोण से परिचित कराना जिससे वे एक सुरक्षित, समतावादी और सीखने सिखाने का एक अच्छा माहौल तैयार कर सकें।

शिक्षा की यह दार्शनिक, समाजशास्त्रीय व ऐतिहासिक समझ डी.एल.एड. के पूरे कोर्स के लिए एक ठोस पृष्ठभूमि तैयार करेगी । यह पृष्ठभूमि छात्राध्यापकों को मानवीय प्रवृत्ति, ज्ञान और सीखने की मूलभूत अवधारणाओं पर अलग–अलग दृष्टिकोण से समझ बनाने में मदद करेगा। इन सभी चीजों पर छात्राध्यापकों की एक समीक्षात्मक समझ बनेगी। यह कोर्स शिक्षा, ज्ञान और सत्ता के अन्तर्संबंधों को प्रस्तुत करेगा। भारतीय शिक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दों पर इन इकाइयों द्वारा छात्राध्यापकों को एक अर्थपूर्ण समझ बन सकेगी।

3- bdkbZokj vadksa dk foHkktu

Øekad	bdkbZ	fo"k;	vad
1	1	शिक्षा की दार्शनिक समझ (Philosophical Understanding of Education)	20 अंक
2	2	शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)	20 अंक
3	3	शिक्षा, राजनीति एवं समाज (Education, Politics and Society)	15 अंक
4	4	ज्ञान (Knowledge)	15 अंक
		vkarfjd vad	30
		dqy vad	100

bdkbZ 1 % f'k{kk dh nk'kZfud le> ¼**Philosophical Understanding of Education**½

- मानव समाज में शिक्षा की प्रकृति और उसकी आवश्यकता एवं महत्व
- विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा के बीच संबंध और मानव समाज में विविध शैक्षिक प्रक्रियाओं की जांच पड़ताल
- विभिन्न पश्चिमी एवं भारतीय विचारकों के द्वारा विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा पर विचार : रूसो, ड्यूवी, मॉन्टेसरी, गांधी, टैगोर, गिजुभाई, अरविन्दो,
- मानव प्रकृति, समाज, अधिगम और शिक्षा के उद्देश्य के बारे में मूलभूत धारणाओं की समझ

bdkbZ 2 % f'k{kk ds mn~ns'; ¼**Aims of Education**½

- शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य (उद्देश्य एवं मूल्य)
- सामाजिक बदलाव एवं सामाजिक रूपांतरण के लिए शिक्षा
- निम्नांकित बुनियादी अवधारणाओं को बच्चों की शिक्षा के संबंध में समझना

  अ. सामाजिक विषमता और समानता, संसाधनों के बंटवारे, अवसरों एवं बुनियादी जरूरतों की उपलब्धता में असमानता और समानता

  ब. समता

  स. गुणवत्ता

  द. अधिकार एवं कर्तव्य, शाला प्रबंध समिति का गठन, प्रक्रिया एवं भूमिका

  ई. मानव एवं बाल अधिकार

  फ. सामाजिक न्याय : भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं उसकी मूलभूत अवधारणाएं, मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करने में शिक्षा की भूमिका

bdkbZ 3 % f'k{kk] jktuhfr ,oa lekt ¼**Education, Politics and Society**½

- ब्रिटिशकाल के दौरान भारत में शिक्षा ।
- भारतीय समकालीन शिक्षा : औपनिवेशिक विरासत की निरन्तरता में एवं उससे हटकर
- वर्ग, जाति, लिंग एवं धर्मों के संदर्भ में वर्चस्व के पुनरुत्पादन में और हाशियाकरण को चुनौती देने में शिक्षा की भूमिका
- शिक्षा की राजनीतिक प्रकृति
- शिक्षक एवं समाज : शिक्षकों के स्तर का समालोचनात्मक आकलन

bdkbZ 4 % Kku ¼**Knowledge**½

- बच्चे में ज्ञान का निर्माण : गतिविधि एवं अनुभव से ज्ञान अर्जन करना
- ज्ञान का स्वरूप एवं बच्चे ज्ञान का निर्माण कैसे करते हैं (ज्ञान और सीखना)
- मान्यता, जानकारी, ज्ञान एवं समझ की अवधारणा
- ज्ञान के प्रारूप : विविध प्रकार के ज्ञान एवं उनकी वैधता प्रक्रियायें
- पाठ्यचर्या के चयन एवं निर्माण की प्रक्रियायें एवं मापदण्ड
- देश /राज्य के विभिन्न पाठ्यचर्या की रूपरेखा जैसे (NCF 2005)
- पाठ्यचर्या निर्माण और उसके विकास के उपागम
- बच्चों का विकास एवं पाठ संबंधी अनुभवों का संयोजन
- पाठ्यचर्या, शिक्षणविधि एवं बच्चों का आकलन

l=xr dk;Z& कोई तीन

1. विद्यार्थियों में सामाजिक विकास और सामाजिक बदलाव में शिक्षक की भूमिका चिन्हांकित करना।
2. गतिविधियों एवं अनुभव से ज्ञान अर्जन होता है इसे बच्चों के संदर्भ में वर्णित करना।
3. वर्तमान शिक्षा में राजनीति का हस्तक्षेप– एक चिन्तन पर अपने विचार लिखना।
4. विद्यालय स्तर पर निष्पक्षता और समानता के अवसरों की उपलब्धता पर एक रिर्पोट तैयार करें।

vrj.k dh fof/k;k % (**Mode of Transaction**)

- समीक्षात्मक चिंतन व सवाल करना।
- संवाद और चर्चा।
- संगोष्ठियों/फिल्म, समूह कार्य, प्रोजेक्ट कार्य, फील्ड वर्क, लेख/नीतियों एवं दस्तावेजों पर समीक्षात्मक चर्चा।
- इकाईयों को अंतर्सम्बंधित करते हुए शिक्षण कार्य।
- इकाईयों का अध्ययन कराते समय सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक संदर्भों का ध्यान रखा जाए।

I>kokRed InHk xFk Iph

- गिजू भाई बधेका (2001) – बाल शिक्षण और शिक्षक
- एस. शुक्ला एवं कृष्ण कुमार –शिक्षा का समाज शास्त्रीय संदर्भ –ग्रंथ शिल्पी
- जॉन ड्यूई (2009) – स्कूल और समाज – आकार प्रकाशन, चंडीगढ़
- जे. कृष्ण मूर्ति (2006) – शिक्षा पर कृष्ण मूर्ति के विचार कृष्ण मूर्ति फाउन्डेशन, वाराणसी
- रवीन्द्रनाथ ठाकुर (2004)– रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन – चेप्टर–1 एवं 7–ग्रंथ शिल्पी
- कृष्ण कुमार (2007) – शिक्षा और संस्कृति
- पाउलफेरे –उत्पीड़ितों का शिक्षा शास्त्र, ग्रंथ शिल्पी
- रोहित धनकर –शिक्षा और समाज, आधार प्रकाशन, चंडीगढ़
- एन.सी.ई. आर. टी–राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पत्र : 1, शिक्षा के उपलक्ष्य 2. पाठ्यचर्या , पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकें।
- छत्तीसगढ़ डी. एड. पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष – ज्ञान, शिक्षा क्रम एवं शिक्षा शास्त्र चेप्टर– 2,5 एवं 6
- गिजुभाई बधेका– शिक्षकों से
- गिजुभाई बधेका– मॉनेसरी पद्धति
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Krishnamurti, J. (2006). *Krishnamurti on Education.* Part I: Talks to Students: Chapter 1: On Education, Chapter 4: On Freedom and Order, Part II: Discussion with Teachers: Chapter i: On Right Education. Chennai: Krishnamurti Foundation of India.
- Saxena, Sadhana (2007). 'Education of the Masses in India: A Critical Enquiry'. In Krishna Kumar and Joachim Oesterheld (Eds.) *Education and Social Change in South Asia.* New Delhi: Orient Longman.
- Thakur, R. (2004). *Ravindranath ka Shikshadarshan.* Chapter i: Tote ki Shiksha.Chapter 7: Aashram Shiksha, New Delhi: Granthshipli.

CDs/DVDs for Discussion

1. CIET/NCERT CD ROM *Four Educational Riddles* by Krishna Kumar
2. Debrata Roy *DVD,The Poet & The Mahatma*
3. Krishnamurthy Foundation India DVD *The Brain is Always Recording*
4. NCERT CD ROM *Battle For School* by Shanta Sinha
5. NCERT CD ROM *Globalisation and Education*
6. Sri Aurobindo Ashram Trust DVD *India and Her Future*

Mh-,y-,M-f}rh; o"kZ

f'k{kk esa lekos'kh ,oa tsaMj eqn~ns

Emerging Gender and Inclusive Perspecitives in Education

¼ iz'u i=&13 ½

iw.kkZad &100

cká ewY;kadu & 70
vkarfjd ewY;kadu & 30

1- vkSfpR; ,oa mn~ns';&¼**Rationale and Objective**½

यह कोर्स विविधता, असमानता व शिक्षा के बीच के जटिल संबंधों के बारे में बात करता है। इसका उद्देश्य छात्राध्यापकों को जीवन के अनुभवों में व्याप्त विविधता और विभिन्न प्रकार के बच्चों के आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाना है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, वंचित समुदाय से आने वाले बच्चों व लड़कियों को परंपरागत रूप से शिक्षा के विमर्श के हासिए पर धकेला गया है। आज समावेशी शिक्षा को जिस तरह से समझा जा रहा है उसमें इन सभी को स्थान मिलना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के आलोक में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के लेंस से शिक्षा को देखने के बाद यह कोर्स समावेशी शिक्षा की प्रकृति और इसे कक्षा में लागू करने के लिए शिक्षक के लिए आवश्यक संवेदनशीलता और कौशलों के बारे में भी बात करता है।

यह कोर्स शिक्षा में उभरे नए दृष्टिकोणों के अध्ययन की बात करता है। आज सारे विश्व में विशेष आवश्यकता वाले बच्चें को मुख्य धारा की शिक्षा में सहभागी बनाने, उन्हें सामान्य विकास के लिए तैयार करने और साहस के साथ जीवन का सामना करने के लिए तैयार करने की दृष्टि से समावेशी शिक्षा को प्रचारित करने की आवश्यकता को तीव्रता से महसूस किया जा रहा है। आज शिक्षक कक्षा में इस तरह की चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं है जिसके चलते वे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जरूरतों को समझने और तदनुरूप उनकी सीखने की प्रक्रियाओं को सहज बनाने में असफल रहते हैं। यही बात वंचित तबकों से आने वाले बच्चों, अनुसूचित जाति व जनजाति व लड़के एवं लड़कियां की विविध आवश्यकताओं के संदर्भ में भी लागू होती है। शिक्षक अपने पूर्वाग्रहों से बाहर निकलकर इन चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने आप में पेशेवर क्षमताएँ विकसित करें इसकी सख्त आवश्यकता है।

समाज में हर स्तर पर व्याप्त अन्याय व भेदभाव को संबोधित करने के लिए जेंडर के सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करना भी शिक्षा में अपेक्षित है। इसके लिए शिक्षाशात्रीय तरीकों के साथ–साथ सिद्धांतों व वास्तविक जीवन के बीच संबंध स्थापित करना आवश्यक है जिससे महिलाओं के प्रति सम्मान व जेंडर समानता को सुनिश्चित किया जा सके। समाज व बच्चों में बढ़ती हिंसा व ध्रुवीकरण की चिंता का एक और बड़ा विषय है जो समाज में बढ़ते तनाव का परिणाम है। कक्षा प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में मूल्य और जीवन कौशल विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है जिससे वे दैनिक जीवन की आवश्यकताओं और चुनौतियों का सामना कर सकें तथा स्वयं व दूसरों के लिए सम्मान महसूस करते हुए शांतिपूर्ण समाज की स्थापना में योगदान दे सकें।

साथ ही आज की व्यावसायिक व प्रतियोगी जीवनशैली द्वारा उत्पन्न पारिस्थितिकीय विषमताओं से निपटने के लिए शिक्षक और विद्यार्थियों को प्राकृतिक संसाधनों के मितव्ययी उपयोग के प्रति जागरूक करना होगा। इस तरह से आज के उभरते शैक्षिक दृष्टिकोणों के साथ जुड़ाव शिक्षकों को शिक्षा के संदर्भ को समझने तथा इच्छित पाठ्यचर्या, विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र को विकसित करने में मदद करेंगी तथा व्यक्तिगत व संस्थागत रूप से परितर्वन के वाहक के रूप में काम करने के योग्य बनाएगा।

2- fof'k"V mnn'; ¼**Specific Objectives**½

- समावेशी शिक्षा की समीक्षात्मक समझ विकसित करना
- सीखने में पाठ्यचर्या, शाला संगठन और शिक्षण उपागम में मौजूद भेदभावपूर्ण रवैया कैसे बाधा बनता है समझना।
- स्कूल की संरचना/व्यवस्था (अंतर्निहित व स्पष्ट) किस प्रकार से सभी बच्चों को समावेशी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने में बाधक है उसे समझना।
- भारतीय कक्षा में असमानता व विविधता को सम्बोधित करने के लिए ऐसी पाठ्यचर्या व शिक्षणशास्त्र तैयार करना जो सभी बच्चों को शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ सके जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हों।
- पाठ्यचर्या और उसको लागू करने में जीवन कौशल और मूल्यों को सम्मलित करने की आवश्यकता को समझना।
- स्थानीय व वैश्विक वातावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना जिससे अपने भीतर, प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य बन सके।
- समाज में मौजूद जेंडर असमानता की समीक्षात्मक समझ बनाना।
- शाला में जेंडर असमानता कैसे फलती फूलती है उसे समझना और जेंडर समानता लाने में शिक्षा की भूमिका को समझना।

3- bdkb v/;;u&

Ijy Ø-	bdkb dk uke	vd
1	lekos'kh f'k{kk	22
2	fo'k"k vko';drk oky cPp	25
3	t.Mj Ldy ,o lekt	23
	vkrfjd vd	30
	dy vd	100

bdkbZ 1- lekos'kh f'k{kk **Inclusive Education**

- भारतीय शिक्षा में समावेशन एवं बहिष्करण के रूप (समाज का हाशियाकृत वर्ग, जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे)।
- समावेशी शिक्षा का अर्थ।
- भारतीय स्कूली कक्षा में गैर बराबरी एवं विविधता पर नजर : शिक्षाशास्त्रीय एवं पाठ्यचर्या सरोकार।
- समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति को समझना एवं उसकी पड़ताल।

bdkbZ 2] fo'k"k vko';drk okys cPps **Children with Special Needs**

- विशेष आवश्यकता एवं समावेशन के बारे में ऐतिहासिक व समकालीन दृष्टिकोण।
- अधिगम कठिनाईयों के प्रकार।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, आकलन एवं बातचीत।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शिक्षण उपागम व कौशल।

bdkbZ 3- tsaMj Ldwy ,oa lekt (**Gender, School and Society**)

- पुरुषत्व व स्त्रीत्व की सामाजिक संरचना।
- पितृसत्ता की अन्य सामाजिक संरचनाओं व पहचानों के साथ अंतर्क्रिया।
- स्कूल में जेण्डर पहचान को पुनः उभारना पाठचर्या, पाठ्यपुस्तकें, कक्षा प्रक्रियायें एवं विद्यार्थी– अध्यापक बातचीत।
- कक्षा में जेण्डर समानता के लिए काम करना।

l=xr dk;Z & कोई तीन

1. अपने ग्राम/वार्ड के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निःशक्ततावार जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनकी कक्षा में समावेशन की स्थिति पर रिपोर्ट तेयार कीजिए।
2. अपने विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक कठिनाईयों को सूचीबद्ध कीजिए एवं किसी एक विषय पर इन बच्चों के लिए दो शिक्षण सहायक सामग्री विकसित कीजिए।
3. अपने क्षेत्र/जिले में निःशक्तजनों के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख संस्थाओं की सूची बनाईए तथा किसी एक के कार्य, प्रक्रिया एवं उपादेयता पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।
4. अपने क्षेत्र में विशेष निःशक्तता के प्रकार, प्रकृति कारण तथा रोकथाम के प्रयास पर आलेख तैयार कीजिए।
5. अपने विद्यालय/कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षण की आवश्यकताओं की सूची बनाइए एवं इनके बेहतर शिक्षण हेतु किए जा रहें प्रयास लिखिए।
6. किसी भी कक्षा की सामाजिक विज्ञान/भाषा की पाठ्यपुस्तक में समावेशिता तथा जेन्डर के मुद्दों का विश्लेषण कीजिए।

7. समावेशी शिक्षण के लिए स्कूल में बाधक तत्वों की पहचान करना और सकारात्मक वातावरण निर्माण के लिए सुझाव देना।

vrj.k dh fof/k;k ¼ **Mode of Transaction** ½

1. शालेय प्रक्रियाओं में जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समावेशण तथा बहिष्करण की स्थितियों का अवलोकन करवाना।
2. शैक्षिक भ्रमण – बालिका छात्रावासों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए चलाए जा रहे केन्द्रों का भ्रमण, बच्चों के साथ बातचीत करवाना।
3. समाज में जेण्डर सम्बधित मुद्दों के उदाहरण द्वारा प्रशिक्षणार्थी को संवेदनशील बनाना।

l>kokRed lnHk xFk dh lph

- मध्यप्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (2001) विकलांग बच्चों हेतु समेकित शिक्षा शिक्षक मार्गदर्शिका ।
- राज्य शिक्षा केन्द्र (2001) आधार, भोपाल, राज्य शिक्षा केन्द्र
- राज्य शिक्षा केन्द्र (2005) भारतीय समाज में शिक्षा भाग–2 (प्रथम वर्ष) राज्य शिक्षा केन्द्र
- अग्रवाल गीता (1981) विकलागंता समस्या और समाधान, निधि प्रकाशन दिल्ली
- भार्गव, महेश (2004) पब्लिकेशन चिल्ड्रेन– देयर एजुकेशन एण्ड रिहबिलेटशन, एच.पी. भार्गव बुंक हाउस, कचहरी घाट आगरा।
- भार्गव, महेश (2004) विशिष्ट बालक, एच.पी. भार्गव बुंक हाउस, कचहरी घाट आगरा।
- मिश्र, विनोद कुमार (2003) विकलांगों के अधिकार कल्याणी शिक्षा परिषद, जाटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली
- जोसेफ, आर.ए. (2003) विकलांगता के क्षेत्र में अधिनियम पुनर्वास के आयाम समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी
- जोसेफ, आर.ए. (2004) विकलांगों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विशेष शिक्षा एवं पुर्नवास, समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी
- बन्टी शर्मा, आर.ए. (2008) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Bhattacharjee, Nandini (1999). Through the looking-glass: Gender Socialisation in a Primary School in T. S. Saraswathi (ed.) *Culture, Socialization and Human Development: Theory, Research and Applications in India.* Sage: New Delhi.
- Ghai, Anita (2008). Gender and Inclusive education at all levels In Ved Prakash & K.
- Kumar, Krishna (1988). *What is Worth Teaching?* New Delhi: Orient Longman. Chapter 6: Growing up Male. 81-88. Singh, Renu (2009), The wrongs in the Right to Education Bill, *The Times of India,* 5 July.

Mh-,y-,M- f}rh; o"kZ

'kkyk; laLd`fr] usr`Ro ,oa f'k{kd fodkl

(School culture, leadership and teacher development)

¼ iz'u i=&14½

iw.kkZad &100
cká ewY;kadu & 70
vkarfjd ewY;kadu& 30

vkfpR; ,oa mn~ns'; &¼**Rationale and Objective**½

शिक्षा का उद्‌देश्य बच्चों के लिए आनन्दमयी और सार्थक वातावरण प्रदान करना है। शिक्षा के विचार और इसके क्रियान्वयन के बीच लम्बा फासला होता है, जिसके लिए कई महत्वपूर्ण घटक कार्य करते हैं। इनमें शिक्षक, अभिभावक, शाला प्रमुख, जिला एवं विकास खण्ड अधिकारी, शिक्षाविद्, समुदाय, नीति निर्धारक और बच्चे शामिल है।

स्कूलों की संरचना किस प्रकार होती है? गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सरकारी अधिकारी क्या भूमिका निभाते हैं? किस तरह का नेतृत्व प्रभावी स्कूली शिक्षा को सुनिश्चित कर सकता है? शैक्षिक मापदण्ड किस तरह से निर्धारित एवं व्याख्यायित किए जाते हैं? शिक्षा में बदलाव किन प्रक्रिया से सुनिश्चित किया जा सकता है? यह पाठ्‌यक्रम इस पहेली के इन सारे टुकड़ों को एक साथ लेकर आता है जो प्रभावी स्कूली शिक्षा की संरचना करते हैं। इस पाठ्‌यक्रम के अन्तर्गत कार्यशालाओं, परिचर्चाओं, आलेखों और जमीनी अनुभवों पर आधारित प्रायोजना कार्य करने और उनके प्रस्तुतीकरण द्वारा छात्राध्यापक विद्यालय की संरचना एवं प्रबंधन को प्रभावी बनाने वाले घटकों की समझ विकसित कर सकेंगे।

सम्पूर्ण विश्व में शैक्षिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। नई सहस्त्राब्दी शुरु होते ही कई समुदायों ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार किए हैं, और इन सुधारों में शिक्षकों का पेशेवर विकास एक महत्वपूर्ण घटक है। आज वैश्विक स्तर पर यह माना जा रहा है कि शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण है अर्थात शिक्षक को अपने विषय के शिक्षण के साथ–साथ समाज में सुधार के लिए भी कार्य करना है। इस दोहरी जिम्मेदारी के चलते शिक्षकों के पेशेवर विकास का क्षेत्र बड़ा चुनौतीपूर्ण और ध्यान आकर्षित करने वाला बन गया है। इस नए प्रयास का शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा भी स्वागत किया गया है।

चूंकि इसके द्वारा शिक्षकों का पेशेवर विकास सुनिश्चित होता है साथ ही उनके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना भी मिलती हैं।

शिक्षकों का पेशेवर विकास एक व्यापक क्षेत्र है, जिसमें शिक्षक–शिक्षा, शिक्षक–प्रशिक्षण तथा वे अन्य सभी प्रयास आते हैं जो शिक्षक की योग्यता बढ़ाने में मदद करते हैं। शिक्षकों का क्षमतावर्धन जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो शिक्षक बनने से लेकर सेवानिवृति तक चलती रहती है। यह पाठ्‌यक्रम सेवापूर्व शिक्षा के रूप में शिक्षकों की सतत तैयारी के प्रतिरूप को समझने में मदद करेगा, साथ ही उन शैक्षिक अनुभवों को भी

समझने में मदद करेगा जो शिक्षकों की शिक्षण प्रक्रियाओं और एक पशेवर के रूप में उसकी कार्य प्रक्रियाओं को बेहतर बनाते हैं।

यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापकों को शिक्षक शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए काम कर रही विभिन्न प्रशासनिक संस्थाओं और सहयोगी संस्थाओं की भूमिका और योगदान को समालोचनात्मक रूप से जाँच करने के भी अवसर प्रदान करेगा।

fof'k"V mn~ns'; **(Specific Objectives)**&

इस पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्राध्यापकों को स्कूली शिक्षा को गठित करने वाले सभी मुद्दों एवं घटकों की विस्तृत समझ को निर्मित कर पाना है। इसके विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- छात्राध्यापकों को भारतीय शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाओं से परिचित कराना।
- शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में स्कूल की संरचना और प्रबंधन के विचार को स्पष्ट रूप से समझने में छात्राध्यापकों की सहायता करना।
- किसी स्कूल की प्रभावशीलता के विशिष्ट सन्दर्भों को समझने में मदद करना।
- शालेय नेतृत्व एवं प्रबंधन में बदलाव की समझ को विकसित करने में मदद करना।
- शैक्षिक नेतृत्व, बदलाव के घटक और व्यावहारिक परियोजना कार्यों के बीच के संबंधों को पहचान पाने में छात्राध्यापकों की मदद करना।

यह पाठ्यक्रम शिक्षा प्रणाली की अवधारणा, उसके कार्य करने के तरीके शालेय प्रणाली में विभिन्न स्तरों की भूमिका और कार्य को समझने तथा शालेय पाठ्यक्रम से इनके संबंधों को स्थापित कर पाने तथा कथा की प्रक्रियाओं पर इन सबके प्रभाव को समझ पाने में छात्राध्यापकों की मदद करेगा।

bdkbZ;k

Øekd	bdkbZ	fo"k;	Vd
1	1	भारतीय शैक्षिक प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रिया (Structure and process of the Indian Education System)	15 अंक
2	2	शाला प्रभावशीलता और शालेय मानदण्ड (School effectiveness and school standards)	15 अंक
3	3	शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन (School Leadership and Management)	15 अंक
4	4	शिक्षा में बदलाव –सुगमता (Change Facilitation in Education)	10 अंक
5	5	शिक्षक विकास की समझ (Understanding Teacher Development)	15 अंक
		vkrfjd vd	30
		dqy vd	100

bdkbl&1 Hkkjrh; 'kf{kd i.kkyh dh ljpuk ,o ifØ;k,
Structure and processes of the Indian Education System

- विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों के अन्तर्गत शालाओं के प्रकार।
- शैक्षिक पदाधिकारियों की भूमिका और जवाबदेही।
- शाला और सहयोगी संगठनों के मध्य संबंध।
- शालेय प्रबंधन को प्रभावित करने वाली शिक्षा नीतियों की समझ और व्याख्या।
- शालेय संस्कृति, संगठन, नेतृत्व और प्रबंधन क्या है? शालेय संस्कृति निर्माण में शालेय गतिविधियों जैसे प्रार्थना सभा, वार्षिक उत्सव इत्यादि की क्या भूमिका है?

bdkbl&2 'kkyk iHkko'khyrk vkj 'kky; ekun.M
School effectiveness and school standards

- शालेय प्रभावशीलता; क्या है, इसको कैसे मापेंगे?
- शिक्षा के मानदण्डों की समझ और उनका विकासA
- कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षक।
- समावेशित शिक्षा की पाठ–योजना, कक्षा–व्यवस्थापन की तैयारी और समावेशी शिक्षा।
- कक्षा कक्ष में सम्प्रेषण तथा कक्षा में बहु–प्रज्ञता स्तर।

bdkbl&3 'kkyk urRo ,o ic/ku
School Leadership and Management

- प्रशासनिक नेतृत्व।
- समूह नेतृत्व।
- शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व।
- परिवर्तन के लिए नेतृत्व।
- बदलाव प्रबंधन।

bdkbl&4 f'k{kk e cnyko&lxerk

Change facilitation in Education

- सर्वशिक्षा अभियान (SSA) के अनुभव।
- शिक्षा में समानता।
- बालिका शिक्षा–प्रोत्साहन और योजनाएँ।
- शैक्षिक एवं शालेय सुधार के मुद्दे।
- शिक्षा में परिवर्तन–तैयारी एवं सुविधा/सुविधा सेवा।

bdkbi&5 f'k{kd fodkl dh le>

Understanding Teacher Development

- शिक्षक–विकास, शिक्षक–शिक्षा और शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधारणा।
- शिक्षक का विकास, छात्र, प्रबंधन एवं समुदाय पर प्रभाव।
- भारत में शिक्षक–शिक्षा के विकास का एक संक्षिप्त परिचय।
- वैश्विक परिदृश्य में शिक्षक शिक्षा का परिवर्तित होता स्वरूप।
- पूर्व सेवाकालीन एवं सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा : अवधारणा, प्रकृति, उद्देश्य और कार्यक्षेत्र (Scope)।
- शिक्षक–शिक्षा प्रणाली के विषय में विभिन्न आयोगों और समितियों की अनुशंसाएं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा इसके POA का शिक्षक–शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव।
- IASE, DIET तथा CTE की भूमिका और कार्य।
- UGC, NCERT, NCTE, NUEPA, SCERT आदि संस्थाओं का नेटवर्किंग, कार्य और भूमिका।

l=xr dk;l **(Assingment)** कोई तीन

इस पाठ्यक्रम का व्यावहारिक कार्य इस तरह से निर्धारित किया गया है, जो छात्राध्यापकों को कक्षा की चर्चाएँ और वास्तविक जमीनी अनुभवों (कक्षा शिक्षण) के बीच सम्बन्ध स्थापित करने और बदलाव के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं को समझ पाने में सहायता करें।

1. विद्यालय की संस्कृति और संगठन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कम से कम दो शालाओं में आयोजित होने वाली गतिविधियों का अवलोकन एवं रिर्पोट प्रस्तुत करना।
2. बालिका शिक्षा के लिए शासकीय प्रयास और उन प्रयासों का विद्यालय स्तर पर लागू करने की स्थिति का आकलन करते हुए रिर्पोट बनाए।
3. सर्वशिक्षा अभियान से शालेय शिक्षा में आये परिवर्तनों की विवेचना कीजिए।
4. शाला और उनके सहयोगी संगठन के मध्य आपसी सम्बधों से शाला प्रबंधन का प्रभाव– एक रिर्पोट तैयार कीजिए।
5. एक आदर्श विद्यालय के मापदण्ड क्या होना चाहिए? आलेख तैयार करें।
6. नेतृत्व बदलते ही प्रबंधन का बदलाव पर अपने अनुभव के आधार पर रिर्पोट तैयार करना।

vrj.k dh fof/k;k **Mode of Transaction**

- ➢ चुने गए आलेखों को ध्यान से पढ़ना और उन पर चर्चा करना।
- ➢ शालेय प्रक्रियाओं का अवलोकन करना और उनके दस्तावेज तैयार करना।
- ➢ शैक्षिक भ्रमण : नवाचार केन्द्रों व विविध प्रकारों के स्कूलों का भ्रमण।

Lk>kokRed lnHk xFk lph

1. मजूमदार, एस. – अधोसंरचना एवं शिक्षा प्रशासन
2. बत्रा, एस. (2003)– शालेय सहयोग के लिए शाला निरीक्षण
3. आचार्य महेन्द्र देव – विद्यालय प्रबंध, नई दिल्ली राष्ट्रवाणी प्रकाशन (2005)
4. लर्निगं कर्व (सितम्बर 2012)– हिन्दी अंक 4 स्कूल नेतृत्व अजीम प्रेमजी विश्व विद्यालय प्रकाशन
5. मुखोपाध्याय, मर्मर– शिक्षा में संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन ।
6. शिक्षा में नये आयाम – प्रकाशक राज्य शिक्षक प्रशिक्षक मण्डल म.प्र. भोपाल संस्करण (1993)
7. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Proficiency in English
(D.El.Ed Second year)
Question Paper-15

Maximum Marks : 50

External : 25
Internal : 25

(Rationale and Aim) :– This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is also to expose the student -teacher to contemporary practices in English language Teaching (ELT). The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student-teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Specific Objectives

- To strengthen English language proficiency of the student teacher.
- To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English.
- To enable students to link this with pedagogy.
- to re- sequence units of study for those who may have no knowledge of English.

  This Course will attempt to use a variety of resources, takes and activites to enable the student-teacher to develop/increase her proficiency in English. The Focus will not be on learning and memorising aspects of grammer and pure linguistics. Instead, the aim will be to enjoy learning English and to constantly reflect on this learning to link it with pedagogical strategies.

Unit-wise division of marks

Unit S.No.	Unit Name	Total
1	Status of English in India	3
2	Listening & Speaking	5
3	Reading	5
4	Writing	5
5	Vocabulary & Grammar	7
	Internal	25
	Total	50

The theory paper will comprise of the five units-

Unit 1- Status of English in India

- English around us
- English as associated official language in multicultural India.
- English as second/foreign language

Unit 2- Listening & Speaking.

- Listening with comprehensive – simple instructions, public enhancements telephone convesation, radio/TV.
- Enhancing listening and speaking abilities through discussions, role-play, interaction radio instruction (IRI) programms
- Using role play, drama, story telling, poems, and songs as a pedagogical tool.
- Listining to oral discourses (speech, discussion, news, sports commentary, interviews, announcements, ads etc)
- Producing oral discusses (speech, discussion, news sport, sports commentary, interviews, announcements, ads etc)

Unit 3- Reading.

- Skills of reading, skimming, seaming, extensive and intensive reading, reading about silent reading.
- Reading for global and local comprehension.

- Critical reading – process postultes and stratigres.

Unit 4- Writing.

Writing text and identifying their features. Texts may include discriptions, conversation, narratives, biographical sketches, plays, poems, letters, reports, reviews, notices, adverts, prochures etc.

- Editing text written by one self and others.
- Error analysis

Unit 5- Vocabulary & Grammar

- Synonyms, antonyms, homophones, homographs, homonyms, phrasal verbs, idioms.
- Word formation enrichment of vocabulary abbreviation
- Type of sentences (simple, complex and compound)
- Classification of clases based on structure and function
- Voice, narration.

Assignment

The internal assessment will be done on the following two sub-sections-

A. **Suggested Activities for Active learning**. -Any two

- Group discussions
- Talk for learning
- Speech, Debate
- Short Essay
- Organising listening and speaking activities.
- Giving and asking for feedback during or after oral discusses like speech, discussions, news reports, sports commentary, interviews etc)
- Rhymes, songs, stories, poems, role-play and dramatization
- Reading different types of texts
- Organising reading activities like reaching clubs, speed reading competitions
- Writing individually and refining through collaboration
- Comerting one form of text into another eg a narrative text into dialogue, paraphrasing
- Writing different indings to stories
- Re-teling a story from a different characters perspective
- Reading passages and analyzing the distribution of type of sentences
- Developing a short essay in collaboration
- Arranging jumpled sentences in proper sequence

B. **Suggested ICT activities**. Any-2

- Writing in a digital format (Text or document file)
- Short digital presentation
- Searching internet for specific information
- Download and transfer to smart phone any three audio clips of speeches, discussions, interviews etc.
- Search for websites that support listening and speaking
- Search for articles on different reading strategies.
- Search and download short videos on various reading activities as competitions.
- Search for websites which provide free or open source content such as storus, palms, play etc.
- Download and format for printing atleast three varities of writing texts (eg prose, poetry, drama etc)
- Downloading atleast one vocabulary games in a smart phone/tab
- Searching websites which promote grammar activities
- Searching websites which promote vocabulary activities
- Preparing digital presentation of a language game

Mode of transaction

The teaching would be done -

(a) Group work

(b) Work shop

(c) Seminar & actual classroom teaching.

Referances

- Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.
- Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin. (New Edition)
- Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.
- NCERT (2005). National Curriculam Framework,2005. New Delhi: NCERT
- NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi. Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatterly, M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities and Classroom Language, Oxford: Oxford University Press.
- (http://www.tess-india.edu.in/ in OER in Vedio)

Mh-,y-,M- f}rh; o"kZ
;ksx f'k{kk
Yoga Education
¼ iz'ui=&16½

iw.kkZad&50

lS)kfUrd&25

ik;ksfxd&25

1- vkfpR; ,oa mn~ns'; (Rationale and Aim)

आज मानव के ज्ञान में अपार वृद्धि के साथ–साथ तीव्र गति से अनेकानेक सामाजिक परिवर्तन हो रहे है। आधुनिक विज्ञान तथा प्रायोगिकी ने जीवन के पहलु का प्रभावित किया है। वैज्ञानिकों ने प्रकृति के सूक्ष्मतम रहस्य को जानने में सफलता प्राप्त कर ली है। आज व्यक्ति के पास अनेकानेक सुख सुविधाओं के साधन उपलब्ध है, लेकिन दुःख की बात यह है कि धीरे–धीरे स्वास्थ्य खोता जा रहा है। शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ा मानसिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य होता है । यह सब उत्तम हो इसके लिए शरीर का संचालन जरूरी है। योग से तन के साथ मन भी स्वस्थ होता है।

डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में शामिल करने का औचित्य यह है कि शालेय स्तर पर आसन और प्राणायाम को करवाया जाये। जिससे बच्चों में एकाग्रता, ध्यान केन्दण के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य बन सके।

fof'k"V mn~ns'; (Specifice Objective)

1- छात्राध्यापकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिए योग व्यवहारों के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु।
2. उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक व मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक संतुलन बना रहे।
3. युवाओं की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना, जैसे जागरुकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति।
4. युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना।
5. भारतीय संस्कृति के उन व्यवहारों के लिए सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती हैं।
6. आदर्श सामाजिक कौशल एवं ताकत का विकास करने के लिए अवसरों का निर्माण करना।
7. योग दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं के बारे में एक व्यापक विचार विकसित करना।
8. मानव जीवन के लिए योग की अवधारणा एवं व्यवहार व उसके आशय को समझना।
9. योग की अवधारणा को समझना व योग के विभिन्न सिद्धान्तों का व्यवहार में लाना।
10. पतंजलि, अरबिन्दो व भागवद् गीता के योग सिद्धान्तों के विषय में एक अन्तर्दृष्टि विकसित करना।

11. योग व्यवहार के उपचारात्मक महत्त्व के बारे में एक सम्पूर्ण विचार प्राप्त करना।

12. योग सिद्धान्त एवं इसकी आध्यात्मिक पवित्रता के बारे में अन्र्तदृष्टि प्राप्त करना।

bdkbokj vdk dk foHkktu

ljy Ø-	bdkb dk uke	Vd
1	;kxkH;kl d fl)kr	7
2	ik.kk;ke	8
3	cU/k] enk ,o 'kf) fØ;k;	5
4	Hkkjrh; ;kfx;k dk ifjp; ,o mudk ;kxnku	5
	vkrfjd vd	25
	dy vd	50

bdkb 1 & ;kxkH;kl d fl)kr

आसन की परिभाषा एवं वर्गीकरण, आसन करते समय रखने वाली सावधानियॉ, आसनों का वर्गीकरण– ध्यानात्मक आसन, विश्रामात्मक आसन, शरीर सम्वर्धनात्मक आसन, खड़े होकर किये जाने वाले आसन, बैठकर किये जाने वाले आसन, पेट के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, पीठ के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, सूर्यनमस्कार का अर्थ, विभिन्न स्थितियॉ एवं लाभ।

bdkb 2 & ik.kk;ke

प्राणायाम का अर्थ एवं प्रकार, पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अर्थ, प्राणायाम के अभ्यास में पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अनुपात, प्राण के भेद, मुख्य प्राण एवं उपप्राण तथा उनका परिचय (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान) उपप्राण– नाग, कूर्म कृंकल, देवदत्त, धनन्जय) प्राणायाम के अभ्यास में रखी जाने वाली सावधानियाँ।

bdkb 3 & cU/k] enk ,o 'kf) fØ;k;

बंध का अर्थ, प्रकार लाभ (जालंधर बंध, उड्डियान बंध एवं मूलबंध)

मुद्रा का अर्थ, प्रकार एवं लाभ (चिनमुद्रा, ज्ञानमुद्रा, ब्रह्ममुद्रा, योगमुद्रा, अश्वनीमुद्रा, शाम्भवीमुद्रा, अपानमुद्रा, पृथ्वीमुद्रा)

शुद्धि क्रियाओं के प्रकार, अभ्यास की विधि, लाभ तथा आवश्यक सावधानियाँ (धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक एवं कपालभॉति)

bdkb 4 & Hkkjrh; ;kfx;k dk ifjp; ,o mudk ;kxnku

महर्षि वशिष्ठ, महर्षि पतंजलि, आदिशंकरार्चाय, गुरू गौरखनाथ, योगी भर्तृहरि, स्वामी शिवानन्द, स्वामी कुवल्यानन्द, स्वामी विवेकानन्द।

l=xr dk;l **(Assignment)**– कोई तीन

;kx vH;kl vkj xfrfof/k;k

1. अपने साथियों के समूह को प्राणायाम का अभ्यास कराना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।
2. योगाभ्यास करने वाले व्यक्तियों का सर्वेक्षण करना और उनसे प्रश्नावली के माध्यम से एक रिपोर्ट तैयार करना।
3. ध्यान की किसी एक विधि को सीखना उसका अभ्यास करना। पन्द्रह दिन बाद अपने अनुभवों पर एक प्रतिवेदन लिखना।
4. किन्ही तीन विद्यालयों का भ्रमण कर, शालेय योग प्रतियोगिता पर रिर्पोट तैयार करना।

vrj.k dh fof/k;k **(Mode Of Transaction)**

1. अवलोकन एवं अनुकरण द्वारा
2. विभिन्न योग केन्द्रों का भ्रमण
3. योग पर आधारित साहित्य का समूह में वाचन एवं संवाद

Lk>kokRed lnHk xUFk lph &

1. पातंजलि योग प्रदीप – स्वामी ओमकारानन्द – गीता प्रेस गोरखपुर
2. योगांक – गीता प्रेस गोरखपुर
3. योग और हमारा स्वास्थ्य– आर.के. स्वर्णकार आरती प्रकाशन इलाहबाद
4. योगदर्शनम् – आचार्य उदयजी शास्त्री विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली।
5. पातञ्जल योग सार – डॉ. साधना, दौनेरिया, मधूलिका प्रकाशन इलाहबाद
6. योग और यौगिक चिकित्सा – प्रो. राम हर्ष सिंह चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी ।
7. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण

(पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर के लिए)

Pedagogy of Environmental Studies

(for Early Primary and Primary)

(प्रश्न पत्र – 17)

पूर्णांक – 100

बाह्य मूल्यांकन – 70

आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य – (Rationale and Aim)

पर्यावरण अध्ययन चारों ओर के व्यापक व स्थानीय परिवेश के प्राकृतिक, मानवीय, सामाजिक व सांस्कृतिक आयामों को खुद से अन्वेषण व पड़ताल कर समझने पर जोर देता है। ये विविध कौशलों के द्वारा सक्रिय रूप से सीखने– सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ने का माहौल प्रदान करने व समीक्षात्मक व जिम्मेदार प्रवृत्ति विकसित करने के अवसर देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और बाद में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 एवं 2005 व आंध्रप्रदेश के विज्ञान के पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2011 ने पर्यावरण अध्ययन को विशेष महत्व देते हुए शालेय शिक्षा में शामिल करके इस विषय को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरणीय शिक्षा से मिलकर बने एक समग्र क्षेत्र को पर्यावरण अध्ययन के रूप में परिकल्पित किया गया है, और यह बालकेन्द्रित है।

इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य यह है कि प्राथमिक शिक्षा में वर्तमान चुनौतियों से जूझने के लिए छात्राध्यापकों को विषय की प्रकृति व विषयवस्तु के सैद्धांतिक व प्रायोगिक पहलुओं में दक्ष किया जा सके। पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण करने वाले शिक्षकों को इस तरह तैयार करना कि वे विषय के दार्शनिक एवं ज्ञान मीमांसीय (expistemological) आधार समझते हुये इस विषय से जुड़ी विज्ञान, सामाजिक–विज्ञान, एवं पर्यावरणीय अध्ययन की अवधारणाओं को कक्षा शिक्षण के दौरान सिखा सकें। कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक इन विषयों की सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक समझ स्वयं प्राप्त करते हुये अपनी पाठ्ययोजनों का स्वरूप इस तरह से तैयार करेंगे कि उसमें बच्चों के विचारों को, अनुभवों को एवं उनकी भागीदारी को बढ़ाने के पर्याप्त अवसर होंगे। यह कोर्स यह अवसर देगा कि छात्राध्यापक उन चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए भी तैयार रहेंगे जिसमें यह छात्र–छात्राओं के अवधारणाओं संबंधी भ्रम एवं उनकी परिवेशीय समस्याओं की पहचान करते हुए उन्हें दूर करने की समझ बनायेंगे एवं जिम्मेदार नागरिक बनने की ओर अग्रसर कर सकेंगे।

यह पाठ्यक्रम बाल विकास विषय के साथ मिलकर यह समझने में मदद करेगा कि बच्चे अपने भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के प्रति गहरी समझ किस तरह विकसित करते हैं एवं यह अंतःदृष्टि उनकी कक्षा में शिक्षण प्रक्रियाओं को समृद्ध बनाएगी।

इस कोर्स का उद्देश्य ऐसे शिक्षक तैयार करना है जो पर्यावरण अध्ययन के दार्शनिक व ज्ञान मिमांसीय आधारों को समझ सकें और इसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा के समग्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में समझ सकें। पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम में बच्चों के अनुभव और उनके सवालों को कक्षा में लाने के लिए पर्याप्त मौके भी उपलब्ध कराए गये हैं। गतिविधियों से सीखने के अनुभवों को स्थान देने के द्वारा सक्रिय वातावरण निर्माण के अवसर प्रदान किए गए हैं। बच्चों को केन्द्र में मानकर चलने वाली इस व्यवस्था में आकलन को लेकर भी समझ में काफी बदलाव आए हैं और इस पाठ्यक्रम से अपेक्षा है कि छात्राध्यापक इन बदलावों को समझकर अपनी कक्षाओं में अलग–अलग चर्चाएँ एवं गतिविधियाँ कराने के लिये तैयार हो सकेंगे। उनकी भूमिका को अब तक मार्गदर्शक के रूप में देखा जा रहा है जो समय–समय पर उचित प्रश्न पूछ कर अपने अनुभवों से कुछ नया जोड़कर या ऐसे ही किसी और तरीकों से बच्चों को उनके ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सहयोग करेंगे।

2- fof'k"V mnn' ; **(Specific Objectives)**

- छात्राध्यापक को पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र को समझने एवं पाठ्यचर्या के विभिन्न दृष्टिकोण को आत्मसात करने में मदद करना।
- छात्राध्यापक एक सुविधादाता के रूप में बच्चों से विज्ञान व पर्यावरण से संबंधित जिज्ञासाओं पर सवाल करना तथा इस विषय में चर्चा करने के लिए प्रेरित करना।
- करके सीखने के दृष्टिकोण पर आधारित प्राथमिक स्तर (कक्षा 1–5 तक) की कक्षायोजना पाठयोजना का विकास करना।
- छात्राध्यापकों को पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के उपयुक्त–बालकेन्द्रित, अनुभव और गतिविधि आधारित तरीकों के लिए तैयार करना जिसमें शिक्षण बालकेन्द्रित, अनुभव, गतिविधि आधारित हो और जिससे पर्यावरण अध्ययन के कौशलों व दक्षताओं का विकास हो सके।
- छात्राध्यापकों को बच्चों के सीखने की गति के आधार पर विभिन्न तरीकों से आकलन करने के लिए तैयार करना।

3- bdkb v/; ;u&

l jy Ø-	bdkb dk uke	Vd
1	पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएँ	10
2	बच्चों के विचारों को समझना	15
3	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण और आकलन	15
4	पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण की तैयारी	10
5	पाठ्यपस्तक एवं शिक्षण विधियां	10
6	कक्षा योजना एवं मूल्यांकन	10
	vkrfjd vd	30
	dy vd	100

bdkbZ 1 % i;kZoj.k v/;;u dh vo/kkj.kk,¡ **(Concept of EVS)**

पर्यावरण अध्ययन का अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व, प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या का हिस्सा बनने के संदर्भ में इसका विकासक्रम।

- एकीकृत रूप में पर्यावरण अध्ययन : विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा से ली गयी समझ।
- पर्यावरण अध्ययन पर विविध दृष्टिकोण, ''प्राशिका'' कार्यक्रम (प्राथमिक शिक्षा में ''एकलव्य'' का नवाचारी प्रयोग), एन सी एफ (NCF) 2000, एन सी एफ (NCF) 2005।

bdkbZ 2 % cPpksa ds fopkjksa dks le>uk **(Understanding Children's Ideas)**

- प्राथमिक स्तर के बच्चों के ज्ञान की प्रकृति एवं सीमाएं ।
- बच्चों में ज्ञान अर्जन की विधियां।
- स्थान और समय की अवधारणा ।
- पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में बच्चों की संज्ञानात्मक विकास की अवधारणाओं में पियाजे के अनुसार परिवर्तन)।
- पाठ्यपुस्तकों सहित पाठचर्या सामग्री के विभिन्न प्राकल्पों (Sets) की समीक्षा (विश्लेषण)।

bdkbZ 3 % i;kZoj.k v/;;u dk f'k{k.k vkSj vkdyu
(Teaching of EVS and Assessment)

- पर्यावरण अध्ययन में प्रक्रियाएं : प्रक्रिया कौशल–सामान्य प्रयोग, अवलोकन, वर्गीकरण,समस्या समाधान, परिकल्पना रचना, प्रयोगों का अभिकल्प तैयार करना, परिणामों का अभिलेख, आंकड़ों का विश्लेषण, पूर्वानुमान, परिणामों की व्याख्या एवं अनुप्रयोग।
- नक्शा व चित्र में अंतर करना, नक्शा पढ़ना।
- पूछताछ के तरीके : गतिविधियां, परिचर्चा, समूह कार्य,भ्रमण, सर्वेक्षण, प्रयोग आदि।
- बच्चों के विचार व उनके अनुभव सीखने के साधन के रूप में उपयोग करना।
- कक्षा शिक्षण में शिक्षक की सुविधादाता के रूप में भूमिका।
- पर्यावरण अध्ययन – भाषा और गणित का एकीकरण।
- कक्षा में सूचना संचार तकनीक (ICT) का उपयोग।
- आंकलन एवं मूल्यांकन– परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व।
- आंकलन की विभिन्न विधियां एवं भविष्य में अधिगम के लिए आकलन का उपयोग

bdkbZ 4 % i;kZoj.k v/;;u ds f'k{k.k dh rS;kjh **(Planning for Teaching EVS)**

- योजना को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता।
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के कुछ उदाहरण।
- बच्चों के वैकल्पिक दृष्टिकोण को समझना।

- अवधारणा चित्र एवं थीमैटिक वेब चार्ट्स (संकल्पना अवधारणा एवं विषयगत भेद नक्शे, चार्ट्स)।
- इकाई योजना की रूपरेखा बनाना एवं उसका उपयोग।
- संसाधन इकट्ठा करना।
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग।
- दृश्य श्रव्य एवं इलेक्ट्रॉनिक सामग्री।
- प्रयोगशाला/विज्ञान किट।
- पुस्तकालय।
- सहपाठी समूह अधिगम (बच्चों की आपसी बातचीत) का उपयोग।

bdkbZ 5 % ikB~;iqLrd ,oa f'k{k.k fof/k;k (Textbooks and Pedagogy)

पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक तैयार करने के संदर्भ में मार्गदर्शक सिद्धान्तः सामाजिक दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ

- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण हेतु विषयवस्तु, उपागम एवं शिक्षण विधियां– बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सुविधादाता (Facilitator) के रूप में शिक्षक
- इकाई की विषयवस्तु एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका क्रियान्वयन
- अधिगम के संकेतक एवं मापदण्ड
- प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन

bdkbZ 6 % d{kk ;kstuk ,oa ewY;kadu (Classroom Planning and Evaluation)

- शिक्षण की तैयारी : पर्यावरण अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना
- योजना का मूल्यांकन
- चिंतनशील (Reflective) शिक्षण एवं अधिगम की समझ
- मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व, सीसीई (CCE)
- चिंतनशील (Reflective) प्रश्नों की तैयारी एवं चयन
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)– अधिगम के लिए आंकलन, अधिगम का आंकलन, रचनात्मक मूल्यांकन एवं उसके साधन, योगात्मक मूल्यांकन, मूल्य तुलना सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर

l=xr dk;l

पाठयोजना निर्माण—पर्यावरण की विषयवस्तु पर आधारित पाठयोजनाएँ निर्मित होगी।

- **Inter disciplinary, Multi diciplinary approach** पर आधारित पाठयोजनाएँ
- ए.एल.एम. आधारित —पाठयोजनाएँ
- समस्या समाधान आधारित पाठयोजनाएँ, इन पाठयोजनाओं में अभ्यास के दौरान सूक्ष्म शिक्षण की व्यवस्था करना।
- इकोक्लब की स्थापना एवं उसके क्रियाकलापों का निर्धारण जैसे वृक्षारोपण, वृक्षों का रखरखाव इादि।
- पर्यावरणीय भ्रमण पर रिपोर्ट तैयार करना— ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल पर।
- आसपास की खोज प्रायोजना निर्माण — जलस्त्रोत एवं उनका संरक्षण, फसलें, मिट्टी के प्रकार आदि।
- अध्यापन अभ्यास के दौरान स्टडी — सामाजिक, पर्यावरण के सुधार के संदर्भ में कुपोषित बालक, उग्र/ उद्दंड बालक।
- पाठ्यपुस्तक विश्लेषण — किसी एक पुस्तक का पाठवार विश्लेषण ।
- स्थानीय स्त्रोतों के संरक्षण हेतु गतिविधियाँ (वादविवाद, प्रहसन नाटिका आदि) तैयार करना।
- किन्हीं दो बच्चों का पर्यावरण अध्ययन में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की रिर्पोट तैयार करना।
- किसी एक कक्षा के लिए पर्यावरण विषय पर पाँच चिन्तनशील प्रश्न तैयार करना।

vrj.k dh fof/k;k

- गतिविधिपूर्ण वातावरण का निर्माण करते हुए आसपास के परिवेश के उदाहरण एवं समस्याओं पर कक्षा में चर्चा एवं स्थानीय क्षेत्रों का भ्रमण कराया जाना।
- संस्थान में वर्कशाप, सेमीनार आयोजित करके छोटे—छोटे समूह कार्य कराए जा सकते हैं जैसे पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण, समाचार पत्रिका का लेखन, क्षेत्र भ्रमण की रिपोर्ट का निर्माण आदि।
- छात्राध्यापको के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद एवं क्षमता संर्वधन के लिए वाद—विवाद,परिचर्या, ड्राइंग, पेटिंग, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण , गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना जैसे— पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति जागरूकता हेतु— वादविवाद।
- अपशिष्ट के प्रकार एवं प्रबंधन —प्रोजक्ट कार्य।
- प्राकृतिक संसाधनों के प्रदूषण एवं नियंत्रण— सर्वे।
- भोज्य पदार्थो का स्वास्थ्यवर्धक संयोजन— चार्ट निर्माण, प्रश्नोत्तरी।
- कुपोषित बालक एवं सीखने की गति — केस स्टडी।
- फसलें / कृषि हेतु मिट्टी—पानी आदि अनुकूल—प्रतिकूल परिस्थितियाँ— भ्रमण, सर्वे।
- प्राकृतिक आपदाएँ एवं जागरूकता— फिल्म, विडियो क्लिपिंग।
- अम्लीय वर्षा ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव— निबंध, वाद—विवाद ।

- सांस्कृतिक पर्यावरण – एकांकी, नृत्यनाटिका।
- पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में शिक्षाविदों / समाजशास्त्रियों, पर्यावरणविदों के योगदान –तात्कालिक भाषण, चर्चा।

l|>kokRed lnHk xFkk dh lph

- पर्यावरणीय पाठ्य पुस्तकें (प्राथमिक स्तर)
- दिगन्तर जयपुर का साहित्य
- एकलव्य मध्यप्रदेश का साहित्य संगति, एवेही एवेकस मुंबई
- एनसीईआरटी (2007) एन्वायरमेंटल स्टडीज–लुकिंग एराउन्ड Class-III-V नई दिल्ली
- एनसीएफ (2005) एवं एनसीटीई (2009) दिल्ली
- पर्यावरणीय अध्ययन– ए.बी. सक्सेना (रीजनल कॉलेज, भोपाल)
- विज्ञान शिक्षण का आयोजन–ए.बी. सक्सेना (रीजनल कालेज, भोपाल)
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण – प्रो. शर्मा, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M- f}rh; o"k

lkekftd foKku f'k{k.k

Pedagogy of Social Science

¼odfYid &i'u i=&18½

i.kkd &100

cká eY;kdu & 70
vkrfjd eY;kdu & 30

vkfpR; ,o mnn'; ¼**Relationale and Aim**½

सामाजिक विज्ञान विषयों का शिक्षण उच्च प्राथमिक कक्षाओं से प्रारम्भ होकर दसवीं कक्षा तक किया जाता है। इसे एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। यह विषय अन्य विषयों से भिन्न है क्योंकि इसके अन्तर्गत हम न केवल समाज का वैज्ञानिक तरीकों से अध्ययन करते हैं, बल्कि एक आदर्श सामाजिक संस्था को परिकल्पित करते हैं। वास्तव में, सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत आधुनिक समाज का पुनरावलोकन हमें सामाजिक परिघटनाओं को समझने और नये समाज की स्थापना करने के रास्ते ढूंढने में मदद करता है। इस विषय की प्रकृति भविष्य के समाज की कल्पना से जुड़ी है। अतः इसके शिक्षण में विविध प्रकार के सामाजिक दखल भी शामिल किये जाते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि इस विषय के द्वारा छात्राध्यापक किसी समाज के निर्माण में इन दखलों की भूमिका को समझने में सक्षम हो सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम में छात्राध्यापक सामाजिक विज्ञान की विशेषताओं को समझने के साथ इतिहास, भूगोल, सामाजिक–आर्थिक और सामाजिक–राजनीतिक जीवन की प्रकृति को भी समझ सकेंगे। स्कूली स्तर पर सामाजिक विज्ञान में क्या पढ़ाया जाना चाहिए, और कैसे पढ़ाया जाना चाहिए, इस पर पर्याप्त शोध और विमर्श हुए हैं, जिनको छात्राध्यापकों को जानना चाहिए। सामाजिक विज्ञान के कक्षा शिक्षण के अनुभव और उनसे मिली सीख भी अध्ययन का विषय है।

छात्राध्यापकों से यह भी अपेक्षा है कि वे पाठ्यपुस्तक की अवधारणा से परिचित होने के लिए अन्य सन्दर्भ सामग्रियों का भी उपयोग करें। जिससे वे पाठ्यपुस्तकों और उनकी अवधारणाओं से परिचित सकें।

सामाजिक अध्ययन विषय में बच्चों का आकलन करना कठिन है, क्योंकि बच्चों से अपेक्षा है कि वे पाठ के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को याद करके बताने के बजाय अपने अनुभव, विचार व धारणाओं को प्रस्तुत करें। इस समय में मूल्यांकन के क्या उपाय और प्रक्रिया होगी, को भी इस पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

एक स्कूली विषय के रूप में सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु उसकी प्रकृति और उद्देश्यों पर आधारित होती है। यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापकों को विषयवस्तु के विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित कराता है। इसे प्राकृतिक और दिया गया समझने के बजाय यह छात्राध्यापकों को इन विषयों के विभिन्न

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों में इन विषयों की समझ परिलक्षित होती है। यह पूछना और सुझाता है कि किस प्रकार सामाजिक विज्ञान हमारे आसपास के समाज और सामाजिक वास्तविकताओं को समय, स्थान, संस्ध्थानों, प्रक्रियाओं आदि की समालोचनात्मक समझ विकसित करता है।

इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र के विविध दृष्टिकोण इस कोर्स का आधार बने हैं जिससे यह समझा जा सके कि यह विषय अलग–अलग तरीकों से समझा जा सकता है और इसके उद्देश्य ऐतिहासिक व सामाजिक होते हैं। पाठ्यचर्या व पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण छात्राध्यापकों को यह समझने में मदद कर सकता है कि किस तरह समाज, बच्चे व सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण इन दस्तावेजों को किस तरह आकार देते हैं वे इनका अंतरण किस तरह से किया जाता है। बच्चे सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं को किस तरह ग्रहण करते हैं, व पाठ्यपुस्तकों की विधियाँ इस प्रक्रिया में सहायक होती है या बाधक बनती है इस पर चिंतन करने से छात्राध्यापक सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण और शिक्षणशास्त्र के बारे में अपनी समझ विकसित कर सकेंगे।

fof'k"V mnn'; **(Specific Objectives)**&

- इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के आधार पर समाज को समीक्षात्मक रूप से समझने और विश्लेषण करने का ज्ञान कौशल विकसित करना।
- आंकड़े एकत्र करने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने का कौशल विकसित करना।
- सामाजिक विज्ञान के स्कूली पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों को समीक्षात्मक दृष्टि से विश्लेषण करना।
- पाठ्यक्रम के अंतरण के लिए इस तरह की विधियों को जानना और उपयोग करना जो बच्चों में सामाजिक घटनाओं में जिज्ञासा उत्पन्न करे तथा समाज व सामाजिक संस्थाओं और उनके क्रियाकलापों को समीक्षात्मक व विचारात्मक दृष्टि से व्यक्त करने की क्षमताएं विकसित कर सके।
- स्वतंत्रता, समानता व न्याय के मानवीय व संवैधानिक मूल्यों को समझकर विभिन्नता और विविधता का सम्मान कर सकें और समाज में उनके लिए मौजूद चुनौतियों को समझ सकें।

इस कोर्स का उद्देश्य ऐसे शिक्षक तैयार करना है जिन्हें सामाजिक विज्ञान के दार्शनिक व ज्ञानमीमांशीय आधरों को समझ सकें ओर इसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा समग्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में समझ सकें। सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में बच्चों के अनुभव और उनके सवालों को सीान उदेने के द्वारा सक्रिय वातावरण निर्माण के अवसर प्रदान किए गए हैं। इस पेपर में विज्ञान व सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु को शामिल किया गया है। इस पेपर में छात्राध्यापकों को यह अवसर मिलेगा कि वे बच्चों के विचारों को समझने के साथ–साथ अपनी धारणाओं व पूर्वाग्रहों को भी परख सकें व अच्छी समझ की ओर बढ़ सकें।

v/;;u dh bdkb;k

I jy Ø-	bdkbZ dk uke	vad
1	lkekftd foKku dh izd`fr	10
2	lkekftd foKku dh ikB~;p;kZ ,oa egRoiw.kZ vo/kkj.kk;sa	15
3	cPpksa dh le>] f'k{k.k&vf/kxe lkexzh ,oa d{kk izfØ;k;sa rFkk mPp izkFkfed Lrj ij pqukSfr;ka	15
4	f'k{k.k 'kkL= ,oa vkdyu	10
5	ikB~;iqLrdsa ,oa f'k{k.k 'kkL= dh le>	10
6	d{kk f'k{k.k dh ;kstuk ,oa eY;kadu	10
	vkrfjd	30
	dqy ;ksx	100

bdkbZ 1 % lkekftd foKku dh izd`fr

सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन : प्रकृति और क्षेत्र, बच्चों में उनके सामाजिक संदर्भ और वास्तविकताओं की समझ विकसित करने में सामाजिक अध्ययन का योगदान, इतिहास की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र के संबंध में विविध दृष्टिकोण, इतिहासकार की भूमिका, इतिहास में दृष्टिकोण, स्रोत और सुबूत, नागरिक शास्त्र में यथा स्थितिवादी और सक्रियवादी/सामाजिक बदलाव का दृष्टिकोण, भूगोल के संबंध में विभिन्न नजरिये, सामाजिक विज्ञान को व्यवस्थित करने के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण, विषय केंद्रित, मुद्दा केंद्रित, एकीकृत सामाजिक अध्ययन एवं अन्र्तविषयक सामाजिक विज्ञान।

bdkbZ 2 % lkekftd foKku dh ikB~;p;kZ ,oa egRoiw.kZ vo/kkj.kk;sa

बदलाव एवं निरन्तरता की समझ, कारण एवं प्रभाव, समय संबंधी दृष्अिकोण एवं कालक्रम, निम्नांकित के माध्यम से सामाजिक–स्थानिक अंर्तक्रिया :–

1. समाज : सामाजिक संरचना, सामाजिक वर्गीकरण समुदाय एवं समूह
2. सभ्यता : इतिहास, संस्कृति
3. राज्य : अधिकार, राष्ट्र, राष्ट्र–राज्य एवं नागरिक
4. क्षेत्र या अंचल : संसाधन, स्थान और लोग
5. बाजार : विनिमय

bdkbZ 3 cPpksa dh le>] f'k{k.k&vf/kxe lkexzh ,oa d{kk izfØ;k;sa rFkk mPp izkFkfed Lrj ij pqukSfr;ka %

बच्चों का संज्ञानात्मक विकास एवं बच्चों में उनकी उम्र एवं सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में माध्यमिक/उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अवधारणा का निर्माण, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों के संदर्भ में इन कारकों का महत्व, अवधारणाओं की समझ के बारे में बच्चों की केस स्टडीज, बच्चे, सामाजिक विज्ञान के ज्ञान का निर्माण एवं कक्षा में अन्र्तक्रिया, सामाजिक विज्ञान के लिए समुदाय एवं स्थानीय स्रोतों सहित विविध शिक्षण–अधिगम सामग्री, विषय के संबंध में नजरिया क्या और कैसा है और वे किस तरह बच्चों की समझ बनाते

हैं, इसे समझने के लिए सामाजिक विज्ञान की विभिन्न पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना (केस स्टडीज के उपयोग, तस्वीरों, कहानियों/आख्यानों, संवाद और बातचीत, प्रयोगों, तुलना, अवधारणाओं के क्रमिक विकास आदि के आधार पर अवलोकन करें)। सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के शिक्षण को समझने और उसका समालोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए कक्षाओं का अवलोकन।

bdkbZ 4 % f'k{k.k 'kkL= ,oa vkdyu

शिक्षण विधियां : सामाजिक विज्ञान में अनुमान/खोज पद्धति, प्रॉजेक्ट विधि, आख्यानों का उपयोग, तुलना, अवलोकन, संवाद एवं परिचर्चा, सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों में आंकड़े, इसके स्रोत एवं साक्ष्य की अवधारणा, तथ्य एवं मत के बीच अंतर, पूर्वाग्रहों एवं झुकावों को समझना, तार्किक चिंतन के लिए निजी/प्रायोगिक ज्ञान का इस्तेमाल, सामाजिक विज्ञान में जानकारी के पुनर्स्मरण पर आधारित मूल्यांकन पद्धति का प्रभुत्व, अधिगम का मूल्यांकन करने के वैकल्पिक तरीके, मूल्यांकन के आधार, प्रश्नों के प्रकार, खुली किताब परीक्षा का उपयोग आदि।

bdkbZ 5 % ikB~;iqLrdsa ,oa f'k{k.k 'kkL= dh le>

- सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने हेतु दर्शन एवं मार्गदर्शक सिद्धान्त
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए विषयवस्तु, नजरिया एवं शिक्षण विधियां—बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सूत्रधार के रूप में शिक्षक।
- इकाई के विषय एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका निहितार्थ।
- अधिगम के अकादमिक मापदण्ड एवं संकेतक।
- सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्या के प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन।

bdkbZ 6 % d{kk f'k{k.k dh ;kstuk ,oa ewY;kadu

- शिक्षण की तैयारी : सामाजिक अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना
- योजना का मूल्यांकन
- आकलन और मूल्यांकन — परिभाषा, आवश्यकता और महत्व
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)— अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उसके साधन, योगात्मक आकलन, भारांकन सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर।

l=xr dk;Z **(Assignment)-** ¼dksbZ rhu½

- प्रामाणिकता की दृष्टि से किसी ऐतिहासिक फिल्म/धारावाहिक या उपन्यास की समीक्षा। प्रामाणिकता के आकलन के लिए फिल्मों, किताबों, अखबारों के आलेख, प्रदर्शनियों और संग्रहालयों जैसे स्रोतों का उपयोग। ''तथ्यों'' की जटिल प्रकृति, उसके गठन और ''मत'' से उसके अंतरों को समझना।
- किसी स्थान को अपने शिक्षण संस्थानों से दूरी और दिशा के संदर्भ में नक्शे में अंकित करना। नक्शे ऐतिहासिक स्थलों, बैंकों, अन्य संस्थानों, स्थानीय बाजार एवं रुचि के अन्य स्थानों को अंकित करें। स्थानीय इतिहास की जानकारी लेने एवं उस जगह की खासियत जानने के लिए वहां के रहवासी एवं अन्य लोगों से बातचीत भी करें। उस जगह पर स्थित विविध संस्थानों के बीच के संबंधों को भी देखने समझने की कोशिश करें।
- वर्ष 1950 के एवं आजकल की कुछ पुस्तकें, फिल्में, कार्टून्स, पत्रिकायें, जर्नल्स इकट्ठा करें। किसी आम व्यक्ति से संबंधित मुद्दों को निकालने के लिए सावधानीपूर्वक उनका अध्ययन करें। उन बदलावों

को रेखांकित करें जो किसी आम व्यक्ति के सरोकारों और जिन्दगी में देखे जा सकते हैं। क्या इन बदलावों के पीछे के कारण, हमारे देश की अर्थव्यवस्था, राजनीति, इतिहास और सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में तलाशे जा सकते हैं? अपनी समझ को रिपोर्ट/कविता/कोलाज/आख्यान/नाटक या अन्य किसी माध्यम में, जिसमें आप चाहें, प्रस्तुत करें।

- फील्ड विजिट के माध्यम से किसी झुग्गी बस्ती के बारे में उसकी अर्थव्यवस्था, गुजर बसर, राजनीति एवं ऐतिहासिक स्मृतियों के अर्थ में समझ बनायें। उनकी वर्तमान चिंताओं और समस्याओं की प्रकृति को समझने के लिए इन कारकों के बीच संबंध बनायें।
- किन्हीं दो उत्पादों के बारे में उनके कच्चा माल से लेकर अंतिम रूप तक की जानकारी खंगालें। उसे अंतिम व उपयोग लायक स्थिति तक लाने के लिए जो प्रक्रियायें होती हैं उनका अध्ययन करें। इस बात का अध्ययन करें कि किस तरह भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति और इतिहास के विविध कारकों ने इन प्रक्रियाओं को प्रभावित किया है। इस बात को भी देखें कि उनके बीच क्या अंतर्संबंध हैं।
- किसी विशिष्ट सामाजिक विज्ञान विषय, घटना, तिथि या स्थिति के इर्द–गिर्द एक मौखिक इतिहास प्रस्तुत करने का प्रॉजेक्ट बनायें। साक्षात्कार और बातचीत के माध्यम से लोगों के विचारों और मतों को समझें और उन्हें जगह व सम्मान दें। इन विवरणों को अन्य स्त्रातों से तुलना करके उनकी विश्वसनीयता का विश्लेषण करें। इस प्रॉजेक्ट का उपयोग, इतिहास के बारे में उपलब्ध बहुल मतों को समझने में करें। साथ ही इस बात को भी समझें कि कैसे कुछ मत, दूसरे अन्य मतों को दरकिनार कर हावी हो जाते हैं।
- लोगों के पास होने वाले विभिन्न प्रकार के वाहनों का विश्लेषण कर किसी समुदाय की परिवहन संबंधी जरूरतों का अध्ययन करें। जेण्डर एवं सामाजिक–आर्थिक मापदण्ड से इसके संबंधों की पड़ताल कीजिए। समुदाय की परिवहन संबंधी जरूरतों में समय के साथ आये बदलावों को चिन्हित कीजिए। ऐतिहासिक नजरिये से दिखाई देने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करें। साथ ही परिवहन के विविध प्रकारों के आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं का भी आकलन कीजिए।
- देखें कि किस तरह कार्टून्स, टिकट, मुद्रा, अखबार, पत्रिकायें, डॉक्युमेन्टरीज, नाटक, नक्शे, ग्लोब, ऐतिहासिक फिल्में, धारावाहिक, उपन्यास एवं इसी तरह की तमाम चीजें, सामाजिक विज्ञान शिक्षण में उपयोग होती है।
- किसी एक पिछड़ी बस्ती का सामाजिक व आर्थिक तथ्यों की जानकारी लेते हुए आज के संदर्भ में उनकी समस्याओं का अध्ययन एवं सुझावात्मक समाधान।
- अपनी संस्था से किसी बस्ती का नक्शा तैयार करना। प्रमुख सुझावात्मक बिन्दु–स्थिति, स्थान, बैंक, बाजार, संस्था, मंदिर/मस्जिद,/चर्च/गुरूद्वारा इत्यादि।
- सामाजिक विज्ञान के किसी विषयांश को लेकर तिथि एवं घटनाओं के आधार पर प्रोजेक्ट तैयार करना। अन्य स्त्रोतों से इन तथ्यों की विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता ।
- सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में डाक टिकट, मुद्रा, समाचार पत्र, पत्रिकाए] डाक्यूमेन्ट्री, नाटक, नक्शे, ग्लोब, ऐतिहासिक फिल्में, सीरियल किस प्रकार उपयोगी है, खोजकर स्पष्ट करना।
- पाठ्य पुस्तक समीक्षा– भौतिक स्वरूप, वर्तनी, चित्र एवं मानचित्र, अवधारणात्मक बिन्दु आदि।
- प्रश्न पत्र का विश्लेषण।

vrj.k dh fof/k;k (Mode of Transction)

1. चर्चा विधि का उपयोग करते हुए
2. कार्यशालाओं में विशेष सामाजिक संदर्भो पर बातचीत कराना
3. योग भ्रमण द्वारा

Lk>kokRed lnHk xFk lph

- सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण, माध्यमिक शिक्षा मंडल म.प्र. भोपाल
- सामाजिक विज्ञान (विषय–वस्तु एवं शिक्षण विधियाँ) आपरेशन क्वालिटी– एस.सी.ई.आर.टी.
- एस.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 6 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकें।
- राष्ट्रीय फोकस समूह (एन.सी.एफ.) सामाजिक विज्ञान शिक्षण आधार पत्र।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Batra, P. (ed.)(2010). Social Science Learning in Schools: Perspective and Challenges, New Delhi: Sage.
- Chakravarty, U. (2006). Everyday Lives, Everyday Histories: Beyond the Kings and Brahmanas of 'Ancient' India', New Delhi: Tulika Books, Chapter on: History as Practice: Introduction, 16-30.
- George, A. and Madan, A. (2009). Teaching Social Science in Schools: NCERT's New Textbook Initiative. New Delhi: Sage.
- Kumar, K. (1996). Learning From Conflict. Delhi: Orient Longman, pp.25-41, 79-80.
- NCERT, (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of Social Sciences. New Delhi: NCERT, 1-19.
- Eklavya (1994). Samajik Adhyayan Shikshan: Ek Prayog, Hoshangabad: Eklavya.
- Jain, M. (2005). Social Studies and Civics: Past and Present in the Curriculum, Economic and Political Weekly, 60(19), 1939-1942.
- NCERT Social Science Textbooks for Classes VI-VIII, New Delhi : NCERT.
- Social Science Textbooks for Casses VI-VIII, Madhya Pradesh: Eklavya.

Pedagogy of English

Second year

(Upper Primary- Optional paper)

¼ **Optional-Question paper 18** ½

Maximum Marks : 100

External : 70

Internal : 30

(Rationale and Aim)

This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is to give an expouses of ongoing updated method of ELT to the student teacher. The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student - teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Unit -wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Total
1.	Approaches to Teaching of English	15
2.	Pedagogical implication of SLA Theories	10
3.	Process and Planning	10
4.	Curriculum and resource material	15
5.	Classroom transaction process	10
6.	CCEAssessment	10
	Internal Mark	30
	Total	100

Unit 1- Approaches and methods to teaching of English.

- Active Learning Methods
- Congnitive and constructivist approach : nature and role of learners different kinds of learners.
- Teaching mutigrade classess multilevel classess.
- Socio- Psychological factor (attitude, aptitude, motivation, level of aspiration)
- From knowledge based approach to skill based approach.

Unit 2 - Pedagogical Implications of SLA Theories.

- Second language acquisition theories
- Interaction in second language in classroom, from theory to practice
- the pedagogy of reading.
- Discourse oriented pedagogy

Unit 3- Process and Planning.

- Characteristics of a good teaching plan
- Different processes of teaching proses, poetry, grammar.
- Constructivist situations using formats like 5 E's (Engage, Explore, Explain, Elaborats, Evaluate), and SQ4Rs (Survey, Questions, read, recite, review, reflection)

Unit 4- Curriculum and resource material:

- NCF-05 Chapter 3 3.2.2- Curriculum , 3.3.1 The curriculum at different stages
- NCF-05 Chapter 3 3.1.1- Language education 3.1.2 Home/ first/ Language or mother tongue, 3.1.3 Second Language acquisition.
- NCF-05 Chapter 2 2.3- Curriculum studies; knowledge and curriculum
- Position Paper on Language.

Unit 5- Classroom transaction process

- Role of 'talk' in the classroom to make the class more interactive.
- Development of vocabulary through pictures, flow- charts and language game.
- Dealing with textual exercises (Vocabulary, Grammar, study skills, projectwork)

Unit-6 Assessment

- CCE-Concept and procedure: Implications of Assessment- for the learner, for the Teacher and for the community, maintaining teacher's diary, record; informal feedback from the teachers; measuring progress; using portfolio for subjective assessment,
- Assessing speaking and listening, reading and writing abilities through CCE
- Attitude towords errors and mistakes in second language learning.

Mode of Transaction

The teaching would be done -

(a) Group work
(b) Work shop
(c) Seminar
(d) Actual classroom teaching.

Assignment

- Reading Passages and analyzing the distribution of linguistic elements.
- Making generalization on syntactic and morphological properties.
- checking the generalizations and editing them individually and also through collaboration, feedback.
- critical reading of spacific areas of grammar as discussed in a few popular grammar books and reaching at conclusions.
- Survey, interview
- Group discussion on advantages of learner-centered-approach.
- Search and download steps of action research
- Prepare strategies for addressing the problems of low proficient learners
- Publishing children's products (School Magzines)
- Prepare digital presentation on recent developments in technology and language learning.
- observe open Education resource (OER) lessons on second language acquisition. Comment critically.
- Prepare teaching- learning material; low cost, no cost, using the classroom as a resource
- Prepare teaching learning- planning on prose lesson given in the text book of upper primary classes.
- Searching and downloading videos from internet on planning for teaching
- Download any grammar app
- Prepare learning outcomes on the bassis of resource material (NCF-05 Chapter 3-3.1.1-Language education)
- Review text book of English of class VIII
- Search and download NCF-05. Position Paper
- Select at least 25 vocab items from any English text book- find their pronunciation online.
- Prepare a series of dialogue on Need of English language in today scenerio and present them
- Make pictures, charts and daily routine activites using vocalbulary given in text book of class VI and present them in the class room.
- Download videos of good classroom practices

- Prepare question papers of English for class VI, VII, VIII for summative assessment of students.
- Make a digital presentation on CCE describing formative and summative assessment
- Present the above presentation in school programme.

Essential Readings

- Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.
- Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin. (New Edition)
- Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.
- NCERT (2005). National Curriculam Framework, 2005. New Delhi: NCERT
- NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi. Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatterly, M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities and Classroom Language, Oxford: Oxford University Press.
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. – द्वितीय वर्ष
गणित शिक्षण
(कक्षा 6 से कक्षा 8 तक)
Pedagogy of Mathematices
(वैकल्पिक प्रश्न पत्र – 18)

पूर्णांक – 100
बाह्य मूल्यांकन –70
आंतरिक मूल्यांकन – 30

आचित्य का उद्देश्य (Relationale and Aim)

प्राथमिक स्तर पर बच्चे यह सीखते हैं कि उन्हें अपनी आस–पास की दुनिया में कार्यों को करने के लिए गणितीय ज्ञान का व्यवस्थित उपयोग किस तरह करना चाहिए। इसी समय बच्चे गणितीय ज्ञान के प्रतीकात्मक स्वरूप के संपर्क में आते हैं और यह सीखते हैं कि गणित में अवधारणाओं और प्रक्रियाओं के बीच किस तरह संबंध बनाया जाता है। गणितीय ज्ञान के अधिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे कुछ महत्वपूर्ण आयामों जैसे– अमूर्त चिंतन व सामान्यीकरण, तर्क करने के गणितीय तरीकों, संकेतों/प्रतीकों के प्रयोग की आवश्यकता आदि के बारे में जाने। समस्या समाधान के गणितीय तरीके स्थानिक संबंध व सूचनाओं से सार ग्रहण करना सीखना भी उनके लिए आवश्यक है।

यह पाठ्यचर्या गणित के मूलभूत क्षेत्रों यथा– बीजगणित, ज्यामिति व आंकड़ों के प्रबंधन को देखने के लिए गहरी अंतर्दृष्टि, कौशलों के विकास और संवेदनशीलता में अभिवृद्धि के प्रयास करता है।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- गणितीय तरीकों से तर्क करने के लिए अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
- बीजगणितीय चिंतन के प्रति सजगता एवं उसे सराहने की क्षमता विकसित करना।
- ज्यामितीय अवधारणाओं की समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को सूचनाओं के साथ कार्य करने के सांख्यिकीय तरीकों एवं संबंधित गणितीय अवधारणाओं से परिचित कराना जो इस प्रक्रिया में मदद करते हैं।
- भावी शिक्षकों में बच्चों को औपचारिक गणित संप्रेषित करने से संबंधित प्रक्रियाओं पर अपनी प्रतिक्रिया देने की क्षमताओं में अभिवृद्धि करना।
- भावी शिक्षकों को अपनी प्रतिक्रिया देने जैसे कार्यों से जोड़ना जिससे वे गणितीय चिंतन के मूलभूत अंगों को समझने एवं उन्हें संप्रेषित के तरीकों में समर्थ हों।

bdkbZokj vadksa dk foHkktu&

lj y Ø-	bdkbZ	fo"k;	vad
1.	1.	xf.krh; rdZ	15
2.	2.	chtxf.kr fpUru	10
3.	3.	0;kogkfjd vadxf.kr vkSj vkadMksa dk izca/ku	10
4.	4.	LFkku ¼Space½ vkSj vkdkjksa dk T;kferh; :i ls n`[kuk	15
5.	5.	xf.kr dk lEizsf"kr djuk	10
6.	6.	xf.kr esa vkdyu ls lEcfU/kr enns	10
	vkarfjd vad		30
	dqy ;ksx		100

bdkbZ 1 % xf.krh; rdZ

सामान्यीकरण की प्रक्रियायें, पैटर्न पहिचानना और परिकल्पना के निर्माण में सहायक आगमनात्मक तर्क (inductive reasoning) प्रक्रिया।

- गणित की संरचना : अभिगृहीत (Axioms), परिभाषाएँ, प्रमेय (Theorems)
- गणितीय कथनों (statements) की वैधता जाँचने की प्रक्रिया : उत्पत्ति (proof), प्रति–उदाहरण, अनुमान (Conjecture)
- गणित में समस्या समाधान– एक प्रक्रिया
- गणित में रचनात्मक चिंतन

bdkbZ 2 % chtxf.kr fpUru

- अंक पैटर्न से निकलने वाले सामान्यीकरण को अज्ञात के इस्तेमाल द्वारा अभिव्यक्त करने को समझने में मदद करने वाला अंक पैटर्न
- क्रियात्मक सम्बन्ध (Functional relations)
- चरों (variables) का प्रयोग–कब और क्यों।
- सामान्य रेखीय समीकरणों को बनाना और हल करना।
- बीजगणितीय चिंतन पर आधारित गणितीय खोजबीन/पहेली।

bdkbl 3 ½ 0;kogkfjd vidxf.kr vkj vkdMk dk icl/ku

- आंकड़ों का इकट्ठा करना, उनका वर्गीकरण और उनकी व्याख्या करना।
- संग्रहित आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण।
- प्रारंभिक सांख्यिकीय तकनीक।
- रेलवे समय सारिणी सहित अन्य समय सारिणी बनाना।
- प्रतिशत।
- अनुपात और समानुपात।
- ब्याज।
- बट्टा / छूट (Discount)

bdkbl 4 ½ LFkku ½Space½ vkj vkdkjk dk T;kferh; :i l nj[kuk

- ज्यामितीय चिंतन के स्तर– वान हील (Van Hieles)
- सरल द्विविमीय और त्रिविमीय आकृतियाँ–ज्यामितीय शब्दावली।
- समरूपता और समानता (Congruency and similarity)।
- रूपान्तरण और ज्यामितीय आकृतियाँ।
- मापन और ज्यामितीय आकृतियाँ।
- ज्यामितीय उपकरणों का प्रयोग करते हुए ज्यामितीय आकृतियों की रचना।

bdkbl 5 ½ xf.kr dk lEizf"kr djuk

- पाठ्यचर्या और कक्षागत प्रक्रियाएँ।
- गणित के शिक्षण– अधिगम की प्रक्रिया में पाठ्य पुस्तकों की भूमिका।
- गणित प्रयोगशाला / संसाधन कक्ष।
- छात्रों को उनके कार्यों में हुई गलतियों के बारे में फीडबैक देना।
- गणित से डर और असफलता से पार पाना।

bdkbl 6 ½ xf.kr e vkdyu l lEcfU/kr enn

- मुक्त उत्तर वाले प्रश्न (open ended questions) और समस्याएं।
- अवधारणात्मक समझ के लिए आकलन।
- सम्प्रेषण और तर्क जैसे कौशलों के मूल्यांकन के लिए आकलन।
- गणितीय विचार को समझाने के लिए उदाहरणों एवं अन्य–उदाहरणों का प्रयोग

- तर्क के परिपेक्ष्य में पुस्तक का आलोचनात्मक विश्लेषण
- गणितीय शब्दावली और उसके गणितीय अववोध के विकास पर स्पष्टता

l=xr dk;Z (Assignment)

1. कम्पास यंत्र (ज्यामिति बाक्स) का निर्माण एवं ज्यामिति के शिक्षण में इसका प्रयोग।
2. गोला, शंकु,बेलन के मॉडल का निर्माण तथा इनका आयतन व क्षेत्रफल ज्ञात करना।
3. किसी एक कक्षा में विद्यार्थियों की आयु, ऊँचाई तथा भार संबंधी आंकड़ों का संग्रह करना एवं उनका आलेख बनाना तथा मध्यमान ज्ञात करना।
4. गणित पैटर्न
5. कागज को मोड़कर त्रिविमीय आकृतियों का निर्माण एवं उनक शिक्षण में उपयोग।
6. बीजीय सर्वसमिकाओं के ज्यामितिय प्रमाण हेतु मॉडल तैयार करना।
   a. $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$
   b. $(a-b)^2 = a^2-2ab+b^2$
   c. $a^2-b^2 = (a+b)(a-b)$
7. π के सत्यापन मॉडल तैयार करना।
8. वृत्त के क्षेत्रफल के सत्यापन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग।
9. अनियमित आकृति के क्षेत्रफल की गणना हेतु मॉडल निर्माण एवं उसका कक्षा शिक्षण में उपयोग।
10. संख्या रेखा पर परिमेय संख्याओं के प्रदर्शन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग।
11. किसी बैंक में जाकर तीन जमा/ऋण योजनाओं का विवरण पताकर लाभकारी स्थिति का विश्लेषण करना।
12. ज्यामिति अवधारणाओं के सत्यापान हेतु मॉडल निर्माण एवं शिक्षण में उपयोग।

vrj.k dh fof/k;k ¼Mode of Transaction½

- गणितीय ज्ञान के प्रति बच्चे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, इसकी समझ हासिल करने के लिए भावी शिक्षकों को बच्चों द्वारा किए गए काम के अवलोकन पर आधारित चर्चा में बच्चों को शामिल करना चाहिए।
- गणित की विभिन्न अवधारणाओं के बीच जुड़ाव और सम्बन्धों को समझने के लिए भावी शिक्षकों को समूह में अवधारणात्मक ख़ाका (concept maps) बनाना चाहिए। जिससे समूह कार्य के महत्व को आत्मसात किया जा सके।
- उठाए गए मुद्दों के नज़रिये से सिद्धान्त को समझने के लिए पाठ्य वस्तु (जैसा कि चर्चा के रूप में सुझाव दिया गया है) को संवाद के साथ पढ़ना चाहिए।

- गणित के ज्ञान के ऐतिहासिक उदाहरणों को विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से एकत्र करना और उस पर अपनी राय व्यक्त करना।
- गणितीय मॉडल (विशेषकर ज्यामिति से संबंधित) बनाना।
- प्रस्तुति के माध्यम से शिक्षण–अधिगम की सामग्रियों को आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

I>kokRed InHk xFk Iph

1. म.प्र. पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा 1 से 8 तक की गणित विषय की प्रचलित पाठ्य पुस्तकें।
2. गणित शिक्षण – एम.एस. रावत व एस.बी.लाल
3. गणित अध्ययन –सत्संगी एवं दयाल
4. NCF 2005 NCERT द्वारा प्रकाशित
5. Position paper National focus Group on teaching of mathematics
6. NCERT द्वारा तैयार गणित किट प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर
7. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009
8. वैदिक गणित –स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ
9. वैदिक गणित भाग 1,2,3, – डॉ. कैलाश विश्वकर्मा
10. मापन एवं मूल्यांकन –आर.ए. शर्मा
11. राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका?
12. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M- f}rh; o"k

fo"k; % foKku f'k{k.k

Pedagogy of Science

¼ofdfYid i'u i= & 18 ½

i.kkd &100
cká eY;kdu & 70
vkrfjd eY;kdu & 30

1- vkfpR; ,o mnn'; ¼Rationale and Aim½

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राध्यापकों में विज्ञान की अवधारणाओं की समझ का विकास कर, गलत धारणाओं को चुनौती देने हेतु तैयार करना है एवं उन्हें विज्ञान की प्रकृति से अवगत कराना हैं। इससे वे विभिन्न पहलुओं के संबंध में अपने विचारों को निर्भय होकर व्यक्त कर सकेंगे एवं विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ स्थापित कर उनमें वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास कर सकेंगे। छात्राध्यापकों को ज्वलंत मुद्दों पर सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने योग्य बनाना तथा जो उनके शिक्षण में परिलक्षित हो सके।

2- fof'k"V mnn'; ¼Specific objectives½

- छात्राध्यापकों में विज्ञान की अवधारणाओं की समझ विकसित करना ।
- छात्राध्यापकों को विज्ञान की प्रकृति के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना।
- छात्राध्यापकों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ एवं उनके संज्ञानात्मक विकास करने योग्य बनाना।
- छात्राध्यापकों में विज्ञान शिक्षण एवं आकलन हेतु रणनीति निर्माण करने की समझ विकसित करना।

3- bdkbokj vdk dk foHkktu

Øekd	bdkb	fo"k;	vd
1	1	विज्ञान की अवधारणाओं का पुनरावलोकन	10 अंक
2	2	विज्ञान क्या है जानना और बच्चों के वैज्ञानिक विचारों को समझना	15 अंक
3	3	सभी के लिए विज्ञान (Science for all)	15 अंक
4	4	पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण विधियों का संज्ञान	15 अंक
5	5	कक्षा–कक्ष योजना और मूल्यांकन	15 अंक
		vkrfjd vd	30 अंक
		dy ;kx	100 अंक

bdkbZ % 1 foKku dh vo/kkj.kkvksa dk iqujkoyksdu (**Recapetulation of Concepts of Science**)

- ➢ कक्षा 1 से 8 तक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के आधार पर परिवेश में होने वाली निम्नलिखित घटनाओं का पुनरावलोकन एवं अन्य विषयों का विज्ञान से संबंध स्थापित करना।
- जंग क्यों लगती है?
- बादल कैसे बनते है?
- मोमबत्ती जलते समय छोटी क्यों हो जाती है?
- वनस्पति और जंतु अपना भोजन कैसे करते हैं?
- वनस्पतियों तथा जन्तुओं में पुनरुत्पादन कैसे होता है।
- पवन चक्की कैसे कार्य करती है।
- बल्ब कैसे प्रकाश देता है।

इन सब प्रश्नों के लिए छात्राध्यापक उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करेंगे, गतिविधि एवं प्रयोग करेंगे तथा अवलोकन का अभिलेख (रिकॉर्ड) रखेंगे। छात्राध्यापक आपस में तथा शिक्षक–अध्यापक के साथ चर्चा करेंगे, प्रश्नों का उत्तर कैसे प्राप्त करें इस बात पर चिंतन करेंगे, जाँच करने के लिए निश्चित विधि को ही क्यों चुना गया, इन अभ्यासों को करवाते समय शिक्षक–अध्यापक सुविधादाता का कार्य करेंगे।

bdkbZ&2 foKku D;k gS tkuuk vkSj cPpksa ds oSKkfud fopkj le>ukA (**To Know what is science and understand the scientific thoughts, idea of children**)

- विज्ञान की प्रकृति– अवधारणा, प्रक्रिया एवं उत्पाद
- विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में संबंध
- वैज्ञानिक विधि का ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग
- वैज्ञानिक एवं विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचार
- विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचारों का अवलोकन विश्लेषण एवं दस्तावेजीकरण।

bdkbZ&3 % lHkh ds fy, foKku ¼**Science for all**½

- विज्ञान की कक्षा में लिंग, भाषा, संस्कृति एवं समानता संबंधी मुद्दे; सामाजिक एवं सामाजिक विकास में विज्ञान की भूमिका।
- जन सामान्य तथा खेती के लिए पर्याप्त पानी की उपलब्धता पर विचार।
- हरित क्रांति और टिकाऊ खेती की विधियां।
- सूखा, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं का किसानों पर प्रभाव।
- अनेक प्रजातियों के लुप्तप्रायः होने के कारण।

- स्थानीय स्तर पर समुदाय में होने वाली समस्याएं एवं निराकरण।
- साहित्य, सर्वे, चर्चा, पोस्टर द्वारा अभियान, लोकसुनवाई एवं किसानों से वार्ता तथा क्षेत्र एवं विशेषज्ञों से संबंधित अन्य मुद्दे।

bdkbZ&4 ¼ ikB~;iqLrd ,oa f'k{k.k fof/k;ksa dk laKku ¼**Cognition of teaching methods and text book**½

- विज्ञान की पाठ्य पुस्तक के निर्माण के दार्शनिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार
- विषयवस्तु, उपागम और विज्ञान शिक्षण प्रविधियां अर्न्तक्रियात्मक और सहभागी शिक्षण विधियां, सुविधादाता के रूप में शिक्षक
- प्रकरण, इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और इनके निहितार्थ
- शैक्षिक मानदण्ड और अधिगम के सूचकांक।
- विज्ञान पाठ्यचर्या के प्रभावकारी विनिमय हेतु अधिगम स्रोत।

bdkbZ&5 ¼ d{kk&d{k ;kstuk vkSj ewY;kadu ¼**Classroom Planning and Evaluation**½

- विज्ञान शिक्षण हेतु शिक्षण तत्परता; कक्षावार, इकाईवार, कालखण्डवार वार्षिक योजना तैयार करना एवं उसका मूल्यांकन।
- योजना का मूल्यांकन
- आंकलन एवं मूल्यांकन परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), अधिगम का आंकलन, अधिगम के लिए आंकलन, रचनात्मक आंकलन और उपकरण, सारांशित मूल्यांकन, अधिभार सारणी प्रतिपृष्ठपोषण प्रतिवेदन प्रक्रिया, अभिलेखन और पंजीयन

l=xr dk;Z **(Assignment)**

- अपने आसपास होने वाली वैज्ञानिक घटनाओं का अवलोकन करते हुए उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करना एवं अभिलेख बनाना।
- विज्ञान से संबधित प्रोजेक्ट कार्य
- प्रयोगों के आधारित एक पाठयोजना बनाना।
- विज्ञान के प्रादर्श निर्माण
- विज्ञान की पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण एवं शिक्षण अधिगम सामग्री का महत्व

- वर्तमान में किसी एक कृषि समस्या को पहचानना उसके वैज्ञानिक कारण को जानते हुए समाधान पर आधारित अभिलेख तैयार करना।

vrj.k dh fof/k;k (Mode of Transaction)

- विभिन्न संदर्भों में सामान्य प्रयोग एवं अन्वेषण अयोजित करना
- वैज्ञानिक लेख, वैज्ञानिक भ्रमण, प्रोजेक्ट कार्य, विज्ञान संग्रहालय एवं विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- अवलोकन के अवसर प्रदान करना, समूह चर्चा, क्विज, पोर्टफोलियों घटना–प्रधान अवलोकन (एनेक्डाटल), बच्चों द्वारा अप्रत्याशित प्रश्न, पेपर पेंसिल परीक्षण आदि का उपयोग करना
- इकाईवार रचनावादी निर्माणवादी उपागम आधारित पाठयोजना निर्माण करवाना।
- किताब, फिल्म, मल्टी मीडिया पैकेज जैसी शिक्षण सामग्री की सहायता से अध्यापन ।

l>kokRed lnHk xFk lph

- मध्यप्रदेश में संचालित कक्षा 1 से 8 तक की विज्ञान विषय की पुस्तकें
- विज्ञान कक्षा 1 से 8 की विषय की NCERT द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तकें
- बाल वैज्ञानिक कक्षा 6,7 एवं 8 विज्ञान कार्य पुस्तकें 2000, पाठ्यपुस्तक निगम भोपाल
- स्मॉल साइंस, विज्ञान कक्षा 6, 7 एवं 8 पाठ्य पुस्तकें 2003, होमी भाभा साइंस सेन्टर मुंबई
- प्राथमिक स्तर की पर्यावरण विषय की पुस्तकें । सी ई ई की किताबें ।
- सक्सेना, ए. बी. 2011 निर्माणवाद विज्ञान कक्षा ।
- ALM शिक्षक संदर्शिका राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल विज्ञान क्या है केरेन हेडाक
- विज्ञान में ज्ञान क्षेत्र, एन सी एफ (2005) NECRT, NCERT नई दिल्ली
- विज्ञान शिक्षण, एन सी एफ पोजी शान पेपर (2005) NECRT, NCERT नई दिल्ली
- NCERT(2005). Focus group paper on Science Education, Position Paper. New Delhi.
- Rampal, A. (1993). School science in search of a democratic order? In Kumar, K. (Ed.) Democracy and Education in India, New Delhi: NMML.
- Bal Vigyanik, Text books for Science, Class VI-VIII. Madhya Pradesh: Eklavya.
- Down to Earth,Centre for Science and Environment.
- NCERT, (2005). Syllabus for Classes at the Elementrary Level. Vol. I, New Delhi: NCERT.
- NCERT.(2008). Text books for Science, Class VI-VIII. New Delhi: NCERT. TEhelka Magazine.
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

f}rh; o"k
0;kogkfjd

Mh-,y-,M-&f}rh; o"kZ

dk;Z vkSj f'k{kk

Work And Education

¼0;kogkfjd&4½

iw.kkZad & 50
cká ewY;kadu & 25
vkarfjd ewY;kadu & 25

1- vkSfpR; ,oa mn~ns';

¼Rationale and Aim½ %&

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षण की प्रक्रियाओं में छात्राध्यापकों एवं बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाता है। इस हेतु सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक कार्यानुभवों को स्थान देना महत्वपूर्ण लक्ष्य है। छात्राध्यापक शैक्षणिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक कार्यानुभवों के आधार पर बच्चों के सर्वांगीण विकास करने में सक्षम हो सकते हैं। अतः शिक्षण के क्षेत्र में कार्य और शिक्षा के अंतर्गत व्यावहारिक कार्यों की भूमिका महत्वपूर्ण है। वर्तमान में कौशल विकास पर जोर दिया जा रहा है जो बच्चों के व्यावसायिक दक्षता को कार्य कौशल के माध्यम से शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास की प्राप्ति सहज संभव है। कार्य विकास के प्रत्येक क्षेत्र से प्रत्यक्ष संबंध रखने वाले होते हैं। कार्य करते हुए जो ज्ञानार्जन होता है, वह न केवल स्थाई होता है बल्कि उसका प्रभाव जीवन पर्यंत रहता है। इससे मनुष्य की क्षमता और मूल्यों का विकास भी होता है। कार्य से जुड़ा शैक्षिक अनुभव बच्चों के विकास में ज्यादा प्रभावशाली होता है।

कार्य और शिक्षा की अवधारणा है कि रचनात्मक/उत्पादक कार्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में मस्तिष्क का विशेष रूप से प्रयोग होता है। इसमें बच्चे, जिन वस्तुओं या कामों की रचना करते हैं, वे उसके विषय में जानते हैं, सोचते हैं। उसके संबंध में भांति–भांति की कल्पनाएँ करते हैं। बनाई जाने वाली वस्तुओं या कार्यों में हाथों के समावेश के भाव से उनमें सौंदर्य बोध का विकास होता है। रचना–कर्म करते समय वे अपने हाथों का प्रयोग करते हैं। हाथ के प्रयोग में अनुभव के और कुशलता की आवश्यकता होती है। शरीर, बुद्धि एवं हृदय तीनों के समुचित विकास से बच्चे में श्रम के प्रति सम्मान की भावना, आत्म निर्भरता, उत्तरदायित्व और सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायता मिलती है। बच्चे उत्पादकता को समझते हुये बाजार में उसके प्रयोजन, बाजारी भाव, व्यवस्थापन में नियोजन कर सकते हैं।

2- fof'k"V mn~ns'; **¼Specific Objectives½**

कार्य और शिक्षा के तहत ऐसे मूलभूत क्षेत्रों को शामिल किया गया है, जो शिक्षा एवं शिक्षण के क्षेत्र में प्रभावशाली उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं।

- शैक्षिक के साथ सहशैक्षिक गतिविधियों के विकास की समझ विकसित करना।
- प्रारंभिक शिक्षा के साथ प्रकृति, पेड़–पौधों, बागवानी, पर्यावरण की समझ प्रायोगिक एवं व्यावहारिक रूप से प्रदान करना।
- हस्तकौशलों के विकास संबंधी कौशलों से परिचित कराना।
- रोजगारमूलक एवं उद्यमिता से संबंधित विभिन्न कौशलों का विकास करना।
- परिवेश व समूह में कार्य करने की आदतों का विकास करना।
- निरीक्षण क्षमता का विकास करना।
- कल्पना शक्ति एवं एकाग्रता का विकास करना।

3- fo"k; dk egRo ¼**Importance of Subject**½ %&

'कार्य और शिक्षा' प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर दी जाने वाली शिक्षण प्रक्रिया का आवश्यक अंग है। 'कार्य और शिक्षा' उद्देश्यपूर्ण और सार्थक शारीरिक, बौद्धिक एवं हाथों से किया जाने वाला काम है। यह सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा है। इससे उत्पादक वस्तुएँ या सेवाएँ प्राप्त होती हैं। इसके तहत की जाने वाली गतिविधियाँ सीखने वाले की रुचियों, योग्यताओं तथा आवश्यकताओं पर आधारित हो सकती हैं। इससे शिक्षा के स्तर के साथ–साथ कुशलताओं और ज्ञान के स्तर में वृद्धि होती जाएगी। इसके द्वारा प्राप्त किया गया अनुभव आगे चलकर रोजगार पाने में तथा अपने पर्यावरण को समझने में स्थाई रूप में आर्थिक स्तर पर समय कालिक प्रयास हो सकता है।

सामान्य तौर पर 'कार्य और शिक्षा' को दो भागों में विभाजित किया गया हैः–

1. अनिवार्य क्रियाएँ
2. वैकल्पिक क्रियाएँ

उपरोक्त दोनों क्रियाओं को निम्नानुसार सारिणीबद्ध किया गया है। प्रत्येक संस्था अपने यहाँ उपलब्ध साधन–संसाधनों तथा अपनी सुविधानुसार छात्राध्यापकों से 'कार्य और शिक्षा' से संबंधित अनिवार्य वैकल्पिक क्रियाएँ कराएंगी।

➢ अनिवार्य क्रियाओं की सूची–

- बागवानी
- चित्रकला
- जैम, जैली, अचार, मुरब्बा बनाना

4- bdkbZokj vadksa dk foHkktu ¼Unit-wise Division of Marks½

Ø-	bdkbZ	fo"k;	vad
1.	1	अनिवार्य क्रियाएँ • बागवानी • चित्रकला	 8 7
2.	2	वैकल्पिक क्रियाएँ	10
3.	3	बाह्य मूल्यांकन	25
		dqy	50

5- vfuok;Z fØ;k,¡

bdkbZ 1- ckxokuh

- भूमि एवं गमलों की तैयारी, साफ–सफाई, समतलीकरण, गड्ढे तैयार करना एवं भरना।
- पौधों एवं बीजों का रोपण।
- खाद एवं उर्वरक तथा उनके अनुप्रयोग।
- वृक्षारोपण की योजना बनाना।
- कटिंग, दाब कलम एवं गूटी द्वारा पौधे तैयार करना।
- पौधों की सुरक्षा।
- पौधों की देखभाल सिंचाई, कटाई, छँटाई आदि।
- किचन गार्डन।
- संस्थान में गार्डन की तैयारी निर्माण

xfrfof/k;k¡&

सामान्य तौर पर बागवानी हेतु निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत गतिविधियाँ संचालित की जाना चाहिए। छात्राध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि उपरोक्त क्रमानुसार गतिविधियों को स्वयं करने का प्रयास करें।

- समतलीकरण, कंकड़–पत्थर बीनना, क्यारी का निर्माण एवं गढ्ढों को तैयार करना, गमले तैयार करना, उन्हें भरना। (क्यारियों का निर्माण फूलों, सब्जियों के आधार पर किया जा सकता है)
- बीजों की पहचान करना, बीजों के नमूने एकत्र करना एवं उपलब्ध क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक बीज की मात्रा का निर्धारण करना।
- पौधे तैयार करना– नर्सरी लगाकर, कटिंग, दाब, कलम एवं गूटी द्वारा।

- बीजों एवं पौधों का रोपण करना (विशेषकर कतार से कतार की दूरी एवं पौधों से पौधों की दूरी एवं सुन्दरता के आधार पर)
- उर्वरकों, खादों एवं जैविक खादों की जानकारी प्राप्त करना, पहचान करना एवं नमूने एकत्र करना।
- कम्पोस्ट खाद या हरी पत्ती की खाद तैयार करने हेतु गड्ढे तैयार करना एवं खाद का निर्माण करना।
- प्रति हैक्टर क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक खाद एवं उर्वरकों की मात्रा की गणना करना।
- उर्वरकों को देने के तरीकों के साथ उपकरणों एवं रखरखाव की जानकारी प्राप्त करना।
- आसपास के वातावरण एवं प्रचलित कीटों तथा रोगों के आधार पर कीटनाशकों एवं रोगनाशकों की जानकारी तैयार करना।
- कीटनाशकों एवं रोगनाशकों के छिड़काव की विधियों एवं यंत्रों की जानकारी प्राप्त करना।
- बगीचे के पौधों एवं वृक्षों की कटाई, छँटाई, सहारा देना, सिंचाई हेतु थाला या लाइन बनाना।
- शाला के अनुपयोगी जल का प्रयोग बागवानी हेतु करना।

vrj.k dh fof/k;k

- छात्राध्यापकों से निम्नानुसार नमूना फाइल बनवाई जाए–
  - अ. विभिन्न प्रकार के बीजों की (फूलों की, सब्जियों की)
  - ब. उर्वरकों एवं खादों की (उपलब्ध पोषक तत्वों के अनुसार)
  - स. बागवानी या कृषि कार्यों में उपयोग लाये जाने वाले यंत्रों के चित्रों की, उपयोगिता के आधार पर।
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पर उपलब्ध स्थल पर मौसमी पुष्पों का बगीचा तैयार करवाना। इस हेतु पाँच गुणा पाँच फीट की क्यारियाँ तैयार की जा सकती हैं। छात्राध्यापकों की संख्या अधिक होने पर विभिन्न पुष्पों के गमले भी तैयार किये जा सकते हैं।
- औषधीय उद्यान की तैयारी
- भ्रमण (एक्सपोजर विजिट)– अपने क्षेत्र में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्र, शासकीय नर्सरी अथवा प्रसिद्ध राष्ट्रीय या राज्यस्तरीय गार्डन का भ्रमण कराया जा सकता है तथा इस भ्रमण कार्य से क्या सीखा–समझा संबंधी रिपोर्ट भी तैयार की जानी चाहिए, जिसे सभी से साझा किया जा सकता है।
- प्रोजेक्ट– इसके तहत छात्राध्यापकों को एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करनी है, इसके लिए निम्नांकित सूची से प्रोजेक्ट कार्यों को चुना जा सकता है।
  - अ. अपने प्रशिक्षण संस्थान की स्थिति अनुसार एक वार्षिक पौधा रोपण योजना तैयार करना ताकि प्रांगण की सुन्दरता दिखाई दे सके।
  - ब. अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित पौधों, वृक्षों, पक्षियों आदि की जानकारी एकत्र करना।
  - स. अपने प्रशिक्षण संस्थान में वर्षभर के लिये माहवार बागवानी क्रियाओं का केलैण्डर तैयार करना।

द. जिले/विकासखंड/संकुल स्तर पर अपने वाले प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में बागवानी संबंधी कार्यों की एक सामान्य सूची तैयार करना।

bdkbZ 2 fp=dyk

lkekU; mÌ'; & Nk=k/;kid lh[k ldsxA

1. अवलोकन क्षमता का विकास करना।
2. अपने आस पास के वातावरण से संबधित सामग्री का पता लगाना।
3. चित्र बनाने और उसमें रंग भरने के कौशल का विकास करना।

fof'k"V mÌ';

1. विभिन्न आकृतियों का अवलोकन करना और वातावरण से रंगों के उपयोग को समझना।
2. चित्रकला की वस्तुओं को पहचानना एवं संग्रहित करना।
3. विभिन्न तरह की सतहों को चित्रकला के संदर्भ में पहचान करना।
4. सरल आकृतियों को बनाना।

कुछ निर्देश शिक्षक प्रशिक्षको द्वारा दिये जायेंगे तथा कुछ अधिगमकर्ता के द्वारा ढूँढ सकेंगे।

fof/k

1. सीधा दृश्य सामग्री के अवलोकन द्वारा
2. स्वतंत्र अभिव्यक्ति के द्वारा
3. खोज के द्वारा
4. मॉडलिंग के द्वारा
5. समूह कार्य के द्वारा
6. प्रदर्शनी के द्वारा

6- oSdfYid fØ;k,a (प्रथमिक स्तर से 2 तथा उच्च प्राथमिक स्तर से 2 चयन करेंगे)

bdkbZ&3

Hkwfedk&

कार्य और शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य कौशल विकास है। जिस वातावरण में बच्चा रहता है उसको समझते हुए स्वयं का विकास कर सके। साथ ही साथ राष्ट्रीय विकास में सहयोग कर सके। इस हेतु शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं में कौशल विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। वर्तमान की आवश्यकता अनुरूप स्व विकास के लिये कौशलों की सूची दी जा रही है। इससे छात्रों में विभिन्न प्रकार के प्रायोगिक कौशलों का विकास होगा। छात्र स्वयं का रोजगार कर सके, उसकी शुरुआत कर सके, अपने को आर्थिक दिशा में समर्थ बना सके।

lkekU; mn~ns'; & इसके पश्चात अधिगमकर्ता सक्षम हो सकेंगे–

- प्रायोगिक उत्पादन कौशल विकसित हो सकेगा जो व्यक्तिगत के साथ–साथ समुदाय का सामाजिक आर्थिक विकास कर सकेगा।
- स्वयं के व्यवसाय के लिये सकारात्मक अभिवृति, रुचि और ईमानदारी सीख सकेंगे।
- ऐसा वातावरण विकसित होगा जिसमें अधिकमकर्ता सीखने के लिये प्रेरित हो सकेगा।
- बच्चों में समुदाय में उच्च उत्पादकता लाने की भावना का विकास करना।

ikFkfed Lrj ds fy;s ¼d{kk 1 ls 5½

mn~ns';

- तकनीकी कौशल में रुचि विकसित करना
- उत्पादकता के लिये कौशलों और उपकरणों का सुरक्षित ढंग से उपयोग करना।
- विभिन्न प्रकार के तकनीक प्रविधि का उपयोग करना, अपने विचार को संप्रेषित करना।
- अपने कौशलों का पर्यावरण में सही उपयोग करना।

mPp ikFkfed Lrj ds fy;s ¼d{kk 6 ls 8½

mn~ns';

- तकनीकी समस्याओं का समाधान करना
- व्यवसाय शुरु करने के लिये कौशल विकसित करना।
- समूह कार्य को प्रोत्साहित करना। इसके लिये प्रायोजन कार्य में 50 प्रतिशत अधिगमकर्ता की सहभागिता है।
- अधिगमकर्ता अपनी आय/आवक (Income) को पैदा कर सके उसकी योजना बना सके ऐसे कौशलों का विकास करना।
- अपनी आय और व्यय के अभिलेख का रखरखाव कर सके ऐसे अभ्यास कौशलों का विकास करना।
- अपने व्यवसाय में होने वाले लाभ हानि का मूल्यांकन करना।
- व्यवसाय में समय का मूल्य और कठिन श्रम से सफलता के महत्व को जोड़ पाना।
- अधिगमकर्ता में गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिये कौशल विकसित करना।

fo"k; ikFkfed Lrj ds fy;s dk;ksZ dh lwph& (किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. कागज कला
2. खिलौना निर्माण
3. कक्ष सज्जा

4. दुकान व्यवस्थापन
5. बाजार प्रक्रिया
6. घरेलू व्यावसायिक गतिविधियाँ
7. हम हमारी आवश्यकताओं को कैसे पूरा करते हैं।
8. व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी
9. ललित कला और व्यवसाय
10. खेती एवं व्यवसाय
11. रोजगार
12 बुक बाइंडिग
13. आभूषण तैयार करना
14. ग्रामीण क्षेत्रों के व्यवसाय
15. कपड़े सिलना
16. घर में बचत एवं खर्च

mPp ikFkfed d fy; lph(किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. काष्ठ का कार्य
2. उद्योग में शुरुआत (आंत्रप्रेन्योर) स्वयं का व्यवसाय
3. उद्यमी और राष्ट्रीय विकास
4. आर्थिक विकास में भूमिका
5. उत्कृष्टता एवं उपलब्धि
6. प्रदर्शनी और प्रदर्शन
7. अभिलेखों का रखरखाव

1- dkxt dyk

- कागज के प्रकारों को नाम सहित जानना।
- कागज के प्रकार अनुसार उससे कलात्मक कलाकृतियां बनाना।
- रद्दी कागज का उपयोग।
- कागज कला कृतियों के बाजार में महत्व को समझना।
- तैयार सामग्री के आय व्यय का ब्यौरा तेयार करना।
- खिलौना/मूर्ति निर्माण।
- काष्ठ/मिट्टी या अन्य प्रकार के खिलौना बनाने की तकनीक समझना।
- तैयार किये जा रहे खिलौने का बाजार मूल्य और उपयोगिता को समझना।
- खिलौने निर्माण में सावधानी और रखरखाव को समझना।

- खिलौने के शैक्षिक मूल्य को समझना (यह कौशल–खिलौना बाजार के साथ–साथ, खिलौने की आवश्यकता अनुरूप शोध को प्रवृत करेगा, किस आयु वर्ग के लिये किस तरह की खिलौने की आवश्यकता होगी)।

2- feVVh ;k ydMh ;k Qj d f[kykSus cukuk

- खिलौने बनाने के साधनों की जानकारी।
- खिलौनों की उपयोगिता व महत्व।
- खिलौनों का रख–रखाव।
- खिलौने आकर्षक बनाना।
- खिलौने बनाने वाली सामग्री की जानकारी।

3- d{k lTtk&

- कक्ष सजावट के उद्देश्य को समझना
- कक्ष के प्रकार (शालेय कक्ष, घर का ड्राइंग रूम, आफिस के अधिकारी कक्ष) के अनुरूप कक्ष सजावट की योजना बनाना।
- कक्ष सजावट के लिये उपयोगी सामग्री की सूची तैयार करना एवं संग्रह करना।
- कम से कम लागत में कक्ष सज्जा की योजना बनाना।

  (यह कौशल इंटीरियर डेकोरेशन की नींव तैयार करने में मददगार हो सकता है)

4- nqdku 0;oLFkkiu

- दुकान के आशय को समझना
- दुकान के प्रकार को समझना
- दुकान में सामग्री को व्यवस्थित रखना
- बिक्री के दौरान सामान को यथोस्थान रखने को जानना
- प्रतिदिन आय व्यय का ब्यौरा तैयार करते हुये लाभ हानि को पहचानना।
- अपने आर्थिक लाभ को बढ़ाने हेतु योजना बनाना।

  (प्रारंभिक स्तर पर अपने व्यवसाय को स्थापित करने का कौशल विकसित करने में मदद करेगा)

5- ckt kj i.fØ;k ¼lkIrkfgd] esyk] lCt h] diMk½

- बाजार के महत्व को जानना।
- लेन देन की प्रक्रिया को समझना
- मोल भाव की प्रक्रिया को समझना
- सामग्री की गुणवत्ता को परखना
- सेल्समेन के व्यवहार को परखना

- व्यवसायी के व्यवहार और व्यवसाय में आपसी संबंध को समझना

6- ?kjsyw O;kolkf;d xfrfof/k;k¡

- घरेलू व्यवसाय के रूप में हो रही गतिविधियों की सूची बनाना
- घरेलू स्तर पर किसी व्यवसाय को कैसे चलाया जा रहा है, जानकारी प्राप्त करना।
- घरेलू स्तर के व्यवसाय के प्रचार–प्रसार के तरीके समझना।
- घरेलू स्तर पर किये जा रहे व्यवसाय का आय व्यय का दैनिक/साप्ताहिक, मासिक/वार्षिक व्यय विवरण को समझना।
- घरेलू स्तर के व्यवसाय को बड़े पैमाने पर ले जाने की योजना बनाना
- घरेलू व्यवसाय के काम लाभ/महत्व समझना

¼?kjsyw O;olk; ds izdkj le> ldsaxs] ykHk le> ldsaxs] egRo le> ldsaxs½

7- ge gekjh vko';drkvksa dk dSls iwjk djrs gSa &

- प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता (दैनिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक) की सूची तैयार करेगा।
- प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति कैसे और किसके द्वारा की जा रही है तैयार करेगा।
- ऐसी आवश्यकताओं की सूची बनाएगा जिसे उसे स्वयं पूरा करना है और उसकी पूर्ति की योजना बनाएगा।
- आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किये गये संघर्ष/मेहनत/कठिन कार्य का ब्यौरा तैयार करेगा।
  (अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक होने का कौशल विकसित होगा)

8- O;kolkf;d xfrfof/k;ksa esa bZekunkjh&

- ईमानदारी के आशय को समझना
- व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी के महत्व को समझना।
- व्यावसायिक गतिविधियों में विज्ञापन की विश्वसनीयता को समझना।
- विज्ञापन और व्यवसाय का महत्व

(वर्तमान में विज्ञापन से चलता बाजार और ईमानदारी के महत्व को समझ सकेगा तथा ईमानदारी से दूरगामी परिणामों को जानना)

9- yfyr dyk vkSj O;olk;

- ललित कला को समझना
- ललित कला पर आधारित व्यवसाय।
- ललित कला पर आधारित सामग्री की बाजार तक पहुँच।

10- [krh ,d 0;olk;

- खेती को लाभ का धंधा बनाने के प्रयास
- खेती की मौसम पर निर्भरता, समस्याओं को समझना।
- कृषि यांत्रिक का महत्व

11- jktxkj

- रोजगार का महत्व
- रोजगार के अवसर
- विभिन्न रोजगार हेतु योग्यता, रोजगार प्राप्ति हेतु तैयारी प्रयास
- भविष्य में किस तरह के रोजगार बढ़ने की संभावना

12- c|d ckbfMx

- कैसे होती है
- महत्व

13- vkHk"k.k r;kj djuk

- प्रचलित आभूषण एवं परंपरागत आभूषणों की जानकारी।
- कम लागत में आभूषण निर्माण करना।
- आभूषण का बाजार मूल्य जानना।
- बाजार में जगह बनाने हेतु प्रयास करना।

14- xkeh.k {k=k e 0;olk;

- घरेलू एवं कुटीर उद्योगों की जानकारी
- विभिन्न घरेलू व्यवसाय में लगने वाला कच्चे माल की जानकारी (कोई एक)
- घरेलू स्तर पर लगाये जाने वाले व्यवसाय की योजना बनाना।
- किये जाने वाले व्यवसाय के बाजार मूल्य का पता लगाना।

15- diM flyuk&

- एक व्यवसाय के रूप में देखना।
- व्यवसाय के रूप में स्थापित करने की योजना बनाना।
- प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु प्रयास करना।

16- ?kj e cpr ,o [kp

- बचत से आशय
- घर में किस तरह बचत हो सकती है।

- घर के प्रमुख और गौण खर्चे क्या हैं।
- माह में खर्चे का हिसाब रखना।
- आगामी माह हेतु बचत योजना बनाना।

17- 0;fDrxr rFkk ?kjsyw fglkc&fdrkc ,oa ctV cukuk&

- व्यक्तिगत तथा घरेलू बजट बनाने की उपयोगिता।
- उपयोग में आने वाली सामग्री की सूची तैयार करना।
- प्रत्येक सामग्री के मूल्य की जानकारी प्राप्त करना।
- आय व आवश्यकता के अनुसार परिवार का बजट बनाना।
- आय–व्यय का लेखा–जोखा रखना व महत्व समझना।
- वर्तमान आय–व्यय के लेखों की पिछले से तुलना करना।

18- dk"B dk dk;Z %&

- लकड़ी की किस्म एवं उसकी उपयोगिता जानना।
- लकड़ी को सुरक्षित रखने की विधियाँ तथा विभिन्न प्रकार की लकड़ी के गुण जानना।
- कार्य करते समय सावधानियाँ एवं उपचार।
- औजारों का वर्गीकरण करना।
- औजारों का रखरखाव तथा सही ढंग से उपयोग करना।
- वार्निश बनाने की विधि तथा पॉलिश करना, स्प्रे पॉलिश बनाना तथा वार्निश पॉलिश व स्प्रे पॉलिश के गुण, अवगुण एवं अंतरों को समझना।
- काष्ठ के उपयोग को समझना
- खिलौने में उपयोग के लिये साधनों की जानकारी
- खिलौनों का रख–रखाव
- खिलौनों को आकर्षक बनाने हेतु प्रयास
- फर्नीचर का रख रखाव तथा सही ढंग से उपयोग
- फर्नीचर को पालिश करना
- फर्नीचर को दीमक–सीलन से बचाना

19- m|ksx esa 'kq#vkr ¼m|eh½

- समाज में अपना उद्योग प्रारंभ करना।
- समाज में अपने उद्योग को हमें लेना उद्यमी के रूप में स्थापित होने की प्रक्रिया।
- उद्योग प्रारंभ करने में आने वाली कठिनाइयाँ

- उद्योग को प्रचार प्रसार हेतु प्रयास
- उद्योग का बाजारीकरण

20- m|eh ,o jk"Vh; fodkl

- प्रोजेक्ट कार्य के रूप में लेना
- कैसे उद्योग राष्ट्रीय विकास में सहायक हैं।

21- vkfFkd fodkl e Hkfedk– आर्थिक विकास से आशय

- कार्य करते हुये आर्थिक स्थिति को मजबूत करना।
- आर्थिक विकास में स्वयं की भूमिका

22- mRd"Vrk ,o miyfC/k&

- किसी भी कार्य में उत्कृष्ठता लाने से आशय समझना
- कार्य की गुणवत्ता को और अधिक श्रेष्ठ बनाना।
- किये कार्यों में उपलब्धि शामिल करना।

25- in'kuh vkj in'ku

- प्रदर्शनी और प्रदर्शन से आशय
- प्रदर्शनी का महत्व
- प्रदर्शित में प्रदर्शन प्रक्रिया का महत्व
- प्रदर्शिनी के लाभ

26- vfHkys[kk dk j[k j[kko&

- अभिलेख से आशय
- अभिलेख के प्रकार
- अभिलेखों का महत्व
- किसी 2 प्रकार की अभिलेखों का संधारण

27- cfdx lEcf/kr tkudkjh

- बैंक जमा बचत, लेन देन पर्ची की जानकारी
- बाजारों में वस्तुओं पर मिलने वाली छूट (प्रतिशत मे) की समझ, बिल बनाना
- जमा, निकासी पर्ची की समझ
- बैंक की योजनाएँ
- योजना से मिलने वाले लाभ– हानि की समझ
- अखबारों में छपने वाले विज्ञापन की कटिंग से बाजार के सामानों पर मिलने वाली छूट की स्क्रैप बुक बनवाना

l>kokRed lnHk xFk lph&

1. प्रोडक्शन टेक्नोलॉजी ऑफ वेजीटेबल फ्राप्स – डॉ. एस.पी. सिंह
2. वेजीटेबल प्रोडक्शन – डॉ. डी.व्ही.एस. चौहान
3. फ्लोरीकल्चर प्रोडक्शन – टी.के. बोस
4. हैण्ड बुक ऑफ हार्टीकल्चर – डॉ. के.एन. चड्ढा
5. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,y f}rh; o"k

jpukRed ukVd]yfyr dyk vkj f’k{kk

Creative Drama,Fine Art and Educaion

¼0;kogkfjd&5½

i.kkkd	& 50
cká eY;kdu	& 25
vkrfjd eY;kdu	& 25

vkfpR; ,o mÌs'; & **(Rationale And Aim)**

n'; J0; dyk ¼ykd lxhr] lxe lxhr ykdukVd] ykdufR; vkfn½

गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं के मेल को संगीत कहते हैं। लोक संगीत या लोकगीत अत्यंत प्राचीन एवं मानवीय संवेदनाओं के सहजतम उद्‌गार है, ये लेखनी द्वारा नहीं बल्कि लोक जिव्हा का सहारा लेकर जनमानस से निःसृत होकर आज तक जीवित हैं। महात्मा गांधी ने कहा था कि लोकगीतों में धरती गाती है, पर्वत गाते है, नदियाँ गाती है, फसले गाती है, उत्सव, मेले और अन्य अवसरों पर मधुर कंठों से लोग समूह में लोकगीत गाते हैं।

सुगम संगीत भारतीय संगीत विद्या का एक अंग है वह संगीत जिसे सहजता से सीखा, गाया और बजाया जा सके, जिसे निश्चित नियमों में बाँधा नहीं गया है, जो लोगों में प्रिय है, सुगम संगीत कहलाता है।

गीत, कहानी और बाल आधारित गतिविधियों को सीखने में गीतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी गीत में पिरोये वर्णों और शब्दों से बच्चे खेलते है जीते है और उनसे अपनेपन का रिश्ता जोड़ लेते है। भाषायी कौशलों सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना के विकास में गीत सहायक सिद्ध होते है, बल्कि यह कहें कि सीखने की पूरी प्रक्रिया बच्चों के लिए नीरस थकाऊ और कष्टदायी न होकर रोचक, सरस और आनंददायी हो जाती है।

लोक नृत्य आनंद का प्रतीक है जो जीवन को आनंद से आल्हादित कर देती है। हावभाव आदि के साथ जो शारीरिक गति दी जाती है उसे नृत्य कहा जाता है।

fof'k"V mÌs'; ¼**Specific Objectives**½

- कला माध्यमों के साथ स्वयं कार्य करने के अवसर देना।
- विविध क्षेत्रों के कलाकारों को सुनने/उनके कार्य को देखने और उनसे बातचीत करने के अवसर उपलब्ध कराना।

- अपने क्षेत्र के सांस्कृतिक मेलों एवं प्रदर्शनियों का अवलोकन करना और इस अनुभव पर चर्चा करना। स्थानीय कलाकारों/कामगारों (महिला एवं पुरुष) को आमंत्रित कर उनकी प्रतिभाओं से सीखने के अवसर निर्मित करना। ये स्थानीय कला जैसे मांडना, रंगोली, मेंहदी, मूर्ति बनाना आदि हो सकते हैं।
- संस्थान में हस्तकला, चित्रकला, मूर्तिकला, कठपुतली, मुखौटे तथा शिक्षण सामग्री के प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उसमें सहभागिता करना।
- विभिन्न कलात्मक और सामाजिक सरोकारों से सम्बंधित फ़िल्में दिखाकर उन पर चर्चा करना।
- लोकसंगीत एवं सुगम संगीत के अभ्यास एवं प्रदर्शन के अवसर देना।
- एकल व सामूहिक लोक नृत्यों के अभ्यास एवं प्रदर्शन के अवसर देना।
- संगीत के विभिन्न रूपों को समझते हुए मानवीय संस्कृति में संगीत की भूमिका को आगे ले जाना।
- संगीत का प्रयोग करते हुए प्रस्तुतियाँ देना।
- लोक संगीत के कलाकारों और सुगम संगीत के कलाकारों की प्रस्तुतियां करवाना एवं इस अनुभव पर चर्चा करना।
- आवाज़ खोलने का प्रशिक्षण देना, स्वर लय व ताल का अभ्यास करवाना।
- क्षेत्र विशेष के पारंपरिक लोक संगीत जैसे– लोरियां, फसल के गीत, त्योहारों के गीत, विवाह के गीत आदि को एकत्रित करना व उनका आनंद लेना।
- बच्चों के साथ मिलकर सांगीतिक टुकड़ों की रचना करना और संगीत के सत्र का संचालन करना।
- मध्यप्रदेश के प्रमुख लोक नृत्य के बारे में बताना।
- सहजता से उपलब्ध विभिन्न वाद्य यंत्रों से परिचय कराना।

स. क्र.	इकाई	विषय	बाह्य मूल्यांकन अंक	आंतरिक मूल्यांकन अंक	कुल अंक
1.	1.	दृश्य श्रव्यकला (लोकसंगीत, सुगम संगीत आदि)	12	12	24
2.	2.	लोकनाटक, लोकनृत्य	13	13	26
		कुल अंकों का योग	25	25	50

सत्रगत कार्य (**Assignment**)

- अपने क्षेत्र में प्रचलित लोकनृत्य और लोकगीतों की जानकारी एकत्र करना।

- अपने क्षेत्र के कुछ लोकगीतों का संग्रह करना।
- समूह में किसी लोकनृत्य और लोकगीत को गाने का अभ्यास करें व उनकी प्रस्तुति देना।
- अपने अंचल में प्रचलित किसी लोकनाट्य का अवलोकन करें, उसके बारे में समूह में चर्चा करना।
- अपनी कक्षा में समूह में किसी लोकनाट्य का मंचन करना।
- एक विज्ञापन तैयार कर प्रस्तुत करना।
- किसी लोक कलाकार से बातचीत करते हुए उनकी कला यात्रा की जानकारी इकट्ठी करना, इस कला की आज की स्थिति और कलाकारों की तकलीफ़ों के बारे में भी जानकारी एकत्रित करना।
- कागजों / पेपरमेंसी / कपड़े आदि के प्रयोग से कठपुतली मुखौटे आदि बनाना।
- कट आउट्स के माध्यम से कहानी का प्रदर्शन करना।
- इंटर्नशिप के दौरान कक्षा शिक्षण के समय कठपुतली का प्रयोग कर कहानी सुनाना।
- इंटर्नशिप के दौरान कट आउट्स के माध्यम से शिक्षण करना।

vUrj.k dh fof/k;k& ¼**Mode of Transaction**½

- बच्चों को कहानी की सीडी दिखाकर ।
- चित्र (दृश्य) दिखाकर।
- कठपुलती के माध्यम से ।
- प्रचलित गीतों को मोबाइल और स्वंय द्वारा सुनाना

l>kokRed lnHk lph&

- एन.सी.एफ. 2000, एन.सी.एफ. 2005, NCERT न्यू दिल्ली
- आधार पत्र– कला शिक्षा
- दिवास्वप्न गिजूभाई बधेका NCERT न्यू दिल्ली
- कला कारीगरी की शिक्षा– गिजू भाई बधेका का भाग– 1,2
- हर दिवस कला दिवस – डॉ. पवन सुधीर वीडियो NCERT
- बेसिक एज्यूकेशन – बेनीप्रसाद
- शिक्षा का वाहन कला – देवीप्रसाद
- बच्चों के लिए खेल– क्रियाएँ – मीना स्वामीनाथन
- लोक संस्कृति – बंसन्त निरगुणे
- प्रतिमा विज्ञान – डॉ. इन्दुमती मिश्र (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी)
- कला चित्रकला – विनोद भारद्वाज (प्रवीण प्रकाशन)
- कला एवं तकनीक – डॉ. अविनाश ब. वर्मा, अमित वर्मा
- हस्तशिल्पों की धरोहर राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र
- आधार पत्र 1.7 और 1.8 NCERT

* ललित कला 2009 (राष्ट्रीय मानव संग्रहालय)
* मध्यप्रदेश का इतिहास एवं संस्कृति – डॉ.एस.एल. वरे (कैलाश पुस्तक सदन भोपाल)
* भारत की चित्र कला की कहानी – डॉ. भगवत शरण उपाध्याय (राजपाल एण्ड संस दिल्ली)
* भारतीय संगीत की कहानी – डॉ. भगवत शरण उपाध्याय (राजपाल एण्ड संस दिल्ली)
* लर्निंग कर्व – कला स्कूल शिक्षा में
* कुछ–कुछ बनाना – एन. सायर वाइजमैन – (एकलव्य प्रकाशन)
* शिक्षण सहायक सामग्री – मेरी ऐन दास गुप्ता (अनुवाद अरविन्द गुप्ता)
* कला शिक्षा शिक्षण – डॉ. प्रभा शर्मा
* चित्रकला के मूलतत्व – राजहंस प्रकाशन
* कला से सीखना – जेन साही एवं रोशन साही (एकलव्य प्रकाशन)
* मध्यप्रदेश सम्पूर्ण अध्ययन – डॉ. शादाब अहमद सिद्दीकी ।
* (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
* ICT दिल्ली के कला शिक्षा के समस्त विडियो जैसे– कहानी एनिमेशन, कठपुतलीकला आदि।
* ` साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद के लिए विषय की मांग के अनुसार वाद–विवाद, परिचर्चा, ड्रॉइंग, पेटिगं, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना।
* योग, खेल, पी.टी. (व्यायाम) का निरंतर अभ्यास डाइट प्रशिक्षण में सुबह के सत्र में कराया जाए, जिसका छात्राध्यापक इनके लिए अभ्यस्त हो सकें।

(http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,y f}rh; o"k

cPpk dk 'kkjhfjd] HkkoukRed LokLF; vkj LokLF; f'k{kk

Children's Physical, Emotional Health and Health Education

0;kogkfjd&6

i.kkd vd &50

ckg; vd & 25

vkUrfjd vd & 25

vkfpR; ,o mnn'; (Rationale & Aim)

इस एक वर्षीय व्यवहारिक पाठ्यक्रम की संरचना प्रारम्भिक विद्यालयों के बच्चों के शारीरिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य के विकास हेतु किया गया है। पाठ्यक्रम में शिक्षा, संवेग और स्वास्थ्य के मूल अन्तर्सम्बन्धों को जोड़कर बताया गया है। बच्चों को ध्यान में रखकर छात्राध्यापक में संवेग और स्वास्थ्य विकास हेतु शिक्षा के योगदान को पूर्णतः मान्यता दी गई है। पाठ्यक्रम में शिक्षा और स्वास्थ्य के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों को प्रदर्शित किया गया है। अच्छा स्वास्थ्य अधिगम हेतु आवश्यक शर्त होने के साथ ही प्रत्येक बच्चे का मूल अधिकार भी हैं। कक्षाओं में नामांकन, ठहराव, ध्यानकेन्द्रण और अधिगम परिणाम बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य और संवेगात्मक विकास होने के साथ मजबूत सम्बन्ध रखता है।

स्वास्थ्य में केवल रोगाणुओं और व्याधियों से मुक्ति ही नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य के सामाजिक, आर्थिक, संवेगात्मक और शारीरिक पक्षों की समझ से परिपूर्ण है। शिक्षक को बच्चों के स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों को खोजकर स्वास्थ्य शिक्षा की जड़ें बच्चों में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में जमानी होंगी। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य शिक्षक को स्वयं और बच्चों दोनों के स्वास्थ्य मुद्दों की आर्थिक और सामाजिक परिपेक्ष्य में निर्धारित समझ से लैस करना है। केवल शिक्षक की अभिवृत्ति के बारे में कहने के बजाय यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापक को असमान और विविध प्रकार के बचपन और बाल–अनुभवों को समझने के अवसर देता है।

fof'k"V mnn'; % (Specific Objectives)

- स्वास्थ्य और कल्याण की अवधारणाओं की सम्पूर्ण समझ बनाना तथा सामाजिकता निर्धारण फ्रेमवर्क का उपयोग करते हुए बच्चों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को समझना।
- स्वास्थ्य और शिक्षा के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों को समझना तथा स्वास्थ्य मामलों में शिक्षकों के योगदान को समझना।
- प्रारंभिक शालाओं में संचालित विशिष्ट बाल–स्वास्थ्य कार्यक्रमों का परीक्षण करना।
- स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा में शिक्षण के ज्ञान और कौशल का विनिर्माण करना तथा अध्यापक शिक्षा के अन्य पाठ्यक्रमों और स्कूल विषयों के प्रसंगों से एकीकृत करना।

- प्रायोगिक कार्यों के माध्यम से स्कूल/कक्षा की वास्तविक यथार्थताओं से सैद्धान्तिक और अवधारणात्मक अधिगम को जोड़ना।

पाठ्यक्रम की सबसे महत्वपूर्ण बात शिक्षा और स्वास्थ्य के अन्र्तसम्बन्धों की समझ स्थापित करना और वे किस प्रकार बच्चें की स्वास्थ्य आवश्यकताओं के साथ जुड़ती हैं, बताना है। पाठ्यक्रम की विषयवस्तु शारीरिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य शिक्षा और कल्याण को प्रत्येक बच्चे के मूल अधिकार के रूप में जोड़ती है।

bdkbZokj vad foHkktu

lå Ø-	bdkbZ	fo"k;	vad
1	1	cPpksa dk 'kkjhfjd ,oa HkkoukRed LokLF;] 'kkys; LokLF; f'k{kk	7
2	2	LokLF; f'k{kk gsrq Kku ,oa dkS'ky fodkl&	6
3	3	HkkoukRed LokLF; lEca/kh vko';drk,] fofHkUurk,¡ ,oa lek;kstu	6
4	4	'kkjhfjd f'k{kk& LokLF; ,oa f'k{kk dk vfHkUu vax	6
		vkarfjd vad	25
		dqy vad	50

bdkbZ 1- cPpksa dk 'kkjhfjd ,oa HkkoukRed LokLF;] 'kkys; LokLF; f'k{kk

- स्वास्थ्य शिक्षा की अवधारणा, व्यवहार परिवर्तन प्रादर्श बनाम स्वास्थ्य प्रसार उपागम का तार्किक अध्ययन।
- स्वास्थ्य शिक्षा उपागम की केस स्टडी– उदा.– एकलव्य, म.प्र. एफ.आर.सी.एच. महाराष्ट्र, शालेय स्वास्थ्य शिक्षा का कार्यक्रम, स्वामी विवेकानंद युवा आंदोलन, कर्नाटक आदि।
- शालेय स्वास्थ्य पाठ्यक्रय का क्षेत्र – सी.बी.एस.ई., अन्य विषय संबंधी रूपरेखा – (उदा. एकलव्य, एस.एच.ई.पी., एफ.आर.पी.एच, यूनीसेफ, नाली–काली रणनीति, शालेय स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा)

bdkb 2- LokLF; f'k{kk gr Kku ,o dk'ky fodkl&

- भोजन एवं पोषण
- संक्रामक रोग
- स्वयं के शरीर का ज्ञान– स्वास्थ्य एवं उपचार संबंधी वैकल्पिक तंत्र
- प्राथमिक उपचार (कार्यशाला पद्धति)
- बाल शोषण :– (इस संदर्भ में शोषण के संदर्भित अर्थ, विभिन्न प्रकार एवं प्रभाव, कानूनी प्रावधान की जानकारी । इस बिन्दु के अंतर्गत शारीरिक दण्ड एवं बाल यौन उत्पीडन की जानकारी भी है। इसका उद्देश्य एक शिक्षक के तौर पर इस क्षेत्र विशेष में जागरूकता, चिंतन, जानकारी एंव मूलभूत कौशल का विकास करना है।

bdkb 3 & HkkoukRed LokLF; lc/kh vko';drk,] fofHkUurk, ,o lek;kstu

- भावनात्मक स्वास्थ्य की समझः आत्मावलोकन
- भावनात्मक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य का ज्ञानात्मक संबंध
- शालेय कार्यप्रणाली एवं इसका बाल भावनात्मक स्वास्थ्य पर प्रभाव।
- कक्षा में विभिन्नता– भिन्न–भिन्न अधिगमकर्ता, भिन्न–भिन्न आवश्यकताएँ एवं समावेशन का सिद्धान्त ।
- अधिगम अशक्तता एवं कक्षा में सहभागिता।

bdkb 4& 'kkjhfjd f'k{kk& LokLF; ,o f'k{kk dk vfHkUu vxA

- शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता – स्वास्थ्य एवं शिक्षा से संबंध ।
- शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद
- पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन
- खेल भावना, सहयोग एवं सामंजस्य क्षमता का विकास।
- अभिरूचि एवं योग्यताओं में विभिन्नता।

bdkb 4 ij vk/kkfjr ik;kfxd dk;& संस्थान में मूलभूत व्यायाम, पी.टी. एवं समूह खेल (जैसे– खोखो, कबड्डी, फुटबॉल) का आयोजन एवं सहभागिता।

इंटर्नशिप के दौरान संस्था में उपलब्ध शारीरिक शिक्षा संबंधी गतिविधि, संसाधन, स्थान एवं किस गतिविधि को को बालक/बालिका द्वारा खेला जा रहा है, का निरीक्षण कर रिकार्ड रखें।

प्रागंण की संरचना, खेलों के प्रकार, विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की पहचान और छूटे हुए छात्रों की रिपोर्ट को निम्न बिन्दुओं में समाहित करें।

– शारीरिक शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति।

– खेल के स्थान एवं संसाधनों की सीमितता की जानकारी।

– खेलों में नवाचार

– क्षेत्रीय खेलों (ग्रामीण खेलों) का चिन्हांकन एवं जानकारी का संधारण।

Lk=xr dk;l (Assignment)&

शाला इंटर्नशिप के लिये जाने से पहले प्रशिक्षु (इंटर्न) को स्वास्थ्य संबंधी विषयवस्तु को अन्य विषयों के साथ समायोजित करते हुए गतिविधियों, कार्य योजना एवं सामग्री का निर्माण करना अनिवार्य हैं

छात्र प्रशिक्षु को एक चयनित स्वास्थ्य शिक्षा विषयवस्तु पर बनाई गई पाठ्य योजना को एस.डी.पी. (SDP) के दौरान प्रस्तुत करना होगा।

स्वास्थ्य योजना संबंधी विचार एवं निर्मित सामग्री और किये गये शोध कार्य में दी गई जानकारी सही हो एवं आतंरिक मूल्यांकन हेतु रिफ्लेक्टिव रिर्पोट प्रस्तुत की जाए।

- योग : मूलभूत सिद्धान्तों एवं आसनों का अधिगम
- एथलेटिक्स (व्यायाम)
- खेलकूद का आयोजन एवं खेल के मैदानों का चिह्नांकन आदि।

vlrj.k dh fof/k;k (Mode of Transaction)

आवश्यकतानुसार छात्राध्यापक खेल, योग, पीटी, जैसी गतिविधियाँ मैदान में संचालित करेंगे।

- चार्ट कैलेण्डर, मॉडल, आदि के माध्यम से विषयांशों का शिक्षण आवश्यकतानुसार दिया जाएगा।
- हाथों की धुलाई का प्रदर्शन छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा।
- प्राथमिक चिकित्सा पेटिका का ज्ञान छात्राध्यापक को दिया जाना तथा उनसे तैयार कराए जाने का अभ्यास कराया जाना है।
- स्वास्थ्य सेवाओं, सफाई सेवाओं, वृद्धाश्राम, निःशक्तजन को संरक्षित करने वाली संस्थाओं का अवलोकन करना एवं संबधित स्थानों पर जाकर उनकी कार्यपद्धति को जानना और छात्राध्यापकों को इन सबके द्वारा प्रयत्नशील बनाने का प्रयास करना।
- पाठ्यक्रम के उपरोक्त विषयों पर छात्राध्यापकों के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद के लिए विषय की मांग के अनुसार वाद–विवाद, परिचर्चा, ड्रॉइंग, पेटिगं, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना।
- योग, खेल, पी.टी. (व्यायाम) का निरंतर अभ्यास डाइट प्रशिक्षण में सुबह के सत्र में कराया जाए, जिसका छात्राध्यापक इनके लिए अभ्यस्त हो सकें।

- आओ कदम उठाएं : एक सहायक पुस्तिका, USRN-JNU. New Delhi. (A resource tool/book for schools to address issues of health infrastructure and programme)
- Deshpande, M. Et al. (2008), The Case for Cooked Meals: Concerned Regarding Proposed Policy Shifts in the Mid-day Meal and ICDS Programs in *Indian Pediatrics,* pp 445-449.
- Dasgupta, R., et.al. (2009). Location and Deprivation: Towards an Understanding of the
- Agarwal, P. (2009). Creating high level of learning for all students together. *Children First*, New Delhi. (Hindi and English).
- Ashtekar, S. (2001). *Health and Healing: A Manual of Primary Health Care*, Chapters 1, 3, 7
- tlyer, Kirti (2008). *A look at Inclusive Practices in Schools.* Source RRCEE, Delhi University.
- Sen, S. (2009). *One size does not fit all children.* Children First, NewDelhi. (Hindi and English)
- Shukla, A. And Phadke, A. (2000). Chapter 2, 3, 4, 6 and S.6 TR-6RTTafr: •6FT 1 Pune: Cehat
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Mh-,y-,M- f}rh; o"k

f'k{k.k vH;kl ,o 'kkyk bVuf'ki

(Teaching Practice and School Internship)

0;kogkfjd

i.kkd & 400
ckg; vid & 200
vkrfjd vid & 200

le; vof/k & 16 lIrkg
fnol & 96

vkfpR; ,o mnns';& (Rationale and Aim)

शिक्षण अभ्यास के अंतर्गत शाला आधारित गतिविधियों के प्रारूप की रचना की जाती है ताकि छात्राध्यापक **(Student-Teacher)** सैद्धांतिक विषयों से 0;kogkfjd रूप से जुड़ सके तथा उसे शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के परिप्रेक्ष्य में मदद मिल सकें और प्राप्त पूर्व ज्ञान और vH;kl dh Øec) lajpuk उनके शिक्षण को प्रभावशाली रूप से सक्षम बना सकें। शाला इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे अपने eSVl@lgikfB;ka dh d{kk f'k{k.k ifØ;k का अवलोकन करे जिससे उनमें Nk=ka ds 0;ogkj] vuq'kklukRed vH;kl] Nk= vf/kxe okrkoj.k और d{kk izc/ku के प्रति अंतःदृष्टि का विकास हो सके। छात्राध्यापकों से आशा की जाती है कि वे अभ्यास के दौरान lekykspukRed fparu एवं विचार विमर्श करे और अपने को शाला के अभिलेखों के रख–रखाव, पाठ योजनाओं के निर्माण, इकाई योजना के निर्माण, rduhdh **(ICT)** का उपयोग करते हुए d{kk izc/ku] 'kkyk&leqnk;&ikyd के हस्तक्षेपों से संबंधित गतिविधियों में संलग्न रखकर स्वयं के विकास एवं f'k{k.k vH;kl ds 0;kolk;hdj.k पर चिंतन करें।

शाला आधारित गतिविधियों के अंतर्गत इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान किया जाने वाला अन्य प्रमुख कार्य ikB ;kstukvksa एवं bdkbZ ;kstukvksa का प्रस्तुतीकरण है जिसके लिए izFke एवं f}rh; o"kZ में अलग से निर्दिष्ट किया गया है।

इंटर्नशिप अवधि के दौरान की गई समस्त गतिविधियों को ikVZQksfy;ks एवं fj¶ysfDVo tuZy में प्रस्तुत किया जायेगा। छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे इंटर्नशिप के दौरान अपने द्वारा की गई समस्त गतिविधियों के अनुभवों का, अवलोकनों का एवं निष्कर्षों का रिकार्ड संधारित करेगें। fj¶ysfDVo tuZy में की गई प्रविष्ठियाँ fo'ys"k.kkRed होनी चाहिए जैसे– पूर्व समझ के आधार पर D;k नया और भिन्न है, D;k उसके द्वारा निर्देशों के आधार पर किये गये कुछ voyksdu] d{kk izc/ku] f'k{kd ikyd la?k से समानता

या भिन्नता रखते हैं। ये अवलोकन dsl आलोचना पर आधारित होना चाहिए जिससे उसके अभ्यास में परिवर्तन आ सके। iR;sd Nk=k/;kid ¼bVuZ½ dk vkdyu mlds }kjk cuk;s x;s ikWVQksfy;ks ,oa fj¶ysfVo tuZy esa dh xbZ ifofù"B ds vk/kkj ij fd;k tk;sxkA

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम का e[; mn~ns'; छात्राध्यापक को यह अवसर उपलब्ध कराना है कि अभ्यासकर्ता के रूप में उसे vFkZiw.kZ f'k{k.k vuqHko प्राप्त हो सके। इस धारणा के आधार पर शाला इंटर्नशिप की योजना इस प्रकार बनाई जाए जिसमें 'kkyk RkFkk f'k{kd izf'k{k.k laLFkkuksa d s e/; Hkkxhnkjh (Partnership) हो सके। छात्राध्यापक को शालेय गतिविधि में एक fu;fer f'k{kd की तरह सक्रिय भागीदारी करते हुए स्वयं को शाला के सभी कार्यों से जोड़ना चाहिए परन्तु इसके साथ यह प्रावधान भी होना चाहिए कि एक vH;kldrkZ ds :i esa mldh Hkwfedk jpukRed gksA इंटर्नशिप शाला के द्वारा उसे आवश्यक भौतिक स्थान के साथ–साथ नवाचार हेतु 'kS{kf.kd Lora=rk भी दी जानी चाहिए। यह आवश्यक है कि izLrkfor ikVîujf'ki EkkWMy }kjk bZVuZf'ki 'kkyk dks Hkh iklr gksus okys ykHkksa ij /;ku dsfUnzr djrs gq, p;fur fd;k tk,A

यह कार्यक्रम iw.kZr% {ks= vk/kkfjr है, इसमें छात्राध्यापकों को सीधे समस्याओं से जूझते हुए सीखने का अनुभव मिलेगा। इंटर्नशिप कार्यक्रम के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए छात्राध्यापकों को एक fpUru'khy f'k{kd के रूप में ज्ञान के आधार पर बच्चों से जुड़ने, बच्चों के प्रति उसकी समझ और कक्षागत प्रक्रिया, सैद्धांतिक शैक्षणिक विचारों, रणनीतियों एवं कौशलों को क्रम से विकसित करने की आवश्यकता होगी तभी Nk=k/;kid dks d{kk esa i<+s x, lS)kfUrd fopkjksa dks 'kkyk esa ij[kus ds volj feysxsA

शाला इंटर्नशिप एक f}o"khZ; dk;Øe है। प्रत्येक वर्ष में छात्राध्यापकों से vyx&vyx अपेक्षाऐं हैं। izFke o"kZ में छात्राध्यापक का परिचय शाला से, शाला के वातावरण से, बच्चों को समझने से तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समझने से होगा। f}rh; o"kZ में छात्राध्यापक एक नियमित शिक्षक की भांति कार्य करेगा। यहाँ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के vdknfed lqijokbtj laokn और ppkZ के आधार पर ekxZn'kZu और QhMcSd देकर उसकी सहायता करेंगे।

fof'k"V mn~ns'; (Specific Objectives)

- शाला के अनुभवों को पूर्णता से प्राप्त करने के लिए d{kk f'k{k.k के अतिरिक्त 'kkys; xfrfof/k;ksa और vfHkHkkodksa के साथ बातचीत करने के अवसर प्रदान करना।
- छात्रों की विविध vko';drkvksa एवं f'k{k.k vf/kxe izfØ;k को प्रभावित करने वाले fofHkUu lanHkksZa को ध्यान में रखते हुए mfpr ;kstuk का निर्माण कर एक fu;fer f'k{kd की भूमिका को आत्मसात (ग्रहण) करना।
- वर्तमान प्रणाली की सीमाओं के अन्दर रहते हुए uokpkj करने की क्षमता को विकसित करना।

- कक्षा में अर्थपूर्ण गतिविधियों को सिखाने के लिए गतिविधियों का mfpr p;u एवं fØ;kUo;u करना।
- अपने विद्यालयीन अनुभवों पर lekykpukRed fpru djuk और इसका fjdkM रखना।
- केवल उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय बच्चों के lh[kus के विभिंन्न पहलुओं का vkdyu करना।
- कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के 'kkyk fo"k;ks dk f'k{k.k esa lgHkkfxrk करना।

bu mn~ns';ks dks vuqlkj dk;Øe esa fuEufyf[kr vf/kHkkj dks ?kVdks dh vko';drk gksrh gSA

- योजना – 30%
- शिक्षण – 30%
- चिन्तनशील जर्नल एवं रिकार्ड रखरखाव – 40%

शाला इन्टर्नशिप कार्यक्रम में छात्राध्यापक को uokpkjh f'k{k.k i)fr dks dUn एवं uokpkjh vf/kxe dks dUn को समाहित करते हुए भ्रमण करना चाहिये। जहाँ तक संभव हो कक्षा आधारित 'kk/k ifj;kstukvks को लेना चाहिये। इंटर्नशिप शालाओं में lalk/kuks को विकसित कर l/kkfjr करना चाहिये।

शाला इंटर्नशिप में शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रति विषय 4 bdkbZ ;kstuk से अधिक शामिल नहीं करें। इकाई की योजना बनाते समय शाला की पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त fofo/k L=ksrks से प्राप्त सामग्री की समालोचनात्मक संलग्नता को शामिल करते हुए संगठित कर प्रस्तुतिकरण किया जाये। प्रश्नों को विशेष रूप से इस प्रकार तैयार करें कि–

v½ fo|kFkhZ dks Kku vkj le> dk vkdyu dj ldsA

c½ vFkkZi.kZ d{kk fuekZ.k vkj vkxs dh Kku fuekZ.k dh ifØ;k dj ldsA

l½ Nk= vf/kxe dk vkdyu djrs g, f'k{k.k 'kkfL=; vH;kl esa l/kkj dj vkxs vf/kxe dks c<k ldsA

छात्राध्यापक (इंटर्न) को सामान्य तथा विषयवार पर्यवेक्षण के लिए संकाय सदस्यों के पर्यवेक्षी समर्थन ¼lqijokbTkjh likWV½ की आवश्यकता होगी। ये विषय विशेषज्ञ इंटर्न का आकलन भी करेंगे। उचित गतिविधियों का चयन करते हुए इंटर्न को इकाई योजना का निर्माण करना चाहिये। इन योजनाओं का रिकार्ड संधारित करना होगा। प्रत्येक इंटर्न से आशा की जाती है कि वे नियमित fj¶yDVho tuZy संधारित करे, जिसमें वे vius vH;kl dks vuHkoks ij ifrfØ;k nus rFkk f'k{k.k'kkL= ,oa v/;;u fd;s x;s l)kfrd fo"k;ks dks chp lac/k (linkage) cuk ldsA

f}rh; o"kZ

इंटर्नशिप उन d{kkvks dks voyksdu से प्रांरभ होगी जहाँ इंटर्न को पढ़ाने जाना है। अवलोकन छात्रों की रूचि, आवश्यकताओं एवं स्तरों के साथ–साथ कक्षा के vH;kl और mi;kx की गयी सामग्रियों का किया जाना है। lqijokbtj के साथ चर्चा तथा tuZy का अभिलेखीकरण अधिगम प्रक्रिया का आवश्यक अंग है।

इन अवलोकनों के आधार पर तथा jpukokn ij vk/kkfjr d{k vo/kkj.kkvksa dk उपयोग करते हुये ;kstuk बनायें। सभी विद्यार्थियों के लिए vf/kxe mn~ns';kksa का स्पष्ट निर्माण करें साथ ही किस प्रकार अधिगम को संगठित किया जायेगा इसका विस्तृत वर्णन करें जैसे– ppkZ dk rjhdk] NksVs lewg या O;fDrxr dk;ZA इस प्रक्रिया में विद्यार्थी स्व–अधिगम के माध्यम से आकलन करते हुये सम्मिलित रहते है।

लोकतांत्रिक नीतियों का निर्माण किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी की Lok;Ÿkk बढ़ती है और सभी विद्यार्थियों के साथ lEeku और fu"i{krk का व्यवहार होता है।

lqijokbZtj इन क्षेत्रों पर अपना फिडबैक दे।

- इंटर्न के Kku dk vk/kkjA
- thou ds vuqHko पर आधारित विद्यार्थियों के पूर्ण ज्ञान से संबंधित सटीक प्रश्नों को पूछना।
- विभिन्न आवश्यकताओं के आधार पर उचित vuqns'kkRed j.kuhfr;ksa पर प्रतिक्रिया करना।
- सभी विद्यार्थियों को vf/kxe vuqHko की इस प्रकार सुविधा देना जिससे उनमें lekykspukRed fpruu] चयन और vkRe fØ;k को बढ़ावा मिले और fo"k;ksa dh Lo;Ÿkk बनी रहे।
- अधिगमकर्ता की पाठ्यपुस्तकों, शिक्षकों, वरिष्ठों पर निर्भरता को कम करते हुये वैकल्पिक स्त्रोतों का संदर्भ देना चाहिये। tSls& lgikBh] fdrkcsa] bUVjusV इत्यादि।
- समय का lnqi;ksx करें।
- Mh-,y-,M- ds ikB~;Øe vkSj d{kk voyksdu ds chp lEcU/k LFkkfir djsaA

lqijokbZtj dh Hkwfedk&

एक सुपरवाईज़र 4&6 fo|kfFk;ksa के मध्य काम करेगा। उपरोक्त निर्देशो के अतिरिक्त ikVZuj 'kkyk के साथ yxkrkj बातचीत करेगा। इंटर्न को leL;kvksa dh igpku djk djds lek/kkukRed lek/kku के लिए प्रेरित करेगा ताकि वह शाला की lkeFkZ और lhekvksa को पहचान कर नये–नये विचारों के साथ le>kSrk करना सीखें। इंटर्न द्वारा एक vLFkk;h fjokt़ के लिए इंटर्नशिप अवधि को कम करना तथा शाला को i;kZ'kkyk की तरह उपयोग करने की भावना छोड़नी होगी तभी bVuZ dks iwjk lkgu मिलेगा।

सुपरवाइज़र कक्षा में cxSj ck/kk ds tYnh पहुँचकर कक्षा के विस्तृत संदर्भ को समझाने के लिए यह देखे की इंटर्न किस प्रकार विद्यार्थियों को कार्य में layXu कर रहा है। QhMcSd rqjar ftruh tYnh gks lds fn;k tkuk pkfg, और दी गयी fVIi.kh पर कार्य करने के लिये इंटर्न को iwjk lkfgr करना चाहिये।

शाला सुपरवाईज़र को प्राथमिक में 05 ckj तथा ek/;fed esa 02 ckj जाना चाहिये।

विषय विशेषज्ञ को 02 ckj izkFkfed तथा 02 ckj ek/kfed में जाना चाहिये।

tuZYl&

जर्नर्ल्स के अंतर्गत d{k अंश fooj.k का एवं T;knk vkRe'k fpUru एवं fo'ys"k.k का होना चाहिये। fooj.k प्रत्येक विद्यार्थि पर, शिक्षण शास्त्र पर, प्रबंधन के मुद्दों पर, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक मुद्दों पर केन्द्रित होना चाहिये।

vf/kdre vad ¾ 15

इंटर्न ने कक्षा में क्या और क्यों किया इस प्रतिक्रिया पर fo'ys"k.k आधारित होगा। उदाहरणार्थ–क्या इंटर्न बच्चों को fodkl d s fl)kr के lkFk&lkFk lkekftd] lkLdfrd प्रभाव के साथ भी lyXu कर रहा है? इस समय अवधि के दौरान इंटर्न को प्रगति पर पूरा फोकस होना चाहिये। उदाहरणार्थ– lijokbtj dh fVIi.kh;k ij ifrfØ;k djuh pkfg;] vkj x.kkRed l/kkj fu;fer tuy e iLrr djuk pkfg; bR;kfnA

vf/kdre vad ¾ 25

ukV& इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक ¼bVu½ eaxyokj से लेकर 'kØokj तक शिक्षण कार्य करेगा और lkeokj को अपने सुपरवाईज़र के साथ, lIrkg में बनाई गयी पाठ्ययोजनाओं पर QhM cSd और ekxZn'ku लेगा और इस आधार पर पुनः मंगलवार से शुक्रवार तक शिक्षण कार्य करेगा। यह चक्र lai.k bVuf'ki vof/k के दौरान जारी रहेगा।

iLrkfor le; foHkkx pØ

Ø	le;	xfrfof/k	dky vof/k
1.	10%30 ls 11%30	izkFkZuk	¼1 ?k.Vk½
2.	11%30 ls 12%25	iFke dky[kM	¼55 feuV½
3.	12%25 ls 1%15	f}rh; dky[kM	¼50 feuV½
4.	1%05 ls 1%50	r`rh; dky[kM	¼45 feuV½
5.	1%50 ls 2%30	Hkkstu vodk'k	¼40 feuV½
6.	2%30 ls 3%10	prqFkZ dky[kM	¼40 feuV½
7.	3%10 ls 3%50	ipe dky[kM	¼40 feuV½
8.	3%50 ls 4%00	"k"Ve dky[kM	¼40 feuV½
9.	4%00 ls 4%40	lIre dky[kM	¼40 feuV½
10.	4%40 ls 5%00	jk"Vªxku	¼10 feuV½

Mh-,y-,M- i=i= &1

ek/;fed f'k{kk e.My e/;izns'k] Hkksiky

iFke o"k

प्रशिक्षण संस्था/सुविधा केन्द्र/महाविद्यालय..

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान..

विषय – सैद्धान्तिक विषयों का आन्तरिक मूल्यांकन

स क्र.	छात्राध्यापक एवं पिता का नाम	रोल नम्बर	सैद्धान्तिक के आंतरिक मूल्यांकन के प्राप्तांक									
			बाल्यावस्था एवं बाल विकास	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा	पूर्व बाल्यावस्था–परिचर्या एवं शिक्षा	भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास	पाठ्यचर्या में शिक्षण संप्रेषण तकनीकी का एकीकरण	Proficience in English	योग शिक्षा	हिन्दी/ संस्कृत / मराठी /उर्दू	Padagogy of Englsh	गणित शिक्षण
			पूर्णांक 30	पूर्णांक 30	पूर्णांक 30	पूर्णांक 25	पूर्णांक 50	पूर्णांक 25	पूर्णांक 25	पूर्णांक 30	पूर्णांक 30	पूर्णांक 30
			प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक
कुल छात्र संख्या												

स्थान................................ हस्ताक्षर प्राचार्य

दिनांक.............................. संस्था की पदमुद्रा

Mh-,y-,M- i=i= &2

ek/;fed f'k{kk e.My e/;izns'k Hkksiky

iFke o"k

प्रशिक्षण संस्था / सुविधा केन्द्र / महाविद्यालय...

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान..

विषय– व्यावहारिक विषयों का आंतरिक मूल्यांकन

सक्र.	छात्राध्यापक एवं पिता का नाम	रोल नम्बर	व्यवहारिक के आंतरिक मूल्यांकन के प्राप्तांक			
			स्व बोध	रचनात्मक नाटक, ललितकला और शिक्षा	बच्चों का शारीरिक भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा	इंटर्नशिप (शाला स्थानबद्ध कार्यक्रम)
			पूर्णांक 50	पूर्णांक 25	पूर्णांक 25	पूर्णांक 50
		कुल छात्र संख्या				

स्थान................................ हस्ताक्षर प्राचार्य

दिनांक.............................. संस्था की पदमुद्रा

Mh-,y-,M- i=&3

ek/;fed f'k{kk e.My e/;izns'k Hkksiky

f}rh; o"kZ

प्रशिक्षण संस्था/सुविधा केन्द्र/महाविद्यालय..

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान...

विषय :– सैद्धान्तिक के आंतरिक मूल्यांकन

सक्र	छात्राध्यापक एवं पिता का नाम	रोल नबंर	सैद्धान्तिक के आंतरिक मूल्यांकन के प्राप्तांक							
			संज्ञान अधिगम और बाल विकास	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध	शिक्षा में समावेशी एवं जेंडर मुद्दे	शालेय संस्कृति,नेतृत्व और शिक्षक विकास	Proficiency in English	योग शिक्षा	पर्यावरणीय अध्ययन का शिक्षण	वैकल्पिक विषय सामाजिक विज्ञान / अंग्रेजी भाषा शिक्षण/गणित/विज्ञान शिक्षण
			पूर्णांक 30	पूर्णांक 30	पूर्णांक 30	पूर्णांक 30	पूर्णांक 25	पूर्णांक 25	पूर्णांक 30	पूर्णांक 30
			प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक	प्राप्तांक
कुल छात्र संख्या										

स्थान................................ हस्ताक्षर प्राचार्य

दिनांक............................ संस्था की पदमुद्रा

Mh-,y-,M- izi= &4
ek/;fed f'k{kk e.My e/;izns'k Hkksiky
f}rh; o"kZ

प्रशिक्षण संस्था / सुविधा केन्द्र / महाविद्यालय..

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान..

विषय– व्यावहारिक विषयों का आंतरिक मूल्यांकन

<table>
<tr><td rowspan="3">सक्र.</td><td rowspan="3">छात्राध्यापक एवं पिता का नाम</td><td rowspan="3">रोल नम्बर</td><td colspan="3">व्यवहारिक के आंतरिक मूल्यांकन के प्राप्तांक</td></tr>
<tr><td>कार्य और शिक्षा</td><td>रचनात्मक नाटक, ललितकला और शिक्षा</td><td>बच्चों का शारीरिक भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा</td></tr>
<tr><td>पूर्णांक 25</td><td>पूर्णांक 25</td><td>पूर्णांक 25</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल छात्र संख्या</td><td></td><td></td><td></td></tr>
</table>

स्थान................................ हस्ताक्षर प्राचार्य

दिनांक.............................. संस्था की पदमुद्रा

Mh-,y-,M- ii=&5
ek/;fed f'k{kk e.My e/;in'k Hkksiky
iFke o"k

प्रशिक्षण संस्था/सुविधा केन्द्र/महाविद्यालय..

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान..

विषय– इंटर्नशिप का आंतरिक मूल्यांकन

सक्र.	छात्राध्यापक एवं पिता का नाम	रोल नम्बर	पूर्णांक : 50
		कुल छात्र संख्या	

स्थान.................................

हस्ताक्षर प्राचार्य

दिनांक..............................

संस्था की पदमुद्रा

Mh-,y-,M- iz=&6
ek/;fed f'k{kk e.My e/;izns'k] Hkksiky
f}rh; o"kZ

प्रशिक्षण संस्था/सुविधा केन्द्र/महाविद्यालय..

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान...

विषय– इंटर्नशिप का आंतरिक मूल्यांकन

सक्र.	छात्राध्यापक एवं पिता का नाम	रोल नम्बर	पूर्णाक : 200
		कुल छात्र संख्या	

स्थान.................................. हस्ताक्षर प्राचार्य

दिनांक............................... संस्था की पदमुद्रा

ikB;Øe iujh{k.k ,o fuek.k lfefr lnL;

1	डॉ. रश्मि जैन	सहा.प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
2	डॉ. आर.एस. गुप्ता	सेवानिवृत्त, प्राचार्य IASE भोपाल
3	डॉ. रमेशबाबू	प्राध्यापक क्षे. शि. संस्थान, भोपाल
4	डॉ. रमाकांत रायजादा	सेवानिवृत्त प्राध्यापक क्षे. शि. संस्थान, भोपाल
5	डॉ. अनिलकुमार	प्राध्यापक NITTTR भोपाल
6	डॉ. संजय पंडागले	सहा. प्रा., क्षे. शिक्षा संस्थान भोपाल
7	डॉ. मकवाना	सहा. प्रा., क्षे. शिक्षा संस्थान, भोपाल
8	सुश्री मंगला एकबोटे	सेवानिवृत्त, निदेशक, विज्ञान भवन
9	डॉ. सुबोध सक्सेना	राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
10	डॉ. फारूख सलीम खान	राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
11	डॉ. नीरजा चतुर्वेदी	राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
12	डॉ. रंजीता जोशी	डाइट, भोपाल
13	श्रीमती वंदना पानवलकर	डाइट, इंदौर
14	डॉ. नौशाद हुसैन	प्राध्यापक मानू प्रशिक्षण संस्थान, भोपाल
15	श्रीमती सालेहा कौसर	शा. उ. मा. वि. सुलतानिया, भोपाल
16	श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव	शा. योग प्रशिक्षण संस्थान, भोपाल
17	डॉ. प्रेम भारती	शिक्षाविद्
18	डॉ. गीता सिंह	शा. सरोजनी नायडू क.उ.मा. वि., भोपाल
19	डॉ. श्रुति चौहान	बी.वी.एम. कालेज ऑफ मैनेजमेन्ट, ग्वालियर
20	श्रीमती सरला श्रीवास्तव	डाईट, भोपाल

21	डॉ. रंजीता जोशी	डाईट, भोपाल
22	श्री मनोज कपूर	डाईट, भोपाल
22	डॉ. जावेद अख्तर	डाईट, भोपाल
23	श्रीमती संगीता महाजन	डाईट, रायसेन
24	श्रीमती सुरभि पाराशर	राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
25	श्रीमती राणा मुजीब खान	राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
26	डॉ. आरिफ जुनैद खान	डाईट, भोपाल
27	डॉ. एन. के. कौशिक	सेवानिवृत्त, प्राध्यापक
28	श्रीमती ममता चौरसिया	डाइट सतना
29	श्री के.के. डेनियल	डाइट, प्रभात पट्टन
30	डॉ. नोमान खान	सेवानिवृत्त, प्राध्यापक
31	डॉ. आर. पी. अग्रवाल	सेवानिवृत्त, प्राध्यापक, क्षे. शिक्षा संस्थान भोपाल
32	डॉ. आर. पी. सक्सेना	सेवानिवृत्त, रीडर, क्षे. शिक्षा संस्थान भोपाल
33	डॉ. ए. बी. सेक्सेना	सेवानिवृत्त, प्राचार्य, क्षे. शिक्षा संस्थान भोपाल
34	श्री शैलेन्द्र निगम	सहा.प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
35	श्रीमती संगीता गौर	सहा.प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
36	श्रीमती ज्योति दूबे	सहा.प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
37	डॉ. अज़रा आसिफ	सहा.प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
38	श्री प्रभाकर श्रीवास्तव	सहा.प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
39	डॉ. अनया पालकर	सहा.प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
40	डॉ. पी. डी. दादौरिया	प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल

41	डॉ. सपना जैन	प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
42	श्री रविकांत ठाकुर	प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
43	डॉ. रजनी अग्रवाल	प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
44	श्रीमती अलका सक्सेना	प्राचार्य, शा.उ.मा.वि., रेहटी सिहोर
45	श्री ज्ञानचंद सांवले	सहा. प्राध्यापक, देवी रूकमणि महाविद्यालय, खरगौन
46	निशि शर्मा	डाइट, भोपाल
47	डॉ. महेश जैन	सहा.प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान भोपाल
48	डॉ. तरूण गुहा नियोगी	सहा.प्राध्यापक, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान जबलपुर
49	डॉ. निशा महाराणा	प्राचार्य, शास. महाविद्यालय, मन्दसौर
50	श्रीमती अंजना कपूरिया	शास. सुभाष उत्कृष्ठ महाविद्यालय, भोपाल